

मुक्ति की राह

अंग्रेजी के लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक सोमरसेट माम
की सर्वश्रेष्ठ कृति दि रेजर्स एज का भवानुवाद

लेखक

डाक्टर एस० पी० खत्री

साहित्य भवन लिमिटेड
प्रयाग

प्रकाशकः—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग

प्रथम संस्करण १९४८
मूल्य सजिल्द ६)

मुद्रकः—जगतनारायणलाल, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग

लेखक की अन्य रचनायें—

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

नाटक की परख

काव्य की परख

गुदगुदी

सात एकांकी (प्रेस में)

आलोचना (प्रेस में)

अपने मित्र

कृष्णदास

को

समर्पित

आप इस उपन्यास से पायेंगे —

अमरीकी जीवन की झांकी !

पेरिस समाज का मिहावलोकन !!

सौन्दर्य, प्रेम, लालसा का द्वन्द्व !!!

पैसे और प्रेम का द्वन्द्व !!!!

आध्यात्मिकता और तामसिकता की आँख मिचौनी !!!!!

और

जीवन

की

!!! 'नवीन परिभाषा' !!!

परिचय

आधुनिक अंग्रेजी साहित्यकारों में सोमरसेट माँम सर्व-श्रेष्ठ समझे जा रहे हैं और उनको प्रतिभा में नाटककार तथा उपन्यासकार दोनों का सहज सम्मिश्रण है। उनके अनेक नाटक और कहानियाँ सिनेमजगत में भी अपना अपूर्व स्थान बना चुके हैं। माँम की सर्वप्रियता के अनेक कारण हैं और उनमें सबसे महत्वपूर्ण कारण है—उनकी कलात्मक स्पष्ट-वादिता, तीक्ष्ण व्यंग्य, संकेतात्मक हास्य और परिहास-आत्मक शैली। ऐतिहासिक रूप से तो उनकी महत्ता सर्वोपरि है क्योंकि उन्होंने जिस सरल शैली में हमारी तामसिक और दैहिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराया है उसे देखकर रूढ़िवादी पंडितों को अममंजस ही नहीं वरन उलझन भी होगी। जिस कलापूर्ण शैली और स्पष्टवादिता से वे अपना विवेचन दे चलते हैं उसे ग्रहण करना ही पड़ जाता है चाहे हममें कितने भी असमजस क्यों न हो। माँम की औपन्यासिक कला उच्चकोटि की है और उस कला को अपनाने वाला व्यक्ति ऐसा है जो जीवन को देखने में न तो हिचकता है और न भिन्नकता है वरन शान्त, सुस्थिर चित्त होते हुए भी कठोर व्यंगात्मक दृष्टि से जीवन को पूर्ण-रूपेण समझने की चेष्टा करता है। इसके साथ ही साथ माँम में भारतीय आदर्शों के प्रतिप्रगाढ़ श्रद्धा ही नहीं आसक्ति भी है।

भारतीय ऋषियों के आत्म-चिन्तन और भारतीय आध्यात्म तथा दर्शन ने माँम को विचित्र-रूप से आकर्षित किया है। पश्चिमी सभ्यता में पोषित कलाकार को जो संसार के भ्रमण द्वारा अनेकानेक अनुभव ग्रहण कर चुका हो, भारतीयता की ओर झुकते देख किस भारतीय साहित्यकार को गर्व और सन्तोष न होगा। माँम के मनस्तल

में भारतीय अध्यात्म की प्रेरणा बहुत स्पष्ट रूप में दिखलाई देती है। दैहिक लिप्सा में लिपटे हुए प्राणी जो अपने को स्पष्ट-रूप से न समझ कर समाज-सेवी होने का दम भरा करते हैं; तामसिकता का चश्मा लगाए हुए जो व्यक्ति अपने को राष्ट्रीय सेवकों का शिरमौर समझते रहने में सारी शक्ति लगा देते हैं; सामाजिक चाटुकार जो अपनी निम्नगामी बुद्धि को श्रेष्ठ बुद्धि समझे हुए संसार में अपनी सत्ता जमाए रखने का अथक प्रयास किया करते हैं—सभी पर माँम अपने व्यंग-वाण एक अपूर्व कला द्वारा चलाया करते हैं और उन्हें नग्नरूप में न रखते हुए भी बहुत कुछ बातों ही बातों में कह जाते हैं—एक क्षण के बाद ही मन में यह भावना उठती है—‘अच्छा ! तो यह बात थी !!!’ यही माँम की सकल कला है।

आशा है कि माँम का साहित्यिक परिचय भारतीय हिन्दी पाठकों को विशेषरूप से रुचिकर होगा।

मैं अपने मित्र श्री एडगर चौकिन का विशेष अभारी हूँ जिनके निजी पुस्तकालय से मुझे पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण मुक्त में ही प्राप्त हुआ। डाक्टर रामप्रताप बहादुर भी, जिन्होंने समय-समय पर माँम की चर्चा कर मुझे उत्साहित किया, कम कृतज्ञता के पात्र नहीं।

हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग, के ही सौजन्य से यह पुस्तक पाठकों के हाथ है।

संकेत

यह उपन्यास संस्मरणात्मक-शैली में लिखा गया है। विदेशी भ्रमण के अन्तर्गत लेखक को भेंट ऐसे अनेक व्यक्तियों से होती रही जो किसी भी उपन्यास के पात्र-रूप रह सकते थे, परन्तु उपन्यास जीवित व्यक्तियों को पात्ररूप रखने में और उन्हें वास्तविक नाम देने से साहित्य संसार में ही नहीं बरन पारस्परिक संबंध में भी कुछ न कुछ गड़बड़ी हो सकती थी। फलतः उपन्यास में घटनाओं का क्रम तो वही रखा गया है परन्तु नामों में परिवर्तन कर दिया गया है जिससे परस्पर-संबंध की मर्यादा की रक्षा हो सके।

जिस व्यक्ति को नायक-रूप माना गया है वह न तो प्रशंसा प्राप्त व्यक्ति है और न प्रसिद्धिप्राप्त; कदाचित् उन्हें प्रसिद्धि मिल भी न सके। यह भी संभव है कि उनका महत्ता समाज में प्रतिष्ठित न हो पाए और लोग उन्हें शोष ही मूल भी जायें। परन्तु इतना अवश्य है कि जिस जीवनादर्श को उन्होंने अपनाया, जिस उद्देश्य को लेकर वह चले और जो-जो अनुभव उन्हें हुए—उनका महत्ता संसार में सदैव रहेगी और समय-समय पर ऐसे व्यक्ति इस पृथ्वी पर अवतरित होते रहेंगे जो नायक के समान ही उद्विग्न हो मुक्ति की राह ढूँढ़ने निकल पड़ेंगे।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि यह उपन्यास संस्मरण-रूप ही है और यह निश्चित-रूप से नहीं कहा जा सकता कि जो-जो संवाद अनेक व्यक्तियों से हुए हैं उनका लेखा अक्षरशः सत्य ही होगा। जहाँ तक हो सका है लेखक ने अपनी मानसिक शक्ति से ही उसका पुनःनिर्माण किया है। फिर जित-जित व्यक्तियों से उनको भेंट होती गई वे बहुत दिनों लगातार उनके साथ रह भी नहीं सके और जब-जब वे वापस में मिले हैं

कहानी के अंश उन्हीं के विवरण द्वारा पूरे किए गये। कभी-कभी तो कई व्यक्तियों अथवा वर्षों बाद मिलते थे परन्तु उनसे मिलते ही घटनाओं का खण्डित रूप पुनः पूर्ण हो जाता था।

जिन व्यक्तियों और जिस समाज का चित्र इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है वे अमरीकी हैं। यह समाज-शास्त्रीय सत्य है कि मनुष्य अपने वातावरण से उसी तरह प्रभावित होता है जैसे सूर्य ताप से पृथ्वी। इसी सत्य को ध्यान में रखते हुए अमरीकी समाज, उसके विपरीतादर्शों तथा उसकी मानसिक और हार्दिक आकांक्षाओं का लेखा प्रस्तुत किया गया है। किसी भी देश के व्यक्तियों को पूर्ण-रूप से परखना सरल नहीं—कलाकार केवल अपने देशवासियों को ही संभवतः परख सकता है। परन्तु अपनी कल्पनात्मक शक्ति तथा भ्रमण के फलस्वरूप अनेक अनुभवों के बल पर कुछ न कुछ वह विदेशी व्यक्तियों के जीवन का सत्य अवश्य प्रस्तुत कर सकता है। इसी का प्रयास यथा-संभव इस उपन्यास में किया गया है।

इस पुस्तक को उपन्यास वर्ग में ही रखा गया है। यह केवल इसलिए कि यह मालूम ही नहीं कि किस अन्य वर्ग में इसे रखा जाय। कथानक भी छोटा है और फिर न तो अन्त में मृत्यु होती है और न विवाह। मृत्यु सभी वस्तुओं का अन्त कर देती है इसलिए कहानी का भी अन्त करे तो आश्चर्य ही क्या और विवाह द्वारा भी जीवन के अनेक महत्वपूर्ण उद्देश्यों का अन्त हो जाता है और इसलिए वह भी श्रयस्कर ही है। परन्तु इस पुस्तक में इन दोनों प्रणालियों का सहारा नहीं लिया गया और नायक को मुक्ति की राह पर छोड़ कर उससे विदा ली गई है।

पहला परिच्छेद

१

सन् १९१६ की बात है। मैं उन दिनों सुदूर पूर्व जाने का निश्चय कर चुका था और शिकागो में दो तीन हफ्ते के लिए ठहर गया था। इसी बीच मेरा एक लोकप्रिय उपन्यास छप चुका था जिसकी चर्चा हर ओर हो रही थी और यही कारण था कि मैं ज्योंही शिकागो पहुँचा लोगों के मिलने का तांता शुरू हो गया। दूसरे ही दिन टेलीफोन की घन्टी बजी ! ज्यों ही मैंने टेलीफोन उठाया आवाज आई—‘मैं हूँ, इलियट टेम्पलटन !’

‘अरे इलियट ! मैंने तो समझा था आप पेरिस की हवा खा रहे होंगे ? मैंने कहा। उधर से जवाब मिला—

‘नहीं जी ! मैं आजकल अपनी बहिन के साथ ठहरा हुआ हूँ।’ बहुत अच्छा हो अगर आप हमारे यहाँ चले आएँ—‘खाना भी यहीं खाइएगा।’

मैंने जवाब दिया—‘तब तो मैं जरूर आऊँगा’।

इलियट ने अपना पता बतलाया और समय निश्चित कर लिया

मैं इलियट टेम्पलटन को करीब पन्द्रह वर्ष से जानता था । उनकी अक्लिया करीब करीब पचपन के ऊपर ही रही होगी । लम्बा कद, उभरत हुआ चेहरा, चाल ढाल में रईसानापन, घने बालों से ढका हुआ सर । कहीं कहीं बाल सफेद हो चले थे जो उनके मुख की सौम्यता बढ़ा रहे थे । कपड़े वह हमेशा शानदार पहनते थे और उनमें शायद ही कहीं ढूढ़ने पर शिकन मिलती । पहनने का सूट वह लन्दन ही में सिलवाते और जूते और हैट भी उन्हें वहीं के पसन्द थे; मगर और छोटी मोटी फैशन के चीजों की खरीदारी वह पेरिस की प्रसिद्ध दुकानों पर ही किया करते । पेरिस में उन्होंने एक शानदार कोठी रईसों के मुहल्ले के पास ही ले रखी थी परन्तु जो लोग उनसे घृणा करते, कहा करते थे कि वह एक साधारण व्यापारी हैं । अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध इस दिश्रणी पर वह मन ही मन कुढ़ते और अपनी सत्ता के विरोध में सुनी हुई बातों का प्रतिकार अवसर पाकर अत्यन्त कड़े शब्दों में किया करते थे । इस आलोचना में क्रोध अधिक होता था, तर्क कम । उनमें अच्छी वस्तुओं के परखने की शक्ति अधिक थी, अनुभव था और ज्ञान भी था । जब वह पहले पहल पेरिस आकर ठहरे तो ऐसे लोगों से उनका परिचय विशेष हुआ जो कलापूर्ण चीजें खरीदने और इकट्ठी करने का चाव रखते थे । श्रेष्ठ कलात्मक चित्रों को परखने में तो उनकी सूझ अनुपम थी । इंगलिस्तान और फ्रांस के अनेक बिगड़े रईस जो सिवाय अपनी तृष्णा के सब कुछ खो चुके थे; जो अपनी बची खुची, कला के नाम पर बनी तसवीरों को ही अपनी निधि समझे हुए थे, उनके पीछे पीछे फिरते थे । ऐसे रईस भी बहुत थे और इलियट इन लोगों के कला-पूर्ण चित्रों को अमरीका के राष्ट्रीय चित्रालयों के संरक्षकों द्वारा खरीद कराने में बड़े दक्ष थे । जिस किसी धनी-मानी अथवा चित्रालय को पुराने, श्रेष्ठ कलाकारों के चित्रों का चाव होता, इलियट बड़ी प्रसन्नता से उनका यह भार ओढ़ लेते । उनकी पूछ

इस कारण भी थी कि वे चुपचाप, बिना बहुत लोगों को जताए हुए, (क्योंकि इसमें बदनामी का डर था) ऐसी चीजों को बिकवा दिया करते थे। इधर बेचने वालों को यह सन्तोष हुआ था कि इलियट ऐसे पारखी और सज्जन द्वारा उनका सौदा पूरा हो रहा है। इस वातावरण में लोगों का यह समझना कि इलियट स्वयं अपना भी लाभ कर लेते हैं स्वाभाविक ही था, परन्तु यह बात किसी आग मुँह खोल कर कोई न कहता—सभ्यता का अनुरोध भी यही था। इलियट से जो लोग कुढ़ा करते थे वे निःसंकोच कह सकते थे कि उनके घर में सारा सामान नीलामी है और इलियट अपने घर पर बड़े बड़े अमरीकी रईसों की शानदार दावत सदैव इसीलिए किया करते हैं कि मुलाहिजे में आकर वे कोई न कोई कलात्मक चित्र या सामान उनके हाथ बेच दें। इलियट के घर पर आने जाने वाले लोग अक्सर यह देखा करते कि उनकी बैठक का फैशनेबिल सामान बदलता रहता है और कारण पूछने पर इलियट कह दिया करते थे कि अमुक चीज जरा पुरानी हो चली थी और फैशन के स्तर से गिर रही थी, इसीलिए हटा दो गई।

अबसर पाते ही वह कह बैठते—

‘हम लोगों को परिवर्तन बहुत रुचिकर है; अमरीकी जीवन पुरानी चीजों से घबराता और ऊब उठता है। यह तो हम लोगों का जातीय गुण है—हाँ ! आप चाहे इसे हम लोगों की कमजोरी ही क्यों न कहें।’

पेरिस में रहनेवाली अनेक फैशनेबिल और सजीली स्त्रियों से भी इलियट का घनिष्ठ परिचय था; मगर ये स्त्रियाँ प्रायः यह कहते सुनी गई थी कि वास्तव में इलियट का वंश बहुत निर्धन था और आज कल यदि वह प्रतिष्ठित और वैभव पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो इसमें उनकी पैतृक सम्पत्ति का सहारा नहीं बल्कि उनकी व्यवसायिक चालाकी का हाथ है। यह कहना बहुत ही कठिन था कि इलियट की

आय क्या थी; मगर यह बात भी छिपी नहीं थी कि वह अपनी कोठी का काफी खर्चा देते थे और वह अनेक मूल्यवान सामान से सजाई सजाई रहा करता था। कमरों की दीवारों पर एक से एक कलापूर्ण चित्र लटके रहते थे और वे सब की सब पुराने प्रतिष्ठित कलाकारों की ही कृतियाँ होती थीं। इन सबको इलियट अपने मेहमानों को सदैव बड़े गर्व से दिखलाते थे और उनकी छाती फूल उठती थी। कहने का तात्पर्य यह कि जिस टीम-टाम से इलियट रहा करते थे वह सम्य और फैशनेबिल लोगों का स्तर समझा जाता था—ऐसे सम्य लोगों का जो न तो नौकरों करते और न जीविका चलाने की फिक्र रखते मगर रुपये की कमी उन्हें कभी न अनुभव होती। हाँ, अगर कोई इस बात पर तुल्य ही जाता कि वह उनकी आय का जरिया बिना जाने न रहेगा तो उसे इलियट की मित्रता से हाथ धोने पर भी प्रस्तुत रहना चाहिए था। उनके जीविकोपार्जन के प्रश्न को अछूता रखने में ही उनके मित्रों की खैरियत थी। जीवनयापन की कठिनाइयों से यों छुटकारा पाकर इलियट ने अपनी सारी शक्ति केवल एक ही ध्येय की ओर लगा दी। यह ध्येय था सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना। सम्पन्न समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े, बढ़े बड़े लोगों से उनका परिचय रहे, लोग उन्हें देख कर ईर्ष्या करें, इसी फेर में वे दिन रात रहा करते थे। इस ध्येय की पूर्ति में उनका व्यवसाय और व्यापारिक संबन्ध उन्हें विशेष सुविधाएँ दिया करता था।

इलियट जब युवा थे तभी यूरोप आए और उसी समय से उनकी जान-पहचान वहाँ के प्रसिद्धि-प्राप्त पर बिगड़े हुए रईसों से हो गई थी। दोस्ती बढ़ाने में उन परिचयात्मक पत्रों से भी उन्हें काफी सहायता मिली जिन्हें वे अपने अमरीकी मित्रों द्वारा जान पहचान कराने के लिए लाए थे। इन्हीं के द्वारा यूरोप की अनेक महिलाओं से इनका परिचय भी बढ़ा—विशेष कर ऐसी स्त्रियाँ जिनके पीछे

समाज पागल रहता सहज ही में इलियट की मित्र हो जाती थीं । इसका एक कारण और भी था । इलियट अपने क्लैवर्जिनिया उपनिवेश का प्राचीन वंशज बतलाते थे और उनकी माँ भी अपने को उस प्रसिद्ध परिवार से संबंधित समझती थीं जिसने अमेरिका के स्वतन्त्रता-युद्ध में प्रमुख भाग लिया था । इसके साथ साथ इलियट में व्यक्तित्व की भी कुछ खूबियाँ थीं । देखने सुनने में उसने मुख पर तेज मालूम होता था; कपड़े लच्छे तो बड़ी छानवीन से बनवाते ही थे परन्तु नृत्य-कला में भी बहुत पटु थे, टेनिस भी मार्क की खेलते, अचूक निशाना भी लगाते और प्रत्येक बड़ी दावत अथवा बत्थोत्सव में उनकी उपस्थिति से जग्न पड़ जाती थी । यही नहीं खातिरदारी भी वह बड़े चाव से करते थे और अवसर के अनुकूल गुलदस्तों, चॉकलेट के बक्सों और तरह तरह की नवीन खाद्य सामग्री से मेहमानों को लुभाया करते थे । विशेष कर ऐसी स्त्रियाँ जिनकी आयु ढलती रहती उनकी कृपा-पात्र विशेष रूप से होती थीं । दावतों में, इस आयु की स्त्रियाँ प्रायः अकेली पड़ जाती हैं और ऐसे अवसरों पर इलियट सदा आगे आकर उनका मनोरंजन किया करते और कभी भी उनकी सेवा से पीछे न हटते; कठिन से कठिन कार्य वे अपने सर खुशी से ओढ़ लेते और उसे पूरा करने में जरा भी कोर-कसर न देखते । इसी गुण के कारण अनेक रईस घरों में उनकी बुलाहट रहती और वह किसी को भी निराश नहीं करते । सामाजिक रूप से सरलता और सौजन्य उनमें विशेष था और इसका सबसे बड़ा प्रमाण तब मिलता था जब इलियट बड़ी प्रसन्नता से और बिना बुरा माने हुए उन दावतों का भी निमन्त्रण स्वीकार कर लेते थे जिनमें या तो कोई महत्वपूर्ण मेहमान आखीर वक्त धोखा दे जाता या दावत में किसी प्रकार की गड़बड़ी की संभावना होती । इन दावतों में चाहे उनको बुड्डी से बुड्डी महिला के बगल में बैठने को कहा जाता वह कभी पीछे न हटते और यथासंभव उनका

मनोरंजन करते ।

लन्दन श्री इलियट की जान पहचान बहुत लोगों से थी और दो ही वर्ष के अन्दर जब जब वह वहाँ रहे बड़े से बड़े प्रतिष्ठित व्यक्तियों से उनका पत्र-व्यवहार शुरू हो गया । यही हाल पेरिस में भी था । वहाँ के सभी धनी मानी और फैशनेबिल घरों में उनका आना जाना था । अपनी युवावस्था से ही वह पेरिस आने जाने लगे थे । वहाँ शायद ही-कोई महत्वपूर्ण परिवार बचा हो जिससे इलियट का सम्पर्क न रहा हो । पेरिस आकर जैसा सभी युवा अमरीकन किया करते, उन्होंने कुछ विशेष परिवारों से अपनी मित्रता और भी घनिष्ठ की जिसके फलस्वरूप बहुत से लोग उनसे ईर्ष्या करने लगे थे । जब कभी दावतों में खिया उनका परिचय करातीं तो यह ज्ञात होता कि अनेक मेहमान उनके पुराने परिचित हैं । इलियट की लोकप्रियता से सबको बड़ा आश्चर्य होता और महिलाएँ प्रायः यह सोचतीं कि शायद उन्हीं लोगों के निमंत्रणों और दावतों के कारण इलियट ने अपना सामाजिक परिचय इतना बढ़ा चढ़ा लिया और परिचय कराने वाले व्यक्ति कहीं पीछे छूट गए । कभी कभी दावत देने वाली स्त्रियों को प्रसन्नता इस बात पर होती कि जिस व्यक्ति को उन्होंने समाज में आगे बढ़ाया उसका सम्मान हो रहा है । परन्तु यह विचार उन्हें रह रह कर आया करता था कि इलियट बड़े आदमियों के खुशामदी हैं और वह सदैव इसी उधेड़ धुन में रहा करते हैं कि किस प्रकार किसी बड़े आदमी से उनकी घनिष्ठता बढ़े । यह सच भी था कि वह बहुत बड़े चाटुकार थे और श्रेष्ठ व्यक्तियों से मिलने में सौभाग्य समझा करते थे । सबसे तमाशे की बात यह थी कि इस पर न तो उन्हें ग्लानि होती थी और न क्रोध आता । वह बड़ों से मैत्री बढ़ाने के लिए सब कुछ सहन करने को तैयार थे । उनका प्रमुख ध्येय था बड़ी दावतों में निमंत्रित होना चाहे इसके लिये उन्हें अपमानित होना पड़े, चाहे खुशामद करनी पड़े, चाहे कितनी भी याचना करनी पड़े । जब उनको

यह सूचना मिल जाती कि अमुक दावत में अमुक रईस आने वाला है अथवा अमुक सम्पत्ति-वान स्त्री आने वाली है तो वह दावत में निमन्त्रण पाने के लिए एड़ी चोटी का पसीना एकट्ठा कर देता। उन्हें इसमें सफलता भी मिलती। जिस तरह से शिकारी अपने शिकार की भूलक पाकर उसके पीछे घंटो चला करता है और अन्त से सफल होता है उसी प्रकार इलियट सम्पत्ति-पूर्ण विधवाओं के पीछे अपने झोरे ढालते थे। इस उद्देश्य की पूर्ति में सन १९१४ की पहली लड़ाई उनके लिये स्वर्ण-अवसर ले आई। जब लड़ाई समाप्त होने ही वाली थी वे घायलों की सेवा करने वाली फौजी टुकड़ी के नायक बनें गये और पहले-पहल फ्लैण्डर्स में अपनी सहानुभूति-पूर्ण सुश्रूषा के लिये सरकार से स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तत्पश्चात् वे पेरिस आए और वहाँ भी उन्हें सम्मान-सूचक पदक मिले। एक वर्ष के अनन्तर ही उन्होंने अपनी इस सफल देश-सेवा से इतना धन इकट्ठा कर लिया कि उनकी प्रायः पूल होने लगी। जब जब नगर का कोई प्रमुख व्यक्ति चन्दा इकट्ठा करता, सार्वजनिक कार्य चलता, जनोपयोगी योजनाएँ बनाता, इलियट का नाम चन्दा देने वालों में प्रथम रहता। जिस किसी योजना में देश के प्रमुख रईस व्यवस्थापक होते इलियट खुले हाथों अपना सहयोग देते और जिस योजना की प्रशंसा नगर नगर में होती उसमें इलियट अपना नाम अवश्य सम्मिलित करा लेते। पेरिस के दो सबसे बड़े, सबसे श्रेष्ठ और सबसे वैभव-पूर्ण क्लब के वे स्थायी मेम्बर थे। फ्रांस की फैशनबिल स्त्रियाँ उन पर लट्ठू थीं। इलियट, वास्तव में अपनी पूरी जवानी पर थे। फ्रांस के रंगीन समाज ने उन्हें अपने में सम्पूर्ण रूप से धुला-मिला लिया था।

इलियट से मेरी भेंट पहले पहल तब हुई थी जब मैं केवल एक साधारण लेखक की हैसियत से उनसे मिला था और यह स्वाभाविक ही था कि वह मेरी परवाह कम करते। हाँ, एक बात उनमें अवश्य थी। जब कभी चलते-चलाते राह में मेरी उनकी भेंट हो जाती तो वह बड़े तपाक से हाथ मिलाते और पहचान भी लेते मगर अपनी बातचीत से वह कभी भी यह नहीं जताते कि मुझसे वह मित्रता बढ़ाना चाहते हैं। साधारणतया वह खिंचे-खिंचे रहते परन्तु जब कभी थियेटर या किसी दूकान पर किसी बड़े आदमी के साथ वह होते तब तो मुझे बिलकुल ही नहीं पहिचानते बातचीत करना तो दूर रहा। इधर कुछ दिनों से मेरी रचनाओं की ख्याति बढ़ रही थी और लोग मुझसे मिलने को उत्सुक भी रहा करते थे इसलिये मैं यह अनुभव कर रहा था कि इलियट इन दिनों मुझसे कुछ अधिक तपाक से मिलते हैं और बातचीत भी कुछ पहले से अधिक ही करते हैं।

एक दिन प्रातःकाल जब मैं सो कर उठा तो मुझे इलियट का एक पत्र मिला। वह दावत में सम्मिलित होने का निमन्त्रण पत्र था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि कुछ इने गिने साधारण व्यक्ति थे और दावत भी कोई शानदार न थी। उस समय मेरी धारणा यह थी कि शायद इलियट मुझे परखने का प्रयत्न कर रहे हैं कि मैं उनसे तोल में ठीक उतरता हूँ या नहीं। इसके बाद, लेखक की हैसियत से वह मेरी प्रशंसा भी करते रहे और कुछ महीनों बाद जब पेरिस में मेरी उनकी दुबारा भेंट हुई तब उन्होंने मुझे बड़े ही तपाक से पुकारा और दूसरे ही दिन दावत में आने का निमन्त्रण दिया और आने का आग्रह भी किया। जब मैं उनके घर पहुँचा तो देखा कि पिछली दावत से यह कहीं अधिक शानदार थी; श्रेष्ठ और प्रतिष्ठा पात्र व्यक्ति भी अनेक थे और खाने की चीजों में भी एक से एक

नवीनता थी। मुझे कुछ आश्चर्य सा हुआ क्योंकि मुझे उनकी लन्दन की पिछली दावत याद थी जो बहुत ही फीकी थी, इस तैयारी और इस नवीनता पर मैं मन ही मन हंसा। मैं समझ गया कि इसका रहस्य क्या था। इलियट अपने अनुभव द्वारा जानते थे कि लन्दन के अंग्रेजी समाज में लेखक-वर्ग की कोई महत्ता नहीं, कोई पूछ नहीं, परन्तु फ्रांस के समाज में यदि लेखक न हो तो दावत जचती नहीं। चूँकि वह इस समय पेरिस में थे और वहाँ के सामाजिक जीवन में भलीभाँति परिचित भी थे इसी कारण वहाँ मेरी पूछ स्वाभाविक थी। ज्यों ज्यों दिन बीतते गए मेरी और इलियट की जान पहचान बढ़ती गई परन्तु मेरा अनुमान है कि इतना होते हुये भी वह घनिष्ठ न हो सके—कदाचित् घनिष्ठता का व्यवहार इलियट के चरित्र में ही नहीं था; वह किसी के भी अभिन्न मित्र न हो सकते थे। उनके विचार में मनुष्य की सामाजिक प्रतिष्ठा ही सब कुछ थी; इसके सिवाय उनके लिए मनुष्य, मनुष्य न था। आगे भी जब जब मेरी भेंट उनसे लन्दन या पेरिस में होती वह मुझे दावतों में कभी तो इसलिये निमंत्रित करते कि पार्टी में आदमी कम होते और कभी इसलिये कि उन्हें श्रमरीका से सैर सपाटे के लिये आए हुए व्यक्तियों की खातिर करनी रहती। मेरा अनुमान है कि इन पाटियों में आए हुये व्यक्ति कुछ तो इलियट के व्यवसाय से सम्बन्ध रखते थे और कुछ बड़े लोगों के परिचय-पत्र लाकर उनसे मिलने वाले हुआ करते थे। इन परिचय दूँदने वाले लोगों से इलियट को बड़ी उलझन होती; क्योंकि उनको खातिर से रखना और खिलाना पिलाना तो उन्हें रुचिकर था परन्तु यह असह्य था कि उन लोगों का भी परिचय इलियट के महत्वपूर्ण और बड़े बड़े मित्रों से हो। वह उन्हें इस प्रतिष्ठा से दूर ही रखना चाहति थे; जिस प्रकार वेश्या प्रेम की वास्तविक अनुभूति को अपने लिये घातक समझती है उसी प्रकार इलियट इसको घातक समझते थे। इन लोगों को निपटाने का सबसे सरल उपाय तो यह था कि उन्हें

वह छोटी मोटी पार्टियों में ले जाते, सिनेमा या थियेटर दिखलाकर उनका मनोरंजन करते और इधर उधर सैर कराकर उनसे लुटाला जाते। मगर मेहमानों को इतनी सी ही खातिर सन्तुष्ट न कर सकते थे। वे अपने देश वापस आकर इलियट की प्रशंसा भी न करते और उनकी बाँझत सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ती न होती। इलियट की यह उलझन मैं किसी हद तक दूर कर सकता था, इसलिए मेरी पूछ अकसर हुआ करती थी। जहाँ तक हो सकता मैं इलियट की प्रतिष्ठा को धक्का लगाने से बचाता और कदाचित् इसी कारण मैं उनका कृपापात्र बना हुआ था। जब कभी अवकाश होता इलियट अपनी कठिनाइयाँ मेरे कानों में डाल दिया करते और मैं उनको सुलझाने में यथासाध्य उनकी सहायता किया करता। कभी कभी जब वह ऐसे ऐसे गैरे मेहमानों से ऊब उठते तो मुझसे कहते—

‘अमरीका के लोग, देखिए, कितने बेपरवाह होते हैं—जिसे पाया उठाकर परिचय का पत्र लिख दिया और वे सब मेरे सर आ धमके। इसके यह तात्पर्य नहीं कि मुझे किसी से मिलने जुलने में कठिनाई होती है, मगर इसके यह मतलब भी नहीं कि मैं अपने जितने मित्र हों दूसरों के मत्थे मदता फिलूँ।’

जिन जिन नए परिचितों की खातिर, इलियट पूरी तरह न क्रूरते उनके घर वह गुलदस्ते और मिठाइयाँ भेज कर सारी कमी पूरी कर देने की चेष्टा करते और जब इतने पर भी मेहमानों का सन्तोष न हो पाता तो वे मुझे बुलाकर एक छोटी मोटी दावत दे डालते। इस सिलसिले में जो पत्र वह मेरे पास भेजते उसमें लिखा होता—

‘आप को जानने के लिए बहुत से लोग उत्सुक हैं, आइयेगा अवश्य नहीं तो अनेक स्त्रियों को बड़ी निराशा होगी। हाँ, देखिए श्रीमती... आने वाली हैं; बड़ी ही सम्य, बड़ी सजीली, बड़ी ही शिक्षित हैं, आप उनसे मिल कर अवश्य प्रसन्न होंगे, उन्होंने आपकी सम्पूर्ण कृतियाँ बड़े चाव से पढ़ी हैं।’

जब मैं इन दावतों में जाता और श्रीमती.....से मेरा परिचय हो तो वे कहतीं—

‘अखाह ! आप ही हैं; मैंने तो आपकी अमुक किताब पढ़ी; बहुत हो मजा आया, आप खूब लिखते हैं; आपकी अमुक पुस्तक ! हाँ उसमें तो आपने कलम तोड़ दी है ।’

वास्तव में इन पुस्तकों से मेरा कोई सम्बन्ध न होता और न वे मेरी लिखी ही होतीं ।

३

इलियट के पूर्वोक्त चरित्र से कुछ लोगों को यह भ्रम हो सकता है कि वह व्यक्ति अत्यन्त नीच और छिछोरा था; वास्तव में बात ऐसी न थी । उनमें भलमनसाहत किसी हद तक यथेष्ट थी और वह दूसरों का भला भी किया करते थे । हाँ, यह कहा जाता है कि जब वह युवा थे तो अपनी परिचित स्त्रियों के यहाँ वह फल और मिठाइयों के ढेर लगाए रहते—किस उद्देश्य से कहना कठिन है । शायद वही उद्देश्य होगा जो प्रत्येक युवा का होता है । मगर यह भी देखा गया था कि वह बहुत बाद तक उन परिचितों को न भूलते और प्रायः जब जरूरत पड़ जाती फिर भी वह इस तरह के भेंट भेजा ही करते । उनमें सत्कार करने और परिचय बढ़ाने की अद्भुत क्षमता थी । और उनके खानसामे का जवाब तो कदाचित् पेरिस भर में न था । मौसम के विपरीत अनेक स्वादिष्ट चीजें अपने मेहमानों के सामने वह ला रखता जिससे इलियट की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग जाते । इलियट की शराबें भी कुछ मामूली न होतीं । मंहगी से मंहगी और अप्राप्त से अप्राप्त शराबें वे अपनी दावतों में ढालते और दावतों में मनोरंजन की पूर्णता का विशेष ध्यान रखते और इसी विचार से वह सदैव कुछ ऐसे लोगों को अवश्य बुलाते जो दावत में रंग लाते

और हँसी की बौझारों से हर एक को प्रसन्न रखते। जो जो मेहमान उनकी दावतें खा जाते वे आपस में यह कहते सुने जाते कि 'इलियट पेरिस का सबसे बड़ा चाटुकार है और बड़े आदमियों के हाथ की कठपुतली है', मगर यह लोग इलियट की दी हुई दावतों में आते अवश्य और अवसर हाथ से कभी न जाने देते। यह था उनके भोजन और शराबों का आकर्षण।

अमरीकी होकर भी इलियट फ्रांसीसी भाषा बड़ी सफाई से बोलते थे और जब वे लन्दन रहते तो अंग्रेजी अंग्रेजों की तरह बोलने का प्रयत्न करते यद्यपि कहीं कहीं ऐसा चूकते कि उनका अमरीकी संबंध फौरन स्पष्ट हो जाता। बातें भी वे खूब कर लेते थे। प्रायः वह घूम फिर कर बड़े आदमियों की चर्चा करने लग जाते और पेरिस के सभी महत्वपूर्ण परिवारों के अवैध संबंध की अनेक कहानियाँ कह चलते। किस परिवार में अमुक लड़का किसका है; किस परिवार में तलाक का कारण क्या था; किन्हीं परिवार की अमुक लड़की अपना विवाह देर में क्यों कर पाई; अमुक महिला के यहां किस किस का आना जाना रहा करता था और उन की परिचारिकाओं में कौन पहले निकाली गई और—किसके विरुद्ध कोई प्रमाण न मिल सका इन सबका वह मानसिक लेखा रखते थे। अवैध प्रेम की कहानियाँ तो उन्हें ऐसे ही याद थीं जैसे हिन्दुस्तान के पण्डों को अपने यजमानों की वंशावली याद रहती है। कदाचित् किसी भी श्रेष्ठ फ्रांसीसी लेखक को उच्च वर्ग के पस्चिारों के रंगीन प्रेम की कहानियाँ इतनी न याद होगी जितनी इलियट टेम्पलटन को। इन कहानियों को सुनाने और दुहराने में उनकी आंखें चमक उठतीं और उनके होठों पर एक अत्यन्त कामुक मुस्कान खेल जाती—यह तभी होता था जब उनके श्रोताओं में स्त्रियाँ अधिक होती थी।

पेरिस में जब कभी मैं आकर ठहरता और इलियट भी वहीं होते तब हम दोनों कभी तो होटल में साथ खाना खाते और कभी इलियट अपने घर पर ही मुझे निमंत्रित कर लेते। अवकाश मिलने

पर मुझे उन दूकानों पर घूमने का बहुत चाव था जहां प्राचीन युग के जीवन से संबंधित चीजें विकने आती थीं। वहां मूर्तियां होतीं, चिन्ह होते, हथियार होते, समुद्र के छोटे बड़े जानवरों के ढाँचे होते— हजारों चीजें जिन्हें देखने से न तो जी भरता और न जी घबराता। वहां खरीदारी तो मैं बहुत ही कम करता मगर उस वातावरण में घूमना मुझे बहुत रचिकर था। इलियट को इन दूकानों में भुभुक्ते कहीं अधिक दिलचस्पी थी और शायद ही कोई दूकानदार मिलता जिससे उनका परिचय न होता। उनको मोल-भाव करना उतना ही पसन्द था जितना बुढ़ों को बेकार की बातचीत और मुभुक्ते वह सलाह के तौर पर कहा करते—

‘देखिए, अगर आप कोई चीज खरीदना चाहें तो मुभुक्ते कहियेगा, अपने आप न मोल करने लगिएगा नहीं तो सब मामला चौपट हो जायगा।’ ‘मुभुक्ते सिर्फ चुपचाप वह चीज दिखा दीजिएगा फिर देखिए मैं कितने सस्ते में सौदा पटाता हूँ।’

इलियट का दूकानदार से मोल तोल तो देखने लायक चीज होती। पहले तो वह तर्क करते और चीज को निक्कमी करार देते, फिर खुशामद करते और दूकानदार का हौसला बढ़ाते और जब वह इतने पर भी न पसीजता तो उलझ पड़ते, खरी खोटी भी सुनाते, अपने एहसान गिनाते और अपना सहयोग हटा लेने की धमकी देते और बिगड़ कर दूकान की चौखट तक आ जाते और जब दूकानदार पसीज जाता और सौदा बेचने पर राजी हो जाता तो फिर सिर झुका कर ऐसा मुँह बनाते कि उनको उस चीज के खरीदने की कोई आवश्यकता न थी और वह उसे खरीद कर दूकानदार पर एहसान कर रहे हैं। जब तक वह मोलभाव करते रहते मेरी ओर देखते भी नहीं और ज्यों ही सौदा पटने पर होता मुझे आँख मारते और अंग्रेजी में चुपचाप कहते—

‘बड़े सस्ते में मिल रही है, चूको मत !’ मैं उनकी बात मान लेता।

मैं इलियट से पहले पहल मिलते ही जान गया कि वह कैथलिक मतावलम्बी थे। एक पादरी जो पेरिस में कैथलिक धर्म का प्रचार कर रहा था, इलियट को दीक्षा दे गया था। वह विशेषकर रईसों को ही दीक्षित करता और जब इलियट उसी श्रेष्ठ समाज में विचरते रहते तो उन पर उसका प्रभाव स्वाभाविक ही था। पादरी ने कैथलिक धर्म का जो चित्र खींचा उसमें इलियट को यह आभास मिला कि यह वर्ग एक तरह का श्रेष्ठ क्लब-समान है जहाँ कि अनेक मेम्बर बैठकर एक दूसरे की प्रशंसा करते, दावतें खाते और सफल जीवन व्यतीत करते। इलियट के मनोनुकूल ही यह आदर्श था और वे बड़े कट्टर कैथलिक-सम्प्रदाय-वादी बन गए—फिर अनेक बड़े घर की महिलाओं से मिलने का अवसर !! कैथलिक-धर्मावलम्बी होने के नाते उनके लिए उन घरों का भी दरवाजा खुल गया जहाँ वह जाते हुए संकोच करते थे। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा उन्होंने ऐसी बना ली थी कि लोग उनसे डरने से लगे थे। वे प्रत्येक रविवार गिरजे जाते, प्रार्थना में सम्मिलित होते और अनेक बड़े तथा उच्च वर्ग के व्यक्तियों से अपनी घनिष्ठता बढ़ाने का अवसर ढूँढ़ निकालते। अपनी धार्मिक निष्ठा का प्रमाण देने वह कभी कभी रोम नगर चले जाते और वहाँ के अध्यक्षों का आशीर्वाद लेकर वापस आते। उनकी सेवाओं और उनके दानी-वृत्ति की सराहना में रोम के गिरजे के प्रधान पुरोहित ने उन्हें एक धार्मिक पद देकर सम्मानित किया। अपने व्यवसाय के साथ-साथ उन्होंने अपने नवीन धर्म के द्वारा भी अपनी बढ़ती की और सामाजिक प्रतिष्ठा दूनी कर ली। इस नवीन धार्मिक व्यवसाय ने उनको आगे चल कर अनेक शारीरिक तथा मानसिक लाभ भी पहुँचाए।

इलियट से मिलने के बाद मैं कभी कभी सोचता कि यह मनुष्य क्यों इस तरह बड़े आदमियों के पीछे उनकी परछाई के समान घूमता रहता है। यह व्यक्ति इतना पढ़ा लिखा, इतना चतुर, इतना अनुभवी

है; इतना सभ्य और इतना सौम्य बना रहता है; क्या इसको यह बातें स्वभावतः रुचिकर होंगी ? मगर यह बात निरर्थक नहीं थी। वास्तव में इलियट काफी बड़े घाव थे। जो लोग उनकी दावतों में आते उनमें अधिकांश तो मुक्तखोरे होते और अनेक निकम्मे और-मूर्ख, और इलियट उनकी एक एक रग पहचानते थे। परन्तु इन श्रेष्ठ वर्गों का रंगीन जीवन; सामाजिक महत्ता; ज्ञानदार रहन-सहन; सरकारी पदवियों की चकाचौंध उनको वशीभूत किए रहती। उन लोगों के साथ कुछ घंटे रह कर, उनकी लम्पट महिलाओं का मनोरंजन कर इलियट यह समझते कि वह भी उसी वर्ग के हैं और इस धारणा से उनको बहुत अधिक आत्मिक सन्तोष मिलता। इस सन्तोष द्वारा वह अपने को बड़ा सौभाग्यशाली समझते। सूरज की ज्योति द्वारा चमकने वाला चांद अपने को अधिक सुन्दर, अधिक मनमोहक तथा अधिक आकर्षक समझता था।

४

करीब आठ बजा होगा। मैं अपनी चारपाई से उठा ही था कि बाहर जाने की तैयारी कल्ले पर देखता क्या हूँ कि इलियट मेरे कमरे के बाहर खड़े हैं। मुझे कुछ आश्चर्य सा हुआ क्यों कि इलियट से इतनी आशा न थी कि वह दावत के सिलसिले बिना मेरे यहाँ आने का कष्ट करते। उन्होंने कुछ मुस्कराते हुए कहा—

‘मैंने सोचा कि आपको अपने साथ ही लेता चलूँ; मुझे डर लगा कि कहीं आप शिकागो में खो न जाँय।’

उनका कदाचित्त यह अनुमान था कि अमेरिका में बाहरी आदमी का अपने आप घूमना फिरना आसान नहीं। यही धारणा उन सभी अमरीकनों की होती जो कुछ दिनों यूरोप में रह आए होते थे।

मैंने कहा—‘अर्भा तो जरा जल्दी है; हो सके तो हम लोग पैदल ही टहलते टहलते चले। हवा भी जरा ठन्डी है।’

बार्त काटते हुये उन्होंने कहा—

‘मैं चाहता था कि आपसे अपनी बहिन के बारे में कुछ बातें करूँ। उनसे मिलने के पहले मैंने जरूरी समझा कि आपसे उनकी कुछ कमजोरियाँ बतला दूँ।’

मगर मैं अपना कमरा आधा बन्द कर चुका था और इसलिए बाहर निकलने के लिए वह भी तैयार हो गए। रास्ते में चलते चलते उनसे बातें होने लगीं।

वह बोले—‘शायद आप भूल गए कि आपको मेरी बहिन की दावत में चलना है; वहाँ ज्यादा आदमी न होंगे—कुल तीन—मेरी बहिन, उनकी लड़की आइजाबेल और एक चित्रकार—हम दोनों को मिला कर पाँच।’

‘यह चित्रकार कौन है ? मैंने अनभिज्ञता से पूछा।

‘वह मकानों के नकशे बनाता है और घरों को सुसज्जित करने का व्यवसाय करता है। मेरी बहिन की कोठी बड़ी खराब हालत में है। मेरी और आइजाबेल की राय थी कि उसकी मरम्मत करा दी जाय और नए सिरे से उसे सुसज्जित कराया जाय। जब आप उस कोठी को देखेंगे तो खुद ही समझ जायेंगे कि वह किसी भलेमानस के रहने योग्य नहीं। बिलकुल अस्तबल मालूम पड़ता है। शिकागो में आकर इस तरह रहना—मेरी समझ में नहीं आता, उन्हें कैसे सहन होता है ?’

इलियट की बातों से ज्ञात हुआ कि उनकी बहिन लुइसा विधवा थीं। उनके पति पुराने खानदानी आदमी थे, जमीन-जायदाद भी थी और उनके पूर्वजों का नाम भी इतिहास में चला चल रहा था। वे तीन सन्तानें—दो पुत्र और एक पुत्री छोड़ कर स्वर्ग सिधारे। अपनी मृत्यु के पहले वे अमरीका में अनेक सरकारी और महत्वपूर्ण

पदों पर रह चुके थे और इसी कारण इलियट के से श्रेष्ठ वर्ग से उनका पारिवारिक संबंध स्थापित हो सका था। मरने के बाद उनकी कई कोठियाँ बच रही थीं जिनका इन्तजाम श्रीमती लुइसा के सर पर आ पड़ा क्योंकि उनके दोनों लड़के काफ़ी बड़े थे और वे दोनों मध्य-पूर्व में फौजी अफसर थे। अमरीका से उनका संबंध कुछ कुछ टूट सा चुका था।

इलियट की राय थी कि दो एक पुरानी कोठियाँ लुइसा बेच दें और उस रकम से शिकागो के अन्दर एक शानदार कोठी बनवा कर श्रेष्ठ वर्ग के अनुसार ही रहें। मगर पूर्वजों का नाम चलाने का लोभ श्रीमती लुइसा सरलता से संवरण न कर सकती थीं। उन्हें वह कोठिया बड़ी प्यारी थीं। बहुतों को तो उन्होंने देखा भी न था और कुछ इतनी बे-मरम्मत हो रही थीं कि उनको नये खिरे से बनवा कर रहने में ही रहने वाले की कुशल थी। उन कोठियों के पास ही गाँव वालों ने गावों और सुअरों के बाड़े बना रखे थे जो इलियट को असह्य था। इलियट का कहना था कि उन कोठियों को फिर से ठीक कराने में उतनी ही रकम लगेगी जितने में एक बड़ी शानदार कोठी शहर में तैयार हो सकती है। परन्तु इलियट की व्यवसायिक और पारिवारिक नीति श्रीमती लुइसा को सन्तुष्ट न कर पाती। सुअरों और गावों के बाड़ों की चहारदीवारी ज्यों ज्यों घर की दीवारें गिरती जाती, बढ़ती जाती। उनको देखने वाला केवल श्रीमती लुइसा का आत्माभिमान ही था।

श्रीमती लुइसा की कोठी अब भी दूर थी और इलियट पैदल चलने के अधिक आदी न थे। रास्ते में जाती हुई एक टैक्सी रोकी गई थोड़ी ही देर में हम लोग एक लाल रंग की कोठी के पास आ रुके। हम लोगों के उतरते ही एक बिलकुल सफ़ेद बाल वाला दृष्टी खानसामा सामने आया और बड़े अदब से हम लोगों को ड्राइंग-रूम में ले जाकर बिठला दिया। इतने में ही श्रीमती लुइसा भी आ गई।

इलियट ने मेरा परिचय उन्हें दिया। मेरा अनुमान है कि वह अपनी युवावस्था में सुन्दर अवश्य रही होगी—चौड़े मस्तक के नीचे बड़ी बड़ी मादक आँखें बार बार उनकी युवती-अवस्था की ओर संकेत करती रहती थीं। बढ़ती अवस्था ने उनके मुख पर की आभा कुछ पीली सी कर दी थी। वे न तो पाउडर लगाए थीं होंठों की लाली और नखून भी उनके सादे ही थे। मालूम होता था कि प्रौढ़ता से हार मान कर उन्होंने अपने यौवन के सारे हथियार डाल दिये हैं। बदन पर स्थूलता साफ झलक रही थी पर हार मान कर भी उनकी कमर सीधी थी। ज्यों ही वह परिचय के बाद कुर्सी पर बैठीं फुकाव कहीं से भी न प्रतीत हुआ—समेट कर बंधी हुई तनी चोली, सीधे कंधे, यद्यपि ढलती उमर का परिचय रुक रुक कर प्रत्येक सांस पर दे रहे थे परन्तु अस्वाभाविकता का कहीं लेश भी नहीं था। कील कांटे से दुरुस्त उनका बदन चुस्त मालूम होता था। और नीला गाउन उनके पीले मुख की आभा को भरपूर आकर्षक बनाने का अथक प्रयत्न करता जा रहा था। गाउन का ऊँचा कालर उनकी कोतह गर्दन को सुराहीदार बनाने में दत्तचित्त था और उनके सिर के बाल जिन पर बुढ़ापे की सफेद भीनी परछाई—पड़ चली थी चक्कर दार चोटियों में गुये हुये प्रौढ़ता का भार ढोने को प्रस्तुत हो रहे थे। सब मेहमान अभी तक न आ पाये थे। इधर उधर की बातें होने लगीं।

‘इलियट ने मुझसे बतलाया कि आप सुदूर पूर्व जाने वाले थे ? क्या आपने रोम नगर रास्ते में नहीं देखा ?’

‘जी हाँ, मैं रोम में करीब एक सप्ताह ठहरा था।’

‘तब तो आपने रानी मार्गरीट से अवश्य मुलाकात की होगी ?’

इस प्रश्न पर मैं कुछ चकित सा हुआ। अपने को संभालते हुए मैंने कहा—‘मैं तो उन्हें जानता भी नहीं और न उनका नाम ही सुना ?’

‘क्या कहा ? आपने नाम भी उनका नहीं सुना ? आप उनसे मिले भी नहीं ? बड़ा आश्चर्य है, आप वहां एक हफ्ते करते क्या रहे ?

रोम में उनको कौन नहीं जानता ? उनके सौन्दर्य का शायद ही कहीं सानी मिले; मेरे पति उनके सेक्रेटरी थे। आपको उनसे अवश्य मिलना चाहिए था। आपका रंग तो इलियट से कहीं अधिक साफ है और आप आशानी से उनसे अधिक घनिष्ठता बढ़ा सकते थे।’

मैंने बहुत दबी जबान से कहा—‘लेखक वर्ग ज्यादातर राजाओं और रानियों से मिलने में हिचकता है।’

‘मिलने में हिचक की क्या बात ? फिर रानी मार्गरीट तो खुले दिल से मिलती है; कितनी भोलीं हैं वह; कितनी सरल; आप उनसे मिलते तो उनको आजीवन न भूलते; वह हैं ही ऐसी महिला !’

रानी मार्गरीट की प्रशंसा चल ही रही थी कि खानसामे ने दरवाजा खोला और कहा—मिस्टर ग्रिगरी !

ग्रिगरी ही निमन्त्रित चित्रकार थे। नाटा कद, स्थूल शरीर, अन्डे की तरह सिर, जिस पर के बाल सब झड़ चुके थे और जिन की याद कानों तथा गर्दन के पास जमे हुए पट्टों से ही आती थी, लाल भभूका सा मुँह जिसको देखने से मालूम पड़ता था कि सिर्फ शराब पीने के और दूसरा काम उससे लिया ही न गया हो; चकमक आँखें, मोटे भद्दे होठ, और गिरा हुआ जबड़ा—यह थे मिस्टर ग्रिगरी। ग्रिगरी अंग्रेज थे और मेरी उनकी मुलाकात लन्दन के अनेक होटलों में हो चुकी थी। हंसोड़ वह नम्बरी थे; कहकहा लम्बा लगाते और मिनट भर में ही दोस्ती बढ़ा लेते मगर उनके हंसोड़पन के पीछे एक प्रवीण व्यापारी का मस्तिष्क छिपा हुआ था। घरों और कोठियों के सजाने की कला में इस समय वह सबसे श्रेष्ठ संमझे जाते थे और फीस भी लम्बी लेते थे। अपनी व्यावसायिक बातों से ऐसा वातावरण प्रस्तुत कर देते कि उनका मुबकिल उसी में चकित हो, फंस कर रह

जाता। इतने ही में खानसामा शराबों के भरे हुए गिलास लाकर रख गया।

‘हम लोग आइजाबेल के आने तक इन्तजार न करेंगे; न जाने वह कब तक लौटे।’ इतना कह कर श्रीमती लुइसा ने एक गिलास उठा लिया।

‘क्या वह बाहर गई है?’ इलियट ने पूछा

‘हां। वह लैरी के साथ गोल्फ खेलने चली गई है; शायद उसे देर लग जाय।’

इलियट ने मेरी ओर देखते हुए कहा—‘लैरी आइजाबेल का अभिन्न-मित्र है; लुइसा के कहने के अनुसार आइजाबेल और लैरी की सगाई होने को है।’

बात छोड़ कर मैंने पूछा—‘क्या आप भी शराब पीते हैं?’

‘पीता तो नहीं हूँ, मगर इस जंगली मुल्क में जहां सरकारी निषेध इतना कड़ा है लोग पियें—न तो क्या करें?’

‘इलियट! तुम तो शराब के नाम से ही बहकने लगते हो’—कुछ रुष्टता दिखलाते हुये श्रीमती लुइसा ने अपनी भौंहें तिरछी कीं। मैंने उनके इस भाव से जान लिया कि इस स्त्री में कुछ तेवर हैं; मैं समझ गया कि शायद गिरगी की दाल यहाँ आसानी से न गलने पायेगी। गिरगी बड़े ध्यान से सम्पूर्ण कमरे को देख रहे थे। कमरा बहुत ही बड़ा था। दीवारों पर बिस्कुटी रंग का कागज भद्दा हो रहा था। कमरों के परदे और कुर्सियों के गद्दे एक ही रंग के थे तो जरूर मगर इस्तेमाल ने उनका रंग फीका कर दिया था। पुराने पूर्वजों की तस्वीरें बड़े बड़े सुनहले चौखटों में कसी हुई हर तरफ बिना किसी तरतीब के लटकती हुई थीं। पुरानी नक्काशीदार मेजें, सजावटदार तिपाइयां उन पर बिछे हुए मेज-पोश, हाथी दांत के खिलौने, बड़े छोटे अनेक नमूने के पुराने बिजली के लैम्प, हर तरह की चीजें इधर उधर रखी दिखलाई देती थीं। इन सब चीजों का श्रीमती लुइसा के

व्यक्तित्व से गहरा संबंध था। उसी पुरातात्विक वातावरण की वह भी एक महत्वपूर्ण अंग हो रहीं थीं।

अपने अपने गिलास हम लोग खाली ही कर रहे थे कि कमरे का दरवाजा खुला और एक लड़की अन्दर आई। उसके पीछे एक लड़का था। आते ही उसने पूछा—

‘क्या हम लोगों को बहुत देर तो नहीं हो गई ? मैं लैरी को अपने साथ ही लेती आई ? खाना क्या खत्म हो गया ?’

श्रीमती लुईसा आइजाबेल की उतावली पर मन ही मन मुस्कराई और बोलीं—‘देर तो कर ही दी तुमने ? खाना लगवा लो ?’

मेरी ओर झुक कर श्रीमती लुईसा ने परिचय दिया—‘यह है मेरी लड़की आइजाबेल; और यह है लॉरेन्स-जिनका प्यार का नाम है लैरी।’

आइजाबेल ने जल्दी में हाथ मिलाया और ग्रिगरी पर बरस पड़ीं—‘मिस्टर ग्रिगरी ! जाने हम लोग कब से आपका इन्तजार देखते आए और आपको आज फुरसत मिली। मैं तो राह देखते देखते पागल हो उठी। मैं मां से न जाने कितनी बार आपको बुलाने के लिए कह चुकी थी। मैंने आपके सजाये हुये कमरे और कोठियाँ देखीं। मुझे तो बहुत ही ज्यादा पसन्द आईं !’

ग्रिगरी ने अपने व्यवसायी नेत्रों से श्रीमती लुईसा की ओर देखा मगर वह मूर्तिवत बैठी थी; उन्होंने कुछ भी भाव न प्रकट होने दिये। ग्रिगरी ने बड़े जोर का कहकहा लगाया। यह उनके व्यावसायिक प्रहार की तैयारी थी; लोहा गरम हो रहा था; और यह पहली चोट थी। वे बोले—

‘जिन जिन कोठियों में आपने मेरा काम देखा वह तो मैंने ऐसा ही वैसा किया है; सजावट तो ऐसी हो सकती है कि लोग देखा करें—प्राचीन युग का सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब प्रस्तुत किया जा सकता है।’

आइजाबेल ने सन्तोष की सांस ली मगर श्रीमती लुईसा वैसे ही

मूर्त्तिवत बैठी रहीं। आइजाबेल का कद लम्बा और चेहरा सुडौल था। सुडौल चेहरे पर सीधी लम्बी नाक, सुन्दर आँखें, भरा हुआ मुँह—ठीक अपने पूर्वजों की आकृति उसने पाई थी। शायद कुछ कुछ उस पर स्थूलता आ रही थी मगर यह आभास मिलता था कि ज्यों ज्यों वह युवती होती जायगी खिलती जायगी। उसके हाथ और उसकी बाहें शक्तिपूर्ण प्रतीत होती थी और टांगों की पिंडलिया जो अपने ऊपर साए का घूँघट डाले थीं कुछ मोटी अधिक ज्ञात होती थीं। उसके शरीर का रंग वैसा ही लालिमापूर्ण था जैसे कोई कसरत करने के बाद चला आ रहा हो; शायद प्रातःकाल की हवा ने यह रंगत ला दी हो। बातचीत में वह तेज दिखलाई देती और उसके हर काम में सजीव प्रफुल्लता विदित होती थी। यौवनावस्था की ओर संकेत करता हुआ शरीर, उसकी सजीव चितवन और उसकी प्रफुल्ल-चित्तता में जीवन को समेट लेने की अपूर्व क्षमता मालूम होती थी। स्वाभाविकता तो उसमें कूट कूट कर भरी थी और उसको सामने देख कर श्रीमती लुइसा का प्रौढ़ता की ओर जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता हुआ शरीर कुछ अधिक अरुचिकर ज्ञात होने लगता था।

खाना मेज पर लगाया जा चुका था। खाने का कमरा देखते ही ग्रिगरी ने मुँह बिचकाया और अपनी आँखें इधर उधर चुपचुपाते तरीके से घुमाईं। दीवालें पर चिपका कागज कई जगह से अपना हृदय फाड़ कर अपनी वास्तविकता प्रकट कर रहा था। अनेक तस्वीरें भी टंगी थीं जिनमें अधिकतर स्त्रियों की ही थीं—बड़ी पुरानी, गतिहीन जिनमें शायद श्रीमती लुइसा के पूर्वजों का रक्त रहा होगा। दाहिने कोने में एक बहुत बड़ी तस्वीर श्रीमती लुइसा के पति के परदादा की थी—सुनहले चौखटे में सुसजित-जिसका सुनहलापन पानी बरसने के बाद की बदली के समान फटा जा रहा था।

‘मिस्टर ग्रिगरी बतलाइए तो इस तस्वीर के विषय में आपकी क्या राय है?’ आइजाबेल ने पूछा।

‘मुझे तो वह बहुत कीमती जंचती है !’ ग्रिगरी ने श्रीमती लुइसा की ओर देख कर कहा ।

‘कीमती ! इस पर न जाने कितना रुपया अब तक खर्च हो चुका है । कहाँ कहाँ यह हम लोगों के साथ नहीं रही; समस्त यूरोप यह धूम चुकी है—सारा स्पेन ! सारा फ्रांस !

‘बतलाइए तो मिस्टर ग्रिगरी अगर यह तस्वीर आपके यहाँ होती तो आप इसे कहाँ लगाते ?’ आइजाबेल ने पूछा ।

इसके पहले कि ग्रिगरी जवाब देते इलियट बोल उठे—‘लगाते जरूर, मगर चूल्हे में !’

कोठी के सजाने की बातें चल पड़ीं । इलियट कुछ कहते, लुइसा कुछ कहतीं और आइजाबेल सब पर पानी फेर देती ।

ग्रिगरी तब अपने सिद्धान्त बतलाते और सबको शान्त होकर सुनना पड़ता । मैं बिलकुल खामोश बैठा था और लैरी भी वैसे ही चुपचाप उनकी बातें सुनी अनसुनी करता रहा । वह मेरे सामने ही बैठा था और मैं अक्सर उस पर अपनी निगाह डाल लेता था । मुझे वह एक भावुक किशोर समान दिखलाई दिया; इलियट से कुछ कद में छोटा मगर अत्यन्त स्वाभाविक और सरल; शायद उसमें संकोच और भीरुता आवश्यकता से अधिक थी । जब से वह पार्टी में सम्मिलित हुआ तब से उसने कुछ गिने चुने ही शब्द बोले होंगे, मगर वह सबकी बातें इस तरह सुनता था कि जैसे वही सब बातें करता आ रहा है । मुँह खोलकर शायद उसने दो ही चार बातें कहीं थीं । मैंने उसका शरीर, हाथ, पैर, गठन सब बड़े ध्यान से देखा । उसकी बांहें लम्बी, हाथ की उंगलियाँ गठी हुईं मगर सुन्दर, बदन छरहरा और सिजल मगर उनसे कोमलता का भाव न टपकता था । मालूम पड़ता था कि मेहनत के आदी न होते हुए भी, उसके हाथों में अपार सहन शक्ति छिपी थी । चेहरा उसका धूप के कारण तमतमा उठा था—शायद यह उसका स्वाभाविक रंग ही था, पर उस पर एक

विचित्र प्रकार की शान्ति और सौम्यता थी। गालों के ऊपर की हड्डियाँ कुछ थोड़ी उठी हुई और कनपटी में हलका सा गड्ढा नजर आता था जिसकी वजह से उसका सर कुछ अधिक बड़ा मालूम देता था। काले-भूरे बालों से आच्छादित सर जिन पर कई जगह के बाल घुँघराते हो रहे थे उसके मुख की सौम्यता और भी अधिक बढ़ा रहे थे। शायद आँखें उसकी स्वभावतः बड़ी न थीं मगर पलकों की बरौनियाँ इतनी घनी और बड़ी थीं कि अचानक ज्ञात होता था कि उसकी आँखें कहीं बड़ी हैं। उनमें एक विचित्र चमक थी— भावनाओं, गूढ़ भावनाओं से बोभिल; ऐसा ज्ञात होता था कि वह हवा को चीरकर किसी को निरन्तर देख रही हों। उसमें स्वाभाविक रूप से एक नैसर्गिक सरसता थी जिसका आकर्षण कदाचित् आइजाबेल की आँखों में उतर गया होगा। कभी कभी जब उसकी गहरी टकटकी आइजाबेल के मुख पर पड़ती तो उसमें प्रेम और अनुराग को मिश्रित लहक होती। कदाचित् दो प्रेमी हृदयों के नेत्रों द्वारा प्रस्तावित भावों से बढ़कर संसार में कोई अन्य वस्तु आकर्षक नहीं। केवल अथेड़ या प्रेमी ही उसकी सरसता को समझ सकते हैं। जब जब मेरी आँखें उन दोनों की संलग्न आँखों से टकरा जाती तो मुझे प्रतीत होता कि कहीं पर दुःख की एक रग-छिपी रग-भलक मार रही है, परन्तु यह मेरा अनुमान ही रहा होगा। उनकी प्रसन्नता और उनके सौभाग्य में कोई बाधा न दिखलाई देती थी। दोनों ही सम्पन्न थे, दानों ही प्रेम पाश में बँधे हुए थे और कोई कारण ऐसा न दिखलाई देता था जो अमंगलकारी होता।

आइजाबेल, इलियट, ग्रिगरी, घर के सजाने के बारे में परामर्श करते रहे और सबका उद्देश्य यह जान पड़ता था कि श्रीमती लुइसा जल्दी से सजाने का आदेश दे दें और काम शुरू हो जाय। मगर ज्यों ज्यों लोगों की उतावली बढ़ती त्यों त्यों श्रीमती लुइसा केवल मुस्कराती रहती—

‘देखिए जल्दबाजी न करिए; जरा मैं सोच समझ लूँ तो मामला आगे बढ़े। अच्छा; लैरी की राय भी तो लो जाय, क्यों लैरी तुम्हारी क्या राय है?’

लैरी ने कौतुकपूर्ण दृष्टि इधर उधर फेरी और कहा ‘मुझे तो कोई खास फर्क समझ में नहीं आता; जैसे अब तैसे तब?’

आइजाबेल झुल्ला पड़ी—‘तुम्हें काम बिगाड़ना ही आता है या और कुछ। चले हैं राय देने; इतना पहले समझा दिया था मगर फिर वही शरारत?’

‘अगर श्रीमती लुइसा इस कोठो को जैसा का तैसा रखना चाहती हैं और इसी में वह प्रसन्न हैं तो यह सब तूमार खड़ा करने से क्या लाभ?’

उसका उत्तर इतना सुधरा और ठीक था कि मुझे हंसी आ गई। उसने मुझे देखा और बड़े जोर से मुस्कराया। मुस्कराहट देखते आइजाबेल और भी बरस पड़ी—‘वाह, वाह, क्या नफीस बात कही है आपने जो मुस्करा रहे हैं।’

मगर उसकी मुस्कराहट रुकी नहीं—उसके सफेद मोती से दांत उसके होंठों के बीच चमकते रहे। आइजाबेल की निगाहें उस पर डटी रहीं और बीच बीच में उसके मुख पर लाली आती जाती दिखाई देती रही। मुझे उन दोनों के प्रेम में एक विचित्र बात मालूम हुई जिसका कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलता था। मुझे यह आभास हुआ कि आइजाबेल में लैरी के प्रति ममत्व की भावना अधिक है, प्रेम की कम। इतनी छोटी आयु की लड़की में यह बात कुछ अस्वाभाविक भी प्रतीत हुई। उसने अपनी आंखें फेर लीं और मिस्टर प्रिगरी को संबोधित करके कहा—

‘देखिए, इनकी बातों पर आप कोई ध्यान न दीजिए; न तो इनके अक्ल है और न शऊर। सिर्फ हवाई जहाज के पुर्जों का हाल जानते हैं; इसके आगे कुछ नहीं!’

‘हवाई जहाज के पुर्जों का हाल ! यह आप क्या कह रही हैं ?’
मैंने कुछ आश्चर्य से पूछा—

‘लड़ाई में यह हवाई जहाज चलाया करते थे ?’ ‘क्या आपको यह मालूम नहीं ?’

‘इतनी छोटी आयु में ? यह तो कुछ अजीब सी बात मालूम होती है ।’

‘छोटी आयु थी तभी तो यह कुछ भी न सीख पाये’ ! स्कूल से भाग खड़े हुए तो कनाडा जा पहुँचे; झूठमूठ अपनी आयु अठारह वर्ष लिखा ली और हवा-बाज बन बैठे । फ्रांस में लड़ाई भी लड़ आए । क्यों लैरी ?’

‘आइजाबेल ! क्या बेकार की बातें बक रही हो; देखती नहीं हो कि तुम्हारे मेहमान इन बातों से ऊब रहे हैं ?’ लैरी बोले—

‘यही नहीं; मैं इनको बचपन से जानती हूँ । जब यह पहले पहल हवाई सेना की वर्दी पहन कर आए तो मुझे बहुत ही भले लगे— कितने अच्छे पदक, कितनी ही हरी नीली पट्टियाँ, इनकी सेवाएँ गिना रही थीं । इसीसे तो मैं इन्हें परेशान करती रही; अब यह मान भी गए हैं ! युद्ध के रक्तपात के बाद शान्ति और प्रेम भी तो चाहिए ।’

‘सच कह रही है आइजाबेल या यों ही उड़ा रही हैं ?’ श्रीमती लुइसा ने पूछा ।

लैरी ने बात छीन ली—‘इनकी एक भी बात पर विश्वास न करियेगा; आइजाबेल हैं तो बहुत अच्छी मगर सफेद झूठ बोलने की कुछ कुछ नई आदत डाल रही हैं ।’

खाना समाप्त हो चुका था । इलियट और मैं जल्दी ही विदा हुए क्योंकि मैंने पहले से ही उनसे कह रखा था कि मुझे राष्ट्रीय चित्रालय में कुछ समय बिताना है और हम दोनों पैदल ही चल पड़े । रास्ते में हम दोनों आइजाबेल और लैरी की बातें छेड़ते चले—

‘मुझे तो दो प्रेमियों की सरल प्रेम साधना देख कर बड़ी प्रसन्नता

होती हैं'—मैंने कहा ।

‘यह नहीं देख रहे हैं आप कि उनकी उम्र कितनी कम है—
विवाह के योग्य तो बिलकुल नहीं ।’

‘कम ही उम्र में तो प्रेम और भी आकर्षक और हृदय-ग्राही
दिखलाई देता है और फिर विवाह में यदि परिणत हो जाय तो सोने
में सुहागा हो ।’

‘आप भी खूब बातें करते हैं; आइजाबेल ने अभी उन्नीसवें में
पैर रखा है और लैरी शायद बीस भी नहीं । न तो वह कहीं नौकर
और न कोई जीविका का साधन—शायद उसको दो या तीन
हजार वार्षिक कुछ इधर-उधर की जायदाद से मिल जाता है, मगर
यह भी कोई रकम में रकम है; इतने में क्या कोई अपना परिवार
ठीक से रख सकता है । इधर लुइसा भी कोई अमीर नहीं, उनके
पास जो कुछ है उन्हीं के लिए पर्याप्त नहीं ।’

‘नौकरी तो वह कहीं न कहीं पाही जायगा । उसमें कौन सी
कठिनाई है ?’

‘यही तो बात है; नौकरी कोई आसमान से तो उतरेगी नहीं;
उसके लिये तो प्रयत्न करना पड़ेगा और प्रयत्न के नाम पर तो वह
सन्नाटा खींचे रहता है । मेरा विचार है कि वह कुछ करना ही
नहीं चाहता ।’

‘अभी अभी तो वह लड़ाई से लौटा है; शायद कुछ दिनों में
प्रयत्न करेगा ही । इस समय कदाचित् उसे शान्ति की अधिक
आवश्यकता है ।’

‘पूरे एक वर्ष से तो उसे शान्ति ही शान्ति है; क्या इतना समय
कम है !’

‘लड़का तो वह मुझे अच्छा लगा; बहुत सुन्दर और सुशील है !’

‘मैं कुछ उसके विरुद्ध तो हूँ नहीं । उसका वंश अच्छा है, श्रेष्ठ
और पुराना है । उसकी मां बड़ी धार्मिक थीं और पिता काफी प्रतिष्ठा

प्राप्त थे ।’

‘तो क्या वे अब नहीं हैं ?’

‘माता पिता दोनों की तो मृत्यु हो गई, कई साल हुए होंगे, उस समय लैरी गोद में था । एक दूर के संबन्धी चाचा ने उसका पालन पोषण किया है । यह डाक्टरी करते हैं और उनकी डाक्टरी के सिलसिले में ही लुइसा से इस लड़के का परिचय हुआ । उस समय लैरी बहुत छोटा था, एक तरह से लुइसा ने ही उसकी देख रेख बहुत अरसे तक की है । चाचा डाक्टर तो थे पर उन्हें शिशु-पालन का जरा भी ज्ञान न था । वह बेचारे कर ही क्या सकते थे । लुइसा ने उनकी बड़ी सहायता की । मगर खूब कभी दूर की बात तो सोच ही नहीं सकती ?’ हम लोग चित्रालय के निकट पहुँच रहे थे । वहाँ पहुँचते ही हम लोगों का ध्यान वहाँ की तसवीरों और मूर्तियों की ओर आकर्षित हुआ । इलियट जिन जिन चित्रों को देखते उन सभी पर कुछ न कुछ मतलब की बात अवश्य करते । उनका चित्रकला-ज्ञान काफी था और वे एक पटु शिक्षक की भाँति मुझे समझाते चल रहे थे । हम लोग देर तक वहाँ घूमते रहे । एक घन्टा बीतने पर उन्होंने स्वयं कहा—

‘एक घन्टे से ज्यादा यहाँ रहना तो मेरे लिये कठिन है; मेरी राय में अब चलना चाहिए’ ?

‘जो बचा है उसे दूसरे दिन के लिये रखिए’ । मैंने घड़ी देख कर कहा ।

मैंने उन्हें अनेक धन्यवाद दिए और उनसे विदा हुआ । जब मैंने श्रीमती लुइसा से चित्रालय चलते समय विदा माँगी तो उन्होंने मुझसे धीरे से कहा था कि दूसरे दिन आइजाबेल कुछ अपने मित्रों को दावत खाने बुला रही है और अगर मैं भी आ जाता तो वह मुझ से फुरसत से बातें करतीं । मैंने अपनी स्वीकृति दे दी थी । चलते चलते इलियट ने कहा—

‘मुझे तो इस शहर में बड़ा सूना लग रहा है और मैं खोया खोया सा रहता हूँ। मैंने लुइसा से तो कहा था कि मैं चार छः हफ्ते उसके साथ अवश्य रहूँगा मगर मुझे तो इतने ही दिन पहाड़ मालूम हुये। मैं जल्द से जल्द पेरिस लौट जाना चाहता हूँ। समय मनुष्य वहीं रह सकते हैं, और रहें ही कहां? क्या आप जानते हैं कि वहां के लोग मुझे क्या समझते हैं? वे समझते हैं कि मैं सनकी हूँ! कमबख्त हूँ! स्वयं जो इतने असम्य हैं!’ मैं हंसते हंसते घर लौटा।

५

दूसरे दिन शाम हो ही रही थी कि इलियट ने मुझे टेलीफोन किया और कहा कि वह मुझे लिवाने आ रहे हैं मगर मैंने फौरन ही जवाब दिया कि उनके आने की कोई आवश्यकता नहीं और मैं स्वयं ही चला आऊंगा। कपड़े पहन मैं घर से निकल पड़ा और बिना किसी से रास्ता पूछे श्रीमती लुइसा के घर पहुँच गया। पहुँचते-पहुँचते मुझे कुछ देर हरे गई थी और मुझे मालूम पड़ा कि सबके सब मेहमान आ गये हैं। बातचीत के शोर से मैंने अनुमान किया कि काफी लम्बी पार्टी होगी। मगर मेरा अनुमान गलत निकला क्योंकि मैंने पहुँच कर देखा कि कुल मिला कर केवल बारह आदमी थे। श्रीमती लुइसा ने बड़े-ठाठ के कपड़े पहन रखे थे। हरे साटन का साया-उस पर रंग बिरंगे चिड़ियों के चित्र कढ़े हुए थे, ऊँचे कालर की ब्लाउज पर सफेद और बड़े-बड़े मोतियों की माला उनके गले में बहुत सुन्दर दिखाई दे रही थी। इलियट ने बहुत नफीस और चुस्त कपड़े उच्च-वर्ग के फैशन के अनुकूल पहन रखे थे और ज्योंही उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया मुझे ऐसा आभास मिला कि मेरे शरीर पर किसी ने बहुत बढ़िया स्नान की शीशी उड़ेल दी हो—उनके सारे

कपड़े खुशबू से सराबोर थे ।

आमन्त्रित मेहमानों का परिचय शुरू हुआ । पहले व्यक्ति थे डाक्टर नेल्सन जो इस पार्टी में बिल्कुल उखड़े-उखड़े से लग रहे थे और उनसे हाथ मिलाने के बाद मैं उन्हें कुछ भूल सा गया । अधिकतर वहां आइजाबेल का मित्र वर्ग था जिसमें से एक लड़के ने मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया; वह इसलिए कि वह अपनी उम्र के हिसाब से कहीं अधिक लम्बा चौड़ा था । छ या सवा छ फुट लम्बा आदमी, चौड़े कन्धे और काफी भारी । मैंने उसे काफी देर तक देखा । वह आइजाबेल को बार-बार देख रहा था । आइजाबेल उस समय बहुत सुन्दर लग रही थी । कमर पर चुस्त सफेद रेशमी साये ने उसकी टांगों तक उसे ढक रखा था और उसकी टांगें जो शायद जरूरत से ज्यादा स्थूल दिखलाई पड़ती थीं आसानी से छिप गईं थीं । जो फ्राक उसने पहन रखी था वह इतनी कसी हुई थी कि उसके गले से लेकर कमर तक के सभी हिस्से अपने पूरे उभार पर दिखलाई पड़ रहे थे । विशेष कर उसके उरोजो का पूर्ण उभार साफ दिखलाई पड़ रहा था उसकी सुडौल बांहें कुछ मोटी तो जरूर थीं मगर समूचे शरीर के यौवनावस्था के सामने उनका पूरा छिपा हुआ ज्ञात होता था । अपने मित्रों के साथ वह बड़े उत्साह से बातें कर रही थी और उसकी आँखों में प्रेम की एक विशेष चमक थी । इसमें सन्देह नहीं जान पड़ता था कि उसका यौवन जीवन्-सूथी की खोज में था और उसकी प्रत्येक चाल ढाल में मादकता की लहर, लहराती हुई मालूम पड़ती थी ।

जब मैं खाना खाने बैठा तो मेरे बाएं एक लड़की बैठी हुई दिखलाई दी । ज्यों ही मेरी निगाह उस पर पड़ी श्रीमती लुइसा ने परिचय दिया—

‘यह है सोफी ! आइजाबेल की बड़ी पुरानी सखी है; दोनों साथ साथ स्कूल में भी पढ़ी हैं ।’

परिचय पाकर मैंने उससे बातें करने की चेष्टा की मगर वह कुछ ऐसी चुप्पी साधे रही कि मैं अपने प्रयत्न में असफल रहा। जहाँ और सब लोग आपस में इधर उधर की बातें करते जा रहे थे वह दो एक बात बोलकर चुपचाप खाने में जुट जाती थी। शायद उस समय वह शान्त बन गई थी अथवा बहुत से लोगों के सामने बातें करते उसे संकोचालूम होता था, मैं निश्चय नहीं कर पाया। वह कुछ सुन्दर तो नहीं मगर उसके मुख पर एक व्यापक मुस्कान दिखलाई दिया करती थी; उसके नाक का कोना कुछ दब सा गया था और उसकी आँखें मूरी थीं। बाल भी उसके साधारण तरह से जूड़े में गुथे थे और उन का रंग भी भूरापन लिए हुए था। दुबली तो वह इतनी थी कि उसके सीने पर यौवन की हलकी सी गोल परछाई भी न दिखलाई पड़ती थी; शीना ऐसा सपाट जैसा किसी दुबले प्रतले लड़के का, मगर वह अपनी तिरछी नजर से लोगों को देखती रहती। ऐसा ज्ञात होता था कि उसका मन उचाट पर है और वह केवल सामाजिक रीति निबाहने के नाते सबकी बातों पर दूँस रही है। मैंने अवसर पाकर उससे फिर बातें करने की कोशिश की और जब मैं फिर असफल रहा तो मैंने उससे सीधे साधे प्रश्न पूछने शुरू किए—'क्या आप यहाँ के सब मेहमानों के नाम मुझे बता सकती हैं ?'

'जी हाँ ! वह सामने देखिए। वह हैं डाक्टर नेल्सन। इन्होंने ही लैरी का श्रुलन पोषण किया है। बहुत शौकीन आदमी हैं; खास कर शराब के; और फुरसत में गिलासों से ही शगल किया करते हैं।'

मैंने उसकी आँखों में शरारत भरी हुई देखी और मुझे अनुमान हुआ कि शायद यह लड़की वास्तव में बहुत जानदार होगी। मेरा अनुमान बहुत कुछ अंश में ठीक निकला क्योंकि जिन जिन लोगों का वह परिचय देती, उनकी बड़ी चुभती हुई आलोचना भी साथ ही साथ करती जाती; कभी किसी पर छूँटे कसती, कभी किसी की खिल्ली उड़ाती, कभी मुस्कुना कर टाल देती। मैंने वहाँ बैठे हुए मोटे

तगड़े, घनी भौंह वाले एक युवा को उसे दिखला कर उसका परिचय पूछा—

‘वह हैं ग्रे मेटूरिन । उनके पिता यहाँ के रईसों में हैं; लाखों की जायदाद है और ग्रे उनका इकलौता बेटा है ।’

‘मेटूरिन के बारे में आप और भी कुछ जानते हैं ?’

‘और क्या ? उनकी इधर बड़ी प्रतिष्ठा है, उन्होंने अभी हाल ही में एक गिरजाघर बनवाया है और करीब दस लाख की रकम शिकागो विश्व-विद्यालय को दान-स्वरूप दिए हैं ।’

‘उनका लड़का तो मुझे भाग्यवान जान पड़ता है ।’

‘जी हाँ, उसका दादा एक मामूली दूकानदार था और दादी हॉटेल में खिलाने खिलाने का काम देखा करती थी ।’

इस व्यंग को सुनकर मैं चुप हो रहा और ग्रे को देखने लगा । वह सुन्दर तो नहीं था मगर तगड़ा अवश्य था । आकृति से वह सुडौल भी न था—छोटी दबी हुई नाक की रीढ़, मोटे भड़े कामुक होठ, भराया हुआ रंग, अत्यन्त काले काले बाल, बेहद चिकने, साफ और उज्ज्वल आँखें जिन पर घनी भौंहें, मालूम पड़ता था कि उसमें शारीरिक पुनस्त्व कूट-कूट कर भरा है । यद्यपि वह लम्बा चौड़ा दिखलाई देता था मगर बेडौल न था । शायद लड़कपन में सुडौल रहा होगा । चेहरे से यह साफ पता चलता था कि वह अनेक गुणों के कारण युवतियों का प्रेम पात्र रह सकता था । उसके स्वेमने बैठा हुआ लैरी लड़के जैसा मालूम होता था । सोफी ने मुझे देर तक चुप देख बातेँ शुरू की—

‘ग्रे के पीछे अनेक युवतियाँ पड़ी हुई हैं । उसकी प्रशंसा सभी करती हैं; कुछ तो उस पर इतनी लट्ट हैं कि वे उसको अपने वश में रखने के लिए ज्ञान पर खेलने को तैयार हैं । मगर उनमें किसी की भी दाल गलने वाली नहीं दिखलाई पड़ती ।’

‘क्यों ? कठिनाई कौन सी है ?’

‘तो क्या आप इस विषय में कुछ भी नहीं जानते ?’

‘मुझे तो कुछ नहीं मालूम ।’

‘वह तो बुरी तरह आइजाबेल के प्रेम-पाश में फसा है और उधर आइजाबेल लैरी के प्रेम में मस्त है ।’

‘मगर वह तो लैरी का पत्ता आसानी से काट कर अपना रास्ता साफ कर सकता है ।’

‘लैरी उसका अभिन्न मित्र है ।’

‘शायद इसी से मामला कुछ उलझा हुआ है ।’

‘ग्रे छिछोरा नहीं हैं; उसके भी कुछ सिद्धान्त हैं ।’

मैं यह पता न लगा पाया कि अन्तिम वाक्य व्यंग्य से कहा गया था या उसमें कुछ वास्तविकता भी थी । जहाँ तक मैं समझ पाया सोफी में न तो हास्य की कमी थी और न समझ की मगर जब तक वह मुझसे बातें करती रही मैं यह जानने में असमर्थ रहा कि उसकी आन्तरिक भावनाएँ क्या हैं । कदाचित् यह पता लगाना सरल भी न था । मुझे ऐसा जान पड़ा कि उसके जीवन में सूनापन बहुत दिनों से है और उसके जीवन का अधिक भाग ऐसे लोगों के साथ बीता है जो उससे अवस्था में अधिक बड़े रहे होंगे । उसमें खी-सुलभ-संकोच अधिक मात्रा में था । मैंने अपनी उलझन में उससे एक बेढङ्गा प्रश्न पूछ दिया जिसका उत्तर उसने निस्संकोच दिया—

‘आप कौन आये क्या है ?’

‘सत्रह साल ।’

‘क्या आपने अपना समय पढ़ने लिखने में बहुत लगाया है ?’

मैं अपने अनुमानों का समाधान सोच रहा था कि मुझे श्रीमती लुइसा ने अपने पास बुला लिया और तब तक खाना भी समाप्त हो चुका था । मेहमान धन्यवाद देने के बाद अपने अपने घरों की ओर चले । इसके बाद जो बातें शुरू हुईं उसमें न तो कुछ मुझे अपनी जरूरत ही मालूम होती थी और न मुझे आनन्द ही आ रहा था ।

बातचीत लैरी के विषय में छिड़ी हुई थी कि वह क्या और कैसी नौकरी करे। ग्रे के पिता मिस्टर मेदूरिन ने अपने दफ्तर में लैरी को नौकरी देना स्वीकार भी कर लिया था मगर लैरी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। सब लोगों की राय थी कि लैरी के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर है और वह अपनी मेहनत और सूझ बूझ के द्वारा अच्छी उन्नति कर लेगा। ग्रे ने भी लैरी को समझाया कि उसको नौकरी अच्छी मिल रही है और बाद में उसे बहुत लाभ होगा। इस विषय में सब लोगों में क्या क्या बातें हुईं मुझे भली प्रकार याद नहीं मगर जहां तक मुझे याद है लैरी के संरक्षक डाक्टर नेल्सन की इच्छा थी कि वह कालेज में पढ़े मगर लैरी को यह स्वीकार न हुआ। शायद उसने यह कहा कि निकट भविष्य में वह कुछ भी नहीं करना चाहता और यह स्वाभाविक भी था। गत युद्ध की भयानकता ने उसके कुमार-हृदय पर गहरा प्रभाव डाला था। दो बार वह घायल हुआ; यद्यपि उसे बहुत अधिक दिनों कष्ट न उठाना पड़ा फिर भी वह अपने को पूर्ण-रूप से सँभाल न पाया था। पूरे एक वर्ष का समय बीतने पर भी उसमें कोई मानसिक परिवर्तन न आया। जब उसने हवाई-सेना से छुट्टी ली उस समय उसकी प्रशंसा शिक्षकों के सभी अखबारों में छपी थी जिसके फल-स्वरूप अनेक व्यवसायियों ने उसे अपनी कम्पनियों में नौकरी करने को आमंत्रित किया। उनके पत्रों का उत्तर उसने सधन्यवाद दिया मगर कोई नौकरी स्वीकार न की। उसने कोई स्पष्ट कारण नहीं बतलाया; सिर्फ इतना ही कहा कि अभी तक उसने कुछ निश्चित नहीं किया है कि वह क्या करेगा। निश्चय केवल यही था कि उसे आइजाबेल से प्रेम है और इसके लिए अपनी सगाई की स्वीकृति उसने सब पर प्रदर्शित कर दी थी। श्रीमती लुइसा ने इसे स्वाभाविक ही समझा क्योंकि दोनों वर्षों साथ साथ रहे थे और उनमें प्रेम हो जाना साधारण बात थी। वह भी लैरी से बहुत स्नेह करती थी और उन्हें पूर्ण आशा थी कि वह आइजाबेल को सुखी

रखेगा। उनकी धारणा थी कि लैरी के चरित्र में जो जो कमी है उसे आइजाबेल अपने गुणों से अवश्य पूरा कर देगी। फिर दोनों के जीवन में आनन्द ही आनन्द रहेगा।

यद्यपि लैरी और आइजाबेल दोनों की वयस कम थी परन्तु श्रीमती लुइसा इस पर तैयार थी कि दोनों का विवाह शीघ्र ही हो जाय मगर उनकी भी स्पष्ट राय थी कि लैरी को विवाह के पहले अपनी जीविका ठीक तरह चलाने के लिये अच्छी नौकरी कर लेनी चाहिए। लैरी की आय थोड़ी बहुत थी जरूर मगर यह आवश्यक था कि वह शीघ्र से शीघ्र अपना जीवन-ध्येय निश्चित कर किसी व्यवसाय में लग जाय। इलियट और श्रीमती लुइसा ने डाक्टर नेल्सन का जोर भी लैरी पर डालना चाहा कि शायद वह उन्हीं के कहने पर मान जाय। मगर डाक्टर नेल्सन ने कहा—

‘यह तो आप लोग जानते ही हैं कि लैरी मेरे कहने में नहीं है; लड़कपन से ही वह अपने मन की करता आया है।’

‘यह तो स्पष्ट ही है कि उसको बिगाड़ने में आपने कुछ उठा न रखा; आश्चर्य मुझे इसी पर है कि वह किस प्रकार अपने को बचाए रहा।’ श्रीमती लुइसा की आवाज तीखी हो गई थी।

डाक्टर नेल्सन शराब के तो पुराने आदी थे और इस समय भी उनके हाथ में आधा भरा हुआ गिलास था। उनकी नाक अंगारा हो रही थी।

‘यह तो आप जानती ही थीं कि मुझे कितनी कम फुरसत रहा करती थी। मैंने उसका जीवन बनाने का कुछ ठेका तो लिया नहीं था। उसका और कोई सहारा न था इसीलिये मैंने उसे अपने यहाँ रख लिया और फिर उसके पिता मेरे पुराने मित्र थे। मैंने अपने भरसक तो भलाई ही की। वह बहुत ही जिद्दी है यह शायद आपको नहीं मालूम,’

‘जिद्दी नहीं तो सब कुछ है! उसके ऐसा सीध लड़का तो

ढूँढ़ने से नहीं मिलेगा ।’

‘अच्छा यह बतलाइए कि ऐसे लड़के से जो न तो सवाल-जवाब करता है और न किसी के रास्ते में आता है उससे कोई कैसे निपटे ? जो उसकी इच्छा होती है वह चुपचाप बिना किसी से पूछे कर चलता है और जब कोई उस पर क्रोध करता है या उसे धमकाता है तो वह चुपचाप क्षमा मांग कर पहले की तरह फिर अपने मनमाने काम में लग जाता है । उससे पार पाना बड़ा कठिन है । कभी कभी तो वह मुझे पागल कर देता था । हाँ, यह हो सकता है कि मैंने उसकी मरम्मत नहीं की । मगर भला आप ही बतलाइये कि एक तो वह निस्सहाय फिर मेरे मित्र का लड़का; मैं उसपर कैसे हाथ छोड़ता ? मनमार कर रह जाता था ।’

इलियट, जो बहुत देर तक चुप थे अब अपने को न रोक सके—

‘आप लोग तो कब से निरर्थक बातें कर रहे हैं ! साफ साफ बात यह है कि वह पूरा एक वर्ष नष्ट कर चुका है । उसको नौकरी का सबसे अच्छा अवसर मिल रहा है जिसके सहारे वह हजारों कमा सकता है और अगर उसे आइजाबेल से विवाह करना है तो उसे ऑख बन्द कर इस नौकरी को स्वीकार करना होगा ।

‘हाँ ! हाँ ! यह ठीक भी है । उसको यह जानना भी चाहिये कि संसार में बिना काम किये कुछ सरत भी नहीं । उसका स्वास्थ्य अच्छा है और उसे किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहिये । पिछली लड़ाई में बहुत से आदमी जो वापस आये हम लोगों पर केवल बोझ बने रहे । लैरी को अपना जीवन बनाना ही चाहिये ।’

इस अवसर पर मैंने अपनी राय प्रकट की—

‘क्या आप लोगों ने उससे कभी पूछा भी कि वह नौकरी क्यों नहीं करना चाहता ? वह कारण क्या बतलाता है ?’

‘साफ साफ तो वह कुछ नहीं कहता; सिर्फ यही कि नौकरी उसे अच्छी नहीं ।’

‘मगर क्या वह कुछ करना ही नहीं चाहता ?’

‘मालूम तो ऐसा ही होता है।’

डॉक्टर नेल्सन का गिलास खाली हो चुका था और उन्हें खाली गिलास देखते रहना असह्य था। गिलास भरते हुए उन्होंने अपनी आखिरी राय दी—

‘मेरी समझ में बात कुछ और ही है। यद्यपि मैं मनुष्य के चरित्र को ठीक ठीक परखने का दावा नहीं करता मगर तीस वर्ष की डाक्टरी का अनुभव मुझे बतलाता है कि युद्ध का प्रभाव लैरी पर बहुत अधिक पड़ा है। वह बिलकुल दूसरा ही आदमी मुझे मालूम होता है; उसमें पहले की कोई भी बातें नहीं हैं। कुछ ऐसी बात अवश्य हुई है जिससे उसका सम्पूर्ण चरित्र बदल गया है; वह पहले जैसा अब बिलकुल ही नहीं है।’

‘ऐसी खास बात हो ही क्या सकती है ?’ मैंने पूछा।

‘यह तो मैं ठीक ठीक नहीं बतला सकता मगर इतना अवश्य जानता हूँ कि हुआ कुछ जरूर है; वह लड़ाई के बारे में किसी से बातें नहीं करता; अपने अनुभवों को भी वह किसी पर प्रकट नहीं करता; क्या आप लोगों से उसने इस विषय में कुछ कहा है ?’ श्रीमती लुइसा ने अपना सिर हिला दिया।

‘मुझे याद है कि जब वह पहले पहल लड़ाई से वापस आया तो हम लोगों ने बहुत बार उससे पूछा कि उसने क्या क्या देखा ? उसे क्या क्या कष्ट उठाने पड़े ? उसके दोस्त कैसे थे ?’ मगर उसने केवल यही कहा कि कोई बात हो तो बतलाऊँ। उसने आइजाबेल से भी कुछ नहीं कहा। उसने जानने की कोशिश भी बहुत की मगर लैरी ने अपना मुँह न खोला।’

इसी तरह से बातें चलती रहीं। डाक्टर नेल्सन का तीसरा गिलास खाली हो चुका था; उन्होंने घड़ी देखी और रुकना माँगी। मैंने भी देखा देखा चलने की तैयारी की मगर श्रीमती लुइसा ने मेरे रुकने पर

आग्रह किया और साथ ही साथ अपने घरेलू चर्चे से जो वह मेरा समय नष्ट कर रही थीं उसके लिए माफी भी मांगती रहीं। मैंने आश्वासन दिया कि मैं पूरी सहानुभूति रखता हूँ और जो कुछ मुझ से हो सकेगा मैं करने को प्रस्तुत हूँ। श्रीमती लुइसा कुछ कुछ भिन्नक रही थीं। इलियट ने भिन्नक दूर करने के लिये कहा—

‘लुइसा ! तुम निस्संकोच बातें कह सकती हो, ये मेरे पुराने मित्र हैं।’

‘क्या आपने ग्रे मेटूरिन को ध्यान से देखा ?’ मैंने बात-चलाने की इच्छा से कहा।

‘उस पर किसकी आँख नहीं उठेगी!’ इलियट बोले। ‘वह आइजाबेल का पुराना प्रेमिक है। जब तक लैरी लड़ाई पर बाहर रहा वह आइजाबेल को आकर्षित करता रहा। यदि लड़ाई कुछ दिनों चलती रहती और वह वापस न लौटता तो शायद आइजाबेल उससे विवाह भी कर लेती। ग्रे ने बहुत आगे कदम बढ़ा लिया था मगर आइजाबेल न जाने क्या सोच कर न तो इन्कार ही करती थी न स्वीकार। शायद वह लैरी के आने के पहले अपना निश्चय प्रकट न करना चाहती थी।’

‘ग्रे क्या लड़ाई में नहीं भरती हुआ ?’ मैंने पूछा।

‘जब उसके स्वास्थ्य की जाँच हुई तो पता लगा कि बहुत दिनों खेल इत्यादि खेलने के कारण उसका दिल कमजोर हो गया है। इस लिए उसकी भरती नहीं हुई। कोई बीमारी नहीं थी; मगर फौज में वह नहीं लिया जा सकता था। मगर जब लैरी वापस आ गया तो सब बात ही बदल गई। आइजाबेल ने अपनी आँखें फेर लीं।’

मैंने इलियट की पूरी बात सुनने की इच्छा से उन्हें टोका नहीं। ‘हां ! यह सही है कि लैरी बहुत अच्छा लड़का है; बड़ा हिम्मती है, इसी के कारण उन्होंने हवाई-सेना में अच्छा नाम पाया; अगर मुझे भी कुछ मनुष्य की पहचान है। सभी को देखिए। कला और अनेक गुणों

की बदौलत ही मैंने अपनी हैसियत बनाई है; सब निधियों के पाने के लिए हिम्मत और मेहनत आवश्यक है। और फिर मेरा तो ऐसा विश्वास है कि लैरी यों ही अपना समय नष्ट करेगा और किसी अर्थ का नहीं होगा—न पैसा होगा; न इज्जत। ग्रे की बात बिलकुल दूसरी है; उसका वंश बहुत पुराना है, बड़े-बड़े लोग भी उसमें जन्मते रहे हैं; उसके संबन्धियों में एक पादरी भी हुए। उसके अनेक पूर्वज सेनानायक रहे हैं और बहुत से विद्वान भी थे। मैं अभी कल ही अमरीकी जाति के राष्ट्रीय वंशो का हाल पढ़ रहा था वहां उसके पूर्वजों का नाम भी मैंने देखा।

इतना सुनते ही मुझे सोफी की कही बात फौरन याद आ गई। उसी ने ग्रे के वंशजों का कच्चा चिट्ठा बतलाया था कि उसका दादा मामूली दूकानदार था और मां होटल में काम काज देखने वाली परिचारिका थी। मैं चुप ही रहा। इलियट ने प्रशंसा जारी रखी—

‘और हम लोग भी हेनरी मेडरिन को अरसे से जानते हैं। उनके ऐसा कुलीन और सम्पन्न-व्यक्ति इस तरफ कम ही हैं। ग्रे को भी वह सट्टे के व्यवसाय में दक्ष कर रहे हैं। दुनिया इस समय उन्हीं का मुँह देख रही है। ग्रे भी आइजाबेल से प्रेम करता है और मेरे विचार में आइजाबेल के लिए ग्रे ही सब से उपयुक्त वर है। पता नहीं लुइसा की राय क्या है?’

‘इलियट! तुम इतने दिनों अमेरिका के बाहर रहे हो कि यहां की सब बातें भूल गए हो। क्या यह भी भूल गए कि हमारे देश की लड़कियां अपने मनोनुकूल ही वर ढूँढ़ती हैं; वे अपने माता-पिता की सलाह ऐसे विषय पर नहीं लेतीं?’

‘यह तो कोई गर्व की बात नहीं है! मैं अपने तीस वर्ष के अनुभव से कह सकता हूँ कि जो विवाह खान्दान, हैसियत, इज्जत, पैसा, सब को ध्यान में रख कर किया जाता है वह प्रेम-विवाह की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी दुआ करता है। फ्रांस में

देखो; इससे बढ़कर सभ्य और सुसंस्कृत शायद ही दूसरा देश हों और यदि आइजाबेल और ग्रे यहाँ के रहने वाले होते तो दुबारा सोचने की आवश्यकता ही न पड़ती। वह फौरन विवाह कर लेते। हों। अगर बाद में तबियत न भरती तो आइजाबेल लैरी की मित्रता प्रेमी के रूप में बनाए रख सकती थी और ग्रे की भी तबियत यदि भर गई-होती तो वह भी किसी सुन्दर नर्तकी से अपना प्रेम बनाए रख सकता था और सब सुखी रहते। न तो कोई दुखी होता और न कोई उलझन होती।'

श्रीमती लुइसा ने एक कटान्त्रपूर्ण मुस्कान से कहा—'शायद सुन्दर नर्तकी ग्रे को मिल तो सकती है परन्तु उसको औरों से वह कब तक बचाए रख सकता यह जरा सोचने की बात होगी ?'

इलियट ने बात टालते हुए कहा—'न्यूयार्क में ही अपना सट्टे का व्यवसाय सफलतापूर्वक ग्रे चला सकता था और तुम्हें भी अगर अमेरिका में ही रहना है तो सिवाय न्यूयार्क के दूसरी सभ्य जगह है ही कौन जहाँ शरीफ शान्ति से रह सकते हैं ?'

बात खत्म होते ही मैं उठ खड़ा हुआ। मेरे उठते ही इलियट ने कहा—'कल आपको फिर आना है। मैं हेनरी मेड्रिन को कल दावत दे रहा हूँ। आपको उनसे मिलाना आवश्यक है—वह अमेरिका के सब से सफल व्यवसायी है—उन्होंने बड़ी ईमानदारी से हमारे शेयरों का हिसाब-किताब देखा है। आप उनसे मिल कर बहुत प्रसन्न होंगे।'

मैंने सम्मति दी और विदा लेकर घर चला आया।

६

मैं जिस होटल में ठहरा हुआ था उसी से लगा हुआ एक सार्व-जनिक वाचनालय था जिसमें मैं अक्सर जाकर पत्र पत्रिकाएं देखा करता था और उन लोगों के लिए जो कई पत्रिकाएं साथ साथ देखना चाहते वह जगह बहुत अच्छी थी। सबेरे ही मैं वहां पहुँच जाता और चाय पीने के समय लौट आता। एक दिन जब मैं वहाँ पहुँचा तो सबेरा भी न हो पाया था मगर एक व्यक्ति वहाँ पहले से ही बैठा हुआ बड़े ध्यान से कोई किताब पढ़ रहा था। ज्यों ही मेरी निगाह उस पर पड़ी वह उठ खड़ा हुआ—वह लैरी था।

मैंने साधारण रूप से बात छेड़ते हुए पूछा—‘कहिए, इतने सबेरे सबेरे आप क्या पढ़ रहे हैं?’

‘किताब’। एक शब्द बोल कर वह मुस्कराया मगर उसमें न तो व्यंग था और न धृष्टता, उसकी आँखों में एक विचित्र सौम्यता थी और उसकी मुस्कान में किसी को भी जीत लेने की शक्ति थी। कुछ देर चुप रहने के बाद मैंने पूछा—‘कल रात आप को दावत में आनन्द आया कि नहीं?’

‘बहुत ज्यादा’। मैं बहुत रात गए घर लौटा।’

‘मगर फिर इतने सबेरे आप यहाँ पढ़ने आ बैठे?’

‘मैं तो यहाँ अक्सर आता हूँ; यही जगह मैंने अपने लिए चुन ली है; यहाँ आकर शान्तिपूर्वक पढ़ा करता हूँ।’

‘तब तो मैं आपका समय नहीं खराब करूँगा; मुझे आज्ञा दीजिए।’

‘नहीं, नहीं, आप मेरा समय बिलकुल नहीं खराब कर रहे हैं; आइए थोड़ी देर बैठिए।’

मेरे बैठते ही उसने मुझे मुस्करा कर फिर देखा और उस मुस्कान में मुझे फिर एक ज्योति दिखलाई पड़ी जो ऐसा मालूम होता था उसकी आत्मा से प्रस्फुटित हो रही है। अलमारियों को घेर कर

उसने बैठने के लिए एक गोल जगह बना रखी थी। मैं वहीं रखी हुई कुर्सी पर बैठ गया और उसने अपनी किताब मेरे हाथ पर रख दी। वह मानव-विज्ञान की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक थी। मैंने उस पुस्तक की प्रशंसा करते हुए कहा—‘यह पुस्तक तो बहुत अच्छी है; शायद इस विषय पर दूसरी ऐसी कोई भी पुस्तक नहीं! आपको भला यह पुस्तक क्यों कर पसन्द आई?’ मैंने पूछा।

‘मैं बिलकुल अज्ञान हूँ!’

‘मगर आपकी आयु भी तो कम है!’ कह कर मैं मुस्कुराया।

वह कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा मगर मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि वह मुझसे कुछ कहना चाहता है और उसका संकोची हृदय उसकी जवान पकड़े हुए है। मैंने सोचा कि मैं उठ बैठूँ और चलने की आज्ञा लूँ तो शायद वह खुले। मैं असमंजस में था। वह चुपचाप अपने सामने देखता रहा और उसके मुख पर दृढ़ता और संयम दोनों के भाव गहरे होते जा रहे थे। मैं उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था। जब वह बोला तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह अपने अन्तरतम की भावनाओं को इकट्ठा कर शब्दों में ढाल रहा है—

‘जब मैं फ्रांस से लौटा तो सब ने मुझसे आग्रह किया कि मैं कालेज में भरती हो जाऊँ। यह मेरे लिए बहुत ही कठिन था। लड़ाई में जो कुछ मैंने देखा सुना उसके बाद कालेज जाना मेरे लिए असंभव था। बचपन में मैं स्कूल गया; वहाँ मैंने कुछ सीखा और फिर उसी तरह-नए सिरे से दजों में बैठना मुझसे नहीं हो सकता था। लोग भी मुझको दूर ही दूर रखते और मैं जबरदस्ती किसी भी काम करने पर अपने को विवश नहीं कर पाता था। मैंने सोचा कि जो मैं सीखना चाहता था मेरे शिक्षक मुझे नहीं सिखा सकते थे।’

‘यद्यपि आपको ज्ञान देना मेरा प्रयोजन नहीं फिर भी मैं आपसे सम्मत नहीं?’ मैंने जवाब दिया। हाँ, इतना मैं अवश्य अनुमान कर सकता हूँ कि दो सप्ताह लड़ाई में लड़ते रहने और वहाँ के भयावह

जीवन को भेलने और देखने के बाद आपको स्कूल या कालेज में पढ़ना रुचिकर न होता मगर आप लोकप्रिय न हो पाते इसमें मुझे सन्देह है। मैं अमरीकन विश्वविद्यालयों के विषय में तो नहीं कह सकता मगर और और यूनिवर्सिटियों के बारे में तो मुझे विश्वास है कि वे आपको हाथों हाथ रखते। यह सही है कि अमरीकन विश्व-विद्यालय के विद्यार्थी उच्छ्वल, उद्दण्ड और शोर-गुल मचाने वाले होते हैं और लड़ाई दंगे पर भी उतारू रहते हैं मगर जबरदस्ती कोई किसी से नहीं करता। पढ़ने वाले लड़के शान्तिपूर्वक पढ़ते ही रहते हैं और वे जरा सुबुद्धि से काम लें तो लोकप्रिय भी हो सकते हैं। मैं तो अपने जीवन-अनुभव से यह जानता हूँ कि कालेज में अध्ययन न कर मैंने अपनी हानि ही की है। मुझे अवसर भी मिला मगर मैं भी आपकी ही तरह दुनिया देखना चाहता था और जहाँ मेरे कई भाई विश्वविद्यालय में शिक्षा पाते रहे मैं उससे वंचित रहा और वह कमी कठिनता से ही पूरी हो सकेगी। कालेज में, शिक्षक के द्वारा पढ़ने का नियम हितकर है, यों तो भटकने वालों के लिए दुनिया पड़ी है।'

‘आपकी धारणा किसी हद तक ठीक हो सकती है; मगर मुझे भटकना पसन्द है और भटकते भटकते जब मैं अपने वांछित रास्ते पर आ जाऊँगा तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।’

‘आपने जीवन का कोई ध्येय निश्चित किया है?’

‘यही तो मैं न जाने कब से सोच रहा हूँ और अब तक निश्चय नहीं कर पाया हूँ।’

यह सुनकर मैं चुप हो रहा। इस बात का मुझे कुछ उत्तर भी न सूझ पड़ा परन्तु मैं यह भली भाँति समझ रहा था कि इस युवक के हृदय में कोई ऐसी छिपी हुई आकांक्षा है जो वह झरलता से व्यक्त नहीं कर पा रहा है; इस द्वन्द्व के फलस्वरूप मुझे उससे गहरी सहानुभूति होने लगी। पहले मैंने उससे कभी बातें

नहीं की थीं मगर आज उसकी बातें सुनकर मुझे ज्ञात हुआ कि उसकी आवाज भी असाधारण रूप से सुरीली है, उसमें मन को जीतने और बहलाने की शक्ति छिपी हुई थी। उसकी कांती लम्बी भौंहें, सौम्य आँखें, और मनमोहक मुस्कान के साथ साथ जो मैंने उसकी आवाज पर ध्यान दिया, तो मुझे आइजाबेल का ध्यान आया और मैं पूरा-रूप से समझ गया कि वह इस युवक पर अपने को क्योंकर न्यौछावर किए है। मुझे चुप देख कर उसने मुझे उसी सौम्य मुस्कराहट पूर्ण दृष्टि से देखा और मेरे भावों को समझने का प्रयत्न करने लगा। तत्पश्चात् बोला —

‘अच्छा यह बतलाइए कि कल जब हम लोग थियेटर को चल दिये तब आप लोगों ने मेरे विषय में बातें की या नहीं?’

‘हाँ, कुछ देर तक।’

‘मैं इतना समझ गया था क्योंकि मेरे चाचा को आग्रहपूर्वक बुलाया गया था। वे स्वभावतः कहीं नहीं जाते मगर जब मैंने उनको वहाँ देखा तो समझ गया कि कोई बात जरूर होगी।’

‘शायद आपको बहुत अच्छी नौकरी मिलने वाली है?’

‘इतनी अच्छी कि जिसका जवाब नहीं!’ हल्की मुस्कान के साथ उसने अनुमोदन किया।

‘क्या आप उसको भी स्वीकार नहीं करने वाले हैं?’

‘मैं तो यही समझ रहा हूँ।’

मैं यह विचार कर रहा था कि इस तरह की बातें पूछने का मेरा अधिकार ही क्या मगर यह सोचकर कि मैं एक विदेशी हूँ और दूसरे उससे अनभिज्ञ इससे वह मुझ से खुल कर बातें करेगा।

‘शायद आप यह समझते हों कि जो लोग बेकार रहते हैं अन्त में लेखक बन बैठते हैं।’ मुझे मुस्कराहट आ गई।

‘उसके लिए तो मुझमें कोई भी गुण नहीं।’

‘तब आग करना क्या चाहते हैं?’

‘आवारागर्दी।’ इतना सुन कर मैं हंस पड़ा।

‘तब तो शायद आपको इसके लिए शिकागो के बजाय कोई दूसरा शहर ढूँढ़ना पड़ेगा। इतना कह कर मैं उठ पड़ा और इधर उधर की पत्रिकाओं को देखने के बाद अपने होटल आकर खाना खाया। कुछ देर आराम करने के बाद मैं फिर वहीं पहुँचा क्योंकि वहीं बैठ कर मैं कुछ लिख पढ़ सकता था और वहाँ का वातावरण बहुत शान्त भी था। मैंने वहाँ देखा कि लैरी ज्यों का त्यों बैठा हुआ अभी तक पढ़ रहा है। जब चार बजे के करीब मैं लौटने लगा तब भी वह उसी किताब पर जुटा हुआ था। मैं शहर में कुछ खरीदने निकल गया और सब चीजें खरीद कर लौटा तब मैंने कुतूहलवश एक बार फिर पुस्तकालय में एक सरसरी निगाह डाली। तब तो मुझे और भी आश्चर्य हुआ। लैरी उसी तरह मूर्त्तिवत बैठा पढ़ रहा था। मैंने सोचा कि यह भी एक विचित्र व्यक्ति है। यही सोचता हुआ मैं अपने होटल लौट आया।

७

हेनरी मेटरलिन के आने के उपलक्ष्य में इलियट द्वारा दिया हुआ निमंत्रण मुझे याद था। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि कुल मिलाकर चार ही आदमी हैं। हेनरी मेटरलिन भी लम्बे चौड़े व्यक्ति थे ठीक अपने लड़के की तरह। उनके गाल फूले हुए और चेहरा लाल था, दबी हुई मगर फूले हुए नथनों-वाली नाक और आँखों में वही चुभती हुई तेजी और नीलापन जो अनेक सफल व्यवसायियों के मुख पर स्वभावतः होता है। शायद उनकी आयु पचास से अधिक नहीं रही होगी, मगर उनके गाल सपाट सिर से बाल इस तरह गिर गए थे कि वह दस साल आयु में बड़े मालूम होते थे। उनको देखने पर ज्ञात होता था कि व्यवसायी मामलों में पैसे पैसे पर वह छाप रखने वालों में से होंगे और हिसाब

किताब रखने में पक्के यहूदी। वह कुछ बातें भी कम कर रहे थे और मुझे ऐसा आभास हुआ कि शायद वह मुझे थाहने की चेष्टा कर रहे हैं। जहाँ तक मैं समझ सका इलियट उनके लिए मजाक उड़ाने लायक चीज थे। ग्रे अपने पिता के सामने चुपचाप बैठे थे और दावतों को मनोरंजक बनाने की स्वाभाविक कला यदि इलियट में न होती तो हम सब लोग ऊब कर जल्द खाना खत्म कर देते और घर की राह लेते। थोड़ी ही देर में बातावरण बदला और मेटूरिन ने कुछ रूखी हँसी हँस कर बातें शुरू की। बातों ही बातों में मुझे मालूम हुआ कि व्यवसायों के विषय में इलियट की काफी जानकारी थी और उन्हें आसानी से चरका नहीं दिया जा सकता था। चाहे उनमें और कितनी भी कमजोरी रही हो मगर इस विषय में उनका लोहा मानना पड़ता था। मेटूरिन ने कुछ देर बाद कहा—

‘आज ही मुझे ग्रे के मित्र लैरी का खत मिला।’

‘पिता जी ! आपने मुझसे नहीं बतलाया।’ ग्रे ने कुछ असन्तोष से कहा। मेटूरिन ने मेरी ओर देखा—

‘आप लैरी को तो शायद जानते होंगे ?’ मैंने सिर हिला दिया।

‘ग्रे ने उनकी शिफारिश की इसलिए मैंने उनको अपने यहाँ नौकरी देना स्वीकार कर लिया है। ग्रे उनका पुराना मित्र है।’

‘आपने यह नहीं बतलाया कि लैरी ने आपको क्या लिखा ?’ ग्रे ने दबी जवान से पूछा।

‘उसने मुझे धन्यवाद दिया है और साथ साथ यह भी लिखा है वह नौकरी स्वीकार करने में असमर्थ है क्योंकि वह मुझे खुश नहीं रख सकेगा और न वह स्वयं ही सुखी होगा।’

‘इससे बढ़ कर उसकी बेवकूफी और हो ही क्या सकती है।’ इलियट ने कुछ झल्लाहट दिखलाते हुए कहा।

‘आपका कहना बिल्कुल ठीक है।’ मेटूरिन बोले।

‘मुझे तो लैरी की अस्वीकृति सुन कर दुःख हो रहा है। वह हमारे

साथ साथ काम करता तो क्या ही अच्छा होता ।' ग्रे ने सहानुभूति सूचक वाणी में कहा । मेटूरिन ने ग्रे से सहानुभूति प्रकट की—

'मिस्टर इलियट ! ग्रे बहुत समर्पदार लड़का है और इसने बहुत जल्द ही सब काम सीख लिया है । मैंने इसको अपने यहाँ सबसे छोटा पद दिया था और यह अपनी मेहनत से ही इतनी उन्नति कर गया । अब मुझे पूर्ण आशा है कि मेरे न रहने पर भी यह काम भली भाँति चला लेगा । जब तक मैंने स्वयं काम देखा अपने मुव्वकिलों की कभी भी हानि नहीं होने दी; वे मुझ पर पूरा विश्वास रखते हैं और मुझे आशा है कि ग्रे भी उनका सदा विश्वास पात्र रहेगा । हाँ यह भी ठीक है कि मेरे डर ने ही ग्रे को ठीक रास्ते पर रखा है ।' ग्रे खूब हँसा ।

'अभी कल ही की बात है कि एक स्त्री अपना धन सट्टे में लगाने के लिए आई मगर ग्रे ने उस का कोई लालच न देख कर उससे रकम वापस ले जाने को कहा और जब उसने ज़िद की तो ग्रे ने उसे ऐसी खरी खोटी सुनाई कि वह रोती गाती घर भागी ।' 'लोग दलालों की बुराइयाँ करते हैं; मगर सब दलाल एक से नहीं होते । मैं तो कभी भी अपने मुव्वकिलों का पैसा सन्दिग्ध काम में नहीं लगाता; मुझे एक पाई की भी बेजा आय हराम मालूम होती है ।'

बातें खत्म करते हुए मेटूरिन ने धन्यवाद दिया और चलने की आज्ञा मांगी । उनके चले जाने के बाद इलियट ने मुझसे पूछा—

'इनके बारे में आपकी क्या राय है ?'

'मुझे तो हर नए आदमी से मिलने में प्रसन्नता होती है । विशेष करके अपने लड़के के लिए उनका प्रेम और उत्साह मुझे बहुत ही अच्छा लगा । मेरे विचार में कदाचित् इंगलिस्तान में ऐसा शायद ही देखने में आए ।'

'मेटूरिन अपने लड़के से अत्यधिक स्नेह रखते हैं परन्तु उनके चरित्र में अनेक विपरीत गुण हैं । मगर जो कुछ भी उन्होंने अपने

मुक्त्विकलों के विषय में कहा वह बिल्कुल सच है। उनके मुक्त्विकलों में हर तरह के सैकड़ों लोग हैं—बुड्ढी विधवाएँ, पेन्शन वाले आदमी नाबालिग और बड़े से बड़े आदमी, मगर सबके सब उन की बड़ी इज्जत करते हैं। इन लोगों का कभी एक पैसे का भी घाटा नहीं होने पाया। हिसाब किताब के मामले में वे बहुत सख्ती से काम लेते हैं; रियायत किंचित मात्र भी छू नहीं गई है। जहाँ उनको लाभ दिखलाई देगा वह सब कुछ कर गुजरेंगे। अपने अनेक प्रतिद्वन्द्वियों को उन्होंने उखाड़ फेंका है और तब कहीं इस ऊँचाई पर पहुँच पाए हैं।’

घर पहुँचते ही इलियट ने श्रीमती लुइसा से बतलाया कि लैरी ने मेटूरिन की नौकरी स्वीकार नहीं की। उसी समय आइजाबेल जो बगल के कमरे में अपने कुछ मित्रों के साथ खाना खा रही थी, खाना खत्म करके वहीं आ पहुँची। उसने भी यह खबर सुनी। मैंने इलियट की बातों से यह जान लिया कि उन्होंने लैरी की अस्वीकृति की बड़े कड़े शब्दों में आलोचना की होगी यद्यपि जो कुछ स्वयं उन्होंने कमाया धमाया और प्रतिष्ठा बनाई उसमें न तो उनकी कोई नौकरी का हाथ था और न किसी प्रकार के परिश्रम का मगर उन्होंने जिस जोर शोर से परिश्रम और व्यवसायी जीवन की प्रशंसा की उस पर मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं हुआ—इलियट के लिए यह स्वाभाविक ही था। उन्होंने अपनी प्रभावपूर्ण वक्तृता से जिसको हम सब लोग चुपचाप-सुन रहे थे, यह सिद्ध कर दिया कि मानव समाज की प्रगति के लिए परिश्रम करना प्रत्येक व्यक्ति का सिद्धान्त ही नहीं वरन् जीवन ध्येय होना चाहिए और जो ऐसा नहीं करता वह मानवता के साथ विश्वासघात करता है। फिर, उनकी दृष्टि में लैरी एक साधारण परिवार का लड़का था और उसको तो कोई अधिकार ही नहीं था कि वह समाज के इन अटल नियमों की अवहेलना करे। इलियट का यह विश्वास था कि अमेरिका की उन्नति का समय अब आ गया था, और इस समय को

यदि अमरीकी युवाओं ने हाथ से खो दिया तब परिस्थिति घातक होगी और अगर लैरी ऐसे युवक जी जान से कर्तव्य पथ पर डट जाय तो कोई कारण नहीं कि वे वृद्धावस्था तक लखपती न हो जाय। तत्पश्चात् अपना सब काम काज अपने दलालों के हाथ सौंप कर वे रईसों और श्रेष्ठ वर्ग के लोगों के समान पेरिस में कोठी बनवा कर रह सकते हैं। तभी उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आइजाबेल की ओर देख कर उन्होंने कहा—

‘अगर वह तुमसे प्रेम करता है तो तुमको पाने के लिए उसे परिश्रम से नौकरी चाकरी करनी चाहिए; ऐसे काम नहीं चलेगा।’

मुझे याद नहीं कि आइजाबेल ने इसका क्या उत्तर दिया मगर मैं उसकी चुप्पी देखकर समझ रहा था कि वह इस निचार से कुछ कुछ सहमत अवश्य है। उसके जितने साथी और मित्र थे कालेजों में पढ़ रहे थे; व्यवसाय सीख रहे थे, कुछ न कुछ इसलिए कर रहे थे कि आगे चलकर उनका सम्मान हो और प्रतिष्ठा बढ़े। पर लैरी का ध्यान इस ओर लगता ही नहीं था।

केवल कुछ दिनों हवाई सेना के काम करने में अनुभव के बल पर वह अपना जीवन नहीं बिता सकता; लड़ाई कब की समाप्त हो चुकी थी; लोग उसको भुला कर अपने व्यवसायों की ओर लग रहे थे और अब यह आवश्यक था कि लैरी भी रास्ते पर आकर अपना काम-काज शुरू करता। लम्बे विवाद के बाद यह निश्चय हुआ कि आइजाबेल लैरी से मिल कर उसका सम्मान जान ले और साफ साफ बातें कर अपने विवाह का समय भी निश्चित कर ले। श्रीमती लुइसा ने कहा कि वह एक टिफिन कटोरे में खाना रख देगी और दोनों मोटर से दूर चले जाँय और नदी किनारे बैठ कर बातचीत करते करते सब तय कर लें। इलियट ने हॉ में हॉ मिलाते कहा कि लुइसा खाना काफी रख देगी। जिससे दोनों देर तक बातें कर सकेंगे। यह निश्चय सुन कर आइजाबेल बोली—

‘चाचा जी ! लैरी बहुत कम खाते हैं और मेरा विचार है कि यह भी नहीं देखते कि वह खा क्या रहे हैं ?’

‘यह तो कोई प्रशंसा की बात नहीं ।’ इलियट ने उत्तर दिया ।
‘और लुइसा ! देखो एक बोतल अच्छी शराब भी रख देना, भूलना नहीं ।’—उन्होंने लुइसा को आदेश दिया ।

‘मैंने तो खूब गर्म गर्म काफी थरमास में भर कर रख दिया है ।’ इलियट ने जब बाद में मुझे सारी कहानी सुनाई तो कहा—

‘तब स्पष्ट था कि क्या फल निकलेगा । सब बेकार होगा; भला काफ़ी का प्रभाव फलदायक होता तो इन बड़िया शराबों को कौन पूछता । मैं चेतावनी देता रहा कि गड़बड़ होने पर मेरा दोष मत देना पर लुइसा ने यही कहा कि जो कुछ घर में था मैंने रख दिया; अब ये लोग जाने और इनका काम जाने ।’

बात यहीं तक हो पाई थी कि मोटर के ठहरने का शब्द सुनाई दिया । इलियट और श्रीमती लुइसा कमरे में अकेले ही थे । दोनों ने परदे डाल रखे थे मगर आइजाबेल का ऊपर आना दोनों ने देखा । श्रीमती लुइसा ने सोच कर कहा—

‘शायद वह यहाँ आती ही होगी; कमरे से कुछ लाने गई होगी ? मगर वह बहुत देर तक नहीं आई ।’

‘यक गई होगी; कहीं सो तो नहीं गई’—इलियट ने कहा ।

‘मैं अभी देखती हूँ ।’

‘मगर लैरी तो यहाँ आ सकता था ।’ इलियट ने फिर कहा ।

‘कैसी बहकी बहकी बातें करते हो; तुम्हें सिर्फ वही सूझता है ।’ श्रीमती लुइसा कुछ बिगड़ कर बोलीं ।

‘मेरा क्या ? तुम जानो तुम्हारा काम जाने ।’ श्रीमती लुइसा ऊपर गई और थोड़ी ही देर में लौट आईं । वे बोलीं—

‘वह तो पड़ी रो रही है ! लैरी पेरिस जा रहा है और शायद वह दो वर्ष तक बाहर और रहेगा; उसने उससे दो वर्ष उसके लौटने तक

अविवाहित रहने का वादा कर लिया है ।’

‘उसने कुछ यह भी बतलाया कि वह पेरिस में करेगा क्या ?’

‘तुमने क्या मुझसे निरर्थक प्रश्न पूछने की सौगंध खाई है ? मुझे भला क्या मालूम, वह मुझसे कुछ बतलाती नहीं; केवल यही कह रही है कि उसने बचन दे दिया है । मैंने उससे साफ साफ कहा—‘अगर वह तुम्हारे बिना दो वर्ष तक अकेले बाहर रह सकता है तो वह तुमसे प्रेम कदापि नहीं करता’—इतना सुनते ही वह और विलखने लगी । यही बार-बार दुहराती है—‘मैं उसकी राह में बाधा नहीं दूँगी; मैं उससे बहुत प्रेम करती हूँ; मैं उसे सुला नहीं सकती; जो बातें उसने आज मुझसे की हैं उसको सुनने के बाद तो मैं उसे भूलने की बात सोच भी नहीं सकती; आज से तो मेरा प्रेम उसके लिए दूना हो गया है । मैं तुम से रुच कहती हूँ माँ ! वह मुझ पर प्राण न्योछावर करने को तैयार है, वह मेरे बिना नहीं रह सकता । मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ, लैरी का हृदय प्रेमी का हृदय है ।’

इलियट चुपचाप सुनते रहे । उन्होंने पूछा—‘अच्छा तो फिर दो वर्ष बाद क्या होगा ?’

‘मुझसे फिर बेढङ्ग प्रश्न पूछ रहे हो ।’

‘तुमको क्या यह भी नहीं मालूम होता कि यह सब बातें कोरी बातें रह सकती हैं और इनमें तत्व कुछ नहीं ?’

‘हो सकता है ।’

‘हाँ ! मैं इतना समझ सकता हूँ कि दोनों की आयु अभी कम है और अगर दो वर्ष बीत जाँय तो उनके लिए हितकर ही होगा ।’

यह निश्चित हो गया कि इस समय आइजाबेल को छेड़ा न जाय और उसे शान्तिपूर्वक सोचने-विचारने का समय भरपूर दिया जाय । उन सबको खाना खाने बाहर जाना था । श्रीमती लुइसा बोली—‘उसकी रोई हुई आँखें देखकर वहाँ लोग क्या कहेंगे ?’ समझा बुझाकर वे लोग दावत खाने चला दिये । दूसरे दिन सबेरा होते ही

श्रीमती लुइसा ने लैरी की बात छेड़ दी मगर आइजाबेल ने कोई मतलब की बात नहीं बतलाई।

‘मुझको जो कुछ मालूम था मैंने तुमको बतला दिया माँ ! अब भी जान खाओगी ?’

‘मगर बेटी तुमने यह तो बतलाया ही नहीं कि वह पेरिस जाकर करना क्या चाहता है ?’

आइजाबेल मुस्करा पड़ी। कदाचित् यह सोच कर कि जो वह उत्तर देगी उससे सन्तोष होने की अपेक्षा उसे और भी चबराहट होगी।

‘उन्होंने मुझसे कहा है कि वह अवारागर्दी करेंगे।’

‘अवारागर्दी ! तुम क्या कह रही हो ? तुम्हारे होश ठिकाने तो हैं ?’

‘उन्होंने तो मुझसे यही कहा।’

‘मैं तो तुम्हारी बुद्धि से परेशान आ गई हूँ; अगर तुम में थोड़ी भी बुद्धि होती तो तुम फौरन ही उसको उत्तर दे देती कि वह अपने रास्ते तुम अपने रास्ते। यह तो सरासर धोखेबाजी का काम है; तुम्हें तो जैसे कुछ सूझता ही नहीं।’

आइजाबेल ने अपनी उँगली में लैरी की दी हुई अंगूठी को देखा। उसकी आँखों की कोरों में आँसू छलछला आए।

‘मैं करूँ तो क्या करूँ। वह मेरे जी में समा गए हैं।’

अब इलियट के बोलने की बारी आई। उन्होंने मुझे बाद में बतलाया कि जब उन्होंने उसको समझाना शुरू किया तो शायद उसने बातों ही बातों में उनको यह जता दिया कि उनको चाहिए कि वह अपनी काम-काज देखें न कि दूसरों के काम में हस्तक्षेप करें। उन्होंने श्रीमती लुइसा को बड़ी सावधानी से समझाया—

‘देखो लुइसा, अभी वह दोनों कम उम्र हैं। मुझे इसका पुराना अनुभव है कि इस आयु में लड़के लड़कियाँ बहकने लगते हैं और

उनका प्रेम फुलझड़ी के समान होता है। जब तक लैरी बाहर रहेगा कुछ न कुछ हो ही रहेगा। लैरी की अनुपस्थिति मे के लिए फलदायक होगी; वह सरलता से आइजाबेल पर अधिकार पा लेगा। इसमें घबराने से क्या लाभ? मैंने इलियट की दूरदर्शिता की प्रशंसा की। उन्होंने मुझे भी समझाया—‘देखिए मैंने धूप में बाल नहीं सफेद किए हैं; इस विषय पर सारा साहित्य मैंने पढ़ डाला है। शिकामो बड़े तमाशे की जगह है। यदि यहाँ दोनों मिलते रहेंगे तो उनका लगाव अपने आप ही इतना बढ़ जायगा कि फिर कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। शायद आप जानते ही हैं कि जब किसी युवा की ओर अनेक लड़कियाँ आकर्षित होती हैं तो जो उसके सम्पर्क में अधिक रहती है, भयभीत हो उससे विवाह कर लेती है—केवल इसलिए कि दूसरे उसे न पा सकें। यह अनुभव मेरा पक्का है।’

मैंने पूछा—‘लैरी कब जायगा?’

‘मुझे मालूम नहीं; शायद उसने कोई तिथि अभी तक निश्चित नहीं की है।’ इलियट ने अपने सोने के सिगरेट केस से एक बहुत बढ़िया खुशबूदार सिगरेट निकाल कर सुलगाया और पहली फूंक के चक्करदार धुँए को देखते हुए बोले—

‘आपसे कहने में तो मुझे कोई हर्ज नहीं दिखलाई देता मगर लुइसा से मैं कहना नहीं चाहता कि मुझे लैरी से न जाने क्यों आन्तरिक सद्बानुभूति है। शायद उसने लड़ाई में पेरिस का वैभव देखा होगा और तभी वह वहाँ जाना चाहता है और फिर वही तो एक शहर वच्चा है जहाँ जाकर शरीफ और सभ्य मनुष्य वस सकते हैं। मेरा ऐसा अनुमान है कि इससे पहले कि वह विवाहित जीवन में बँधे पेरिस में वह खुल खेलना चाहता है। उसको वहाँ सब कुछ करने का अवसर मिलेगा। वह जीवन की रसिकता देखेगा और जब उसका जी भर जायगा तो भूल भटक कर घर लौट ही आएगा। यह उसकी उम्र के लिये ठीक ही है। मैं पेरिस में उसकी देख-भाल

किया करूँगा और उसका परिचय बड़े-बड़े लोगों से करा कर उसको हर तरह का अवसर भी दिया करूँगा। फ्रांसीसी जीवन के उन गुप्त पहलुओं को भी मैं उसको दिखलाने का प्रबन्ध कर दूँगा जो कभी किसी अमरीकन ने स्वप्न में भी नहीं देखा होगा। फ्रांस का रंगीन जीवन लोग यों ही नहीं देख सकते; उसके लिए हम लोगों का परिचय प्राप्त होना चाहिए। लैरी अभी युवा है; मैं उसका संबंध किसी ऐसी स्त्री से करा दूँगा जो उससे अधिक अनुभवी और उससे आयु में बड़ी होगी और उसके संसर्ग द्वारा वह बहुत कुछ सीख लेगा।

‘क्या आपने अपना यह विचार लुइसा से नहीं बतलाया?’
मैंने पूछा।

‘लुइसा से भला यह बात कहने की है। उसका जीवन बहुत ही रुढ़िग्रस्त है। वह इतने दिनों बड़े-बड़े शहरों में बड़े-बड़े लोगों के सम्पर्क में रही परन्तु उसको इस उम्र में भी अकल नहीं आई। उसका जीवन बेकार ही है।’ मैं विदा लेकर घर की ओर मुस्कुराता हुआ चल दिया।

८

उसी दिन शाम को मुझे अपने एक मित्र के यहाँ खाना खाना था और वहाँ आकर मैंने देखा कि बहुत से लोग एकत्रित हैं। वहाँ पर हेनरी मेटूरिन, उनकी स्त्री, श्रीमती लुइसा, आइजाबेल तथा इलियट भी उपस्थित थे। आइजाबेल अपने लाल साये और लाल रंग के फ्राक में अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रही थी। उसकी नीली आँखें और साय-साय उसके सिर के काले घुंघराले बाल उसकी छवि को दूना कर रहे थे। वह हर एक से बड़ी उत्फुल्लता से जल्दी जल्दी बातें कर रही थी और किसी को नहीं ज्ञात हो सकता था कि कल

शाम को ही उसको इतने कठु अनुभव हो चुके हैं। खाना समाप्त होने के बाद मुझे उससे बातें करने का अवसर मिल गया। अपने काफी के प्याले और शराब के गिलास लिए लोग इधर उधर फिरने लगे। मैंने उसे प्रसन्न करने के लिए कहा—

‘मैंने लैरी को कल पुस्तकालय में बैठे हुए देखा; क्या आपसे भेंट नहीं हुई?’ ‘अवश्य देखा होगा’—इतना कहकर वह मानो सचेत हो गई और मेरी बातें बड़ी सतर्कता से सुनने लगी। मैंने कहा—

‘वह पुस्तकालय में बहुत ध्यान लगा कर पढ़ रहे थे। उनकी लगन देख कर मैं कुछ चकित सा हुआ। जब मैं सबेरे वहाँ गया तो वह बैठे पढ़ रहे थे और जब मैं शाम को गया तब भी वह वहाँ पर डटे हुये थे। मुझे तो ऐसा जान पड़ा कि वह इतने लम्बे अरसे में जैसे हिले-डुले भी न हों।’

‘वह पढ़ क्या रहे थे?’

‘मानव-विज्ञान-शास्त्र की एक श्रेष्ठ पुस्तक।’

मैं उनका मनोभाव जान न पाया क्योंकि मेरा उत्तर सुनते ही उसने अपनी आंखें नीची कर लीं मगर मेरा अनुमान है कि मेरे उत्तर पर उसे कुछ आश्चर्य सा हुआ। इसके बाद ही उसकी माता ने उसे बुला लिया और फिर मैं न जान पाया कि उसके मन में कौन सी भावना घर बना रही थी।

दो दिन बाद मैं इलियट और श्रीमती लुइसा से विदा माँगने गया क्योंकि मैं अपनी यात्रा पर आगे जाने वाला था। वे दोनों बैठे हुए चाय पी रहे थे। मेरे आने के थोड़ी ही देर बाद आइजाबेल भी आ गई। मैं अपनी यात्रा का प्रोग्राम बतला रहा था कि मैं कहाँ कहाँ ठहरूँगा। विदा लेने के बाद जब मैं घर चलने को प्रस्तुत हुआ तो आइजाबेल ने आकर कहा—‘मैं भी आपके साथ साथ थोड़ी दूर चली चली चली, मुझे बाजार से कुछ खरीदना भी है। चलते चलते श्रीमती लुइसा ने मुझसे कहा—

‘देखिए इस बार रानी मार्गरीट से मिलना न भूलियेगा और मेरी याद भी उन्हें दिला दीजिएगा-वे आपसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न होंगी।’ मैंने आश्वासन-सूचक सिर हिला दिया। जब हम दोनों सड़क पर निकल आए तो आइजाबेल ने मुझे तिरछी आँख से देखा और मुस्कुरा कर कहा—‘चलिए कहीं बैठकर सोडा पी लें।’ मुझे कोई आपत्ति न हुई। पास के ही रेस्तरा में हम दोनों एक मेज के आंगने सामने बैठ गए। ज्यों ही सोडा की पहली घूंट उसने पी त्यों ही मुझसे कहा—‘मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।’

‘यह मैं अनुमान ही कर रहा था—आप निस्संकोच पूछिए।’

‘जब आप मुझसे पिछली बार मिले थे तो आपने लैरी के बारे में मुझसे कुछ कहा था।’

‘याद तो नहीं, मगर शायद उसके पढ़ने के बारे में कुछ कहा जरूर था।’

‘क्यों ?’ उसने मुझे एकाग्रता से देखा।

‘इसलिए कि शायद उसके बारे में आपको दिलचस्पी हो और मैंने यह भी सोचा होगा कि शायद आप उसकी आवारागर्दी का सही मतलब जानना चाहती हों।’

‘चाचा जी ने जब आपको रोका तो मैं फौरन समझ गई कि आपसे उन्होंने सभी बातें कह सुनाई होंगी; उनके पेट में तो जैसे कोई बात पचती ही नहीं।’

‘मैं इलियट को बहुत दिनों से जानता हूँ; उन्हें दूसरों के विषय में बातें करने में बड़ा मजा आता है और वह कोई ऐसा अवसर हाथ से जाने नहीं देते।’

‘यह तो मैं भी देख रही हूँ ! लैरी के विषय में आपकी क्या राय है ?’

‘मैंने उन्हें केवल तीन बार देखा है; मुझे तो वह सुन्दर युवक मालूम होते हैं।’

‘बस ! सिर्फ इतना ही ।’ उसकी आवाज में करुणा की पुकार ध्वनित हो रही थी ।

‘नहीं, नहीं, इतना ही क्यों ! कुछ बातें बहुत ही अच्छी होंगी । मगर मुझे उनके विषय में कोई विशेष जानकारी भी तो नहीं । आकर्षक वह बहुत हैं, बड़े सरल, बड़े ही स्वाभाविक और सहनशीलता तो इतनी मालूम पड़ी कि मुझे अपने पर ही विश्वास न हो रहा था । बहुत से दूसरे युवकों से वह कहीं भिन्न है; मैंने तो शायद वैसा युवक अब तक नहीं देखा ।’

मुक्तों लैरी की प्रशंसा करते और उसके गुणों के बतलाने में कुछ असमंजस सा हो रहा था क्योंकि स्वयं मेरे मस्तिष्क में उसके बारे में कोई अपनी राय नहीं थी । मेरी बात खत्म करने पर उसने सन्तोष की सांस ली और मेरी ओर शरारत भरी आँखों से देखा और कहा—

‘चाचा जी कहा करते हैं कि आपकी दृष्टि बड़ी पैनी है और आप में लोगों को परखने की बड़ी अच्छी शक्ति है !’

‘कोई विशेष बात तो नहीं; आप कह सकती हैं कि मुझे शौक है ।’

‘आप तो यह जानते हो हैं कि अपने घर में अपने मन की बात मैं किससे कहूँ । माँ मेरा भविष्य सोचती हैं और उसके आगे वह कुछ सोच ही नहीं सकतीं । चाचा जी केवल प्रतिष्ठा की दृष्टि से ही सब कुछ तौलते हैं—उनसे कहा भी क्या जाय । रहे मेरे कुछ निजी मित्र और उनकी दृष्टि में लैरी को काम काज से विरक्त देख कर उनके प्रति कोई इज्जत नहीं । मुझे इन सब लोगों की बातें बहुत खटकती हैं ; कभी-कभी वे बातें सुन कर मुझे रुलाई आ जाती है ।’

‘यह तो स्वाभाविक ही है ।’

‘है तो; मगर मुझे दुःख कितना होता है । यह बात नहीं कि ये लोग उनसे घृणा करते हैं ; उनसे घृणा करना तो असंभव है मगर उनको ये सब के सब बेकार का आदमी समझते हैं और उनका सम्मान

नहीं करते। ये लोग उनको छेड़ते भी हैं, आवाजें भी कसते हैं; मगर वह मस्त रहते हैं और कुछ परवाह न कर सिर्फ इन लोगों पर मुस्कुराया करते हैं। आप तो सब जानते हैं और सब देख भी रहे हैं ?

‘मैं तो सिर्फ उतना ही जानता हूँ जितना इलियट ने मुझसे बतलाया है।’

‘अच्छा फिर मुझी से सुनिए—’

‘जब मैं खाना वगैरह लेकर लैरी के साथ उसकी मोटर पर नदी किनारे जाने को निकली तो वह मुझे देख कर मुस्कुराया परन्तु यह उसकी पुरानी आदत थी। उसकी मुस्कुराहट से पराजित होकर मैंने बैठते ही अपनी अंगूठी उसको पहना दी। जब हम लोग नदी किनारे पहुँचे तो लैरी ने सब सामान निकाल कर बाहर रखा। हम लोग नदी की लहरें, चिड़ियों की चहचहाहट, हरियाली की घनी चादर जो हर ओर बिछी थी सबको देख सुन कर मग्न हो रहे थे। लैरी ने अपना सिगार सुलगाया और चक्करदार धुँएँ की लौ को देखते-देखते कहा—

‘आइजाबेल प्रिये ! अच्छा अब कह चलो ?’ मैं कुछ परेशान सी हुई और पूछा—

‘क्या कह चलूँ ?’

‘तुमने भी मुझे क्या बिलकुल ही नादान समझ रखा है ? क्या हम लोग सिर्फ खाना ही खाने और नदी की लहरें गिनने के लिए यहाँ भेजे गए हैं ?’

‘भेजे गए हैं ? मैं तो तुम्हें अपने आप यहाँ लाई हूँ ?’

‘अच्छा यही सही। मगर बात कह तो चलो !’ उसकी बातें सुन कर मैं मुस्कुराई और चुप रही।

‘मेरा अनुमान ही नहीं वरन् विश्वास है कि चाचा जी ने तुम से बतला ही दिया होगा कि मैंने मेट्रिन की दी हुई नौकरी अस्वीकार

कर दी ?'

‘बतलाया जरूर था । ग्रे को तो बहुत निराशा हुई; वह सोच रहा था कि दोनों साथ काम करते तो कितना अच्छा होता । और तुम्हें भी कहीं न कहीं काम करने का निश्चय तो करना ही होगा और जितनी जल्दी करोगे उतना ही आगे लाभ होगा ।’ लैरी ने पाइप का कश जोरों से खींचा और मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह मखौल करने जा रहा है—

‘प्रिये ! क्या तुमसे भी यह मुझे कहना होगा कि मैं जीवन से सीखना चाहता हूँ; मैं यह नहीं चाहता कि दलाली करके अपना जीवन गवाऊँ ।’

‘अच्छी बात है—अगर वह जीवन ना पसन्द है तो डाक्टरी पढ़ने की तैयारी करो या वकील बनने की कोशिश करो ।’

‘यह सब भी मैं नहीं करना चाहता ।’

‘तब क्या करने का इरादा है—कुछ बतलाओगे भी ?’

‘हाँ ! क्यों नहीं—आवारागर्दी ।’

‘आवारागर्दी ! लैरी क्या तुम्हें हर वक्त मखौल सुझता है; कभी तो ठिकाने से बातें की जाती हैं ।’ आइजाबेल का गला भर आया था और उसकी आँखों में आँसू छलछलाने को थे ।

‘तुम रोने लगो ! मेरा इरादा तुम्हें दुःखी करने का बिल्कुल नहीं था ।’ वह उठा और आइजाबेल के पास जाकर बैठ गया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर सहलाने लगा और सन्तोष देने का प्रयत्न करने लगा ।

कहना तो बहुत आसान है, मगर तुम वास्तव में मुझे बहुत दुःखी—बहुत ही दुःखी बना रहे हो; कभी तुमने यह भी सोचा कि मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ ?’

‘मैं भी तुम्हें कम प्यार नहीं करता आइजाबेल । क्या तुम्हें विश्वास नहीं ? मेरे हृदय पर हाथ रख कर देखो ।’ मैंने एक ठन्दी सांस ली

और अपने को लैरी के प्रेम-पाश से छुड़ा कर धीरे धीरे कहने लगी--

‘देखो लैरी ! आओ हम दोनों अक्र की और तुक की बातें करें । हर आदमी को कुछ न कुछ काम करना ही पड़ता है । जीविका सब को चलानी रहती है । फिर हमारा देश अभी विकास पा रहा है और यह हर युवक का कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपने परिश्रम और अपनी निष्ठा से देश की प्रगति करे । उसी दिन हेनरी मेटूरिन कह रहे थे कि देश में इतनी विशाल उन्नति होने वाली है कि पुराना युग इस युग के सामने बर्बर मालूम होने लगेगा । उनका विश्वास है कि यदि नवयुवक अपना कार्य समझ लें और जी जान से अपने कर्तव्य में लग जाँय तो संसार में इस देश की समता नहीं हो सकेगी । क्या तुम को इस विचार से गर्व नहीं होता ?’

‘होता क्यों नहीं ।’

‘तब वह समय आ गया है जब हमारे नवयुवक अपना मुँह न मोड़ें और कर्त्तव्य-पथ पर एक मुस्तैद सिपाही की भाँति डट कर अपने देश की उन्नति करें ।’ इससे बढ़कर तो इस समय कोई अन्य काम नहीं ।’

‘एक तरह से ये विचार ठीक ही हैं; इस युग में दलाल दलाली से अपना पेट भरते रहेंगे; व्यापारी छल कपट से जागीरें खरीदते रहेंगे, मोटर बनाने वाले और भी ज्यादा मोटरें बना कर करोड़पति हो जाँयगे—मतलब यह कि सबके पास धन का ढेर लगेता जायगा, लोग रईस बनते जाँयगे ।’

‘तो इसमें खराबी क्या है; रईस बनना क्या बुरा है ?’

‘यह तो मैं नहीं कह सकता, मगर मुझे धन की चाह नहीं ।’

‘तुम्हें धन की कोई परवाह नहीं ? प्रिय लैरी कभी कुछ सोचते विचारते भी हो । क्या कोई बिना धन के भी सुखी रह सकता है ?’

‘मेरे पास थोड़ा बहुत काम चलाने के लिए काफी है; इसी कारण मैं चाहता हूँ कि अपने अरमानों को पूरा करूँ ।’

‘अर्थात् आवारागर्दी ?’

‘हाँ, प्रिये । क्या तुम्हें इससे डर लगता है ?’ लैरी एक हृदयग्राही मुस्कान फेंक कर चुप हो रहा ।

‘तुमने कभी यह भी विचार किया कि तुम्हारी इन बातों से मेरी कठिनाई कितनी बढ़ जाती है ।’

‘मुझे बहुत दुःख होता है मगर मैं करूँ तो क्या करूँ; मेरा अपने से कोई बस जो नहीं चलता ।’

‘अपने से बस नहीं चलता । अवश्य चलता है । तुम प्रयत्न ही नहीं करते !’ लैरी ने सिर हिलाया और कुछ देर ध्यान में लगा रहा और उसने फिर जो बात कही उससे आइजाबेल चौंक उठी ।

‘क्या तुम जानती हो मुर्दे में जान नहीं होती ?’

‘इसका मतलब ?’

‘वही जो मैंने अभी कहा । लोग समझते हैं कि जब तक वे जीवित हैं दुनियाँ उनकी है, इसके आगे वह कुछ नहीं जानते । कुछ सोचते भी नहीं, सिर्फ पेट भरना, शान जमाना जानते हैं, अपने अन्त का उन्हें ध्यान ही नहीं आता ।’

‘तुम्हें क्या करना भायेगा ?’

‘मैंने सोचा था कि किसी बढ़ई के यहाँ या मोटरखाने में काम करूँगा ।’

‘तब लोग तुम्हें या तो सनकी कहेंगे या पागल ।’

‘इससे मेरी हानि क्या !’

‘मगर मुझे यह सहन नहीं हो सकता ।’ दोनों काफी देर तक चुप रहे । आइजाबेल ने एक लम्बी, ठन्डी सांस लेकर कहा—

‘लैरी ! तुम न जाने क्यों पहले से बहुत बदल गए हो ।’

‘मैं तुम्हें क्या बताऊँ कि मुझ पर क्या क्या बीत चुकी है ।’

‘जैसे ?’

‘यहो मामूली बातें जो लड़ाई में हुआ करती हैं ।’ उसने अपने

मन के भाव को दबाते हुए कहा ।

‘फिर भी ।’

‘मेरा सब से बड़ा दोस्त लंडाई में मेरी रक्षा करते हुए मारा गया ; मैं उसे अब तक भुला नहीं पाया हूँ ।’ उसने वेदना भरी दृष्टि से आइजाबेल की ओर देखा । आइजाबेल ने सहानुभूति पूर्ण नेत्रों से देख कर पूछा—

‘क्या और कुछ भी नहीं बतलाओगे ?’

‘और क्या बतलाऊँ, उस विषय पर बात करना मैं नहीं चाहता । लोगों के लिए यह एक बहुत छोटी बात है,—आइजाबेल की आंखों से टप टप आंसू गिरने लगे । सान्त्वना देने की चेष्टा करते हुए उसने कहा—

‘प्रिये ! तुम्हें दुःखी देख कर मुझे बड़ी गहरी वेदना होती है और मेरी वेदना और भी असह्य हो जाती है जब मैं यह सोचता हूँ कि मैं ही तुम्हारे दुःख का कारण हूँ । मुझे मालूम होता है कि मुझे शान्ति तब तक नहीं मिलेगी जब तक मैं अपने को और दुनियां दोनों को समझ न लूँ ।’ इतना कहने के बाद वह हिचकिचाया मगर आइजाबेल का हाथ उसके हाथों में आते ही उसकी भावना फिर तीव्र हो गई—

‘मैं ठीक ठीक कह भी नहीं पाता कि मेरे मन में क्या है । संभव है मैं भावुक गर्व के बश में आकर इधर उधर की बातें सोचता हूँ । मुझे दुनियां के पुराने तरीके ठुकराने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं मगर फिर भी मैं इसमें सन्तोष नहीं पाता । मुझे मेरा साथी रह रह कर याद आता है । मैं सोचता रहता हूँ कि यह वही है जो मुझ से प्रेम करता था, हँसी करता था, साथ साथ खेलता कूदता था और आज वही मुझसे दूर मृत्यु की गोद में अटूट निद्रा में सो रहा है । यह सब क्या है ? मुझे तो यह सब व्यर्थ—दुनियां की सब चीजें व्यर्थ, निरर्थक, निष्प्रयोजन सी जान पड़ने लगती हैं । मैं किससे पूछूँ की

जीवन की क्या यही परिभाषा है—क्या उसका यही ध्येय है। यही सब देख सुन कर मेरा जी फटने लगता है—क्या अन्धी तकदीर ही हम लोगों को इधर उधर घुमा फिरा कर मिट्टी में मिला देती है—मैं क्या करूँ—मैं हत-भाग्य सा सोच भी नहीं पाता।’

लैरी के इस भावुक आवेश ने आइजाबेल को पिचला कर मोम कर दिया। वह कभी चुपचाप सोचता रहता, कभी दो एक शब्द बोलकर कर अटकने लगता और कभी जल्दी जल्दी बोलकर चार-पाँच क्षण के लिए बिलकुल चुप हो आकाश की ओर देखने लग जाता। आइजाबेल ने मौन तोड़ा—

‘क्या तुम समझते हो कि बाहर जाकर रहने में तुम्हें वही मिल जायगा जो कुछ तुम चाहते हो?’ लैरी देर तक सोचकर बोला—

‘यही सोच बार बार आता है। मैं लोगों की श्रवहेला करता हूँ, लोग उससे रुष्ट होते हैं; उसका प्रभाव मुझपर अव्यक्त रूप से पड़ने लगता है।’

‘तब तुम जाते क्यों नहीं?’

‘तुम्हारी वजह से! मैं तुम्हें किस प्रकार समझाऊँ; प्रिये देखो बुरा मत मानना—मैं इस समय यह समझ रहा हूँ कि मैं तुम्हारे जीवन के अन्दर बैठ कर अभी तुम्हें शान्ति और संतोष न दे सकूँगा।’

‘तो इसके मतलब यह हुये कि तुम अपनी सगाई मुझसे तोड़ देना चाहते हो?’ उसने एक कटु मुस्कान से देखा।

‘देखो! कह रहा था न। तुम बहुत भोली हो! मेरा मतलब यह बिलकुल नहीं था। मैं केवल जीवन का यथार्थ समझना चाहता हूँ। कदाचित् एक वर्ष अथवा दो वर्ष लग जायँ।’

‘अच्छी बात है; इससे कम भी लग सकता है; मगर तुम जाना कहाँ चाहते हो?’

लैरी ने आइजाबेल की ओर देख कर उसके अन्तरतम के भावों

प्रमाण तो सब उन्हीं लोगों के पक्ष में रहता है। कभी-कभी उन लोगों की बातें सुनते-सुनते मुझे यह भय होने लगता है कि कहीं उन्हीं की बात न पूरी उतरे। यह सोचकर मैं व्यथित हो उठती हूँ। मुझे यह भी तो ठीक-ठीक नहीं मालूम होने पाता कि वह चाहते क्या हैं।'

आप उनकी बातें हृदय से नहीं वरन मस्तिष्क से समझना चाहती हैं? यही कठिनाई जान पड़ती है। आप उनसे विवाह करके उनके साथ ही पेरिस क्यों नहीं चली जातीं?' उसके मुख पर एक फीकी मुस्कुराहट झनक मार गई—

'करना तो मैं यही चाहती हूँ मगर मेरी हिम्मत छूट जाती है। मुझसे कहते नहीं बनता पर-मैं कभी-कभी सोच बैठती हूँ कि वह कदाचित् इस समय मेरे बिना ही प्रसन्न रहेंगे। हौं अगर डाक्टर नेल्सन का कहना सच हुआ कि शायद वह नए वातावरण और नई जगह में पहुँच कर अपने पुराने और कटु अनुभव भूल जायँ और लौट कर शिकागो में अपना काम-काज देखने लगें तो मेरा रास्ता खुल जायगा और मैं सुखी होऊँगी। उनकी बेकारी मुझे सदैव उलझन में डाले रहती है।'

जिस वातावरण और जिस समाज में आइजाबेल का पालन पोषण हुआ था उसके साधारण सिद्धान्त उसके रक्त में घुल मिल गए थे। उसे धन का सोच नहीं था क्योंकि उसने यद्यपि अपने हाथ से पैसा खर्च नहीं किया था उसको कमी यों नहीं मालूम पड़ती थी कि उसकी सभी आवश्यकताएँ दूसरे लोग पूरी कर दिया करते थे मगर धन की अव्यक्त शक्ति का भान उसे सदैव हुआ करता था। सम्मान, जायदाद, मानाभिमान, सामाजिक प्रतिष्ठा, शक्ति सब के मूल में उसे धन ही दिखलाई देता था। इससे तो यह प्रमाणित था कि मनुष्य को उसे पाने का सफल प्रयत्न करना चाहिए। यही उसका प्रमुख जीवन ध्येय होना चाहिए।

लैरी के चरित्र को आप पूरी तरह नहीं समझतीं। इस पर मुझे आश्चर्य भी नहीं होता।' मैंने कुछ रुक कर कहा—'इसका एक कारण

तो यह है कि वह अपने को स्वयं ही समझ नहीं पा रहे हैं। वह अपना जीवन-ध्येय भी इसीलिए नहीं बतला सके हैं क्योंकि उसके बारे में वह स्वयं ही अन्धकार में हैं। देखिए कहीं आप मुझको गलत न समझें—यह मेरा केवल अनुमान भी हो सकता है—और होना भी चाहिए क्योंकि मैंने न तो उन्हें पास से ही देखा है और न वह मेरे मित्र ही हैं। संभव है वह उद्देश्य जान गये हों, संभव है न भी जान पाये हों; यह भी संभव है कि कोई उद्देश्य हो ही नहीं। चाहे जो हो मगर मुझे यह विश्वास है कि लड़ाई की भयानकता ने उन्हें बड़े गहरे रूप में प्रभावित किया है और यह सारी मानसिक अस्तव्यस्तता उसी का स्वाभाविक फल है। हो सकता है कि उनकी सारी खोज अन्त में केवल मृगतृष्णा ही निकले—कौन कह सकता है !'

‘मुझे यह तो विश्वास है कि उनके हृदय में कोई गहरा सोच है या कोई विचित्र आदर्श उनको व्यस्त किए हुए है !’

‘वह केवल उनकी आत्मा की पुकार ही है ! कदाचित् उनको इससे डर लगने लगा है। साकार-आत्मा से बढ़कर कोई अन्य भयानक वस्तु शायद इस संसार में नहीं !’

‘कभी कभी जब मैं उन्हें देखती रहती हूँ तो ऐसा मालूम होता है कि कोई सोते सोते उठ बैठा है—जैसे कोई सपना टूट गया हो। कभी कभी तो वह इतने भूले भूले से रहते हैं कि उन्हें स्वयं ही नहीं मालूम होता कि वह कहाँ हैं ! लड़ाई के पहले तो उनमें ऐसी कोई भी बात न थी। उनमें जीवन का उत्साह तो कूट कूट कर भरा हुआ मालूम पड़ता था ; इतना प्रसन्न, इतना हँसने-हँसाने वाला व्यक्ति मुझे दिखलाई न पड़ता, उनके साथ उठने बैठने में मुझे स्वर्गीय आनन्द आता था—वह दिन मुलाए नहीं भूलते। उन्हें हो क्या गया मैं समझ नहीं पाती हूँ !’

‘मैं ठीक ठीक तो नहीं बतला सकता मगर यह मैं जानता हूँ कि कभी कभी छोटी से छोटी बात भी हृदय पर ऐसी गहरी चोट कर

जाती है कि उसका दाग फिर मिटाए नहीं मिटता। परिस्थिति और मनुष्य के व्यक्तित्व पर ही यह निर्भर रहता है। मैं स्वयं अपना एक ऐसा ही अनुभव जानता हूँ। जब लड़ाई चल रही थी मैं गिरजे में एक दिन प्रार्थना करने गया। वहाँ पर अनेक स्त्रियों काले कपड़े पहने हुए दो तीन समाधियों के पास खड़ी हुई रो रही थीं। उनकी वेदना ने मुझे भावुक बना दिया और मैंने सोचा कि शायद वे मुझे जो कब्रों में पड़े हुए इस समय सुख की नींद सो रहे हैं इन अभिमर्तों से जो इस समय विलख रहे हैं कहीं अधिक भाग्यवान हैं। वहाँ से जब मैं बाहर निकला तो रास्ते में लड़ाई पर से लौटाते हुए मृतकों की एक गाड़ी मिली जिसमें मुझे एक पर एक लाद दिए गये थे। किसी में कुछ कुछ जान भी मालूम पड़ती थी; मुझे ऐसा मालूम हुआ कि किसी ने इनको कूड़े की तरह बटोर कर अलग ढेर में लगा दिया है। मैं डर से सिहर उठा था। मैं सोच रहा था कि यह भी शायद जीने वालों से किसी कदर अच्छे हैं। जब मैंने अपना यह अनुभव अपने एक मित्र को सुनाया तो वह सुन कर हँसने लगे और कहा कि मुझसे बड़ कर बेवकूफ शायद संसार में कम होंगे। मैं क्या कहता चुप हो रहा। शायद ऐसी ही कुछ चीज लैरी ने भी देखी हो वही जानें।^१

मेरा अनुमान है कि लैरी ने वास्तविक बात कदाचित् किसी से भी नहीं बतलाई। बहुत बरसों के बाद जब मेरी भेंट एक युवती सुजेन से हुई तो उसकी बातों से मुझे ज्ञात हुआ कि लैरी की मित्रता एक अत्यन्त सुन्दर और स्वस्थ आइरिश युवक से हो गई थी जो उसके साथ ही सेना में चालक था।

‘वह नाटा था, सुन्दर था और उसके बाल लाल थे। उसके समान तेज और शक्तिपूर्ण सेना में शायद ही कोई दूसरा हो। उसमें हँसने की इतनी क्षमता थी कि दूसरों को बिना हंसाए न मानती थीं, वह हँसता भी विचित्र ढंग से था। अपने काम में तो वह बहुत अच्छा न था, मगर जो काम दूसरे न कर सकते उसके लिए वह पहले अपना

कदम बढ़ाता था। फिर भी उसके सभी अफसर उससे नाराज रहते थे क्योंकि वह अपनी मनमानी ही किया करता था। जब तक वह जमीन पर रहता शैतान की तरह उछलता, कूदता, हँसता, लोटता मगर जब हवाई-जहाज चलाता तो अत्यन्त शान्त और सौम्य बन जाता। उसके हर कल पुर्जे वह भली भाँति समझता था। वह कदाचित्त सब से श्रेष्ठ चालक था। उसने मुझे बहुत कुछ सिखलाया और वह मुझ से कुछ बड़ा भी था। मैंने हवाई सेना में काम सीखना शुरू ही किया था कि उससे मेरा परिचय हो गया। मुझे काम अच्छा भी न लगता था और न मुझे काम आता ही था। मैं चाहता था कि नौकरी छोड़ दूँ। मगर ज्यों ही उससे परिचय बढ़ा उसने मेरी बड़ी हिम्मत बढ़ाई और चालक के कार्य में मुझे दक्ष बनाया। मेरे हृदय से उसने भय निकाल फेंका।'

‘जब मैं उसके साथ हवाई जहाज में उड़ता तो मुझे मालूम होता कि मैं एक बड़े भारी सनकी के साथ हूँ। लड़ाई को तो वह मज़ाक समझा करता था और जब शत्रुओं के जहाजों को वह नीचे गिराता तो उसे लड़कों के खेल का मजा मिलता और वह कहकहा मार बैठता। उसकी हृदयहीनता मुझे बहुत बुरी लगती मगर उसमें कुछ ऐसी बात थी जो मुझको क्या बहुतों को उसके समीप लाती गई और हम दोनों में अभिन्नता बढ़ती गई। अपना कोट ही नहीं वरन कमीज भी वह जिसे पाता दे डालता और कभी यह ख्याल में ‘भी न लाता कि उसकी कुछ हानि हुई है या वह स्वयं क्या पहनेगा। वह भी दूसरों से निस्संकोच जो पाता मांग लेता। वह इतना सच्चा, इतना सरल था कि क्या कहा जाय।’ इतना कह कर लैरी ने फिर अपना सिगार सुलगाया और सुज़ेन से अपनी कहानी पूरी करते हुये कहा—

‘हम दोनों छुट्टी की प्रार्थना ऐसे समय करते कि हम दोनों को छुट्टी साथ साथ मिले और हम लोग साथ साथ बाहर जाने, खाने पीने, घूमने फिरने का प्रोग्राम पहले ही से बनाया करते। हम लोगों

ने छुट्टी ले रखी थी। परन्तु हमारे कमान्डर ने हम दोनों को शत्रुओं के हवाई जहाजों का पता लगा लाने के लिए कहा और हम दोनों उड़ चले। थोड़ी ही दूर हम लोग उड़े होंगे कि जर्मन-जहाजों का सामना करना पड़ा। हम लोग बिलकुल तैयार न थे। एक जहाज ने मेरे जहाज का पीछा किया मगर मैं बच कर निकल भागा; इतने में दूसरे ने पीछे से यकायक विद्युत गति से हमला किया और जब तक मैं अपने को बचाऊँ बचाऊँ गोलियों ने मेरा जहाज छलनी कर दिया। मगर इतने में ही मेरा मित्र बाज की भाँति पीछे आया और उसे गोलियों से मार गिराया। उसके बाद वह भी गिरा। जब लोगों ने मुझे जहाज से निकाला तो मुझे काफी चोट आ चुकी थी। मेरे मित्र की भी चोट कम नहीं थी—

उसने मुझे ज्यों ही देखा खिलखिला कर हँसा—‘यार! बेईमान तेरे पीछे भाग रहा था। मैं उसको ले ही बीता। इतना कहते ही उसका दम घुटने लगा। ‘दोस्त मैं चला।’ यही उसके अन्तिम शब्द थे। उसने दम तोड़ दिया। उसके पेट में गोली लगी थी। उसकी आयु थी केवल बीस वर्ष और वह छुट्टी में अपना विवाह करने जा रहा था। उसकी प्रेमिका उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।’

उस दिन आइजाबेल से बातें करने के बाद मेरी और किसी से भेंट न हुई। मैं शिकागो से सैनफ्रैंसिस्को आया और अपनी सुदूर-पूर्व की यात्रा को चल दिया।



दूसरा परिच्छेद

१

इलियट और उसके परिवार को देखे हुए मुझे करीब करीब एक वर्ष के हो गया। जब मैं उनसे पहले पहल लन्दन में मिला तो कुतूहलवश मैंने लैरी का हाल चाल पूछा। उन्होंने बतलाया कि वह पेरिस चला गया मगर उनकी बातों से लैरी के प्रति उनका पुराना असन्तोष टपकते देखकर मुझे कुछ हँसी आई। वह बोले—

‘मुझे उस लड़के से समुचित सहायभूति थी और उसके इस इरादे से कि वह पेरिस जाकर वहाँ के जीवन का रस लेना चाहता है मुझे प्रसन्नता भी हुई। मैंने उससे कहा भी था कि जब वह अपना विचार पक्का करे तो मुझे शीघ्र ही सूचना दे क्योंकि मैं उसके वहाँ रहने का सारा प्रबन्ध कर देना चाहता था मगर सोचिए तो जरा ! मैं उसका पेरिस आना तभी जान पाया जब लुइसा ने मुझे खबर दी; उसने मुझे अपने आप सूचना तक न दी और जब मुझे पता चला

कि वह पहले से ही पेरिस में है तो मैंने उसके बताए हुए पते पर लिखकर अपने यहां उसको निमन्त्रित किया जिससे उसका परिचय वहां की खास खास प्रशंसा-प्राप्त स्त्रियों से हो जाय और जितने दिनों वह वहां रहे उसे आराम और आनन्द दोनों ही मिले। मेरा इरादा था कि श्रीमती—से उसका परिचय जरूर करा दिया जाय क्योंकि उनके सम्पर्क में रह कर वह बहुत कुछ नवयुवकोचित बातें जान सकता था। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि उसने उत्तर में लिख भेजा कि वह आने में असमर्थ है। मगर वास्तव में बात यह थी कि उसके पास ढङ्ग के कपड़े ही न थे।

इलियट की बातों से न तो मुझे क्रोध आया और न आश्चर्य ही हुआ और मैं चुपचाप सुनता रहा।

‘और जिस कागज पर उसने मेरे निमन्त्रण-पत्र का उत्तर दिया था वह जानते हैं क्या था ? वह था कि एक रद्दी कागज और किसी मामूली होटल का पता उसने अपने हाथ में लिख दिया था। मगर मैंने उसे दुबारा निमन्त्रित किया—उसके लिए नहीं—आइजाबेल की खातिर !! मेरा अनुमान था कि शायद उसे संकोच होता हो, या वास्तव में वह भूखंडता पर ही तुल्य हो। आपने भला कोई ऐसा भी व्यक्ति क्या कभी देखा था जिसके पास दावत में जाने लायक कपड़े न हों जब कि पेरिस में एक के एक अच्छे दरजी हैं और सभ्य लोगों के अनुकूल अनेक प्रकार के फैशन प्रचलित हैं। दूसरे बार भी उसने मेरा निमन्त्रण धन्यवाद सहित अस्वीकार कर दिया और यह भी लिख भेजा कि वह दावत नहीं खाता और दावतों में आना जाना उसे रुचिकर नहीं। इसके बाद मैंने उसको अपने समाज से निकाल फेंका और उसकी फिर कभी खबर न ली।’

‘मगर इस तरह पेरिस में रहकर वह करता ही क्या रहा ?’

‘मैं मालूम तो नहीं कर सका और सच पूछिए तो मैंने इसका प्रयत्न भी नहीं किया और करता भी क्यों ? मेरी राय में वह बिलकुल

निकम्मा और आवारा है और आइजाबेल के योग्य तो कदापि भी नहीं है। अगर वह प्रतिष्ठित व्यक्तियों का जीवन व्यतीत करता होता तो मेरी उसकी कहीं न कहीं भेंट अवश्य ही होती। उसका न मिलना ही प्रमाण है कि वह किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहा होगा।

अपने स्वभाव के अनुसार विदेश में मैं अनेक होटलों में भोजन किया करता और वहाँ पर लोगों को आते जाते देखकर मेरा मनोरंजन भी हुआ करता था क्योंकि होटल से बढ़कर इस कार्य के लिए दूसरा और कोई उपयुक्त स्थान नहीं। अपने मित्रों के साथ शाम को मैं एक साधारण होटल में बैठा खाना आने की प्रतीक्षा कर रहा था कि इतने में ही मेरी दृष्टि दूर के मेज पर पड़ी। वहाँ लैरी बैठा हुआ लोगों को आते जाते देख रहा था और खिड़की से आती हुई ठन्डी हवा के झोंकों का आनन्द ले रहा था। मैं अपने साथियों को छोड़ उसके पास जा पहुँचा और मुझे देखते ही एक अव्यक्त प्रसन्नता से वह खिल उठा। वह मुस्कराया। उसने मुझे बिठला कर खाना खाने के लिए कहा मगर अपने साथियों के कारण मुझे क्षमा मांगनी पड़ी। मैंने कहा—‘मैं केवल तुम्हारा हाल चाल पूछने चला आया था।’

‘क्या आप यहाँ कुछ दिनों ठहरेंगे?’ उसने पूछा।

‘कुछ दिन तो अवश्य ठहरूँगा।’

‘तो कल आप मेरे यहाँ दावत खाने का कष्ट कौजिए?’

‘तुम दावत कब से खाने लगे—तुम पहले तो दावत खाते न थे?’ वह बड़े जोर से हंसा।

मालूम होता है आप इलियट से मिल चुके हैं। अवकाश न रहने के कारण मैं उनसे मिल नहीं सका। अच्छा! तो कल अवश्य आइयेगा!

‘अवश्य आऊँगा।’

दूसरे दिन हम लोगों ने मिलने का निश्चय कर लिया। थोड़ी ही देर बाद मैंने देखा कि लैरी वहां से चल दिया।

२

दूसरे दिन टहलते टहलते मैं उस होटल में जा पहुँचा जहां लैरी ने दावत खाने का निश्चय किया था। लैरी वहां पहले से ही मेरी प्रतीक्षा में बैठा था। हम लोगों ने सोडा पिया और एक दूसरे होटल में खाना खाने के इरादे से बाहर निकल पड़े। लैरी कुछ अधिक दुबला मालूम पड़ रहा था इससे उसकी आँखों में कुछ और गहराई आ गई थी और उसकी दृष्टि का तीखापन भी बढ़ गया था। मगर उसके स्वभाव में जरा भी परिवर्तन नहीं आया था—वही सौम्यता, वही सरलता, वही शान्ति-प्रियता, वही मुस्कुराहट। मैंने उससे अनेक प्रश्न किए—

‘पेरिस तुम्हें पसन्द आया?’

‘बहुत ज्यादा, मैं वहाँ बहुत दिनों रहा।’

‘मगर तुमने इलियट को अपना ठीक ठीक पता क्यों नहीं दिया, उन्होंने बहुत बुरा माना।’ वह मुस्कुरा कर चुप हो रहा।

‘आजकल करते क्या रहते हो?’

‘वही आवारागर्दी।’ उसने सरल मुस्कान से कहा।

‘पढ़ते भी होंगे?’

‘बहुत।’

‘क्या आइजाबेल का हाल चाल मिलता रहता है?’

‘कभी कभी। हम दोनों कभी भी पत्र लिखने के अभ्यस्त नहीं थे। वही प्रायः लिखा करती है कि शिकागो में वह बड़े मजे में है; आगामी वर्ष में वे सब इलियट के यहाँ ही आकर ठहरेंगे।’

‘तब तो तुम्हारा भी मन खूब लग जायगा ।’

‘कदाचित् आइजाबेल पहले कभी पेरिस नहीं आई; उसके साथ घूमने फिरने का आनन्द रहेगा ही ।’ इसके बाद मैं उससे अपनी चीन की यात्रा का हाल सुनाता रहा और वह बड़े ध्यान से सुनता रहा मगर जब मैंने स्वयं उसके बारे में पूछना प्रारम्भ किया तो वह बिलकुल ही न बोला । मैं उसका स्वभाव जानता था । मैंने जाने की विदा मांगी । वह भी उठा और हाथ मिलाते हुए एक मुस्कान फेंक चलता बना । बहुत दिनों तक मैंने उसे कहीं भी न देखा ।

एक वर्ष व्यतीत हो गया । मेरा अनुमान था कि श्रीमती लुइसा तथा आइजाबेल इलियट ही के यहाँ आकर ठहरी होंगी । बात ठीक निकली । उनके सूचना देने पर इलियट जाकर उनको लिवा लाए और उनके लिए एक सुयोग्य परिचारिका जो पेरिस के रहन सहन से परिचित थी उन्होंने पहले से ही नियुक्त कर ली थी । परिचारिका का नाम सुनते ही श्रीमती लुइसा ने इसे फिजूलखर्ची समझा और कहा कि उसकी कोई भी आवश्यकता न थी । इलियट बरस पड़े—

‘इसकी आवश्यकता क्या है मैं जानता हूँ न कि तुम ! इसको मैंने तुम्हारी और आइजाबेल की खातिर नहीं बल्कि अपनी प्रतिष्ठा के लिए रखा है । तुम्हें यह भी मालूम है कि पेरिस में सम्मान पूर्वक रहने के लिए किन किन बातों की आवश्यकता पड़ती है ? और फिर पहनने ओढ़ने का ढङ्ग भी सिखलाने वाला कोई होना चाहिए । कुछ नए डिजाइन के साए, हैट और दस्ताने भी चाहिए और जिस दूकान से इन्हें खरीदना है मैं वह भी निश्चय कर चुका हूँ ।’

‘मैं पैसे पानी में बहाना नहीं चाहती हूँ ।’

‘यह तो मैं जानता था; मैंने इन सब चीजों के दाम चुकाने का भार स्वयं ही ले लिया है । मैं यह नहीं चाहता कि लोग मुझ पर

उंगली उठावें। मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हें देख कर लोगों की निगाहें अपने आप उठ जाय और वे समझें कि तुम भी कुछ हो। मैंने तुम्हारे लिए अनेक होटलों में दावतें भी तय कर ली हैं। अपने मित्रों से मैंने कह रखा है कि तुम एक राजदूत की पत्नी हो क्योंकि मैंने सोचा कि इससे सम्मान अधिक रहेगा। केवल एक पादरी के घर की स्त्री कहने में मुझे भी लज्जा आती और कुछ लाभ भी नहीं होता ?’

‘इलियट ! क्या तुम्हें यही सब बेकार की बातें अच्छी मालूम होती हैं ?’

‘इसी से तो मैं कहता हूँ कि स्त्रियों को शिक्षित करने की आवश्यकता है। उन्हें अपनी न सही दूसरों की प्रतिष्ठा का तो ध्यान होना चाहिए। मुझे संसार का अनुभव है; तुम लोग अनभिज्ञ हो।’

आइजाबेल बरामदे में खड़ी खड़ी किसी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। देखते ही देखते वह दौड़ पड़ी और एक आगन्तुक से जाकर लिपट गई—‘ओह ! लैरी ! मैं कब से तुम्हारी राह देख रही हूँ ?’

इलियट ने यह दृश्य देखते ही अपनी बहिन से पूछा—‘इसको कैसे खबर लगी ? क्या तुमने उसको लिखा था ?’

‘लिखा तो नहीं था—जहाज पर से आइजाबेल ने उसको तार भेजा था।’

श्रीमती लुइसा ने उसे बड़े स्नेह से बिठलाया। इलियट ने बड़े अनमने रूप से उससे हाथ मिला कर मुँह फेर लिया। रात हो चली थी और दस बज गया था। घड़ी देखकर आइजाबेल ने कहा—‘चाचा जी ! मैं लैरी को कल दावत खाने को बुला रही हूँ।’

‘आइजाबेल की आँखें नवीन ज्योति से जगमगा रही थीं वह लैरी की वाहें अपने हाथों से जकड़े हुए थी।’

‘हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं। मगर मेरा अनुमान है कि लैरी दावत नहीं खाते।’ इलियट ने व्यंग से कहा।

‘कल जरूर खायेंगे ! क्यों लैरी ?’ आइजाबेल बोली ।

‘जरूर ।’ वह मुस्कराया । आइजाबेल उसकी ओर एक टुक देखती रही । इलियट ने आंखें फेर लीं । लैरी बिदा लेकर घर की ओर चला ।

दूसरे दिन इलियट बड़े सबेरे उठे और कपड़े पहन कर अपने ड्राइंग रूम में जा बैठे और अपने नौकर से श्रीमती लुइसा को बुलवा भेजा । जब तक वे आई तब तक इलियट सिगरेट सुलगा चुके थे और उठते हुए धुँए के छल्ले बड़े गौर से देख रहे थे ।

‘क्या अब भी लैरी और आइजाबेल की सगाई ज्यों की त्यों लगी हुई है ?’

‘जहाँ तक मुझे मालूम होता है आइजाबेल ने अपनी सम्मति बदली नहीं ।’

‘मुझे यह लड़का आवारा मालूम होता है ।’ इलियट ने अपनी राय दी । उन्होंने यह भी बतलाया कि किस तरह कई दिनों उन्होंने उसको निमन्त्रित किया और उसको पेरिस में इज्जत के साथ रखने का भार भी लिया यहाँ तक कि उन्होंने उसके लिए अनेक परिचय के पत्र लिख रखे थे और उसके ठहरने का प्रबन्ध, एक बड़े आदमी के घर जो बाहर चला गया था और जहाँ केवल उसकी स्त्री थी, किया था मगर उसको न तो सामाजिक व्यवहार का ही ज्ञान है और न कोई इज्जत का ध्यान । जिस तरह उसने मेरे निमन्त्रण उकराये उससे स्पष्ट है कि उसकी सोहबत अच्छी नहीं और न उसमें कोई सज्जनता ही है—

‘अगर पेरिस में रह कर वह यहाँ के जीवन में भाग नहीं लेता है तो फिर यहाँ रहने से लाभ ? मुझको यह भी नहीं मालूम होने पाता कि वह कैरता क्या रहता है । और जानती हो वह रहता कहाँ है ?’

‘हम लोगों को तो उसने एक अखबार के दफ्तर का पता दिया था ?’ लुइसा ने कहा ।

‘क्या नहीं दिया होगा। जिस तरह कोई उठाईगीर रहता है क्यों-
उनका घर तो होता नहीं—वैसे ही उसे भी समझो। मेरा अनुमान है
वह किसी सड़ी जगह पर किसी गन्दे होटल में रहता होगा।’

‘कैसी बातें कर रहे हो?’ श्रीमती लुइसा ने तेजी से कहा।

‘मैं तो यही समझ पाया हूँ। अगर उसको रहने को जगह होती
या किसी प्रतिष्ठित मुहल्ले में रहता होता तो पता वह साफ साफ
बतलाता। उसको छिपाने की क्या आवश्यकता थी।’

‘लैरी ऐसा नहीं हो सकता जैसा तुम समझ रहे हो! क्या तुमने
कल यह भी देखा कि उसके हृदय में आइजाबेल के लिए वैसा ही
प्रेम है। वह जरा भी बदला हुआ नहीं है।’

इलियट ने यह समझाने का प्रयत्न किया कि आदमी के चरित्र
को पहचानना औरतों के लिए बहुत ही कठिन है और विशेष कर
लैरी ऐसा आदमी तो हर जगह अपना रंग बदल कर दूसरों को धोखा
दे सकता है। उनको उसी समय कुछ अन्य बातों का ध्यान आया—

‘आजकल ग्रे का क्या हाल है?’ ‘क्या आइजाबेल की ओर से
उसका मन फिर गया?’

‘ग्रे की चले तो वह कल ही आइजाबेल से विवाह कर ले, मगर
उसके चाहने से क्या, आइजाबेल राजी हो तब न!’

श्रीमती लुइसा ने इलियट से कहा कि वह अपने वादे के
कुछ महीने पहले ही चली आई जिसका कारण यह था कि उनकी
तबियत ठीक नहीं रहती थी और डाक्टरों की राय हुई कि वह पेरिस
जाकर दो एक डाक्टरों को दिखला कर अपना इलाज लग कर
करायें। बीमारी कोई इतनी खराब न थी परन्तु इसके कारण उनको
परेशानी बहुत रहा करती थी और फिर आइजाबेल का भविष्य भी
उन्हीं के सामने तय हो जाना चाहिए था। उनके बाद क्या हो कौन
जान सकता था और वह इस बात का निश्चय करने आई थी कि
आइजाबेल के विवाह का प्रश्न जल्द से जल्द हल हो जाय। रही

लैरी की बात—उस पर भी सोचना विचारना बहुत आवश्यक था । पहली बात तो यह तय करनी थी कि दो साल पेरिस में रहने के बाद लैरी क्या करना चाहता है क्योंकि उसी के ऊपर सारी चीजें निर्भर थीं । अगर वे लोग दो साल बाद पेरिस आतीं और लैरी को शिकागो वापस साथ लातीं तो ऐसा मालूम होता कि वे ही स्वार्थरत हैं जिससे सब लोगों की आँखों में निश्चय ही हेठी होती । उनका विचार था कि लैरी को अधिक से अधिक अवसर आइजाबेल से मिलने का दिया जाय जिससे दोनों अपने अपने प्रेम की गहराई ठीक तौर से नाप लें और निश्चय कर लें जिससे बाद में पछतावा न रह जाय । इधर आइजाबेल को अपना भविष्य अपने आप ही सोचना समझना चाहिए । अगर काम काज में लगने के लिए लैरी तैयार नहीं तो बात खत्म की जाय और आइजाबेल अपना दूसरा रास्ता चुन ले । वह कुछ देर सोचकर बोली—

‘हेनरी मेट्टरिन भी लैरी से बहुत अप्रसन्न थे क्योंकि उसने उनकी नौकरी अस्वीकार कर दी थी; मगर मे ने इधर उनको समझा बुझा कर इस बात पर राजी कर लिया है कि वह फिर से उसको नौकरी देंगे ।’

इलियट ने मुख का भाव समझ कर कहा—‘मे बहुत ही अच्छा लड़का है !’

श्रीमती लुइसा ने ठण्डी साँस लेते हुए कहा—‘लड़का तो बहुत ही अच्छा है और आइजाबेल को वह सुखी भी कर सकता है ।’

इलियट ने उन दावतों का ब्योरा बतलाना आरंभ किया जो उन्होंने पहले से ही उनके आने के उपलक्ष्य में तय कर रखी थीं । सब बड़े बड़े आदमियों और बड़ी बड़ी महिलाओं के नाम जो उस समय पेरिस समाज के श्रेष्ठ स्तर पर थीं सुनने के बाद उन्होंने पूछा—

‘इन दावतों में लैरी को तो जरूर बुलाना चाहिए !’

‘उसके पास दावत में जाने योग्य कपड़े ही नहीं हैं कोई बुलाए क्या खाक !’

‘मगर वह लड़का बड़ा सरल है और’ उसका इस तरह निरादर करने में हम लोगों का कोई लाभ भी नहीं !’

‘अगर तुम्हारी इच्छा है तो मैं बुला लूंगा; मगर मैं तो उससे हाथ धो लेना चाहता हूँ !’

दूसरे दिन दावत में लैरी ठीक समय पर इलियट के घर पर आ पहुँचा। इलियट ने उसके सत्कार का विशेष ध्यान रखा। लैरी इतनी सरलता, इतनी स्वाभाविकता और इतनी प्रसन्नता से बातें कर रहा था कि उससे अप्रसन्न होना बहुत ही कठिन था। वे इधर उधर की तमाम बातें करते रहे—शिकागो की; अपने मित्रों की; यात्राओं की। इलियट का ध्यान इस ओर बिलकुल नहीं था मगर ज्यों ही लैरी और लुइसा ने उन मित्रों की चर्चा की जिनकी शादी होने वाली थी या शादी कट गई थी या तलाक होने वाला था त्यों ही इलियट ने प्रसन्नता से सहयोग देना आरम्भ किया। उन्होंने भी तलाक और उसके कारणों की अनेक रोचक कहानियाँ अपने अनेक मित्रों के जीवन से सुनाईं जिसमें सभी राजे, महाराजे और श्रेष्ठ वर्ग के राजदूत या प्रधान मंत्री थे। इलियट को मानना पड़ रहा था कि लैरी वास्तव में बहुत ही सुन्दर है; उसके घने बाल, उसकी सौम्य आँखें चौड़ा, ऊँचा मस्तक, छुरहवा वदन सब उनको आकर्षक लग रहे थे। उनको यह ज्ञात हुआ कि अगर उसको कपड़े ठीक से पहना दिए जावें और उसका चित्र खींचा जाय तो वह प्राचीन युग का देवता समान मालूम होगा। उस समय उनको यह भी याद आया कि उन्होंने लैरी का सम्पर्क एक ऐसी स्त्री से कराने को सोचा था जो उसको नव-युवकोचित बातों में दक्ष कर देती। उस महिला श्रीमती क...की आयु करीब-चालीस साल होगी मगर वह देखने से पन्द्रह साल उम्र में कम दिखाई देती थी। वह इतनी सुन्दर थी कि उनका चित्र सौन्दर्य-

प्रदर्शनी में जाया करता था और वह इतनी अनुभवी थी कि शायद ही कोई नवयुवक उनसे निराश लौटता। उनकी आँखों और उनकी चाल में मानो लालसा का सागर लहराया करता था और उसमें डूबने तिराने के लिये वह अपने मित्रों को सतत और मूक निमन्त्रण दिया करती थी। उनके सम्पर्क में रहकर लैरी अपनी इच्छा और अपनी लालसा की गति पहिचान सकता था जो भावी जीवन में फलप्रद होती। उन्होंने अपने अंग्रेज मित्र के एक ऐसे लड़के को भी निमन्त्रित करने का निश्चय कर लिया था जो पारदेशिक विभाग में अच्छी नौकरी पर था। इस युवक की हर ओर मांग थी। वह सुन्दर था, युवा था और श्रेष्ठ समुदाय की सभी महिलाएँ उससे परिचय बढ़ाने को उत्सुक रहती थीं। आइजाबेल भी सुन्दरी थी, युवती थी और वह उसका परिचय पाकर बहुत सन्तुष्ट होती। वह युवक आइजाबेल को जरूर भाता—उसमें एक ऐसा आकर्षण था जो हर कुमारी को अपनी ओर खींचता रहता था और उसके सम्पर्क में रहकर आइजाबेल भी अपनी मूक भावनाओं की स्पष्ट रूप रेखा बनाकर अपना विवाहित जीवन सुखी बना सकती थी। इलियट ने अपने मन में सब कुछ तय कर लिया था और दोनों प्रेमियों का प्रेम-पर्य भी उन्होंने एक अनुभवी मनुष्य के समान निश्चित कर दिया था। लुइसा की चिन्ता दूर करने का उन्हें सतत ध्यान रखना पड़ रहा था।

खाना खत्म होने के बाद इलियट ने लुइसा और आइजाबेल को बाजार ले जाकर कपड़े इत्यादि खरीदने की व्यवस्था कर रखी थी। इस कार्यक्रम का आभास पाते ही लैरी ने बड़ी सरलता से विदा मांगी। विदा देते समय इलियट को उसे दावत का निमन्त्रण देना पड़ा जिसके लिए उन्होंने मीठे शब्दों का प्रयोग किया। इसकी कोई आवश्यकता न थी क्योंकि लैरी ने बड़ी प्रसन्नता से निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

दैवदश, जो कुछ इलियट ने दावत के विषय में मन ही मन सोच

रखा था पूरा न उतरा । दाबत में लैरी बड़े ही फैशनेबिल कपड़े पहन कर आया जिसके कारण इलियट को बहुत सन्तोष हुआ । खाने के बाद उन्होंने श्रीमती क.....को अवसर पाते ही अलग ले जाकर पूछा—

‘कहिए ! वह अमरीकी युवक कुछ पसन्द आया ?’

‘उसकी आँखें बड़ी अच्छी हैं; और दांत तो जैसे मोती हों !’

‘बस इतना ही ! मैंने उसे इसीलिए आपके पास बिठलाया था कि वह विशेष रूप से आप के ही काम आने वाली चीज थी ।’

श्रीमती क.....ने संशयपूर्ण नेत्रों से इलियट को देखा—

‘उसने तो मुझसे यह कहा कि उसकी सगाई आपकी भतीजी से लगी हुई है ।’

‘आपने यह नवीन सिद्धान्त कब से बना लिया है कि दूसरे की हाथ की मिठाई छीन कर खाना बुरा है ।

जादू चलाने के लिए तो यह अवसर अनमोल था !’

‘अच्छा तो तुम वह काम मुझसे लेना चाहते थे ! मैं अब समझी ! अपनी पुरानी आदतों से क्या अब भी नहीं बाज आओगे ? मैं कुछ कुछ तो समझ ही गई थी ।’

‘तब तो इससे यह प्रमाणित हुआ कि आपने उस पर डोरे तो जबर डाले और शायद जब वह निकम्मा साबित हुआ तो आपने उससे मुँह मोड़ लिया ।’

‘अपनी पुरानी आदतें सुधारिए इलियट ! मालूम होता है कि आपने अपने सिद्धान्त इतने दिनों बाद भी नहीं बदले । क्या आपको वह लड़का पसन्द नहीं ! उसकी सगाई आप क्यों तोड़ना चाहते हैं ? लड़का बहुत ही भोला है, कितना सरल ! मैं उसके रास्ते में आना नहीं चाहती ।’

‘उसके भोलेपन और उसकी सरलता का ही तो मैं आप से इलाज चाहता था ।’

‘आपने साफ साफ पहले क्यों नहीं बतलाया । मैं सचेष्ट रहती । मगर मेरा अनुमान है कि उसकी आँखें आपकी भतीजी पर ही लगी हुई हैं और अगर अपने ही तक रखो तो एक बात कहूँ—‘वह मुझसे बीस साल छोटी है’—उसकी बराबरी मैं कहां तक कर पाऊँगी और फिर उसकी बोली बड़ी ही मीठी, बड़ी सरस है ।

‘क्या आपको उसके कपड़े पसन्द आए ?’

‘बहुत ज्यादा । मगर उसमें वह तीखापन नहीं जो उसमें होना चाहिये और न वह चटपटाहट ही है ?’

‘वह चकमकाहट और चटपटाहट तो ज़ियां केवल आपकी ही उम्र में पा सकती है ।’ इलियट ने व्यंग से कहा । श्रीमती क...का अन्तिम उत्तर पाकर वह तिलमिला उठा—

‘आप ऐसे लोगों को चटपटाहट ही चाहिए; जहाँ कहीं भी मिले क्यों ?’

इलियट के जितने मित्र दावत में आए थे सब लैरी और आइजाबेल से प्रसन्न रहे । सबने लैरी के सरल स्वभाव, उसकी स्वाभाविकता, उसकी शारीरिक गठन और युवकोचित सौम्यता की प्रशंसा की । सबने मिलकर आइजाबेल के युवती-स्वभाव, उसके सौन्दर्य और उसके बालों और आँखों की भूरिभूरि प्रशंसा की । आइजाबेज लैरी से मिलने के बाद फूली न समाती थी और इलियट अपने पुराने मित्रों और महिलाओं से मिलकर स्वयं बहुत आनन्दित हो रहे थे । उन्हें वह समय रह रह कर याद आ रहा था जब वे स्वयं युवा थे और उनके लिए दुनियाँ रसपूर्ण थी ।

३

इलियट के घर पर, आइजाबेल को केवल कपड़े पहनने के समय ही थोड़ा बहुत अवकाश रहा करता था अन्यथा नहीं क्योंकि

सबरे से रात तक लैरी के साथ साथ खाना पीना; घूमना फिरना लगा ही रहता था। श्रीमती लुइसा ने एक दिन अवसर पाकर समय निकाल ही लिया और ज्यों ही इलियट की नियुक्ति की हुई परिचारिका ने कपड़े लच्छे पहना कर उसे सुसज्जित कर दिया त्यों ही वह उसके कमरे में आई—

‘क्यों आईजाबेल ! लैरी से कुछ बातें हुई कि वह शिकागो कब वापस चलेगा ?’

‘मुझे तो नहीं मालूम; और न उन्होंने मुझे बतलाया ही है ?’

‘क्या तुमने पूछा भी नहीं ?’

‘नहीं ।’

‘क्या तुम्हें पूछते डर लगता है ?’

‘मुझे डर क्यों लगेगा ।’

‘जब तुम दोनों साथ साथ इतनी देर तक रहते हो तो बातें क्या करते हो ?’

‘साथ रहने में क्या जरूरी है कि बातें ही की जाय । साथ साथ रहने में भी आनन्द आता है; आप तो जानती ही हैं कि लैरी सदा से कम बातचीत करते आए हैं और जब बातें होती हैं तब मैं ही विशेषतः बोलती रहती हूँ; वह केवल मजे से सुनते भर हैं ।’

‘तुमने यह भी पूछा कि वह रहता कहाँ है ?’ श्रीमती लुइसा ने अन्दिग्ध दृष्टि से देख कर कहा ।

‘यह भी मैंने नहीं पूछा ।’

‘शायद वह इसके बारे में बात भी नहीं करना चाहता होगा ?’

आईजाबेल ने एक सुगंधित फूल सूँघते हुए कहा--‘माँ ! इन बातों से तुम्हारा मतलब क्या है ?’

‘तुम्हारे चाचा कह रहे थे कि वह एक गन्दे मुहल्ले में एक स्त्री के साथ रहता है ।’ आईजाबेल खिलखिला पड़ी ।

‘तो क्या तुमको इस बात पर विश्वास नहीं होता ?’

‘बिलकुल नहीं; यह कोरी गप होगी ।’

‘तुमने कभी उससे शिकागो के जीवन के विषय में बातें कीं ?’

‘हाँ, हाँ क्यों नहीं; रोज ही होती हैं ।’

‘क्या उसने अब तक यह नहीं बतलाया कि वह कब तक वहाँ लौटेगा ?’

‘ठीक ठीक नहीं कह सकती ।’

‘उसके कहने के अनुसार दो साल तो बीतने को ही हैं । इरादा कुछ न कुछ तो पक्का होना चाहिए ।’

‘यह तो मुझे भी मालूम है ?’ इतना सुनते ही श्रीमती लुइसा झट्ला उठी ।

‘आइजाबेल ! मैं मानती हूँ कि उससे पूछना या न पूछना तुम्हारे मन पर निर्भर है मगर मेरे विचार में महत्वपूर्ण बातों को इस तरह टालना कभी भी अच्छा नहीं होता ।’ लुइसा ने अपने शब्दों का प्रभाव जानना चाहा मगर आइजाबेल आँख बचा गई—

‘मुझे अभी अभी लैरी के साथ बाहर घूमने जाना है; वह आते ही होंगे, अगर आपकी आज्ञा हो तो जाऊँ ! तैयार भी होना है ।’

‘जरूर जाओ—बैठे बैठे सबका जी खराता है ।’ लुइसा ने ममता-मुलभ भावना से कहा ।

एक घंटे के बाद लैरी उसे लिवाने आया । मोटर पर बैठते ही उसने एक रेस्तराँ की ओर गाड़ी मोड़ दी—

‘पहले खाना खा लिया जाय ! क्यों न !’ रेस्तराँ पहुँच कर लैरी ने आइजाबेल के रुचि की चीजों का आर्डर देना शुरू किया और आइजाबेल बड़ी प्रसन्नता से खाती रही । खाने के बीच बीच में वह आते जाते हुए लोगों को देखती रहती । लैरी के साथ एकान्त में चुपचाप बैठने में ही अधिक आनन्द मिलता था इसी कारण उसने एक दूर के कोने में मेज लगवा ली थी । उसे हार्दिक आनन्द मिला रहा था परन्तु उसकी आत्मा शान्त न थी । उसमें एक विद्रोह मचा

हुआ था। जब से उसने लैरी के विषय में नई बात सुनी थी वह असमंजस में थी। वह निश्चय नहीं कर पा रही थी कि सच बात जानने के लिए कौन सा मार्ग ग्रहण किया जाय। कभी कभी वह लैरी की ओर देख लेती मगर वहाँ वही सरल मुस्कान के सिवा कोई अन्य भाव न होता। हाँ इतना अवश्य ज्ञात हो रहा था कि उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन हो चला है मगर वह परिवर्तन किसमें है वह जान बिलकुल न पाती। लैरी सदा से निर्भय, निष्पक्ष और सरल रहा करता था वही वह अब भी है। कदाचित् अब उसकी आँखों की सौम्यता और मुख की शान्ति कुछ बढ़ी हुई ज्ञात होती थी। ऐसा मालूम होता था कि जैसे वह किसी निश्चय पर या तो पहुँच गया है या पहुँचने ही वाला है। वह इसी सोच विचार में थी कि लैरी ने पूछा—

‘सिनेमा देखने चलोगी?’

‘नहीं! मैं सिनेमा देखने नहीं जाऊंगी।’

‘अच्छा तो पास के बाग में टहलने ही चलो?’

‘मैं वहाँ भी नहीं जाऊंगी; मैं तो वहाँ चलना चाहती हूँ जहाँ तुम आजकल रह रहे हो।’

‘वह तो कोई दर्शनीय स्थान नहीं; मैं एक होटल में छोटे से कमरे में रहता हूँ; और उस कमरे में कोई विशेष बात नहीं।’

‘चाचा जी कल कह रहे थे कि तुम एक स्त्री के साथ बहुत दिनों से रह रहे हो और वह स्त्री कलाकारों के पास आती जाती रहती है और अपने नग्न शरीर के चित्र खिचवाया करती है?’

लैरी मुस्कराया; फिर वह यकायक हंस पड़ा—

‘अच्छा तो वहीं चलो और अपने आप चलकर देख लो। वह स्थान यहाँ से दो ही कदम पर है; हम लोग टहल चलेंगे।’

आइजाबेल को अनेक चक्करदार गलियों से ले जाकर लैरी एक होटल के छप्पे के नीचे रुक कर बोला—‘तो हम लोग आ पहुँचे!’

आइजाबेल पीछे-पीछे चली। लैरी ने एक छोटे मगर लम्बे

हाल कमरे के अन्दर कदम रखते ही वहाँ पर बैठे हुए एक आदमी से कमरे की चाभी माँगी। वह आदमी, आधी बाँह की कमीज के ऊपर काली वास्कट पहने हुए था और प्रधान बेयरा मालूम होता था। उसने फौरन ही अपने पीछे टंगे हुये चाभियों के गुच्छे से एक चाभी निकाल कर दी और दोनों पर एक ऐसी गूढ़ और सन्देहात्मक दृष्टि डाली जिससे स्पष्ट था कि वह किस मतलब से होटल में उस स्त्री को ले आया था चाभी लेकर लैरी आइजाबेल को लिये हुए कोठे पर चढ़ा और दूसरी मंजिल पर पहुँच कर एक कमरे का दरवाजा खोला। कमरे में दो ही खिड़कियाँ थीं और कमरा काफी छोटा भी था। वहाँ पर एक चारपाई पड़ी हुई थी जो केवल एक ही आदमी के सोने के मतलब की हो सकती थी। एक कोने में मेज थी और उसके पास ही एक कुर्सी रखी थी। कपड़े टॉगने की एक बड़ी आलमारी दूसरे कोने में थी जिसके पास एक लम्बा ऊँचा शीशा दीवाल के सहारे टंगा था। दीवाल के साथ एक और मेज लगी थी जिस पर बहुत सी पुस्तकें थी और लिखने के लिए कागज रखे थे। पास ही में एक टाइप राइटर भी ढका हुआ रखा था। आइजाबेल की ओर उन्मुख हो उसने कहा—‘तुम इस आराम-कुर्सी पर बैठो।’ आराम इस पर तो नहीं मिलेगा मगर यहाँ इसके सिवा दूसरी है ही नहीं और मैं तुम्हें यहीं बिठला सकता हूँ।’ इतना कह कर उसने पास पड़ी हुई दूसरी कुर्सी उठा ली। उस पर बैठते ही वह खिलखिला कर हँसा—

‘जब से मैं यहाँ आया यह कुर्सी ज्यों की त्यों रखी हुई है।’

‘मगर यह स्थान-विशेष तुमने क्यों चुना?’

‘इसलिए कि यहाँ आराम है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि जिस पुस्तकालय में मैं जाकर पढ़ता हूँ वह सामने ही है।’ ‘इसी कमरे से लगा हुआ बाथ-रूम भी है; और जहाँ बैठ कर मैंने आज तुम्हारे साथ भोजन किया है उसी रेस्तराँ में जाकर रोज खाना खा आता हूँ।’

‘मगर यह तो बड़ा गन्दा और मनहूस स्थान मालूम होता है ।’

‘हमारे काम के लिए ठीक है; मुझे सिर्फ इतनी ही जगह की आवश्यकता भी है ।’

‘यहाँ की आबादी कैसी है; मुझे तो बहुत गन्दी दिखाई देती है ?’

‘मुझे यह भी नहीं मालूम । ऊपर कुछ विद्यार्थी रहते हैं और शायद दो एक बुढ़े आदमी हैं जो दफ्तरों में काम करते होंगे । एक नर्तकी भी रहती है जिसने नाचने-गाने का काम छोड़ सा दिया है । दूसरे खण्ड में एक रखेल है जो बहुत दिनों से रहती आई है और उसका एक मित्र हर बृहस्पतिवार को उसको मिलने आता है परन्तु कुछ इधर उधर के लोग भी आते जाते रहते हैं । होटल ही तो है ।’ लैरी ने मुस्कुरा मुस्कुरा कर यह सम्पूर्ण विवरण दिया । उसकी मुस्कराहट से आइजाबेल कुछ व्यस्त सी हुई मगर लैरी का सरल मुख देख कर उसकी सब उलझन दूर हो गई । उसने मेज पर पड़ी हुई एक बहुत मोटी पुस्तक देखी—

‘यह कौन सी पुस्तक है ?’

‘ग्रीक भाषा का कोष है ।’

‘क्या ?’ उसने आश्चर्य से पूछा—

‘वह केवल पुस्तक ही है; यों ही बेचारी पड़ी रहती है और किसी को अब तक उसने काट भी नहीं खाया है; तुम सुरक्षित हो ।’

‘क्या तुम ग्रीक पढ़ रहे हो ?’

‘हाँ ।’

‘क्यों ?’

‘मैंने सोचा यह भी सीख लूँ ।’ वह फिर मुस्कुराया । उसके साथ ही साथ आइजाबेल भी मुस्कुरा पड़ी ।

‘अच्छा अब यह बतलाओ कि इतने दिनों तक पेरिस में क्या करते रहे ?’

‘विशेषतः मैं पढ़ता रहा और कभी कभी तो आठ दस घन्टे तक लगातार जुटा रहा हूँ, बहुत से व्याख्यान भी सुने। फ्रांसीसी साहित्य का मुझे बहुत अच्छा ज्ञान हो गया है; लैटिन खूब पढ़ लेता हूँ मगर ग्रीक भाषा कुछ कठिन मालूम हुई परन्तु वह भी नहीं के बराबर। मेरे एक गुरु हैं मैं उन्हीं के यहाँ प्रायः जाया करता हूँ और जब तक तुम नहीं आईं थीं मैं अपना समय अधिकतर वहीं व्यतीत किया करता था।’

‘यह सब पढ़ लिख कर क्या करोगे?’

‘अपना ज्ञान बढ़ाऊँगा’—कह कर वह फिर मुस्कुराया।

‘मुझे तो यह सब निरर्थक ज्ञात होता है।’

‘हो सकता है; शायद नहीं भी; परन्तु मुझे इसी में आनन्द आता है और कविता पढ़ने के बाद तो मुझे कभी कभी ऐसा मालूम पड़ने लगता है कि मानो मेरे पंख निकल आए हैं और मैं आकाश की ओर बड़े वेग से उड़ा चला जा रहा हूँ।’

लैरी बैठा बैठा उठ पड़ा, कदाचित् काव्य का ध्यान आते ही मस्तिष्क में रक्त की गति और अधिक बढ़ गई। उठते ही वह एक ओर से दूसरी ओर टहलने लगा।

‘मैं अभी कल ही एक दार्शनिक की पुस्तक पढ़ रहा था: मैं अधिक तो नहीं समझ पाया मगर जितना समझ पाया उतने ही ने मेरे शरीर में स्फूर्ति भर दी; मुझे ज्ञात हुआ कि मानो मैं बहुत ऊँचाई से वायुयान पर बैठे हुए शान्त पहाड़ों के वातावरण में एकाकी उतर रहा हूँ। मुझे इतनी शान्ति मिली, इतना आनन्द आया कि जैसे मैंने अमृत समान कोई मीठी शराब बहुत अधिक मात्रा में पी ली हो—मेरी आँखें चमक उठीं—जैसे कोई लाखों की सम्पत्ति जुए में पा गया हो।’

‘शिकागो वापस चलने का कुछ विचार है?’ लैरी कुछ चौंका—

‘शिकागो ! अभी तक तो निश्चित नहीं कर पाया हूँ।’

‘तुमने तो पहले कहा था कि जिस वस्तु की खोज में मैं जा रहा हूँ अगर वह दो वर्ष की खोज के पश्चात् नहीं मिली तो मैं सब छोड़ छाड़ कर वापस लौट चलूंगा।’

‘मैं कदाचित् अभी न लौट सकूंगा ! अभी तो केवल एक ही मंजिल तय कर पाया हूँ। अपने आगे मैं अनेक आत्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों का विकास देख रहा हूँ। प्रत्येक क्षेत्र मेरा आवाहन बाहें खोले हुए कर रहा है, मैं चाह रहा हूँ मैं हर क्षेत्र में जाऊँ और आत्मानन्द में विभोर रहूँ ?’

‘इसमें तुमको मिलेगा क्या ?’

‘मेरे प्रश्नों का उत्तर।’ उसने हास्यपूर्ण दृष्टि से आइजाबेल की ओर देखा और यदि वह लैरी के स्वभाव से परिचित न होती तो यह समझती कि वह उसकी हँसी उड़ा रहा है। ‘मैं जानना चाहता हूँ कि ईश्वर के नाम की कोई वस्तु है या नहीं ? मैं यह अनुभव करना चाहता हूँ कि पाप क्या है और कहाँ है ? मैं निश्चयात्मक रूप से समझना चाहता हूँ कि मेरी आत्मा अमर है अथवा नश्वर ?’

इन प्रश्नों को सुनते ही आइजाबेल ने व्याकुलता से सांस ली क्योंकि लैरी से इस प्रकार की बातें सुनकर उसे आश्चर्य और क्षोभ दोनों एक साथ हुआ। परन्तु उसने ये कठिन प्रश्न इतने सरल स्वभाव से किए थे कि वह हतप्रभ न हुई।

‘मगर लैरी ! ये प्रश्न तो लोग हजारों वर्ष से पूछते चले आ रहे हैं और यदि उनका कोई ठीक उत्तर होता तो अब तक उनका पता चल गया होता ?’ लैरी यह सुनते ही ठठाकर हँसा। आइजाबेल ने क्रुधित होकर कहा—

‘बड़े जानी बन रहे हो। मैंने क्या कोई बेवकूफी की बात कह डाली ?’

‘नहीं ! नहीं ! इसके बिल्कुल विपरीत; तुमने बड़ी बुद्धिमानी की बात कही है। तुमको यह भी कहना चाहिए कि जब मनुष्य इन प्रश्नों

को हजारों वर्ष से पूछता आया है तो इनका आगे भी पूछा जाना स्वाभाविक ही है और कदाचित् यह भी सच है कि मनुष्य इन्हीं प्रश्नों को भविष्य में भी सतत पूछता चला जायगा। फिर यह तो कहना गलत है कि किसी ने इनका उत्तर पाया ही न हो। उत्तरों की संख्या प्रश्नों से कहीं अधिक है। एक एक प्रश्न के हजार हजार उत्तर हैं और बहुतों ने तो अपने को सन्तुष्ट करने वाले उत्तर निकाल भी लिए हैं। उनमें एक मेरा मित्र रुज़ब्रोक् भी था।

‘कौन ?’

‘वह मेरा पुराना साथी था—साथ छात्र कालेज में पढ़ा करता था।’ लैरी ने बात टालते हुए कहा।

‘मुझे तो यह सब कुछ समझ में नहीं आता। यह तो ऐसी बातें हैं जो कदाचित् प्रत्येक नवयुवक के मन में जब तक वह कालेज में अध्ययन करता रहता है रहा करती हैं और बाद में जुला दी जाती हैं। जीवन-यापन के भार संभालने में सब कुछ विस्मृत हो जाता है। जीविका तो सबको चलानी ही पड़ती है।’

‘मैं उन लोगों को बुरा नहीं कहता—और कह भी नहीं सकता क्योंकि उन लोगों की अपेक्षा मेरे पास खाने पहनने के लिए यथेष्ट है। हाँ यदि इस भाग्यवान-परिस्थिति में मैं न होता तो अवश्य जीविकोपार्जन की ओर ध्यान देता। फिर धन भी इकट्ठा होने लगता।’

‘क्या तुम्हारी दृष्टि में धन का कोई मूल्य नहीं ?’

‘कोई विशेष नहीं।’

‘तुम अपने इस अनुसंधान में कब तक लगे रहोगे ?’

‘कह नहीं सकता। पांच वर्ष लग जाँय; दस लग जाँय।’

‘उसके पश्चात् ? इस ज्ञानार्जन के क्या क्या उपयोग होंगे ?’

‘यदि मुझ में ज्ञान आ जाय तो मैं यह भी उसी समय जान जाऊँगा कि उसका उपयोग क्या होगा।’

आइजाबेल ने अपनी दोनों हथेलियाँ एक में जकड़ लीं और

अपने मुख पर कायक मुस्कान लाकर कहा—

‘लैरी तुम भ्रम में पड़े हो। तुम अमरीकी हो और तुम्हारे योग्य ठीक स्थान यहाँ नहीं, अमरीका में है !’

‘मैं ज्यों ही तैयार हो जाऊँगा त्यों ही अमरीका वापस लौटूँगा।’

‘मगर अपनी हानि तो सोचो। तुम यहाँ बैठकर जीवन की दौड़ में पिछड़े हुए हो और वहाँ पर लोग आगे बढ़ते ही जा रहे हैं; लाभ के नित्य नवीन साधन मिल रहे हैं। युरोप को समाप्त ही समझो। अब हमारा ही राष्ट्र ऐसा रह गया है जिसकी शक्ति बढ़ती रहेगी और आगे चल कर हमारी ही तूती बोलेली। हम लोग तो दिन पर दिन उन्नति करते जा रहे हैं और करते ही जायेंगे। तुम्हें भी अपने देश की प्रगति में सहयोग देना चाहिए। अमरीका के जीवन में आज-कल कितना आनन्द है तुम समझ ही नहीं रहे हो। मैं यह नहीं कहती कि तुम जान बूझकर कर्तव्य से मुह चुरा रहे हो। मैं जानती हूँ कि तुम भी कुछ न कुछ कर ही रहे हो मगर तुम्हारा कार्य कोई लाभदायक कार्य नहीं; तुम जीवन के कर्तव्य को टाल रहे हो। कभी तुमने यह भी सोचा है कि यदि सब के सब अमरीकी नवयुवक तुम्हारे समान ही निरर्थक कार्य करते रहें तो देश की क्या दशा हो !’

लैरी का स्वर स्नेहाभिसिक्त हो उठा—

‘मधुरिमे ! तुम मेरे साथ बड़ी निटुराई दिखला रही हो। सबका उत्तर यही है कि दूसरे लोग न तो मेरे समान अनुभव करते हैं और न मेरा स्वभाव ही उनमें है। भाग्य या अभाग्यवश सभी व्यक्ति पुरानी रूढ़ियाँ पुराने व्यवसाय, पुराने कार्य अपना लेते हैं और यही साधारणतया होता भी है। शायद तुम यह भूलती हो कि मैं उसी लगन और निष्ठा के साथ शानार्जन करना चाहता हूँ जितनी लगन से प्रेधन इकट्ठा करना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि कुछ दिनों तैयारी करूँ और क्या इसी कारण तुम मुझे देश-द्रोही कहोगी ? यह भी हो सकता है कि जब मैं वाञ्छित शानार्जन के पश्चात् देश लौटूँ तो जो कुछ मैं

अपने देश को उस समय दे सकूंगा उससे समाज को कहीं अधिक आनन्द आएगा और कहीं अधिक लाभ होगा। यह तो केवल अवसर की बात है। यदि मैं अपने ध्येय में असफल रहा तो यह भाग्य की बात है; व्यवसाय में भी तो लोग असफल होते हैं; दीवालिया तक हो जाते हैं।'

‘और तुम्हें मेरा कुछ भी ध्यान नहीं है?’

‘यह कौन कहता है? मेरी तो इच्छा यही है तुम मुझसे विवाह कर लो।’

‘कब? दस वर्ष बाद?’

‘नहीं! अभी। जितनी जल्दी हो सके।’

‘किसके आश्वार पर? माँ के पास पैसा नहीं—वह कुछ भी दहेज नहीं दे सकती और उनके पास यदि धन होता भी तो वह नहीं देती। उन्हें बेकार आदमी से बड़ी चिढ़ है।’

लैरी ने सान्त्वना-सूचक शब्दों में कहा—

‘मैं तुम्हारी माँ से एक पैसा भी लेना नहीं चाहता। करीब पैंतालीस हजार मेरी वार्षिक आय है और पेरिस में रहने के लिए इतना पर्याप्त है। हम लोग एक छोटा सा बगला ले लेंगे और फिर आनन्द ही आनन्द रहेगा—क्यों?’

‘भगर लैरी! पैंतालीस हजार वार्षिक आय में प्रतिष्ठापूर्वक रहना कठिन है।’

‘ऐसी बात तो नहीं; अधिकांश तो इससे भी कम में निर्वाह कर लेते हैं।’

‘मैं पैंतालीस हजार वार्षिक पर नहीं निर्वाह कर सकती? और करूँ भी क्यों?’

‘मैं स्वयं तो इसके आधे में भी रह सकता हूँ।’

‘क्या इसी तरह?’ आइजाबेल ने कमरे के चारों ओर आंख दौड़ाई और उसके शरीर में घृणा की गानगनाहट दौड़ गई।

‘इसका तात्पर्य यह है कि मैंने समुचित धन बचा लिया है। हम दोनों दूर दूर विदेशों में जाकर रह सकते हैं और प्यार का जीवन व्यतीत कर सकते हैं। फिर यूनान चलेंगे। मैं तो वहाँ जाने के लिए उतावला हो रहा हूँ। क्या तुम भूल गईं कि बचपन में हम दोनों संसार में सतत घूमते हुए आँख-मिचौनी खेलने का स्वप्न देखा करते थे ?’

‘मैं कब कहती हूँ कि मैं तुम्हारे साथ संसार घूमना नहीं चाहती। मगर मैं तुम्हारे नियमानुसार नहीं घूमना चाहती जिसमें थर्ड क्लास के डिब्बे का सफर हो या जहाज के सेकेन्ड क्लास में बैठे बैठे घन्टे गिने जाय; और न तो मैं सस्ते गन्दे होटलों में ही ठहरना चाहती हूँ।’

‘पिछले वर्ष की ही बात है कि मैं इसी तरह इटली घूमने चल दिया था। सच कह रहा हूँ बड़ा ही आनन्द आया; ऐसा आनन्द कि मुलाए नहीं भूलता। पैतालीस हजार वार्षिक आय में हम लोग बड़े मजे में घूम फिर सकते हैं !’

‘लैरी ! मुझे वाल बच्चे भी प्यारे हैं; मैं माँ कहलाना चाहती हूँ !’

‘तब तो और भी अच्छा रहेगा, वे सब भी हम लोगों के साथ ही साथ घूमेगे।’

‘तुम बहुत ही भोले हो लैरी ! मैं तुम्हें किस तरह समझाऊँ। तुम्हें कुछ पता भी है कि एक शिशु के पालन पोषण में कितना खर्च पड़ता है। मेरी एक सखा के पिछले वर्ष ही बच्चा हुआ था और कम करते करते कुछ नहीं तो उसके बारह सौ पचास डालर उठ गए। क्या तुम्हें कुछ मालूम है कि धाय पर कितना खर्च होगा ?’ ज्यों ज्यों उसके मन में नए भाव आते गए वह उतने ही तैश से बोलने लगी। ‘तुम्हें कुछ भी तो नहीं मालूम; न जाने किस दुनियाँ में रहते हो। मैं युवती हूँ; मेरे मन में उमंगें हैं; मैं जीवन से लिपट कर उसका पूरा रस चखना चाहती हूँ। मैं वह सब कुछ करना चाहती हूँ जो युवा युवती साथ साथ रह कर करते हैं; मैं दावतों में

जाना चाहती हूँ, मेहमानों को अपने घर बुलाना चाहती हूँ, पार्टियों में जाकर अपनी नृत्य-कला दिखलाना चाहती हूँ। मैं खेलना-कूदना चाहती हूँ, घुड़सवारी करना चाहती हूँ; अच्छे अच्छे कपड़ों और रत्न-राशि से अपने सौन्दर्य को सजाना चाहती हूँ। मैं किराए की गाड़ियों पर जब चढ़ती हूँ तो मेरा दम घुटने लगता है; मैं अपनी निजी मोटर चाहती हूँ। मैं आजकल तो अच्छे बाल काटने वाली की दूकान पर भी नहीं जा सकती। और जब तुम दफ्तर में बैठे पढ़ते रहोगे तो जानते हो मैं क्या करूँगी। मैं घर पर बैठे बैठे मक्खी तो मार नहीं सकती। मैं बाहर जाकर दूकानों का निरीक्षण करूँगी, नए नए हैट, नई नई प्रॉक, नई डिजाइन की चोलियाँ-तमाम नई नई चीजें खरीदकर अपना मन बहलाया करूँगी। तुम्हारे विचारों के अनुसार जीवन में हम एक भी मित्र नहीं बना पाएँगे और सब लोगों से दूर हो जाएँगे।'

'कैसी बात कर रही हो ! आइजबेल !' लैरी ने टोकने का प्रयत्न किया। मगर वह कहती ही चली गई।

'अपने पुराने मित्र भी मुझे नहीं सन्तुष्ट कर पायेंगे। मैं चाचा जी के श्रेष्ठ मित्र वर्ग से परिचय बढ़ाना चाहूँगी। चाचा जी के सब मित्र मुझे दावतें देंगे और उसके लिए अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार कपड़े लत्ते भी चाहिये; फिर उनके यहां एक बार जाकर उनको अपने यहां भी बुलाना पड़ेगा, उसके लिए सभी प्रबन्ध करना पड़ेगा। मैं मैले कुचैले गन्दे लोगों से परिचय प्राप्त नहीं करना चाहती हमें उनसे प्रयोजन ही क्या। उनकी और हमारी दुनियां में संबंध कैसा ? मैं जीवन की दौड़ में आगे रहना चाहती हूँ, बहुत आगे, जहां मुझे कोई छू भी न पाए। लोग मुझसे ईर्ष्या करें और मैं उन्हें ललचाती रहूँ।' बातें करते आइजबेल ने देखा कि लैरी की आंखें मूक हास्य से चमक रही थीं। 'तुम शायद यह समझते हो कि यह केवल पागलों का प्रलाप है; मैं तुमसे केवल जीवन का तथ्य बतला रही हूँ; यही

जीवन का एकमात्र सत्य है !!

‘नहीं, नहीं, तुम जो कुछ कह रही हो बिलकुल स्वाभाविक ही है।’

वह दीवाल के सहारे खड़ा हो गया और उसकी आंखें आइजाबेल से जा मिलीं। आइजाबेल अपने को संभाल न सकी—‘लैरी ! अगर तुम्हारे नाम में एक पाई भी जमा न होती और तुम कोई ऐसी नौकरी या व्यवसाय करते होते जिससे वर्ष में पैंतालीस हजार की आय होती तो मैं विवाह के लिये एक मिनट में प्रस्तुत हो जाती। मैं तुम्हारे लिए खाना पकाती, चारपाई बिछाती, दिन भर घर का काम करती रहती और इसकी मुझे किंचित मात्र चिन्ता न होती कि मैं क्या पहन ओढ़ रही हूँ और उसमें मुझे प्रसन्नता होती। जनते हो क्यों ? इसलिये कि मैं यह समझती कि यह थोड़े ही दिनों की बात है और शीघ्र ही अच्छे दिन आएँगे और तुम्हारी अवश्य उन्नति होगी। मगर ऐसे तो सोचने के लिए भविष्य में कुछ रह ही नहीं जाता। ऐसा जीवन तो भार हो जायगा और अन्तिम दिन तक मैं केवल मृत्यु की बाट जोहती रहूँगी; और मान लो कि मैं ऐसे रहूँ भी पर किस लिए ? क्या इसीलिए कि तुम अपने उन प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने में लगे हो जिनको तुम स्वयं कह चुके हो कि वे कठिन हैं और उनका कोई उत्तर नहीं। कितने भ्रम में तुम पड़े हुए हो। मनुष्य को अपनी जीविका चलाने के लिए भी कुछ करना चाहिये; उसे अपना कर्त्तव्य समझना चाहिए— इसीलिए उसका जन्म हुआ है और इसी आदर्श के सहारे समाज और देश की उन्नति होती है !!

‘तुम्हारे विचारों से यही निष्कर्ष निकलता है न कि मैं शिकागो चली, हेनरी मेट्ररिन के दलाली के व्यवसाय को समझूँ !’ क्या उनके शेरों की दलाली करने से ही समाज फूले फलेगा और मानव की आदर्श सेवा होगी ?

‘व्यवसाय में दलालों का होना अनिवार्य है; और दलाली का

व्यवसाय जीविका चलाने का श्रेष्ठतम उपाय है ।'

लैरी ने बात बदलने की चेष्टा करते हुए कहा—

‘फिर तुमने पेरिस में कम आय पर निभर रहने वालों के जीवन का बहुत ही भ्रम मूलक चित्र खींचा है । बात ऐसी नहीं है । साधारण रूप से अच्छे कपड़े पहने ओढ़े जा सकते हैं और सभी अच्छे और मनोरंजक व्यक्ति इलियट से ही सम्पर्क रखने वाले नहीं होते । मैं ऐसे बहुत से लेखकों, चित्रकारों और विद्यार्थियों को जानता हूँ जो सदा हमारा मनोरंजन करते रहेंगे और हम जरा भी न ऊबेंगे । इलियट के श्रेष्ठ वर्ग के लिपे पुते, टेढ़ी गरदन करके चलने वाले मित्रों की अपेक्षा संसार में लाखों ऐसे हैं जो जीवन में आनन्द ही आनन्द सरसाते रहते हैं । तुम में तो अपने को आनन्दित और प्रसन्न रखने के स्वाभाविक गुण हैं; उसके लिए आठ दस नौकर चाकर और श्रेष्ठ समाज से संसर्ग आवश्यक नहीं !’

‘लैरी! तुम कैसी भद्दी बातें’ कर रहे हो ? मैं बड़े आदमियों के पीछे लगने वाला स्त्री नहीं और मैं अपने को प्रसन्न भी रख सकती हूँ ।’

‘केवल शानदार कपड़े लत्ते पहनकर और बड़ी बड़ी दावतों में जाकर ही ? क्यों ? और छोटी मोटी हैसियत के लोगों की खिल्ली उड़ा कर और उनकी आलोचना कर ? ठीक है न !’

‘ठीक है लैरी ! मैंने निम्न अथवा मध्यम वर्ग का जीवन जाना ही नहीं कि किस प्रकार का होता है; मैं उससे सदा अलग ही रही हूँ । हमारे उनके में दूरी भी कितनी है ।’

‘फिर तुम्हारा विचार क्या है !’

‘वहीं जो पहले था । मैं जन्म से शिकागो में ही रहती आई हूँ; मेरे सभी साथी वहीं हैं, मेरा मन भी वहीं लगता है और मैं वहीं की मिट्टी में पनप सकती हूँ और आनन्दित रह सकती हूँ । फिर मैं भी अस्वस्थ रहा करती हूँ और शायद अब वह कभी भी अच्छी न

हो सके—इसलिए मैं उन्हें छोड़कर और कहीं रह भी नहीं सकती ?

‘क्या इसके यह अर्थ तो नहीं कि जब तक मैं शिकागो में रहकर काम काज न शुरू करूँ तब तक तुम मुझसे विवाह भी न करोगी ?

‘मैं तो यही समझती हूँ’ ।

लैरी ने अपना पाइप सुलगाया और खिड़की के बाहर देखने लगा । अबाध गति से समय बीतता जा रहा था; मिनट वर्ष के समान ज्ञात हो रहे थे । आइजाबेल दर्पण के सामने खड़ी थी मगर उसे अपनी आकृति नहीं दिखलाई दे रही थी—असमंजस की प्रगाढ़ छाया उसकी आँखों में घर किए बैठी थी । उसका हृदय तीव्र गति से धड़क रहा था । सन्नाटा टूटा—

‘मैं इस बात का तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता था कि जीवन का जो आनन्द मैंने दोनों के लिए सोचा है वह कहीं उच्च और सम्पूर्ण है । तुम अभी तक उसकी कल्पना भी नहीं कर पाई हो । मैं चाहता हूँ कि किसी न किसी प्रकार तुम्हें इसी आत्मिक जीवन के आनन्द की ओर आकृष्ट कर उसकी भांकी दिखलाऊँ । इस प्रकार का जीवन अथाह, अगम और सम्पूर्ण है । उसमें कितना आनन्द है कौन वर्णन कर सकता है ! वहाँ तुम्हें ऐसा आभास मिलेगा कि तुम वायुयान पर एकाकी बैठी हुई अनन्त की ओर उड़ती चली जा रही हो और पृथ्वी और उसके आकर्षण तुच्छ दिखलाई देते जा रहे हैं । जब मैं दर्शन की पुस्तक उठाकर पढ़ने लगता हूँ तो ऐसा अनुभव होता है कि न तो पृथ्वी है और न आकाश—मैं हूँ और अनन्त है—और हम दोनों एक दूसरे को सम्मुख देखकर मुस्कुरा रहे हैं !’

‘लैरी ! क्या कभी तुमने यह भी अनुभव किया है कि मैं इस प्रकार के जीवन के लिए नहीं बनी हूँ । तुम मुझसे ऐसी वस्तु माँग रहे हो जो मेरे पास है ही नहीं । इस प्रकार का जीवन न तो मुझे भाएगा और न मैं उसके लिए प्रस्तुत ही हूँ । मैं न जाने कितनी बार तुमसे कह चुकी हूँ कि मैं युवती हूँ—नितान्त साधारण और स्वाभाविक उमंगों

वाली। मेरी वयस अभी बीस वर्ष है, आगले दस वर्षों में मैं बुढ़ी हो जाऊंगी। तब तक तो मुझे मनमानी कर लेने दो; आगे क्या रखा है—केवल बुढ़ापा और एकाकी, नीरस जीवन! मैं तुम्हारे हित के लिए ही इतना आग्रह कर रही हूँ। लैरी! मनुष्य बनो! पुरुष सा आगे बढ़ो और जीवन की चुनौती स्वीकार कर अपना भविष्य बनाओ। अपनी युवावस्था को इस तरह मिट्टी में मिलाने से क्या लाभ जब सारा संसार दोनों हाथों से उसका आशीर्वाद ले रहा है। यदि तुम वास्तव में मुझसे प्रेम करते हो तो क्या अपने कोरे स्वप्न के लिए मुझे ठुकरा दोगे? अब तक तो अपनी सी कर लुके। अब भी अमेरिका लौट चलो।’

‘इतना आग्रह न करो प्रिये! मेरी उमंगें धूल में मिल जायंगी; मेरी आत्मा का हनन हो जायगा; मेरा जीवन सूना हो जायगा।’

‘क्या तुमने भी श्रेष्ठ वर्ग की पागल स्त्रियों के समान इस तरह की बातें करना सीख लिया। क्या तुम यह नहीं समझ रहे हो कि अब वह समय आगया है कि तुम्हें कुछ न कुछ निश्चित करना ही पड़ेगा। हम दोनों जीवन के उस चौराहे पर आ खड़े हुए हैं जहाँ पर आगे का कदम निश्चय से साथ उठाना पड़ेगा। तुम्हारी यह केवल भावुकता है—कोरी भावुकता जिसमें तथ्य कुछ भी नहीं।’

‘वही तो मेरा जीवन है; वही मेरा आधार है। मैं तुमसे सत्य कह रहा हूँ प्रिये! क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता?’ आइजाबेल ने लम्बी सांस ली—

‘अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मेरा क्या बस। तुम सुबुद्धि से बातें ही नहीं कर रहे हो?’

‘मैं तो स्वयं तुम्हारी बातों में ही कोई सुबुद्धि नहीं देख रहा हूँ: तुम्हीं तब से प्रलाप कर रही हो?’

‘मैं! मैं प्रलाप कर रही हूँ। मैं नहीं तुम, लैरी! कुछ समझने का प्रयत्न तो करो।’ इतना कह कर धीरे धीरे उसने अपनी सगाई

की अंगूठी उतारना शुरू की। शायद यह पहली बार था जब उसने उसे अपनी उँगली से अलग किया हो। भरे हुए स्वर में वह बोली—

‘तुम मुझसे यदि वास्तव में प्रेम करते होते तो मुझे इस तरह दुःखी न बनाते ?’

‘मैं तुमसे प्रेम करता हूँ प्रिये; बहुत अधिक प्रेम करता हूँ ! ऐसा ज्ञात होता है कि संसार में बिना किसी को दुःखी बनाए मानव कदाचित् सत्य पथ पर नहीं टिक सकता ।’

आइजाबेल ने अपना हाथ बढाया। अंगूठी उँगली के कोने पर आधी लटक रही थी—

‘इसे रखिए ।’ उसने अन्तिम उच्छ्वास से कहा।

‘यह मेरे किस काम की ! कम से कम हमारी मित्रता के चिन्ह समान तो तुम इसे रख ही सकती हो। केवल इससे ही हम लोगों की मित्रता टूट तो नहीं सकती ।’

‘मैं क्या तुम्हें भुला सकती हूँ ?’

‘तब इसे रखो; इसमें संकोच ही क्या है ।’ उसने अंगूठी अपने बाएँ हाथ से बदल कर दाहिने हाथ की उँगली में डाल ली ! लैरी ने शीघ्र ही कहा—‘चलो हम लोग कहीं बाहर घूम आएँ ?’

‘अवश्य ।’

आइजाबेल को इस बात पर अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था कि सब बात इतनी सुगमता से क्यों कर समाप्त हो गई। वह न तो रोई और न लैरी ही क्रुधित हुआ। केवल यही निश्चय हुआ कि वह लैरी से विवाह नहीं करेगी। उसे अपने पर विश्वास भी नहीं हो रहा था। उसे बार बार यह ध्यान आता कि शायद उसी की हार रही मगर लैरी के सरल स्वभाव और प्रसन्न-मुख ने यह भावना निर्मूल कर दी। लैरी के हृदय में उस समय क्या विचार उठ रहे थे उसको जानने के लिए वह बहुत कुछ देने को प्रस्तुत थी। मगर वह क्या शायद ही कोई लैरी के सरल मुख से उसके अन्तरतम के भावों को जान

सकता। उसकी काली आँखों का रहस्य कोई भी न जान पाया था। सोचते सोचते उसने अपनी हैट दर्पण के सामने खड़े होकर सीधी की और पूछा—

‘लैरी ! सच बतलाना-क्या तुम अपनी सगाई वास्तव में तोड़ना चाहते थे ? मैं कुतूहलवश ही पूछ रही हूँ ?’

‘बिलकुल नहीं ।’

‘मैंने सोचा था कि शायद तुम यही समझ रहे होगे कि बला टली ।’ लैरी चुप रहा । आइजाबेल मुस्कुलाई और बोली—‘चलो मैं बाहर चलने के लिए बिलकुल तैयार हूँ ।’

लैरी ने कमरे का दरवाजा बन्द करके चाभी उसी खानसामा को फिर वापस की जो होटल के बरामदे में पूर्ववत् बैठा हुआ था । उसने दुबारा दोनों पर एक हास्यपूर्ण और तीखी निगाह डाल कर यह जता दिया कि उससे छिपा नहीं था कि यह युवती होटल में क्यों आई थी । आइजाबेल ने उसके मुख का भाव समझकर लैरी से चलते चलते कहा—

‘यह खानसामा शायद बाजी लगा सकता है कि मैं कुमारी नहीं हूँ ? क्यों लैरी ?’ लैरी मुस्कुरा भर दिया ।

दूसरे होटल में पहुँच कर दोनों ने चाय पीना आरम्भ कर दिया । इधर उधर की बातें होती रहीं । जैसे दो पुराने नित्य प्रति मिलने वाले मित्र बातचीत करते हों वैसा ही वातावरण था । लैरी तो स्वभावतः ही शान्त और चुप्पा था और आइजाबेल ही अधिकतर बातें करती रही । उसने अपनी बातों से किंचित मात्र भी यह प्रकट न होने दिया कि उसे कोई क्षोभ अथवा क्रोध है ! चाय पीकर उसने लैरी से घर तक कष्ट करने को कहा और लैरी उसको घर वापस पहुँचाने चला । वहाँ पहुँचकर आइजाबेल ने कहा—‘यह न भूलना कि कल तुम्हें हमारे साथ ही खाना खाना है ।’

‘मैं भूलने वाला नहीं; अवश्य आऊँगा ।’

चलते समय लैरी ने आइजाबेल के मुख पर मधुर स्नेहांकन की रेखा डाल बिदा ली ।

४

घर पहुँचने पर आइजाबेल ने देखा कि इलियट के बड़े कमरे में कुछ व्यक्ति बैठे हुए हैं । दो दम्पति साथ बैठे हुए, हाथों में प्याले लिए बातें कर रहे थे । दो अमरीकी स्त्रियाँ भी बहुत रंग बिरंगे साए, जिन पर कढ़े हुए फूल कमर से निचले भाग पर छाए जा रहे थे, पहने हुए बैठी थीं । मोतियों की बड़ी बड़ी मालाएँ उन्होंने दुहरा कर अपने गले में पहन रखी थीं । हीरे के तोड़े और बहुमूल्य आभापूर्ण रत्नों से जड़ी हुई अंगूठियाँ उनकी पूरी बाहों में जैसे आग की लौ प्रकट कर रहीं थी । बालों की लटों को उठा कर उन्होंने इस प्रकार बांध रखा था जैसे मोर के सिर पर कलंगी बाँधी रहती है; और प्रत्येक लट जो हिना की सुगन्ध में सराबोर थी सम्पूर्ण कमरे में अपनी गमक फैला रही थी । आँखों की भव्य और बरौनियाँ अपने नैसर्गिक स्थान से आगे बढ़ा कर लहरदार और लम्बी कर दी गई थी । ऐसी ज्ञात होता था जैसे बरौनों का प्रत्येक बाल अपना पर फैलाए हो । होठों के ऊपर वैसी ही गहरी लाली लगी हुई थी जैसे पक्के कोयले से आग निकल रही हो । कपोलों पर दुहरा या तेहरा कर पाउडर और क्रीम की पालिश सम्पूर्ण मुख से एक सफेद लहक प्रकट करती थी । दुबली पतली कनक-छुरी सी महिलाएँ ऐसी आँखों से देख रहीं थीं कि मानों न ता उनकी प्यास ही बुझी है और न मूख । किस पारश्रम से उन्होंने अपने शरीर को सजाया था; जिस सावधानी से वे अपने साए की सिकुड़न और अपने फ्राकों की शिकन मिटा रहीं थीं देखते ही बनता था । ऐसा ज्ञात होता था कि उनके शरीर का प्रत्येक भाग कसरत कर रहा है और उनके कपड़े और उनका

आइजाबेल ने कमरे में आते ही वहाँ का वातावरण परिवर्तित कर दिया। अपने नैसर्गिक यौवन तथा स्निग्ध सरल दृष्टि, शारीरिक चंचलता और फूटते लावण्य से वहाँ के दूषित वातावरण को उसने शुद्ध सा किया। ऐसा आभास मिलता था कि मानो यौवन प्रौढ़ावस्था को मुँह चिढ़ा रहा है। नवाबजादे स्वभाववश लपक कर उठे और एक कुर्सी सामने खींच लाए। दोनों अमरीकी महिलाओं ने आइजाबेल को ऊपर से नीचे तक देखा और घबरा सी उठीं कि उनका यह प्रतिद्वंद्वी नवीन और अपरिचित अस्त्र-शस्त्र कैसे ले आया। उसके लावण्य ने उनके कपोलों पर चढ़े हुए क्रीम और पाउडर के पलस्तर को मानों चुल्लूभर पानी से छींटें मार दिए हों। परन्तु आइजाबेल के विचार विभिन्न थे। उसने मेहमानों को ईर्ष्या की दृष्टि से देख कर समझा कि वे प्रतिष्ठा प्राप्त और श्रेष्ठ थीं। उनके बहुमूल्य कपड़ों पर उसने अपनी ललचती हुई दृष्टि डाल कर हटा लीं। उनके उठने बैठने का ढङ्ग और गले में लोट-पोट करते हुए मोतियों को देख कर वह ठिठक गई और अपने सहज व्यवहार को कुण्ठित करने का प्रयत्न करने लगी। वह कल्पना करने लगी कि क्या कभी इसी प्रकार उसके भी दिन फिरेंगे। आइजाबेल के आते ही बातों का सिलसिला जो टूट गया था बंध चला। उन दावतों की चर्चा होने लगी जहाँ-जहाँ वे निमन्त्रित थीं अथवा होने वाली थीं; अवैध प्रेम में लगी लिपटी महिलाओं की चर्चा भी चल पड़ी कि किसके यहाँ कौन कौन, किस-किस समय आता और कितनी देर बाद बाहर निकलता और उनके मुख पर क्या क्या भाव रहते। सब पर टिप्पणी होने लगी। अपने मित्रों, उनकी पत्नियों और उनकी अनेक प्रेयसियों की चर्चा भी उन्होंने चलाई और सबकी आलोचना कर उनके टुकड़े टुकड़े करके रख दिए। ऐसा ज्ञात होता कि वे सब आंखों देखी बातें कर रही हैं और लेझ-मात्र सन्देह नहीं हो सकता। एक ही सांस में वे साहित्य की बातें करतीं, पड़ोसी के प्रेमिका की बात छेड़तीं, दरजी की बुराई करतीं,

राजनीतिज्ञों पर छीटें कसतीं और 'अन्डों' को सड़ने से बचाने की योजना सोचतीं। वे शायद सर्वज्ञ सी थीं। आइजाबेल बड़े चाव से सब बातें सुनती जा रही थी और उसे ज्ञात होने लगा कि उसको ज्ञान का अक्षय भाण्डार भरा हुआ मिल रहा है जिसके सहारे वह अपने जीवन को श्रेष्ठतम बना सकती है। वास्तव में उसके लिए यही जीवन की महानता थी। बातें सुन सुन कर उसका शरीर अगड़ाई लेने लगा। इसी जीवन की वह प्रतीक्षा कर रही थी; इसी के लिए उसकी अपार उत्कण्ठा थी—चकाचौंध लाने वाले कपड़े, दावतें, चटपटा जीवन ! उसने कमरे की ओर दृष्टि फेरी—मोटी मोटी कालीनें जिस पर चलने पर ऐसा मालूम होता कि कोई तलवे सहला रहा है, मेजें और खाने की चीजें, शयनागार के पलंग जिनकी बनावट ही देख कर प्रेम मचल उठता, सुन्दरियों के नग्न चित्र जिनका मूल्य बड़े बड़े धनी मानी नहीं आँक सकते थे ! इसके बाद ही उसे लैरी के गन्दे, किताबों से लदे, आकर्षण-हीन होटल के कमरे का ध्यान आया। वह सिहर उठी।

चाय और बातें साथ ही साथ समाप्त हुईं और मेहमान अपने अपने घर को चले। अब आइजाबेल के सिवाय वहाँ इलियट थे और लुइसा। मेहमानों की प्रशंसा करते हुए इलियट बोले—

‘क्या ही प्रतिभा शाली महिलाएँ हैं ! जब मैं पहले पहल पेरिस आया तब से उनको बहुत अभिन्नता से जानता हूँ। वे जीवन में इतनी सफल होंगी मैं स्वप्न में भी विश्वास न कर पाता था मगर उन्होंने जिस प्रकार अपने जीवन को संचित कर रखा उस पर मुझे कभी कभी बहुत आश्चर्य होता है। अमरीकी स्त्रियों में एक विचित्र जीवन-शक्ति होती है, वे प्रत्येक वातावरण में अपने को समो देती हैं; कोई उन्हें पहचान ही नहीं सकता कि वे पहले क्या थीं ?’

अमती लुइसा ने एक प्रश्न-सूचक कटाक्ष उनकी ओर फका ! इलियट देखते ही प्रेम से बोले—

‘लुइसा ! क्या किसी ने तुम्हारी भी प्रशंसा इसी प्रकार की है । तुमको अबसर नहीं मिला ऐसी बात भी नहीं; मगर तुम्हारे शरीर की काठी ही न जाने कैसी है ?’ श्रीमती लुइसा के चेहरे का भाव बदलने लगा । वे बोलीं—

‘तुम्हारे आदर्शों के अनुसार तो मेरा जीवन अवश्य निरर्थक है । मगर मैं जो कुछ भी हूँ उसी में मुझे बहुत सन्तोष है ।’

‘यह तो तुम्हारा पुराना स्वभाव है; कोई नई बात तो है नहीं ।’ आइजाबेल अबसर ढूँढ रही थी—

‘माँ ! मैं सोच रही थी कि तुम्हें अभी ही बतला दूँ कि मैंने लोरी से सगाई तोड़ दी ।’ इलियट ने बात पकड़ ली—

‘अरे रहने भी दो । मेरी दावत में कल एक आदमी कम हो जायगा तो कुर्सी खाली रहेगी; इतनी जल्दी मुझे दूसरा आदमी कहाँ मिल जायगा ?’

‘घबराइए मत चाचा जी ! वह खाना खाने आएँगे ।’

‘तुम्हारे सगाई तोड़ देने पर भी वह आयेंगे; यह तो विचित्र सी बात मालूम होती है—शायद प्रगतिवादिता यही हो ।’ आइजाबेल मुस्कुलाई और इलियट को लगातार इसलिए देखती रही कि उसे माँ से आँखें मिलाने में कुछ संकोच मालूम हो रहा था । उसने धीरे धीरे कहना आरम्भ किया—

‘यह मत समझिए कि हम दोनों ने कोई झगड़ा किया है । आपस में बातें होती गई और हम दोनों इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हम दोनों भ्रम में थे । वह पेरिस से अमेरिका वापस नहीं चलेंगे । कुछ दिनों तो वह यहीं रहेंगे और फिर शायद यूनान जायेंगे ।’

श्रीमती लुइसा अब अपने काँ रोक न सकीं—तू मेरी ओर क्यों नहीं देखती आइजाबेल ?’ आइजाबेल ने एक फीकी मुस्कान होठों पर लाकर माँ की ओर देखा । यह स्पष्ट था कि न ता वह रोई थी और न उसे कोई मार्मिक आघात ही पहुँचा था । अब इलियट का

बारी थी—

‘आइजाबेल ! मैं तो समझता हूँ की तुमने ठीक ही किया । मैंने उसको ठीक रास्ते पर लाने का अथक परिश्रम किया मगर पहले भी मैं उसे पूर्ण रूप से पसन्द नहीं करता था । और तुम्हारे योग्य तो वह था भी नहीं; उसका रहन सहन तुमने देखा तो होगा ही ! तुम्हारे रंग रूप और हम लोगों के संबंध के फलस्वरूप उससे कहीं अच्छा वर मिल सकता है ।’

श्रीमती लुइसा ने आइजाबेल पर स्निग्ध दृष्टि डाली—‘बेटी ! कहीं मेरी खातिर तो तूने यह सब नहीं किया ?’

आइजाबेल ने सिर हिलाया—‘नहीं माँ ! तुम्हारी नहीं अपनी ही खातिर ।’

५

सुदूर पूर्व की यात्रा समाप्त कर मैं लौट आया था और उन दिनों लन्दन में ही रहकर कुछ दिनों विश्राम करना चाहता था । जब इलियट से पिछली भेंट हुई थी पन्द्रह दिन हो चुके थे मगर मैं जानता था कि जाड़े के मौसम में वह लन्दन अवश्य आते थे और मेरा अनुमान ठीक भी निकला जब राष्ट्रीय चित्रालय के पास ही वह मुझे टहलते हुए मिले । उन्होंने मुझे सूचना दी कि उनको लन्दन आए दो ही दिन हुए हैं और श्रीमती लुइसा और आइजाबेल भी उन्हीं के साथ ठहरी हुई हैं । उन्होंने लन्दन के सबसे श्रेष्ठ होटल का नाम भी बतलाया जहां वे ठहरे हुए थे और बातों ही बातों में वहां चाय पीने का निमन्त्रण दे दिया क्योंकि उनका विश्वास था कि साधारण वर्ग के लोग वहां खाने पीने कठिनता से ही जा पाते होंगे क्योंकि वह होटल सदैव राजा महाराजाओं से भरा रहा करता था । मैं जहां ठहरा हुआ था वहां से वह होटल बहुत पास था और दूसरे दिन मैं वहां टहलता हुआ पहुँचा

गया। इलियट का क्रमरा बहुत शामदार था और दीवारों पर अनेक प्रतिष्ठित चित्रकारों के चित्र लगे हुए थे। मेरे पहुँचते ही उन्होंने बतलाया कि श्रीमती लुइसा और आइजाबेल बाजार खरीदारी करने चली गई हैं और वे शीघ्र ही लौटने वाली होंगी। मैं बैठने जा ही रहा था कि वे बोल उठे—‘आग्ने कदाचित् सुना नहीं होगा—आइजाबेल ने लैरी से सगाई तोड़ दी।’ मैं चुप रहा। उन्होंने बड़े विस्तार पूर्वक लैरी की आलोचना की और विशेष कर सगाई टूटने के बाद भी खाना खाने आने पर बड़ा असन्तोष प्रकट किया और इस बात पर विशेष रूप से जोर देते गए कि आजकल के नवयुवकों को सामाजिक नियम न तो मालूम ही है और न वे उस पर श्रद्धा रख कर कुछ सीखते ही हैं। सगाई टूटने के बाद लैरी पर कोई नवीन प्रभाव नहीं पड़ा था और न उसमें कोई परिवर्तन ही आया था। उसने इस नई परिस्थिति पर ध्यान देने से भी जैसे इन्कार कर दिया हो। वह पहले के समान ही बातें करता और आइजाबेल के प्रति जो स्नेहपूर्ण व्यवहार उसका पहले था उसमें लेश मात्र भी विभिन्नता नहीं आई थी। सबसे बड़े आश्चर्य की बात उनके लिये यह थी कि लैरी में किसी असंमजस, किसी ईर्ष्या अथवा क्रोध का भाव बिलकुल नहीं आया और न तो उसकी बातों से ही यह पता चलता था कि उसे किंचित मात्र भी दुःख है। वह ऐसा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उनको अधिक विस्मय इस पर भी था कि आइजाबेल में भी कोई परिवर्तन न दिखलाई पड़ता था। उसमें वही स्वाभाविक चंचलता, वही प्रसन्नता और वही हास्य-प्रियता थी। विवाह, जो जीवन मरण का प्रश्न निश्चित करता है, उसके लिए मानो कोई महत्वपूर्ण विषय ही न हो। इलियट इस प्रकार की सामाजिक विश्रृंखलता से उद्विग्न हो रहे थे। श्रीमती लुइसा के सम्मुख उन्होंने अपने विचार प्रकट किए—

‘मुझे तो उनका साथ साथ रहना बहुत ही अनुचित प्रतीत होता है। सगाई टूटने पर भी समाज को यह जतलाना कि उन दोनों के

संबंध में कोई परिवर्तन नहीं बहुत दी घातक होगा। लैरी को तो स्वयं इस अनौचित्य को समझना चाहिए। और, हाँ, अगर ऐसे ही चलता रहा तो आइजाबेल का भविष्य अन्वकार पूर्ण हो जायगा। बहुत से नवयुवक ऐसे हैं जिनकी दृष्टि आइजाबेल पर लगी हुई है—इन लोगों के पास धन है, इनका पैतृक सम्बन्ध श्रेष्ठ है और यदि इनको यह निश्चय हो जाय कि मैदान साफ है तो शायद दूसरे ही दिन अपना हृदय अर्पित कर दें। मेरी राय है कि तुम उसको एकान्त में समझा दो।

‘मगर तुम तो जानते ही हो कि आइजाबेल बीस वर्ष की हो गई है और मैंने अपने पूर्व अनुभव से जान लिया है कि वह यही कह बैठेगी—‘तुम से मतलब।’ वह मेरे हाथ के बाहर न होते हुए भी विलकुल बाहर है।’

‘इसका सारा उत्तरदायित्व तो तुम्हीं पर ही है। तुम्हीं ने उसको लाड़-प्यार से बिगाड़ दिया और तुम्हीं ही उसे सुधारना भी है।’

‘आइजाबेल हम लोगों को समझती ही क्या है, वह तो चाहती ही नहीं कि हम लोग उसका कोई भी भार उठाएं।’

‘मैं तो तुम्हारी बातों परेशान हो गया हूँ।’

‘यदि तुम्हारे भी कोई इतनी ही बड़ी लड़की होती तो तुम भी यह अच्छी तरह समझ लेते कि वय-प्राप्त लड़कियों को स्यूत रखना उतना ही कठिन है जितना किसी मजबूत-ब्रैज को नकेल पहनाना। और उनके मन की परिवर्तन-शील भावनाओं को समझने के उपरान्त तो इसी में भला है कि हम लोग छेड़ छाड़ न करें और यदि वे हम लोगों को बेवकूफ और सनकी भी समझें तो भी उन्हीं की बात ऊपर रखनी चाहिए।’

‘क्या कभी तुमने उससे इस विषय पर बातें की हैं?’

‘प्रयत्न तो मैंने बहुत किया मगर उसने बार बार यही कहा कि जब कोई बात हो तभी तो वह बतलाए।’

‘क्या वह दुःखी दिखाई देती है?’

‘ऐसा कुछ तो नहीं मालूम होता। खूब खाती पीती है और चैन से सोती है।’

‘देखो लुइसा ! मैं चेतावनी दे रहा हूँ और मेरी बात गाँठ बाँध लो। अगर हम लोगों ने इस परिस्थिति से लाभ न उठाया तो वे दोनों चुपचाप जाकर विवाह कर लेंगे और किसी को कानों-कान खबर न होगी। श्रीमती लुइसा मुस्कुलाई—

‘इलियट ! तुम शायद यह भूल रहे हो कि जिस युग और समाज में हम लोग रह रहे हैं उसमें विवाह के राह में अनेक अड़चने डाली जाती हैं और अवैध-प्रेम के अनेक मन चाहे रास्ते खोले जाते हैं।’

इलियट तैश में आकर बोले—

‘यह नितान्त आवश्यक है। विवाह कोई गुड़ियों का खेल नहीं; क्योंकि उसी पर समाज अवलम्बित है और समाज की जैसी स्थिति रहेगी वैसे ही देश भी बने-बिगड़ेगा। विवाह की महत्ता और उसका अधिकार तभी बढ़ सकेगा जब समाज अवैध प्रेम का विरोध छोड़ दे और अपनी लाल-लाल आँखें हटा कर उसको उचित और हितकर समझे। अवैध प्रेम की महत्ता—श्रीमती लुइसा ने बात काटते हुए कहा—

‘बस रहने दी। समाज के अवैध प्रेम-संबंध और सेक्स पर मैं तुम्हारे बिचार नहीं सुनना चाहती।’

इलियट ने निर्देश देना शुरू किया कि कैसी चाल चली जाय जिससे लैरी और आइजाबेल का बढ़ता हुआ साथ छूट जाय। लैरी और आइजाबेल की घनिष्टता उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को हानिकर नहीं वरन स्वयं उनको भी अत्यन्त घृणित मालूम होने लगी। उन्होंने यह निश्चय किया वे तीनों पेरिस छोड़कर शीघ्र ही लन्दन चले चले। जिसके फल-स्वरूप आइजाबेल का जी बहल जायगा और लन्दन की सामाजिक चहल-पहल में रहते हुए वह अपना दुख भी भूल जायगी। इन्हीं पेरिस की शोभा भी श्रुत-परिवर्तन से समाप्त हो रही थी और

सब से बड़ी बात यह थी कि इस समय भाग्यवश वह विशेषज्ञ डाक्टर भी वहीं ठहरा हुआ था जिसे श्रीमती लुइसा को दिखलाना अब बहुत आवश्यक था क्योंकि बीमारी बढ़ती ही जा रही थी। इस बहाने से किसी को कोई सन्देह भी नहीं होगा और बात बन जायगी। श्रीमती लुइसा ने यह कार्यक्रम स्वीकार कर लिया; मगर आइजाबेल की बातें सोच-सोचकर उनकी उलझन बढ़ती ही गई। वह यह न जान पा रही थी कि आखिर उसके मन में है क्या? क्या वह दुखी है? क्या सगाई छूट जाने पर उसे मर्माघात पहुँचा है? क्या उसने वास्तव में लैरी से प्रेम करना छोड़ दिया? यदि हाँ, तब वह इस तरह उसके साथ अकेले क्यों घूमती फिरती है? कहीं उसने हम लोगों का मन रखने के लिए ही तो यह सब नहीं किया है? तरह-तरह के प्रश्न उसके मन में उठते; मगर आइजाबेल के मुख से, उसकी बात चीत से, उसके रहन-सहन से, वह कुछ भी नहीं जान पाती। वह सदैव प्रसन्न और प्रफुल्लित ही दिखाई दिया करती थी।

इलियट जिस समय लन्दन चलने का निर्णय कर चुके आइजाबेल उसी दिन वहाँ नगर से लौटी। वह लैरी के साथ ही गई थी। उसके आते ही इलियट ने कहा कि अब श्रीमती लुइसा की चिकित्सा स्थिति नहीं की जा सकती और लन्दन के विशेषज्ञ को उन्हें दिखलाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। वहाँ उन्होंने एक बड़े श्रेष्ठ होटल में कमरा ले लिया है और चलने की सब व्यवस्था ठीक हो गई है। श्रीमती लुइसा, आइजाबेल के मुख की ओर टकटकी लगाए देख रहीं थीं कि देखें इस नई व्यवस्था और पेरिस छोड़ने के विचार का उस पर क्या प्रभाव विदित होता है। सब बातें सुनते ही आइजाबेल प्रफुल्लित हो माँ से लिपट गई—

‘माँ! हम लोगों को अवश्य चलना चाहिए; कहीं वह डाक्टर फिर कहीं चला गया तो किसको दिखलाया जायगा। लन्दन जाने का अवसर हाथ से शीं भी नहीं जाने देना चाहिए। वहाँ बड़ा आनन्द

रहेगा। अच्छा ! हम लोग वहाँ ठहरेंगे कब तक ?'

'पेरिस लौटना तो व्यर्थ सा है', इलियट ने कहा, 'एक सप्ताह के अन्दर ही यहाँ बिलकुल उजाड़ हो जायगा; मनुष्य तो ढूँढने से नहीं मिलेंगे ! मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम लोग जाड़े भर लन्दन ही में रहो। हमारे अनेक मित्र हम लोगों की वहाँ बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे हैं और उन लोगों ने अनेक दावतें बहुत पहले से निश्चित कर मेहमानों को निमन्त्रण भी दे दिया है। हमारे न पहुँचने पर उन लोगों को बड़ी निराशा होगी।'

आइजाबेल बड़ी प्रसन्न जान पड़ती थी; श्रीमती लुइसा भी निश्चिन्त हो गईं। ऐसा ज्ञात होता था कि आइजाबेल ने लैरी को अपने मन से निकाल फेंका है।

इलियट मुझसे इतनी ही बातें कह पाए थे कि मां, बेटी दोनों वहाँ आ पहुँची। मुझको उन्हें देखे प्रायः डेढ़ वर्ष के हो गया था। श्रीमती लुइसा पहले से बहुत दुबली हो गई थी और उनके मुख पर क्रीम और पाउडर का पलस्तर जरा और मोटा हो गया था। वह थकी यकी सी और अस्वस्थ दिखलाई पड़ती थीं। आइजाबेल का यौवन फूटा पड़ता था—वही सोने का रंग, वही घने भूरे बाल, वही चंचल आँखें, मानो जीवित अपनी भरपूर उम्र में उसके शरीर पर झलका रहा था। उसे देखकर मेरे हृदय में बच्चों की सी एक विचित्र भावना उदय हुई—मुझे ज्ञात हुआ कि मानों किसी पेड़ से एक सुनहली, पकी हुई, रस से बोभिल नाशपाती लटक रही है और वह हिलहिल कर उसे खाने का आमन्त्रण दे रही है। उसके नेत्रों से प्रेम टपका पड़ रहा था; उसकी चंचलता इतनी व्यापक थी कि वायु की सिहरन समान हर एक को छूती फिर रही थी। वह कुछ लम्बी हो गई थी कदाचित्त वह ऊँची एड़ी के सैन्डल पहने हो या दरजी ने उसकी फ्राक की कट इस कला-पूर्ण ढंग से काटी हो जिससे उसकी स्वाभाविक स्थूलता सिमट कर सुडौल और सजीली हो गई हो। संक्षेप में

सेक्स की दृष्टि से वह अत्यन्त वाञ्छनीय युवती प्रतीत हो रही थी और यदि मैं उसकी माँ होती तो सब काम छोड़कर उसके बिवाह की व्यवस्था बहुत शीघ्र ही करती।

अनेक दावतों का भार चुकाने की इच्छा से मैंने उन्हें सिनेमा चलने और खाना खाने का निमन्त्रण दिया। इलियट ने सुनते ही कहा—

‘बहुत अच्छा हुआ जो आपने पहले कह दिया। हमारे सब मित्रों को आज सूचना मिल गई होगी कि हम लोग यहाँ पर हैं और उनके निमन्त्रणों की भरमार के कारण फिर कहीं जाने का अवकाश ही न मिलता। यह कह कर उन्होंने मुझे यह जताना चाहा कि मेरे ऐसे लोगों के निमन्त्रण की उन्हें परवाह कम है चूँकि मैंने कह दिया था इस कारण वह टालते भी कैसे। मैं संसार पुरखने निकला था; इलियट संसार के ही एक जीव थे।

६

इलियट के मेहमान प्रायः चार सप्ताह तक उनके यहाँ रहे और उस बीच उन्होंने उनके लिए अनेक दावतों की व्यवस्था कराई; बहुत से श्रेष्ठ व्यक्तियों से उनका परिचय कराया; उन्हें अनेक नृत्योत्सवों में ले गए और अपने सामाजिक आदर्शों के अनुसार निस्वार्थ रूप से वह आइजाबेल को प्रसन्न रखने और उसका जी बहलाने का प्रयत्न करते रहे—हाँ; चाहे इस प्रयत्न में उनको अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा का दिग्दर्शन कराने का स्वर्ण अवसर हाथ आ गया हो। आइजाबेल के जीवन में जो दुःखदायी घटना घटित हो चुकी थी उसको विस्मृत कराने के साथ-साथ उसके मस्तिष्क और आँखों पर सामाजिक चर्चा-चर्चा डालना भी उन्हें अत्यन्त रुचिकर हुआ। दावतों की धूमधाम और श्रेष्ठ व्यक्तियों के वैभव को देखकर आइजाबेल का भावना-संसार स्वयंमेव परिवर्तित हो रहा था। श्रीमती लुइसा को भी इलियट क

सामाजिक वैभव और उनकी प्रतिष्ठा का अनुभव हो रहा था और इलियट इस कारण और भी सन्तुष्ट थे कि उन्हीं के द्वारा उनकी बहिन का बिगड़ा और उजड़ा हुआ संसार नवीनता लिए प्रगति और सम्पन्नता की ओर अग्रसर हो रहा था ।

जब जब मैं इलियट के घर शाम को जाता तो देखता कि आइजाबेल कुछ नवयुवकों के साथ बैठी हुई बातें किया करती या उनके चाय-पानी की व्यवस्था करती । उनमें अधिकांश श्रेष्ठ घराने के अथवा धनाढ्यों के वे लड़के जो अच्छी अच्छी नौकरी या व्यवसाय में लगने वाले होते, रहा करते थे । उनके चमक दमक के कपड़े, उनकी चाटु-कारिता तथा उनकी नंगी और भूखी आखों से वह सदा घिरी रहीं करती थी । ऐसे ही एक अवसर पर उसने मुझसे अलग बुला कर कहा—

‘मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती थी । आप शायद भूले न होंगे कि हम लोगों ने पहले भी होटल में चाय पीते समय कुछ खास विषय पर बातें की थी ।’

‘हाँ, हाँ, खूब याद है ।’

‘उस समय आपने बड़ी सहानुभूति प्रकट की थी और मैं उससे बहुत प्रभावित हुई थी । क्या आप फिर ऐसी ही कृपा करेंगे ?’

‘आप जिस दिन कहें मैं आ जाऊँगा ।’

‘यहाँ नहीं ! कहीं एकान्त में चलेंगे ।’

‘तो पास वाले बाग में सही ।’

हम लोगों ने दिन और समय निश्चित कर लिया और उसी दिन ठीक समय पर हम दोनों बाग में जा बैठे । मौसम खराब था इससे यह निश्चय किया गया कि कहीं होटल में चले चले जहाँ भीड़ कम हो । होटल पास ही था और वहाँ पहुँचने पर देखा कि मौसम खराब होने के कारण आदमी बहुत नहीं थे । मैंने बैठते ही पूछा—

‘कहिए, क्या बात है ?’

‘वही पिछली बात’ उसने हँसी दबाकर कहा—‘वही लैरी !’

‘इतना तो मैं पहले ही समझ गया था ।’

‘यह तो आप जानते ही हैं कि हम दोनों की सगाई छूट गई !’

‘इलियट ने मुझे बहुत दिन हुए बतलाया था ।’

‘मैं इससे सन्तुष्ट है और चाचा भी बहुत प्रसन्न हैं ।’

थोड़ी ही देर के संकोच के पश्चात् उसने मुझसे अपनी सारी कहानी कह सुनाई जिसका विवरण मैं पहले दे चुका हूँ ।

आइजाबेल ने मुझसे इतना कम परिचय होते हुए अपना संकोच कैसे तोड़ दिया इसका उत्तर देना आवश्यक है । लोगों का यह साधारण स्वभाव होता है कि जो बातें वे दूसरों से कहने में हिचकते हैं लेखकों से निस्संकोच कह बैठते हैं; यह भी हो सकता है कि लेखक की दो एक पुस्तक पढ़ लेने के पश्चात् उनमें और लेखक के बीच एक प्रकार का साम्य और स्नेह प्रस्तुत हो जाता है जो सारा संकोच ताक पर रख देता है । फिर, कभी कभी कुछ लोग तो घटनाओं के कुचक्र में पड़कर अपने को नायक और नायिका का रूप देकर लेखक के सामने स्पष्ट रूप से अपना हृदय खल देते हैं; कदाचित् यह भी संभव है कि लेखक में औरों की अपेक्षा सहानुभूति की मात्रा कुछ अधिक अवश्य होती है । यह भी निश्चित ही है कि आइजाबेल को पूर्ण विश्वास था कि मैं लैरी को पूर्णरूप से समझता हूँ और उससे प्रसन्न रहता हूँ और मुझमें उन दोनों के प्रति स्नेह है । इलियट से वह कोई भी बात खुल कर नहीं कह सकती थी और उनको लैरी ऐसे व्यक्ति से जो जीवन के सब स्वर्ण अवसर योही खो देता हो और जिस में समाज के विपरीत चलने की धृष्टता हो, नैसर्गिक घृणा थी । उसकी माँ भी उसका बोझ न हलका कर सकती थी । उनमें ऊँचे सिद्धान्त और साधारण तर्क का इतना विषम समन्वय था कि उनमें केवल आश्चर्य के सिवा और कोई भावना आने ही न पाती थी । उनका तर्क यह कहता था कि यदि कोई व्यक्ति संसार में रहना चाहता है तो

उसे संसार के नियम मानकर समाज को अपनाना पड़ेगा। उसे जीविका ही नहीं वरन् इतना धन भी मिलना चाहिए जिसके द्वारा वह अपने परिवार को सुखी रख सके। अपने लड़कों को ऊँची से ऊँची शिक्षा देकर उन्हें देश की समृद्धि में सहयोग देने वाला बनाए और अन्त में मरने के बाद इतना धन छोड़ जाय कि जिसके सहारे उसकी पत्नी आजीवन उसी प्रतिष्ठा से रह सके जो समाज में सम्मानित और सर्वप्रिय हो।

जो जो बातें लैरी ने आइजाबेल से को थीं उसका एक एक अक्षर उसकी स्मरण-शक्ति पर उतर आया था। अपनी लम्बी बातों के बीच में उसने केवल एक बार रुक कर पूछा—

‘यह रुजडेल कौन था ?’

‘रुजडेल ! वह एक चित्रकार था; क्यों क्या बात है ?’

उसने मुझे बतलाया कि लैरी ने अपनी बातचीत में उसका नाम लिया था और कहा था कि उसने उन्हीं प्रश्नों पर उत्तर ढूँढ़ निकाला था जो उसे व्यथित कर रहे थे; मेरे और कुछ पूछने पर उसने टालने के विचार से कहा कि वह उसके साथ कालेज में पढ़ता था।

‘आप बता सकते हैं कि उनका अभिप्राय क्या हो सकता था ?’
मुझे अकस्मात् कुछ स्मरण हो आया। मैंने पूछा—

‘कहीं आप नाम गलत तो नहीं बतला रही हैं; उसने रुजब्रोक तो नहीं कहा था ?’

‘शायद यही हो। यह कौन व्यक्ति था ?’

‘वह चौदहवीं शताब्दी का सूफी दार्शनिक था।’

‘होगा !’ उसकी वाणी में असन्तोष की झलक थी।

आइजाबेल ने कदाचित् इस नाम को महत्वहीन समझा परन्तु अब मेरे विचार लैरी के मानसिक विकास के विषय में स्पष्ट होते जा रहे थे। जब आइजाबेल मुझसे आप बीती सुना रही थी उस समय

यद्यपि मैं उसकी बातें ध्यान से सुन तो रहा था परन्तु मेरा मस्तिष्क लैरी की भावी मानसिक प्रवृत्तियों का अनुमान लगा रहा था। मेरे अनुमान में जब लैरी ने बात ढालने की चेष्टा में उस दार्शनिक को अपना सहपाठी बतलाया तो उसका उद्देश्य आइजबेल को भुलावे में ढालने का था।

‘क्या आप इस सबका कुछ तात्पर्य समझ सकते हैं?’ सब कुछ कह चुकने के पश्चात् उसने कहा। मैंने कुछ रुक कर उत्तर दिया—

‘आपको स्मरण है न कि उन्होंने आपसे आबारागर्दी का नाम लिया था। यदि आजकल वह यही कर रहे हैं तो मेरी समझ में वे बहुत परिश्रम और लगन से काम ले रहे हैं।’

परिश्रम तो वह इतना कर रहे थे कि उनके स्वास्थ्य पर उसका बुरा प्रभाव पड़ रहा था। कह रहे थे कि दस दस घंटे वह लिखा पढ़ा किया करते हैं। ‘मगर यह भी तो सोचिए कि निष्प्रयोजन परिश्रम से मिलता क्या है? इस समय जब उन्हें लग कर जीविका चलाने का समुचित उपाय सोच कर व्यवसाय में लगना चाहिए था वे पढ़ने लिखने का भार उठाए फिर रहे हैं।’

‘कदाचित् आप यह नहीं जानती कि संसार में कुछ विचित्र व्यक्ति भी हैं। आपने हत्यारों और डाकुओं की कहानियाँ पढ़ी हैं; उनमें बहुत से आजीवन यही सोचा करते हैं कि कैसे हत्या की जाय और डाके डाले जायें। एक हत्या के बाद जेल जाने और वहाँ से छूटने पर फिर उसी उत्साह और लगन से नई नई हत्याओं और डाका डालने के उपाय वे सोचा करते हैं चाहे उन्हें फिर जेल क्यों न हो और उसी में वह आजीवन सड़ते भी रहें। जिस प्रकार सच्चे और सरल मनुष्य अपनी समुचित जीविका कमाने के लिए दिन रात परिश्रम किया करते हैं उससे कम परिश्रम ये हत्यारे नहीं करते; कभी कभी तो उनसे भी ज्यादा। वे अपनी आदत से लाचार हैं; वे बने ही इस तरह होते हैं कि वे यदि यह काम न करे तो निर्जीव हों

जायँ । उन्हें हत्या से प्रेम हो जाता है ।’

‘तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि लैरी ग्रीक और दर्शन पढ़ कर हत्या और डाके की योजनाएँ बनाएगा ? उसे हँसी आ गई ।’

‘नहीं; नहीं; मेरा यह तात्पर्य नहीं—मैंने मुस्कराते हुए कहा, ‘मैं कहना यह चाहता था कि संसार में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो किसी प्रेरणा द्वारा इतने उद्विग्न हो उठते हैं कि यदि वह मनमानी न करें तो उनके लिए जीवन मरण समान हो जाय । वे उससे छुटकारा पा ही नहीं सकते; वह प्रेरणा उन्हें बैठने नहीं देती और उसे उन्हें सन्तुष्ट करना ही पड़ता है ।’

‘चाहे इसमें प्रेम और प्रेमीजनों का बलिदान भी हो जाय ?’

‘हाँ । चाहे कुछ भी बलिदान देना पड़े—पर वे सकते नहीं ।’

‘यह तो फिर कांरी स्वार्थपरता हुई ।’

‘मैं यह तो नहीं कहूँगा ।’

‘पुरानी भाषाएँ और दर्शनशास्त्र पढ़ने से लैरी को लाभ ही क्या होगा !’

‘कुछ लोगों में ज्ञानार्जन की उत्कट इच्छा ऐसे भी रहा करती है । ऐसी इच्छा कुछ बुरी तो नहीं ।’

‘उस ज्ञान से लाभ ही क्या जो किसी प्रयोग में न आ सके ?’

‘उसके लिए कदाचित् प्रयोजन हो भी; कलाकार भी तो अपने को ही प्रसन्न करने के लिए चित्र बनाता है । विद्याओं को जानने में ही उन्हें आनन्द आता होगा ।’

‘यदि उन्हें ज्ञानार्जन इतना प्रिय था तो उन्हें कालेज जाकर पढ़ना लिखना चाहिए था । लड़ाई से लौटते ही डाक्टर नेल्सन और मां ने उन्हें कई बार यही समझाया भी था और इससे दोनों की बात रह जाती ।’

‘जब मैं शिकागो में उनसे मिला था तब उन्होंने इस विषय पर

बातें की थीं। वह उपाधि के इच्छुक नहीं हैं। मेरे अनुमान से उनका यह विश्वास था कि उन्हें जो कुछ चाहिए विश्वविद्यालय द्वारा मँदी मिलेगा। आपने कभी भेड़िए देखे हैं—उनमें ज्यादातर तो भुएड में साथ साथ रहते हैं और एक अलग अलग रहा करता है। मेरा विचार है कि लैरी शायद उन व्यक्तियों में हैं जो मन-मार्ना ही करते हैं।’

‘मैंने उनसे एक बार यह भी पूछा था कि क्या वह लेखक होना चाहते हैं?’ इस पर उन्होंने कहा कि उनके पास लेखक बनने की न कोई अभिलाषा है न कला।’

‘इसके बिना भी तो लोग लेखक बन जाते हैं।’ आइजाबेल वास्तव में दुखी जान पड़ती थी और उसने मुस्कुराने का भी कोई प्रयत्न नहीं किया।

‘मेरी समझ में यह नहीं आता कि लैरी में यह परिवर्तन आ कैसे गया। लड़ाई के पहले वह बिलकुल दूसरों ही जैसे थे, कोई विभिन्नता न थी। वह खेलते थे, घूमते फिरते थे, जैसा नवयुवक होना चाहिए वैसे ही थे और आशा यही थी कि भविष्य में औरों जैसा ही वह जीवन में प्रविष्ट होंगे। आप तो लेखक हैं—कदा आप कुछ कारण नहीं बतला सकते?’

‘मनुष्य के मन और मस्तिष्क की गहराई क्वां कोई अब तक नाप सका है कि मैं ही बतलाऊँगा।’ मेरी बात बिना सुने हुए वह कहती गई—

‘उसी का स्पष्ट विश्लेषण मैं जानना चाहती थी?’

‘क्या आप दुखी हैं?’ मैंने निस्संकोच पूछा।

‘यह तो मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती परन्तु मेरा अनुभव यह है कि जब वह मेरे सामने नहीं होते तो मैं ठीक रहती हूँ मगर उनके सामने आते ही मैं कमजोर, हीन और अस्थिर होने लगती हूँ। कुछ कुछ दर्द भी मालूम होता है—ऐसा भीठा दर्द जो कष्ट तो नहीं देता

मगर रग रग में कसक लाता रहता है—ठीक वैसे ही जैसे आप महीनों घोड़े पर न चढ़े हों और एक दिन उस पर बैठे हुए लम्बी सफर तान दें और फिर उतरे तो घुटने सख्त, जोंधे भर्री हुई, सारा बदन ढीला ! मुझे आशा है कि मैं ठीक हो जाऊँगी मगर लैरी का जीवन इस तरह बरबाद होते देख मुझे मार्मिक पीड़ा होती है ।’

‘इसे बरबादी मैं नहीं कहूँगा । उनका रास्ता कठिन और जटिल दोनों हैं शायद अन्त में उन्हें वह चीज मिल भी जाय जिसकी उन्हें खोज है ।’

‘वह है क्या चीज ?’

‘क्या आपने कभी भी विचार नहीं किया; मेरा अपना अनुमान तो यह है कि उनका संकेत स्पष्ट है । उन्हें ईश्वर की खोज है ।’

‘ईश्वर !!! उसके मुँह से चीख निकल गई । उसने अपने को संभालते हुए कहा—‘आपको यह कैसे ज्ञात हुआ ?’

‘यह मेरा केवल अनुमान है । आपने अभी अभी तो मुझसे लेखक की हैसियत से उनको परखने के लिए कहा था । कदाचित् आप लड़ाई के उन गूढ़ प्रभावों को जो सिपाहियों के हृदय पर पड़ते हैं नहीं समझ सकीं । कोई न कोई अनुभव ऐसा अवश्य हुआ होगा या उन पर किसी क्रूर घटना का प्रभाव अवश्य पड़ा है जिसने उनको हिला दिया है । उस धक्के के लिए वह बिलकुल प्रस्तुत न होंगे इसी से चोट और भी गहरी बैठी है । मेरे विचार से चाहे उन्हें हुआ जो कुछ भी हो, उससे उनको यह अनुभव अवश्य हुआ होगा कि संसार में मानव जीवन असार है और जो जो यातनाएँ मनुष्य यहाँ भोगता है उसका प्रतिफल कदाचित् यहाँ या कहीं पर कुछ भी नहीं मिलता !’

आइजाबेल के मुख से यह स्पष्ट था कि मेरा यह नवीन विवाद उन्हें रुचिकर न था; उनका संकोच बढ़ने लगा—

‘ऐसी भावना तो बहुत ही दूषित और अहितकर होनी चाहिए; इससे तो जीवन का सारा खेल ही बिगड़ जायगा । लोगों को यही

चाहिए कि जो कुछ संसार हमें दे, उसका सन्तोषपूर्वक उपयोग करें।'।

‘हो सकता है आप का ही विचार संगत हो !’

‘आप यह न समझें कि मुझमें जीवन की जटिलताओं को समझने की शक्ति है; मैं आपके सम्मुख साधारण व्यक्तियों की सी बातें कर रही हूँ। मैं नवयुवती हूँ और वह भी साधारण सी; मैं जीवन का आनन्द लूटना चाहती हूँ।’

‘कदाचित् आप दोनों के विचारों और दृष्टिकोण में बहुत बड़ी विभिन्नता थी और यह अच्छा ही हुआ कि आपने यह विषमता विवाह के पहले ही समझ ली।’

‘मैं विवाह करना चाहती हूँ; माँ बनना चाहती हूँ और चाहती हूँ कि मुझे जीवन का आनन्द मिले।’

‘मगर उसी श्रेष्ठ समाज में ही न जिसमें ईश्वर ने आपको भाग्यवश जन्म दिया है और उन्हीं आदर्शों को मानते हुए ही जिनको आप बहुत उच्च समझती हैं ?’

‘क्या आप उसमें कुछ दोष समझते हैं; मैं तो बहुत सन्तुष्ट रहती हूँ। मुझे उसी में प्रसन्नता प्राप्त होती है।’

‘तब तो आप दोनों का जीवन वैसा ही है जैसे एक तो चाहता है पहाड़ों पर विचरना और दूसरा चाहता है चुपचाप बैठे बैठे नदी में मछली मारना। इससे यह स्पष्ट है कि गाड़ी चलने वाली नहीं दिखाई देती।’

‘मगर कहीं पहाड़ हो भी तो ?’

‘मैदानों को पार करने के बाद ही पहाड़ दिखलाई देंगे; वे स्वयं पास तो न आ जाँयेंगे।’ मैंने कुछ व्यंग से कहा—

‘आप अपनी बात साफ साफ क्यों नहीं कह रहे हैं; आप बार-बार पहेली सी क्यों प्रस्तुत करते हैं। मैं जानती हूँ कि तैली आदर्शवादी हैं, वह सपने देखा करते हैं और अपने सुन्दर सपनों का संसार बसा कर उसी

में डूबना तिराना चाहते हैं चाहे वह सपना कैसा भी क्षणिक हो, कैसा भी रोमांचकारी हो। मगर साधारण बुद्धि की भी तो एक दुनिया है ही; लाखों वर्षों से यह संसार भी चला ही जा रहा है और उनमें साधारण नियमों से जीवन बिताने वाले भी आनन्दित रहते चले आ रहे हैं। किसी से वैवाहिक सम्बन्ध के पश्चात् दुर्गति तो मैं ही भांगती; वह तो अपनी दुनिया में व्यस्त रहते और आनन्दित भी होते मगर बोझ तो मुझे ढोना पड़ता। मैं जीवन चाहती हूँ, जीवन की मधुरता चाहती हूँ, जीवन की मधुर आनन्द लहरी में डूबना चाहती हूँ।'

'मैं आपकी बात खूब समझ रहा हूँ। बहुत वर्ष बीते मेरे एक मित्र डाक्टर थे और चिकित्सा में पटु भी थे मगर वह डाक्टरी करते नहीं थे दिन रात पुस्तकालयों में बैठे पढ़ते और कुछ ज़िखा करते। कई वर्ष बाद उन्होंने एक बड़ी मोटी किताब लिख डाली जिसमें कुछ वैज्ञानिक समाजवाद और दार्शनिक-समाजवाद के समन्वय की चेष्टा की गई थी। उसको जब कोई छापने को तैयार न हुआ तो उन्होंने अपने ही व्यय से उसे छपाया। वैसे ही उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं और स्वयं छपाते गए। उनका इकलौता लड़का सेनानियों के कालेज में भरती होना चाहता था, मगर धन न होने के कारण उसे रंगरूट बन कर फौज में जाना पड़ा और वहां वह मार डाला गया। उनके एक लड़की भी थी—बहुत सुशील और सुन्दर; वह सिनेमा में अभिनेत्री बन गई मगर अभिनय कला न होने से उसे इधर उधर छोटी मोटी सिनेमा कम्पनियों में पार्ट करना पड़ा जहाँ बहुत ही कम वेतन मिलता था। उनकी स्त्री घर का सारा काम काज स्वयं करते करते अपने समय के पहले ही बुढ़िया हो गई और जीविका चलाने के लिए उसे धाय का काम करना पड़ा। उन सब का जीवन दुर्दिन, कष्ट और यातना में ही बीता और लाभ कुछ नहीं हुआ। जीवन के चलते हुए सभी को छोड़ने का ज़ुआ होता है। अनेक व्यक्ति नवीनता से प्रेरित हो दांव लगाते हैं मगर दांव किसी

एक ही का ठीक पड़ता है ?

‘माँ और चाचा जी ने जो कुछ मैंने किया उसे सराहा है । आप अपनी राय बताइए ?’

‘मेरी राय तो एक प्रकार से निष्प्रयोजन ही आप पूछ रही हैं; फिर मैं तो अग्रचित सा भी हूँ ?’

‘मैं आपको निष्पक्ष व्यक्ति समझ कर ही पूछ रही हूँ—उन्होंने मुस्कुरा कर कहा—‘मैं आपके निजी विचार जानना चाहती हूँ । मैंने ठीक किया है या नहीं ?’

‘आपने अपने लिए अच्छा ही किया है ।’ मैंने कुछ वाक्चातुर्य से कहा और अनुमान किया कि वह मेरे अभिप्राय को ठीक ठीक न समझ पाएँगी।

‘मेरी आत्मा तब मुझे कोसती क्यों है ? मुझे कभी कभी बड़ी आत्म ग्लानि होने लगती है ।’

‘क्या ऐसी बात है ?’

आइजबेल के होठों पर व्याकुल मुस्कान खेल गई—

‘कदाचित्त यह मेरा संसारी स्वभाव ही हो । मुझे इतना विश्वास रह रह कर होता है कि कोई भी व्यक्ति जिसे संसार का साधारण सा भी ज्ञान होगा मेरे किए को सराहेगा । मेरे लिए दूसरा रास्ता भी कोई नहीं था । समाज की दृष्टि से, सांसारिकता और भले और बुरे की दृष्टि से मैंने जो कुछ भी किया है उसे मैं समझती हूँ लोग ठीक समझेंगे । किन्तु न जाने क्यों मेरे अन्तस्तल में यह भाव बार बार उठता है कि यदि मैं ऊपर उठ सकती, निस्वार्थ होती, उदारतापूर्ण प्रेम से प्रेरित होती तो मैं उनसे विवाह कर उनका ही जीवन अपनाती और दुनियाँ की जरा भी परवाह न करती ।’

‘तब आप यह क्यों नहीं कहतीं कि यदि वह भी उदार और स्वार्थ-हीन प्रेम से प्रेरित होते तो आपकी बातें मान कर आपको सुखी करते ?’

‘यही कह कर ही मन को समझाना चाहती हूँ मगर समझा नहीं पाती। मुझे सन्तोष नहीं होता। बलिदान का अधिकार तो स्त्रियों को ही मिलता आया है पुरुषों को नहीं।’

‘जीवन को दाँव पर फिर लगा ही क्यों न दीजिए ?’

‘मुझे डर लगता है; मेरी हिम्मत नहीं पड़ती।’ इतना कहते ही इसके मुख की चेष्टा बदल गई और ग्लानि का भाव स्पष्ट होने लगा। अब तक तो वह खुले दिल से और साधारण रूप से ऐसे ही बातें कर रही थी मानो कोई कहानी कह रही हो मगर मेरे प्रश्न से वह चुप हो रही। मैं कुछ इतप्रभ इसलिए हो रहा था कि मुझे इस तरह की राय देने का कोई अधिकार नहीं था। मगर बात निकल चुकी थी; मैंने एक सीधा साधा प्रश्न फिर पूछा—

‘क्या आपको उनसे बहुत प्रेम है ?’

‘कह नहीं सकती। मुझे उन पर क्रोध आता है; कभी जी चाहता है कि उनका मुँह भी न देखूँ मगर मेरा अन्तस्तल उन्हीं का आवाहन किया करता है।’

हम दोनों फिर चुप हो रहे; मुझे यह न समझ पड़ता था कि मैं कहूँ तो क्या कहूँ। जिस कमरे में हम लोग बैठे थे उसमें कुहरे के कारण अन्धकार छा रहा था और कुर्सियों के चमड़े की महक और भी गहरी होती जा रही थी। मैंने पास की रखी अंगीठी में कोयले और डाल दिए—आग लहक उठी। आइजाबेल बोली—

‘मैं समझ रही थी कि जब मैं इठ पर आ जाऊँगी तो वह मेरी मान लेंगे क्योंकि मैंने उन्हें कमजोर समझा था।’

‘लैरी को कमजोर समझा था !’ मैंने आश्चर्य से कहा—‘यह तो आपने अन्याय किया। एक आदमी जो वर्षों से दुनियाँ और दोस्तों की परवाह न कर अपनी राह लग सकता है उसे आपने कमजोर समझा !’

‘मैं समझती थी कि वह पहले से ही होंगे। वह हमारे साथ साथ

रहे हैं; मैं उनसे जो चाहती करा लेती थी; उनमें सदा से ही दूसरों के कहने पर चलने की आदत थी। मैं सिगरेट जला कर उसका उठता हुआ धुआँ देखने लगा। उन्होंने फिर कहना शुरू किया—

‘माँ और चाचा अब उनसे मेरा मिलना जुलना भी बुरा समझते हैं; वे लोग समझते हैं कि सगाई छूटने के बाद यह असंगत है मुझसे। मैंने अब तक उसपर कोई ध्यान नहीं दिया है। मैं यही सोचती रहती हूँ कि अन्त में मेरी ही विजय होगी। मुझे यह जरा भी विश्वास नहीं होता कि वह मेरी बात नहीं मानेंगे।’ थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने एक छलपूर्ण मुस्कराहट से कहा—

‘मैं आपसे एक बात पूछूँ ? आप चौकेंगे तो नहीं ?’

‘ऐसा तो नहीं समझता।’

‘जब हम लोगों का लन्दन आना निश्चित हो गया तब मैंने लैरी से यह प्रस्ताव किया कि पेरिस में हम दोनों अपनी आखिरी शाम साथ ही साथ काटें। चाचा और माँ दोनों ने इसका विरोध दबी जबान से किया। मैंने यह भी बतला दिया कि हम दोनों पहले तो साथ साथ होटल में खाना खायेंगे फिर पेरिस के उन होटलों में घूमेंगे जहाँ का रात की रंगरलियाँ मशहूर समझी जाती हैं। माँ ने मुझसे पूछा भी कि यदि वह मना करें तो क्या फिर भी मैं जाऊँगी जिस पर मैंने दृढ़ता से ‘हाँ’ कह दिया। माँ, तब चुप हो रही थी और उन्होंने कहा कि मेरा उत्तर उन्हें पहले से ही मालूम था और मेरे जाने में वह कोई बाधा न डालेंगी।’

‘आपकी माँ बड़ी संसारी और समझदार मालूम होती हैं; उनमें सूझ अच्छी है।’

‘मेरा विचार है कि वह समझ सब लेती हैं। जब लैरी मुझको लेने आए तो मैं माँ से मिलने गई। मैंने अपना बनाव शृंगार भी कर रखा था क्योंकि पेरिस में बिना इसके निकलना बहुत भद्दा मालूम होता है। ज्यों ही उन्होंने मेरी तैयारी देखी मेरा ऐसा अनुमान है—

उन्होंने सब कुछ समझ लिया कि मैं क्या करने जा रही हूँ। परन्तु उन्होंने कहा कुछ नहीं। मुझे प्यार किया और चलते चलते आशीर्वाद भी दिया कि मेरा समय खूब आनन्द से कटे।’

‘आपकी इच्छा क्या थी?’

आइजाबेल ने सन्दिग्ध दृष्टि से मेरी ओर देख कर कहा—

‘मैं यह नहीं कह सकती कि मैं सुन्दर कितनी लग रही थी मगर यह जानती थी कि यह मेरा अन्तिम अवसर है और इसे मुझे हाथ से न जाने देना चाहिए। हम लोग साथ साथ खाना खाने गए; जो जो मुझे पसन्द था लैरी ने बिना मेरे कहे मगवा कर मुझे खूब खिलाया। हम दोनों ने शैम्पेन की दो बोतलें खाली कर दीं और इतनी बातें की जैसे और कुछ दुनियाँ में काम ही नहीं है और मैं लैरी को बराबर हँसाती गईं। मैं उसे बराबर हँसा सकती हूँ; इस विचार से मुझे आन्तरिक सन्तोष मिल रहा था। हमने नृत्य भी किया। उसके बाद और और क्लबों में गए जहाँ पर हम लोगों ने फिर शैम्पेन पी और मिलकर फिर नृत्य किया। लैरी नृत्य भी बहुत अच्छा करते हैं और मेरी जोड़ी बिल्कुल जुगलजाड़ी मालूम होती थी। गर्मी थी ही; फिर उस पर शराब और फिर नृत्य; मुझे नशा चढ़ने लगा। मैं चाहने लगी कि मैं खुल खेलूँ। नाचते नाचते मैं अपना मुँह लैरी के मुँह के पास ले आती और उनकी भाव भंगी से मुझे मालूम होता कि वह मुझसे कुछ चाहते थे। मेरे विचार में स्वयं मेरे मन में भी वही बात बार बार उठती थी। मुझे विश्वास होता गया कि ज्योंही हम लोग घर पहुँचेंगे तो वही होगा जो ऐसे समय होकर रहता है।’

‘आपने बड़ी सफाई और बड़े करीने से अपनी बात कह डाली।’

‘मेरा कमरा माँ और चाचा के कमरे से दूर था इससे मुझे कोई भय भी न मालूम हुआ। मैंने सोच लिया था कि ज्यों ही मैं अमेरिका लौटूँगी त्योंही कुछ ही महीने बाद उन्हें लिखूँगी कि मैं माँ होने वाली हूँ और फिर तो उन्हें भक मार कर आना ही पड़ता

और मुझसे विवाह करना होता। और जब वह घर आ जाते तो माँ की बीमारी और मेरी देखभाल उन्हें फिर वापस न जाने दे सकती थी। मैंने यह भी सोचा कि जो मैं आज करने जा रही हूँ वह मुझे बहुत पहले ही कर डालना चाहिए था जिससे कोई कोर कसर और सन्देह न रह जाता। मुझे विश्वास था कि मेरा दाँव पूरा उतरेगा। जब नृत्य समाप्त हुआ तो मैं लैरी की बाहों में बहुत देर लिपटी खड़ी रही और हम दोनों की हर साँस एक दूसरे से टकरा खा खा कर सिहर उठती थी। इतने में मैंने कहा कि घर चलना चाहिए क्योंकि दूसरे दिन दोपहर का हम लोगों को चल देना था। हम लोग एक मोटर टैक्सी पर बैठ गए। मैं लैरी के आलिगन पाश में बैधी उसके स्नेहासिक्त चुम्बन का रस लेती रही। मुझे इतना आनन्द आया कि मैं कह नहीं सकती; अगर स्वर्ग कहीं है तो उसी समय दिखाई दे गया। गाड़ी यकायक खड़ी हुई और हम लोग जैसे जमीन पर आगए उन्होंने किराया चुकाया और जाने की आज्ञा माँगी।

आग्रहपूर्वक उनके गले में हाथ डाल कर मैंने कहा—

‘क्या थोड़ी देर भी न ठहरोगे ? मेरे हाथ से आखिरी गिलास पीने में कुछ संकोच है क्या ?’

‘जैसी तुम्हारी इच्छा ।’

‘उन्होंने कमरा खुलवाया और बत्ती जलाई। कमरा प्रकाश से जगमगा उठा। मैं उनकी आँखों में आँख डालते भन्त्र मुग्ध सी खड़ी रही। उनकी आँखों से सरलता, स्निग्धता, विश्वास छुन-छुन कर मेरे हृदय में उतर रहा था। उन्हें लेश मात्र भी सन्देह न था कि मैं उनके लिए जाल बिछा रही हूँ। मुझे ऐसा ज्ञात हुआ जैसे मैं किसी छोटे बच्चे के मुख से मिठाई छीन रही हूँ। आपको बताऊँ मैंने क्या किया ? मैंने फौरन ही कुछ सोच कर कहा—‘रहने दीजिए, फिर कभी सही। माँ की तबियत अच्छी नहीं है और शायद वह जाग जाऊँ। मैंने उन्हें अपने मुख का चुम्बन दे उनसे विदा ली और उनके बाहर

निकलते ही मैंने दरवाजा बन्द कर लिया। सब तमाशे का अन्त मैंने इस प्रकार किया ?

‘क्या आप इस बात से दुःखी हैं ?’ मैंने प्रश्न किया।

‘मुझे न तो दुःख है न प्रसन्नता; शायद मेरे मन ने जो मैं चाहती थी करने की गवाही नहीं दी। अपने से मैंने फिर भी कुछ नहीं किया। वह कोई ऐसी क्षणिक भावना थी जिसने मुझ पर अधिकार कर मुझसे ऐसा कार्य कराया।’ वह हँसने लगी—‘कदाचित् आप इसे मेरी आत्मा का सकोच ही कहेंगे।’

‘कहूँगा तो यही।’

‘और मेरी आत्मा को अब भुगतना पड़ रहा है; शायद वह भविष्य में इस अनुभव से चेतावनी लेले और फिर अपनी गलती न दुहराए।’

हम दोनों की बातें यहाँ पर समाप्त हो गईं। मेरे विचार में आइजाबेल ने मुझसे अपनी जीवन-कथा इस स्पष्टता से कह कर केवल अपने मन का बोझ हलका करना चाहा था। मगर उनके लिए मैं सिवाय अपनी सहानुभूति दिखाने के कर ही क्या सकता था। यह सोच कर कि मुझे सान्त्वना-सूचक कुछ ऐसी बातें कहनी चाहिए, जो उनके मन को बोध दें मैंने कहा—

‘आप को यह शायद नहीं मालूम कि जब कोई किसी से प्रेम करने लगता है और अन्त में जब सफलता नहीं मिलती तो वह अपने को अत्यन्त दुःखी और हतभाग्य समझने लगता है और उसे ऐसा विश्वास होने लगता है कि वह चोट शायद कभी भी अच्छी नहीं होगा; मगर समुद्र-यात्रा ने बहुत से अच्छे-अच्छे काम कर दिखाए हैं ?’

‘मैं आपका मतलब नहीं समझी ?’ उन्होंने मुस्कुराकर कहा।

‘मैं यह कहने जा रहा था कि प्रेम बहुत ही नौसखिया नाविक समान है। समुद्र पर उसकी हिम्मत छूट जाती है और वह थियल हो डाँड पतवार रख देता है। आपको आश्चर्य इस पर होगा कि जब

आप और लैरी के बीच में हजारों मील का अटलान्टिक महासागर लहराता होगा तो जो कुछ भी वेदना आपको इस समय है वह बिलकुल ही न रहेगी ।’

‘क्या आपको इसका निजी अनुभव है ?’

‘नहीं तो फिर इस विश्वास के साथ कहता ही क्यों ।’

यह सुनते ही वह उठ खड़ी हुई और मैं उनके घर तक उन्हें छोड़ आया । उन्हें घर पहुँचाते ही पानी की झड़ी लग गई और मैं भीगने के डर से शीघ्र ही विदा माँग अपने होटल लौट आया । इसके बाद दो या तीन बार मैं इलियट के यहाँ गया भी मगर बहुत से बाहरी व्यक्तियों के बैठे रहने के कारण उनमें मैं कोई विशेष बातें न कर सका । लन्दन में मुझे रहते काफी दिन हो चुके थे; मैं वहाँ से ऊब कर मित्र देश की ओर भ्रमण करने चल पड़ा ।

तीसरा परिच्छेद

१

दस वर्ष हो गए। मेरी भेंट न तो आइजाबेल ने हुई थी और न लैरी से। हाँ, इलियट से मेरी भेंट समय-समय पर हो जाया करती थी, शायद पहले से कुछ अधिक हाँ और मुझे आइजाबेल का हाल चाज़ मिल जाया करता था परन्तु लैरी के विषय में वह मुझे कुछ भी न बतला सके—

‘जहाँ तक मैं समझता हूँ वह पेरिस में अब भी रहते हैं मगर मुझे दिखजाई नहीं दिए। यह संभव भी नहीं क्यों कि हम लोग अपने मिलने जुलने के क्षेत्र अलग रखते हैं। मुझे इस बात पर अवश्य दुःख होता है कि उसका जीवन यों ही नष्ट हो रहा है। उसका वंश साधारणतया अच्छा है और मेरा ऐसा विश्वास था कि यदि वह मेरे कहने पर चलता तो उसका जीवन बन जाता। खैर, उससे आइजाबेल की जान छूटी-यही क्या कम हुआ।’

इलियट की अपेक्षा मेरे मिलने जुलने वालों का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। मेरी जान पहिचान पेरिस के बहुत ऐसे से व्यक्तियों से थी जिनको देखकर इलियट अपने नाक पर सुगंधित रुमाल रख लेते और जब

कभी मैं पेरिस जाता तो अवसर-वश कुछ लोगों से लैरी की चर्चा करता और वह भी केवल इसी विचार से कि शायद उन्हें जानने वाला कोई मिल ही जाय। कुछ लोगों से उनकी चलतीं फिरती जान पहचान तो थी मगर मुझे कोई ऐसा व्यक्ति न मिला जो उनका घनिष्ठ मित्र होता, इसी कारण से मैं उनके विषय में कुछ अधिक न जान सका। उन्हें मैंने उन होटलों में भी नहीं पाया जहां प्रायः ऐसे लोग जाया करते थे जो आनन्द की खोज में फिरते हैं।

इतना तो मुझे अवश्य मालूम था कि उनकी इच्छा यूनान जाने की थी। मगर बाद में जब उनसे मेरी भेंट हुई तो मुझे पता चला कि उन्होंने अपना विचार बदल दिया था। इन दस वर्षों में उन्होंने जो कुछ देखा सुना था वह सब कह सुनाया और मैं पाठकों को उसका क्रमिक विवरण दूंगा। गरमी का मौसम उन्होंने पेरिस में ही काटा और पढ़ने लिखने में लगे रहे—

‘मैंने सोचा कि चल्छू कुछ दिनों आराम करूँ; मैंने नित्य दस दस घण्टे तक एक साथ बैठ कर पढ़ाई की थी; और वह भी दो साल तक। तत्पश्चात् मैं कोयले की खदान में शारीरिक परिश्रम करने चल दिया?’ मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ; और अपने कानों पर विश्वास न करते हुए मैंने दुबारा पूछा—

‘कोयले की खदान में?’

‘हाँ! क्यों क्या हुआ?’ वह मेरे अविश्वास पर हंस पड़े और बोले—

‘मैंने सोचा कि कुछ महीने शरीर से काम लिया जाय जिससे मैं अपनी चित्त-वृत्ति स्थिर रूप से पहचानूँ और अपनी अस्थिर भावनाओं में सामंजस्य बैठा सकूँ।’

मैं चुपचाप सोचने लगा कि यह काम उन्होंने अपने हार्थों क्यों लिया? क्या इसका कारण वही था जो उन्होंने बतलाया है अथवा आइजाबेल से सगाई छूटने के फलस्वरूप उन्होंने अपना दुःख भुलाना

चाहा था। वास्तव में आइजाबेल से वह कितना अधिक प्रेम करते थे उसका मुझे अनुमान भी न था। क्यों कि यह सतत देखा गया है कि जब कोई व्यक्ति प्रेम करने लगता है तो वह अपने मन को पूर्ण रूप से समझा बुझा देता है कि वस अमुक स्त्री ही उसके योग्य है और उसे किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करना असंभव है। इस भुलावे में रहने के कारण ही आजकल के बहुत से विवाह असफल रहते हैं। ऐसे लोगों की अवस्था वैसी ही होती है जैसे किसी धूर्त को कोई अपना काम इस विचार से सौंप दे कि वह उसका मित्र भी है और अपने को इसी भुलावे में डाले रहे कि मित्र के नाते उनसे धूर्तता नहीं करेगा; परन्तु वास्तविक बात यह होती है कि धूर्त पहले धूर्त है और बाद में मित्र और वह अपनी धूर्तता पहले दिखाएगा और भिन्नता बाद में निभाएगा। लैरी में इतनी मानसिक शक्ति थी कि वह आइजाबेल को अपने विचारों के आगे ठुकरा सके। हो सकता है कि इस कार्य से उनको चोट गहरी लगी हो; संभव है वह भी अधिकांश मनुष्यों के समान विवाह भी करना चाहते थे और अपनी आदतों से भी विवश थे।

‘कहिए; आप कुछ कह रहे थे न।’ मैंने उन्हें स्मरण दिलाने के उद्देश्य से कहा।

‘मैंने अपना सब असबाब इकट्ठा किया और उसे होटल के मैनेजर के हवाले कर केवल दो एक पहनने के कपड़े एक बैग में रख कर चल दिया। जिस शिक्षक ने मुझे यूनानी भाषा पढ़ाई थी उन्होंने एक परिचय पत्र मुझे दे दिया था वह भी मेरे पास था और फ्रांस के उत्तर में लेन्स नगर आकर मैंने खदान जाने के लिए गाड़ी पकड़ी। क्या आपने कभी उन नगरों को देखा है जहाँ पर खदानें होती हैं?’

‘इंगलैन्ड में देखा है।’

‘हर जगह एक ही सा हिसाब मालूम होता है। खदान के पास ही मैनेजर का घर और उससे लगे हुए एक तरह के दो मंजिले मकान

बने रहते हैं। एक ही तरह के मकान देखते देखते आँखें थक जाती हैं और जी ऊब उठता है। कभी कभी तो उन्हें देख कर जैसे जी बैठा जाता था। पास ही में गिरजाघर था और थोड़ी ही दूर शराब पीने के अनेक रेस्तरां जहाँ बैठ कर लोग थोड़ी देर तबियत बहला सकते थे। उस दिन बड़ी सर्दी थी; थोड़ा थोड़ा पानी भी बरस रहा था। मैं मैनेजर के दफ्तर में पहुँचा और अपना पत्र उन्हें दिया। वह मोटे ताजे थे; लाल लाल गाल; और ऐसा ज्ञात होता था कि सिवाय खाना-खाने के उन्हें कोई दूसरा काम ही न हो। खदान में मजदूरों की बहुत कमी हो गई थी क्योंकि हजारों आदमी लड़ाई में मार डाले गए थे। उन्होंने मुझसे दो एक प्रश्न किए और मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे अमरीकी होने के कारण उन्हें कुछ सन्देह भी हो रहा है, मगर जो पत्र मैं लाया था वह उनके बहनोई का था और उसमें मेरी बहुत प्रशंसा लिखी हुई थी इसलिये उन्होंने अपना सन्देह मिटा कर मुझे नौकरी देने का निश्चय कर लिया; परन्तु वह मुझे खदान के ऊपर ही काम देना चाहते थे, मगर मेरे आग्रह करने पर कि मैं खदान के अन्दर ही काम करना चाहता हूँ और मेहनत से भी काम करूँगा वे राजी हो गए। जो काम मुझे मिला वह केवल छोटे लड़कों का काम था; चूँकि लड़के भी बहुत कम थे इसलिए मैं एक खुदाई करने वाले के साथ सामान इधर उधर ढोने के काम में लगा दिया गया। जिस व्यक्ति के साथ मैं काम करता था वह बहुत ही हंसमुख थे और मेरे यह कहने पर कि मेरे घर द्वार यहाँ नहीं है उन्होंने एक पुराने खदान खोदने वाले की विधवा के घर का पता बतला कर मेरे ठहरने का प्रबन्ध उसी के घर पर करा दिया। विधवा के दो लड़के थे जो खदान में काम किया करते थे। उन दोनों के पिता लड़ाई में काम आए थे और उन्हीं दोनों पर ही गृहस्थी चलाने का भार था।

मैंने अपना सामान उठाया और ढूँढ़ते ढूँढ़ते उसके घर जा

पहुँचा। एक लम्बी, तगड़ी, बड़ी बड़ी आंखों वाली स्त्री ने मेरा स्वागत किया। उसकी आकृति अब भी अच्छी थी और कदाचित्त वह कुछ वर्ष पहले सुन्दरी भी कही जाती होगी ! इस समय उसके दो अगले दांत टूट चुके थे। उसने मुझसे पहले तो यह कहा कि उसके पास कोई खाली कमरा नहीं है मगर एक कमरे में केवल एक किराएदार है और उसी में वह मेरे लिए एक चारपाई डलवा देगी। ऊपर के मञ्जिल में उसके दोनों लड़के रहते थे इसलिए वहां पर प्री जगह न थी। अपने लिए मैं अकेले एक कमरा चाहता था मगर उसकी कोई गुंजाइश न थी, इसलिये मैं वहीं टिक गया। जहां खाना पकता था वहीं बैठक भी थी जिसमें दो पुरानी और टूटी फूटी कुर्तियां पड़ी हुई थीं। दोनों लड़के और मेरे कमरे में रहने वाला किराएदार अपना अपना खाना साथ ले गए थे इसलिए मुझसे मालकिन ने कहा कि मैं उस दिन उसके साथ ही खाना खाऊंगा। मैंने अपनी सिगरेट सुलगाई और कमरे में टहलने लगा और मालकिन की बातें सुनता रहा। वह काम भी करती जाती थी और अपनी राम कहानी भी सुनाती जाती थी। इतने में दोनों लड़के और मेरा साथी किराएदार आ गए। लड़के ऊपर चले गए और मेरा साथी बिना मेरी ओर देखे हुए गरम पानी की केतली ले हाथ मुँह धोने चल दिया। मेरा परिचय जब मालकिन ने दिया तो उसने केवल अपना सिर हिला दिया; दोनों लड़कों ने मेरा परिचय पाने के उपरान्त मुझे सनकी समझा और ज्यादा बातें नहीं कीं।

मेरे साथी किराएदार का नाम बहुत ही मुश्किल था और उसका उच्चारण कठिन होने के कारण सब उसे कोस्टों कहते थे। लम्बा, चौड़ा, सात फुट ऊँचा आदमी, चौड़ी गर्दन, दबी हुई नाक, भरा हुआ मुँह जिस पर खूब कांयले की गद पड़ी थी, नीली और भूरी आंखें—यह सब देख मुझे कुछ आश्चर्य हो रहा था कि वह वहां ही क्यों काम करने आया और किसी अच्छी जगह क्यों नहीं गया। हाथ

मुँह धोने के बाद एक कोने में बैठ कर वह अखबार पढ़ने लगा और सिगरेट की राख बार-बार भाड़ता रहा। मेरी जेब में भी किताब थी, जिसे निकाल कर मैंने भी पढ़ना शुरू कर दिया। उसने मुझे पढ़ता देखकर अपना अखबार अलग डाल दिया।

‘आप क्या पढ़ रहे हैं?’ उसने उत्सुकता से पूछा।

‘मैंने उसके हाथ में किताब दे दी जिसे उसने उल्ट पलट कर वापस कर दिया। वह उपन्यास था जो मैंने केवल इसीलिए खरीदा था कि वह मेरी जेब में आ जाता था। उसने फिर प्रश्न किया—

‘इसके पढ़ने में कुछ आनन्द आता है?’

‘बहुत ज्यादा—कभी कभी इतना ज्यादा कि क्या बतलाऊँ।’

‘मैंने इस किताब को कालेज में पढ़ा था; मुझे तो बहुत ही खराब मालूम हुई; पढ़ते पढ़ते ऊब उठता था। अब मैं केवल अखबार और जासूसी उपन्यास पढ़ता हूँ।’

मालकिन अब काम समाप्त कर चुकी थी। वह हम लोगों के पास आई और पैर पैलाकर बैठ गई। उसने कोस्टी से बतलाया कि मैं मैनेजर का भेजा हुआ किराएदार था। वह चुपचाप मेरी ओर अपनी नीली भूरी आँखों से घूर घूर कर देखता रहा जैसे मुझे समझने का प्रयत्न कर रहा हो। उसने मुझसे दो चार प्रश्न मेरे विषय में पूछे और जब उसे यह मालूम हुआ कि मैंने कभी पहले खदान में काम नहीं किया था तब उसने व्यंगपूर्ण मुस्कुराहट से मेरी ओर देखकर कहा—

‘आपको पता है कि आप कहाँ आ फँसे हैं? कोई भी आदमी जो कहीं और काम कर सकता है खदान में काम करने नहीं आता। मगर यह आप का काम है और आप जाने, हो सकता है आप कुछ विशेष कारणों से यह काम कर रहे हों। आप पेरिस में कहाँ रहते थे?’

मैंने उन्हें अपने ठहरने की जगह बतला दी जिसके पश्चात् उन्होंने कहा—

‘उस स्थान को मैं खूब जानता हूँ; मैं वहाँ अक्सर जाकर ठहरा करता था मगर वह जरा महंगी जगह है—बहुत कम लोग वहाँ ठहर पाते हैं।’

मैं उसका व्यंग समझ रहा था। थोड़ी ही देर में, उसके मुख पर उमंग की रेखा दौड़ गई और उसने मुझे रात को रेस्तराँ चयन और ताश खेलने का निमन्त्रण दिया। मैं राजी हो गया। घर से खाना खाकर हम लोग वहाँ पहुँचे और कोस्टी ने ताश लाने का आदेश दिया। ताश आते ही बटने लगे और पहली ही वाजी में मैं हार गया। मुझे अपनी ओर से बियर की बोतल मंगवानी पड़ी। फिर वाजी बिछी; मैं फिर हारा और दूसरी बोतल भी आई। कोस्टी के पास पत्ते हमेशा अच्छे आते रहे और वह अपनी जीत से बहुत प्रसन्न हो रहा था। फिर दौंव लगा कर वाजी फेटी गई और मैं कई हाथ लगातार हारता गया जिससे कोस्टी की प्रसन्नता और भी बढ़ती गई; मगर उसकी बात-चीत और उसके हाव-भाव से मुझे विश्वास हो गया कि वह पढ़ा लिखा है। उसने पेरिस की बातें शुरू की और अनेक व्यक्तियों के नाम बताए और तब मुझे ज्ञात हुआ कि उन सब स्त्रियों को जिन जिन से मेरी भेंट इलियट के घर हुई थी वह भली भाँति जानता था। मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि वह इतना सम्पन्न होते हुए खदान में काम करने क्यों आया? क्या वह भी भाग्य हीन हो गया था अथवा उसके भी यहाँ आने के विशेष कारण हैं। बातें समाप्त होते ही उसने एक बोतल बियर और मँगवाई और धीरे धीरे पीते हुए मेरी ओर धूरने लगा। उस पर नशा चढ़ रहा था और उसकी विकृत मुद्रा मुझे बहुत ही बुरी मालूम होने लगी—

‘आप इस खदान में काम करने क्यों आए?’

‘अनुभव प्राप्त करने।’

‘यह तो कोई उपयुक्त स्थान नहीं। इसके लिए आपको कहीं

अच्छी जगह जाना चाहिए था ।’

मैं थोड़ी देर चुप रहा । उस पर नशा काफी चढ़ चुका था । मैंने पूछा—

‘तब फिर आप ऐसी जगह स्वयं कैसे आए ?’

‘मैं जब पढ़ने के लिए फौजी स्कूल में पहले पहल भेजा गया तब उस समय मैं बहुत छोटा था । रूस के भाग्यविधाता जार की सेना में मेरे पिता सेनापति के पद पर थे । मैं भी धीरे धीरे उन्नति करके घुड़स्वार फौज का सेना-नायक बन गया था । मगर थोड़े ही दिनों बाद मैं जार के विरुद्ध हो गया । कुछ लोगों ने मिल कर उसकी हत्या करनी चाही मगर हमारा एक साथी हमसे फूट निकला और उसने ज़ार से सब षड्यन्त्र बतला दिया । हमारी गोष्ठी के बहुत से आदमी पकड़ कर गोली मार दिए गए मगर मैं भाग खड़ा हुआ । मेरे लिए दो ही रास्ते थे—मृत्यु या खदान में काम । मैंने खदान में काम करने का निश्चय किया और यहाँ आकर लग गया ।’

कोस्टी को पहले ही मैं बतला चुका था कि मैं खदान में किस काम पर नियुक्त हूँ । कुछ सोचने के बाद उसने अपनी कुहनी टेबुल पर जमा दी और कहा—

‘जरा मेरा हाथ तो हटाओ ?’

मैं समझ गया कि वह अपनी ताकत का रोब मुझ पर जमाना चाहता है । मैंने अपनी हथेली उसकी कुहनी पर लगाई जिसे देखते ही उसने कहा—

‘जनाब ! आपके हाथ इतने मुलायम न रह जायेंगे; एक ही सप्ताह के बाद आप देखेंगे कि उँगलियों पर घट्टे पड़ना शुरू होंगे ।’

मैंने अनसुनी करके अपने हाथों से उसकी कुहनी ढकेलने की कोशिश की मगर मैं असफल रहा । फिर उसने एक ही धक्के में मेरी कुहनी ढकेल दी । मैं उसकी तरफ़ी बाँह और उसके सख्त हाथों को

देख रहा था। उसने कहा—

‘तुममें काफी ताकत है। दूसरे लोग तो मेरा हाथ एक इंच भी नहीं सरका सकते हैं। देखो! मेरे साथ जो आदमी काम करता है वह फ्रांसीसी है और बड़ा ही मुस्त और कामचोर है। मैं कल फोरमैन न कह कर उसकी जगह तुम्हें ले लूंगा।’

‘अच्छी बात है। क्या वह मान जायगा?’

‘क्यों नहीं मानेगा। पैसा क्या नहीं कराएगा। क्या तुम्हारे पास पचास फ्रैंक हैं?’

मैंने नोट उसके हाथ में दे दिए। घर पहुँच कर हम लॉग सो गए और थके होने के कारण मुझे नींद खूब आई।

‘क्या काम बहुत मेहनत का नहीं था?’

‘बहुत ज्यादा। पहले तो ऐसा मालूम हुआ कि कमर ही टूट जायगी। मैं कोस्टो की मदद पर रख दिया गया। वह बहुत सकरी जगह में खुदाई किया करता था और वहाँ पहुँचने के लिए एक बहुत ही पतली और नाची सुरंग से हाथों के बल चल कर जाना पड़ता था। वहाँ इतनी गर्मी थी कि शायद नर्क में भोन रही होगी और हम लोग केवल पतलून ही पहन कर काम करने थे। कोस्टो का नंगा वर्दन मुझे एक बहुत ही बड़ी पत्थर की मूर्ति के समान दिखलाई दिया करता था। जिस औजार से कोयले की कटाई हो रही थी उसका आवाज कानों के परदे फाड़े डाल रही थी। कटे हुए कोयले के ढाँकों का उठा कर मुझे इकट्ठा करना रहता था और उसे एक टोकरे में भर कर सुरंग के मुँह तक उठा लाना पड़ता था जहाँ से दूसरे भजदूर उसे बाहर लाकर रेल के डिब्बों में भर कर गादाम ले जाया करते थे। मैंने जीवन में केवल यही खदान देखी थी और मुझे यह नहीं मालूम कि साधारणतया और खदानों में क्या होता है। मैं नौसिखियों की तरह काम में लगा रहा मगर काम बहुत ही कठिन था। दोपहर की छुट्टी में हम दोनों साथ खाना खाते और

सिगरेट पीते। शाम को जब काम समाप्त होता तो लौट कर मैं स्नान करता। उस स्नान में जो आनन्द आता था वह अब तक नहीं भूला है। मुझे ऐसा मालूम होता था कि मैं अपने हाथ पैर की कालिख कभी भी नहीं छुड़ा सकूँगा; मालूम होता था किसी ने सारे बदन पर काली स्याही पोत दी है। मेरे हाथों में छाले पड़ गए परन्तु वे शीघ्र ही अच्छे हो गए और मैं काम करने में अभ्यस्त हो गया।

‘आप वहाँ कितने दिनों रहे ?’

‘मैंने कोयला इकट्ठा करने का काम तो कुछ ही दिनों किया। जिस ट्रक पर लद कर कोयला गाड़ियों के पास तक पहुँचाया जाता था उसका ड्राइवर नौसिखिया था और उससे ट्रक चलती न था। एक दिन वह ट्रक फेल हो गई। ड्राइवर कारीगर भी अच्छा न था। उससे मोटर चलाए न चली। मैंने उसे ठीक कर देने का प्रस्ताव रखा। दो ढाई घण्टे के परिश्रम के बाद गाड़ी चल पड़ी। फोरमैन ने मैनेजर से मेरी बड़ी प्रशंसा की और मेरी बुलाहट हुई। मुझसे पूछा गया कि मोटर का काम मैं कितना जानता हूँ और मेरे यह कहने पर कि मैंने यह काम काफी सीख रखा है मैं मशीनों की देख भाल पर नियुक्त कर दिया गया। यह काम बहुत अच्छा तो न था और जी ऊबने लगता मगर काम इतना सहज था कि मुझे बिलकुल मेहनत न पड़ती और मैं बैठे बैठे सिगरेट पीया करता। मोटर में फिर कभी गड़बड़ न हुई और सबके सब मुझसे बहुत प्रसन्न रहने लगे।’

‘अपने नए काम पर चले जाने से कोस्टी के क्रोध का कोई अन्त नहीं रहा। उसे मेरा साथ पसन्द था और मुझे भी उसके साथ कोई कष्ट न था; मैं उसका साथ कभी छोड़ता भी न था, साथ ही खाता और साथ ही कमरे में रहता। वह बहुत ही विचित्र व्यक्ति था। वह और लोगों से तो बहुत कम मिलता जुलता परन्तु मुझसे सदा अपने श्रेष्ठ वंश की प्रशंसा किया करता। रूसी सेना में जब वह कप्तान के पद पर काम किया करता था उसके किस्से सुनाता और सब साथियों को निकुष्ट

समझता। तगड़ा तो वह इतना था कि दस पाँच छुरेवाजों को भी वह अकेले खाली हाथ पछाड़ सकता था; उसमें बैल के समान शक्ति थी। बहुत से लोग उससे अप्रसन्न रहते मगर उसका कुछ भी विगाड़ न सकते। जिन लोगों से कोस्टी घृणा करता उन सबने मुझे बतलाया कि वह सेना में नौकर अवश्य था मगर किती छोटी मांटी जगह ही पर था और उसके भागने का कारण राजनीतिक पड़यंत्र नहीं वरन उसकी धूर्तता थी। अफसरों के क्लब में कई बार ताश के खेल में वह बेईमानी करते पकड़ा गया और सेना से भी निकाल दिया गया। उन लोगों ने मुझे उसके साथ ताश न खेलने की चेतावनी भी दी और मुझे विश्वास दिलाया कि अपनी धूर्तता से वह मुझे हानि पहुँचाएगा। चूँकि ये लोग उसकी कलई खोला करते थे इसलिये कोस्टी इन लोगों से बड़ी घृणा करता था।

‘कोस्टी के साथ ताश के खेल में मैं हारता तो सदा रहा मगर रकम इतनी थोड़ी होती कि मुझे जरा भी बुरा न मालूम होता। सबसे तमाशे की बात यह थी कि जब वह जाँतता तो शराब का मूल्य हमेशा अपने पात से ही देने का आग्रह करता। मैं समझता कि शायद मैं बुरा खिलाड़ी होने के कारण हारता हूँ, वा मेरा भाग्य ही कुछ खराब है। यह जान कर कि वह बेईमानी करता है मैं अपनी आँखें ताश पर गड़ाए रहता और मुझे विश्वास भी हो जाता कि वह धोखा दे रहा है मगर बहुत सर मारने पर भी मुझे उसकी चाल समझ में न आती। वह ताश के पत्ते लगाने में बहुत ही हांशियार था। और वह पत्ते इस खूबी से लगाता कि उसकी चाल मैं कभी भी भाँप न पाता पर मैं अपनी आँखें पत्तों के बाटने और फेटने पर गड़ाए रहता और उसे यह आभास भी मिल जाता कि मैं सचेत हो गया हूँ। एक दिन कुछ देर खेलने के बाद उसने मेरी ओर घूरा और अपनी व्यंगपूर्ण मुस्कुराहट से देखकर कहा—

‘कहो तो कुछ ताश के खेल दिखलाऊँ !’

जाता। हम समय सबसे अधिक वह आध्यात्म और दर्शन की बातें करती और ऐसे दार्शनिकों और आध्यात्म-तत्वों की चर्चा करता जो मैंने स्वप्न में भी नहीं सुना था। कोस्टी ऐसे भद्दे, भीमकाय, शराब में चूर, मज्दूरी से पस्त व्यक्ति को जब मैं आध्यात्म की बातें करते सुनता तो मुझे बड़ा आश्चर्य इस बात पर होता कि क्या ऐसा व्यक्ति भी ईश्वर और शास्वत सत्तों की बातें सोच सकता है? इस अनुभव द्वारा मुझे ऐसा ज्ञात होता कि मैं एक ऐसे अधरे कमरे में बैठा हुआ हूँ जिसके दरवाजे के छोंटे से दरवाजे से हलकी रोशनी छन छन कर आ रही है और मुझे यह विश्वास होने लगता कि दरवाजा खोलते ही ज्ञान का प्रकाश मुझे चकाचौंध कर देगा। कोस्टी यों तो आध्यात्म, सत्य, ईश्वर, आत्मा, आत्मानन्द पर बहुत चुभती हुई बातें करता मगर जब मैं उससे सीधे प्रश्न करना आरम्भ करता तो मुझ पर झुँझला उठता और डाँट बैठता—

‘नशे में मैं जब चूर रहता हूँ तो न जाने क्या क्या बक जाता हूँ। तुम्हारी मूर्खता की भी हद है जो तुम उसे ठीक समझने लगते हो।’

‘मुझे विश्वास था कि वह झूठ बोल रहा है; उसे खूब याद रहता कि वह किस विषय पर बातें कर रहा है और उसका ज्ञान भी बहुत गहरा था। यद्यपि उसकी आँखें शराब से लाल रहती और उसके मुँह से बू आया करती मगर उसके मुख की शान्ति और उस पर की प्रगाढ़ चिन्तन छाया मेरे हृदय पर रह रह कर छा जाया करती थी। उसकी बातें मुझे नहीं भूलतीं। जब पहले पहल उसने मुझसे अपने विचार बतलाए तो मैं स्तम्भित रह गया। उसने कहा कि संसार को किसी ने निर्मित नहीं किया और यह धारणा भ्रममूलक है कि शून्य से ही संसार निर्मित है क्योंकि शून्य से कुछ भी निर्मित नहीं हो सकता। संसार, अक्षय प्रकृति से ही निर्मित है और भले और बुरे, पाप और पुण्य उसी अक्षय शक्ति के दो रूप हैं। दोनों ही

वहीं से निकले हैं और उसी में लय हो जायेंगे। मैं उसके सिद्धान्त अर्भी भी नहीं भूला हूँ। उस गन्दे, बीमत्स होटल में, शराब की बू से बसे हुए वातावरण में कोस्टी ऐसे व्यक्ति द्वारा ईश्वर और सत्य के रूप का विवेचन सुन कर मुझे आज तक आश्चर्य है।'

२

लैरी ने अपने अनुभव और जीवन-कहानी सुनाने में लेशमात्र भी संकोच न किया। अपनी मधुर वाणी, सहज स्वभाव, शान्त-चित्त से वह कहते गए और ज्यों ज्यों उनकी दो उंगलियों के बीच दबी हुई सिगरेट का धुँआ उड़ता जाता उनके विवरण में और भी रोचकता और रंजकता मुझे ज्ञात होती—

‘बसन्त ऋतु आ गई थी परन्तु खदान के उन भागों में जो चारों ओर फैले हुए थे ठण्ड थी और निस्तब्धता छाई हुई थी। पानी भी प्रायः बरस जाया करता था मगर कभी कभी सुहाना दिन निकलता और जब सूरज की गरमी से हम सब में नवीन शक्ति भर जाती तो खदान के अन्दर काम करने को जी न चाहता। कहाँ ऊपर की दुनियाँ और उसका शान्त और स्निग्ध वातावरण; कहाँ सैकड़ों गज नीचे की अँधेरी दुनियाँ जो कोयले के रंग और बू से और भी काली हो रही थी! मुझे उस पाताल-प्रदेश में ऐसा मालूम होता कि बसन्त भी रुक रुक कर और डर डर कर घीरे घीरे आ रहा था; कदाचित् उसे यह भय था कि उस काले प्रदेश की कालिमा उसे छू कर उस पर घन्बे न डाल दे। कभी कभी बसन्त की क्षीण रेखा मुझे अलौकिक प्रकाश से ज्ञात होती जो मेरा आवाहन करती दिखलाई देती। उस दिन इतवार था। कोस्टी और मैं दोनों सबेरा होने पर भी चारपाई पर लेटे लेटे पढ़ रहे थे। यकायक कोस्टी ने अपनी

किताब पटक दी—

‘सुन रहे हो ! कल मैं यहाँ से चल दूँगा ! क्या तुम भी चलोगे ?’

‘मुझे यह मालूम था कि पौलैन्ड के मजदूर खदानों में छु सात महीने काम करके वसन्त में खेतों की कटाई करने चले जाते हैं; मगर उसका समय अब तक आया न था इस कारण कोस्टी का मन्तव्य मैं ठीक ठीक नहीं समझ पाया । मैंने पूछा—

‘तुम जाओगे कहाँ ?’

‘यों ही घूमने फिरने ! बेल्जियम, जर्मनी—जिधर रास्ता मिला उधर ही । रास्ते में किसी खेत-खलिहान में काम मिल ही जायगा और गर्मी में खाने पीने का काम भी चलता रहेगा ।’

मुझे निश्चय करने में एक मिनट की भी देर न लगी और मैंने कहा—

‘तब तो आनन्द ही आनन्द रहेगा ।’

‘दूसरे दिन हम लोगों ने खदान के फोरमैन को त्याग पत्र दे दिया । मैंने अपने बेकार कपड़े मालकिन के लड़कों को बाँट दिए और अपना थोड़ा बहुत काम चलाने वाला सामान एक बैग में कस कर बांधा और बगल में लटका कर चलने को तैयार हो गया । मालकिन ने बड़े प्रेम से उस दिन हम दोनों को काफी पिलाई और हम दोनों साथ साथ निकल पड़े ।’

‘हम लोग यह जानते थे कि खेत-खलिहान में काम जल्दी न मिल पाएगा और इसीलिए पहले इधर उधर के प्रदेशों में घूमने का निश्चय किया । फ्रांस, बेल्जियम और जर्मनी की सरहदों पर हम लोग घूमते फिरे । कदाचित् दस या बारह मील हम लोग रोज चल लेते थे और कोई विशेष जल्दी न होने से आराम से चहल कदमी करते चला करते थे । कहीं न कहीं कोई सराय मिल जाती थी जहाँ बैठकर हम लोग कुछ खाना खा लेते और बियर पीकर फिर अपना रास्ता लेते । रास्ते भर

मौसम बड़ा सुहाना था और पहले पहल मैंने प्रकृति के सौन्दर्य का गूढ़ अनुभव किया। हरे भरे मैदानों के बीच खड़े हुए टूट जो घराने की प्रताप्ता में अनेक तने की रंगों में जीवन-अनुभव करने के लिए लालायित हो रहे थे हमें हर जगह मिलते। कोस्टी चलते चलते मुझे जर्मन भाषा सिखलाता और प्रत्येक वस्तु का जर्मन अनुवाद-शब्द मैं याद करता जाता। इस प्रकार समय भी कटता गया और जब तक हम जर्मनी के पहले नगर में पहुँचे तब तक मैं टूटी फूटी जर्मन भाषा बोलने लग गया था और काम चलाने के लिए मुझे उतनी ही पर्याप्त ज्ञान पड़ा।

‘घूमते घूमते हम लोग कोलोन जा पहुँचे और कोस्टी को वहाँ की कुछ चीजें विशेष रूप से पसन्द थीं जिनको देखने के लिए उसने तीन दिन तक मेरा साथ छाँड़ दिया। मैं एक सराय में ठहर गया था। जब चौथे दिन कोस्टी लौटा तो मैंने देखा कि उसका मुख सूजा हुआ था; एक आँख फूल उठी थी और आधी वन्द थी और उसके चारों ओर काले दाग पड़े हुए थे। क्रोध से वह बौखलाया हुआ था। वह कदाचित् किसी से लड़कर आया था। डर के मारे मेरी उससे कुछ पूछने की हिम्मत न पड़ी और वह आते ही न्युपचाप सो गया और चौबीस घण्टे लगातार सोता रहा। जब वह उठी तो स्वस्थ और चैतन्य मालूम होने लगा और तब तक उसको अपनी चोट भी भूल गई थी। हम दोनों फिर चल पड़े और अब यह निश्चय किया गया कि कहीं न कहीं काम अवश्य करना चाहिए।’

‘गांवों में कटाई शुरू हो गई थी। मौसम बहुत सुहावना होता जा रहा था और हम दानों कस्बे, गाँव, शहर पार करते हुये बड़े चले जा रहे थे। जहाँ कहीं कोई देखने योग्य स्थान होता हम लोग रुक जाते जिसके कारण कभी कभी तो हम लोगों को कटे खेतों के पुराल में घुस कर रात की ठण्ड काटनी पड़ी। उन गांवों में अंगूर की खेती अधिक थी और हम लोगों ने बियर पीना छोड़कर अंगूरी शराब

पोनी शुरू कर दी। कोस्टी गांव वालों से बहुत शीघ्र मित्रता कर लेता और उन लोगों का विविध रूप से मनोरंजन कर उनका कृपापात्र बन जाता। उन लोगों के साथ कभी वह ताश खेलता और हंसी हंसी में उनसे काफी पैसे भी एंट लेता; फिर वह सबको शराब पिलवाता, मजाक की झड़ू बांध देता और जब यह सब रंगरंगीला चलती रहतीं वह आत्मा का आनन्द-मार्ग, आत्मा और परमात्मा का सम्मिलन आत्मा की अर्धरात्रि और आत्मा के परमानन्द की बातें करता। जब सबेरा होता तो मैं उसे याद दिला कर रात की बातें विस्तारपूर्वक जानने का आग्रह करता तो वह क्रोध से कहता—

‘क्या बेवकूफ हो गये हो; इन सब बातों से तुम्हें मतलब ? चुपचाप जर्मन भाषा सीखते जाओ; इसी में खैरियत है।’

‘कोस्टी से विवाद तभी हो सकता था जब कोई उसकी मार खाने का प्रस्तुत होता। उसका तगड़ा शरीर, मुग्दल के से हाथ, जिनका प्रहार वह बिना दुवारा सांचे हुए हर समय कर सकता था, लोगों को स्वभावतः डरा दिया करते थे। मैं उसकी बातें जरा भी समझ न पाता और झगड़े के डर से कुछ पूछने का साहस भी न होता। शराब पीकर जब वह मस्त हो जाता तो उसकी भाषा शिष्ट हो जाती, उसकी आंखें गम्भीर होतीं और उसकी वाणी मानों अनन्त को भेदती हुई जान पड़तीं और तभी वह आत्मानन्द और अनन्त-शक्ति की बातें छेड़ता। यह परिवर्तन देखकर मैं कभी कभी स्तब्ध हो जाता और मुझे न जाने कैसे यह विश्वास होने लगता कि यह व्यक्ति केवल अपने शरीर को कष्ट देकर अपना आत्मिक विकास करना चाहता है। मेरा अनुमान है कि वह अपने भड़े, मोटे, तगड़े शरीर को इसी कारण मस्त करता रहता था और उसकी बेईमानी अथवा धूर्तता, उसे चाहे जो भी कहें, केवल उसी उद्देश्य के साधन मात्र थे। कभी कभी तो मुझे ऐसा आभास मिलता कि वह अपने हृदय में घोर मानसिक पीड़ा का अनुभव कर रहा है

और खेल की घोला-घड़ी और छल मुझे उसके अन्तर्द्वन्द्व के प्रकाश-मात्र ज्ञात होते । मानव के जीवन में दबी हुई एक ऐसी पावत्र शक्ति,—एक अज्ञात दैवी शक्ति कभी कभी उसको अपने वश में करने की इतनी कोशिश करती कि उसके मुख की आकृति बिगड़ जाती और वह विह्वल हो उठता ।’

‘हम लोग बहुत दिनों घूम-घाम चुके थे और अब कुछ काम करना आवश्यक था । वसन्त भी बीत चला था । अंगूर के गुच्छे टहनियों की गोद में ढुलके पड़ रहे थे और उनसे रस टपकता हुआ मालूम हो रहा था । हम लोगों का पैसा रुपया भी समाप्त हो चुका था और अब यह आवश्यक था कि शीघ्र ही कुछ काम मिले । यद्यपि मेरे पास बैंक के चेक की किताब थी मगर मैं मेहनत करके ही जहाँ तक हो सके अपना निर्वाह करना चाहता था । चलते चलते कुछ दूर पर एक गाँव दिखलाई दिया जहाँ हम दोनों जा पहुँचे । पूछने पर मालूम हुआ कि एक किसान को नौकर की जरूरत थी मगर जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो हम लोगों को देख कर कोई नौकर रखने पर राजी न हुआ । एक तो हम लोग मीलों पैदल चलने से थके हुए थे और दूसरे इतनी गर्द और धूल बदन पर पड़ी थी कि हम लोग आबारा ही मालूम हो सकते थे । इस परिस्थिति में नौकरी न मिलना कुछ आश्चर्य भी न था । एक दूसरे किसान ने हम दोनों को बुला कर ऊपर से नीचे तक खूब ऐसे ही देखा जैसे बैल खरीदते वक्त जानवर की जाँच की जाती है और कहा कि वह कोस्टी को तो नौकर रख लेगा मगर मैं उसके लिए बेकार हूँ । कोस्टी इस पर राजी न हुआ और उसने कहा कि हम दोनों जहाँ काम करेंगे साथ ही साथ रहेंगे । मैंने उसे समझाया कि वही काम शुरू करे मगर उसने मुझे फटकारा और मैं चुप हो रहा । मुझे फिर आश्चर्य होने लगा । मेरी आत्मा मुझे कोसने लगी कि मेरे ही कारण उसे इस समय मारा मारा फिरना पड़ रहा है । मैं कोस्टी को अपने अन्तरतम से चाहता भी न

था: उसका शरीर और उसका क्रोध दोनों ही मुझे घृणा से भर देते थे। जब कभी मैं उसके चरित्र और प्रेम की प्रशंसा मित्रता के नाते करने लगता तो वह गाली देकर मुझे शान्त कर दिया करता।'

'दूसरे दिन हम लोगों का काम बना। एक गांव में पहुँचते ही हम लोगों ने जा पहला भोपड़ा देखा वहीं जाकर याचना की। एक स्त्री ने दरवाजा खोला और हम लोगों ने नौकरी की प्रार्थना की। इस बार हम लोगों ने यह शर्त रखी कि हम लोगों को वेतन नहीं चाहिए केवल खाना और ठहरने का स्थान चाहिए। हम लोग समझ रहे थे कि यह शर्त सुनते ही वह स्त्री दरवाजा बन्द कर हम दोनों को भगा देगी मगर उसने किसी को आवाज दी और थोड़ी ही देर में एक आदमी बाहर निकला। उसने बाहर निकलते ही हम दोनों को बड़े ध्यान से देखा और पूछा कि हम लोग कहाँ से आ रहे हैं। मेरे यह बतलाने पर कि मैं अमरीकी हूँ उसने बहुत आश्चर्य से मेरी ओर ध्यानपूर्वक देखा और बड़ी आवभगत से अन्दर बुलाया और शराब की बोतल सामने लाकर रख दिया। इस आवभगत से हम लोग कुछ डरे और चकित भी हुए। घर की स्त्री अन्दर से एक शीशे की सुराही और कई गिलास ले आई और हम लोगों के लिए शराब ढालनी शुरू की। उसने हम लोगों को बतलाया कि उनका नौकर एक मुहजोर बैल से क्रोधवश लड़ गया और उसकी सींगों से बुरी तरह घायल होने के कारण वह कई महीने काम पर न लौट सकेगा। उस स्त्री ने लड़ाई कराने वाले राजनीतिज्ञों को खूब गालियाँ दीं कि उन्होंने अनेक आदमी मार वाले; कुछ कैफ्टरी वाले वहका ले गए और इसी कारण आदमियों का टोटा हो गया। हम लोग उस समय असमंजस में पड़े हुए सोच ही रहे थे कि इतने में उस पुरैप ने अपनी अनुमति दे दी। उसकी सम्मति हम लोगों के पक्ष में ही निकली; और जहाँ तक हमें अनुमान था रहने के लिए उस घर में यथेष्ट स्थान भी था। परन्तु हम लोगों की घर में रहने

की आशा निष्फल हुई और हम दोनों को मुसावल में अपनी अपनी चारपाइयाँ डालने का आदेश मिला ।'

‘जो काम हम लोगों को सिपुर्द किया गया था बहुत सहज था । केवल दो गायों और कुछ सुअरियों की देख भाल करनी थी । दो एक खेती की मशीने भी थीं जो बेकार हो गई थीं और उन्हें हम लोगों को काम लायक बनाना था । इसके बाद अवकाश रहा करता । मैं हरे भरे खेतों और नव विकसित दूब की सुगंध लिया करता; कभी मैं इधर उधर घूमता फिरता; कभी स्वप्न देखता और जीवन को सुखी समझता । मुझे वहाँ आत्मिक शान्ति और प्रसन्नता मिली ।’

‘उम घर में पाँच प्राणी थे—घा का मालिक जिसका नाम था बेकर, उसकी स्त्री, विधवा बहू और दो बच्चे । बेकर की आयु करीब चालीस के रही होगी और उसके बाल कुछ कुछ सफेद हो चले थे । युद्ध में उसका पैर घायल हो गया था जिससे वह अब भी लंगड़ा कर चला करता था । पुरानी चोट में अक्सर उसे बहुत दर्द हुआ करता और उसे भुलाने के लिए वह शराब का सहारा लिये रहता । सोने के समय तक उस पर नशा पूरा चढ़ जाता और वह बेखबर सो जाता । बेकर से कोस्टी की मित्रता बहुत गहरी हो चली थी और दोनों साथ साथ ताश खेलते और शराब उड़ाते । उसकी स्त्री श्रीमती बेकर पहले अनायालय में रहा करती थी और अनायालय के अधिकारी उससे अपना मनोरंजन किया करते थे । अपनी पहली स्त्री की मृत्यु के बाद बेकर उसे पसन्द कर अपने घर ले लाया और उससे विवाह कर लिया । बेकर से बचस में वह कई वर्ष छोटी थी; एक प्रकार से वह सुन्दरी भी कही जा सकती थी । उसके लालिमारंजित कपोल, नीली आँखें, वासना-युक्त मोठे होठ अपनी मूख हमेशा प्रदर्शित किया करते थे । कदाचित् कोस्टी ने उसे देखते ही अनुमान कर लिया था कि वहाँ उसकी खूब चैन से कड़ेगी । मैंने उसका उद्देश्य समझ कर उसे डाँटा और कहा कि

अगर उसने बेवकूफी की तो दोनों को नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा और हम लोग कहीं के भी न रहेंगे। मेरी बातों को उसने हँसी में टाल कर मेरी कायरता की भर्त्सना की। कोस्टी के मतानुसार वह स्त्री बेकर के मान की नहीं थी और बेकर उसे कभी भी सन्तुष्ट न कर सका था। इसका प्रमाण यह था कि वह हर समय भूखी आँखों से हम दोनों को देखा करती थी। मैंने शिष्टाचार और नैतिक नियमों की दुहाई देना बेकार समझ कर उसे सावधानी से कदम बढ़ाने की चेतावनी दी। हो सकता था कि बेकर उसकी चाल न पहचाने परन्तु उसकी विधवा बहू बहुत कुछ देख कर चुप न बैठेगी।'

‘बहू का नाम था इलो। वह अपने पूरे जीवन पर थी—सुदौल, आयु में तीस वर्ष से कम, काली काली आँखें, काले धुंधरे लाल चौकोर आकृति और गंभीर युन्नी मिजाज वाली। अपने पति की स्मृति में, जलड़ाई में मारा गया था, वह काले कपड़े पहने फिरा करती थी। वह धार्मिक भी बहुत ज्ञात होती क्योंकि प्रत्येक रविवार को वह गिरजे जाकर सुबह शाम प्रार्थना किया करती थी। उसके दो बच्चे थे जिसमें एक ने उसके पति की मृत्यु के बाद जन्म लिया था। उन दोनों से वह खाना खाने के समय भी न बोलती और अगर कभी बोलती भी तो केवल उन्हें डाँटने और झिड़कने के लिए ही मुँह खोलती। प्रायः वह खेत में जाकर कुछ इधर उधर काम कर आती और अवकाश में अपने कमरे में बैठे बैठे उपन्यास पढ़ती या बच्चों की देखभाल के बहाने उन्हें मारती पीटती और फिर उन्हें चुप कराती। यही उसका दैनिक कार्यक्रम था। दोनों स्त्रियाँ एक दूसरे को देखते ही जल मरती थीं। वह बेकर की स्त्री को चरित्रहीन और आवारा समझती क्योंकि वह अनायालय से आई थी और अब सारे घर पर हुकुम चला रही थी। उसका गृह-स्वामिनी होना उसे फूटी आँखों न सुहाता था।’

‘इली एक सम्पन्न किसान घर की कन्या थी और अपने साथ

दहेज भी बहुत लाई थी; यद्यपि वह स्कूल जाकर बहुत पढ़ लिख न सकी थी उसने घर पर ही रह कर पढ़ना लिखना सीख लिया था और श्रीमती बेकर को जो अनपढ़ था वह मुँह चिढ़ाया करती। लड़ाई भगड़े और वैमनस्व का यही सबसे बड़ा कारण था। श्रीमती बेकर भी अचसर पाकर उस पर छुट्टे कसती—

‘मगर यह पढ़ना लिखना किस काम का ? किसान की स्त्री क्या जग जीत लेगी ?’

इली तिलमिला उठती—‘यह क्यों नहीं कहती कि किसान की विधवा हूँ—मगर उस किसान की जिसने देश पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए; और ऐसी विधवा हूँ जो पहाड़ टूटने पर भी उफ नहीं करती। अपने को क्या समझती हो ?’ इजना कह कर वह अपनी कलाई पर बंधे हुए चाँदी के पदक को देखती जिस पर उसके पति का नाम खुदा हुआ था और जो अब उसका प्रेम-चिन्ह बन गया था। बेचारा बेकर दिन रात बीच-बिचाव ही करता रहता और उसे बड़ी आत्म-ग्लानि होती।’

मैंने लैरी की बात काट कर पूछा—‘वे लोग आपको क्या समझे हुए थे ?’

‘अरे ! वे लोग समझते थे कि मैं अमरीकी सेना से भागा हुआ सिपाही हूँ और मैं वापस इसलिए नहीं जाता हूँ कि आजीवन कारागार में सड़ना पड़ेगा। मैं उनकी धारणा गलत प्रमाणित नहीं करना चाहता था क्योंकि यदि यह डर न होता तो बेकर और कोस्टी के साथ सराय में जाकर शराब पीना पड़ता और उनकी हुल्लाड़वाजी में विवश होकर भाग लेना होता। वे तो यहाँ तक समझते रहे कि मैं बाहर निकलने से इसलिए डरता हूँ कि कहीं गाँव का सिपाही मुझ से उल्टे सीधे प्रश्न कर जेल के अधिकारियों के हवाले न कर दे। इली ने देखा कि मैं बैठे बैठे जर्मन भाषा सीखता रहता हूँ तो वह एक दिन अपने स्कूल की पुरानी किताबें निकाल लाई और मुझे

बड़ी तत्परता से सिखलाने लगी। रात में खाना खाने के बाद मैं उसके बैठने के कमरे में जाकर अपना पाठ जोर जोर पढ़ कर सुनाता और वह मेरा उच्चारण शुद्ध करती रहती। उस समय श्रीमती बेकर रमोईघर का काम काज देखती रहती थीं और मुझे यह विश्वास होता जाता था कि मुझे पढ़ाने की गरज से नहीं वरन श्रीमती बेकर पर राब जमाने के उद्देश्य से ही वह मुझे पढ़ाया करती थी।

‘इधर कोस्टी श्रीमती बेकर पर डोरे डालने का भरसक प्रयत्न करता रहा मगर उसे सफलता मिलती न दिखलाई पड़ी। वह बड़ी हंसमुख और प्रसन्न चित्त स्त्री थी और खुले दिल से कोस्टी से हँसी दिल्सगी किया करती थी। कोस्टी भी बातों बातों में चारा फेंका करता था। मेरा ऐसा अनुमान है कि वह उसका मर्म मन ही मन समझा करती और प्रसन्न भी होती परन्तु जब कोस्टी उसे चिकोटी काट कर प्यार भरी आँखों से देखता तो वह चुपचाप उसका हाथ हटाकर, दो एक तमाचे उसके भड़े गालों पर रसीद कर हँसती कूदती चल देती। मेरा विश्वास है कि वह तमाचे हल्के न होते और कभी कभी तो उसकी उँगलियों के निशान कोस्टी के गालों पर उभर आते थे।’

लैरी के मुख पर संकोच और लज्जा की रेखा गहरी होती जा रही थी परन्तु अपनी सरल मुस्कान के द्वारा उस पर विजय पाकर वह बोले—

‘मैं अपने को कभी भी स्त्रियों का प्रिय-पात्र न समझता था मगर कुछ विशेष प्रमाणों से मुझे ज्ञात होने लगा कि श्रीमती बेकर की आँखें मुझ पर लग गई हैं। इस धारणा से मुझे बड़ी उलझन होने लगी। पहले तो आयु में मुझसे बंद काफी बड़ी थी और दूसरे बेकर ने हम लोगों से ऐसी शिष्टता और सज्जनता का व्यवहार किया था कि उसकी स्त्री के विषय में हम लोग कुछ और बात सोच भी नहीं सकते थे। जब वह खाना परसती तो मेरे सामने दूसरों से अधिक

चीजें रखती और इस अवसर का सदैव ताक में रहती कि मैं उसे अकेले मिल जाऊँ। कभी कभी तो वह मुझे देख कर ऐसा मुस्कराती कि मुझे उसमें गहरी छेड़ मिलती। मुझ से वह प्रायः पूछती कि मैंने कभी िली लड़की से प्रेम किया है या नहीं और अगर हाँ तो मुझे उस घर में बहुत सूना और अकेला मालूम होता होगा। वह इसी तरह की छेड़खानी जैसी प्रायः असन्तुष्ट स्त्रियाँ करने की अभ्यस्त होती हैं, मुझसे किया करती। मेरे पास तीन कमीजें थीं जो फट चलीं थीं और उसने मुझे डाँट कर कहा कि मेरे ऐसे नवयुवक को फटे पुराने कपड़े न पहनना चाहिए और यदि मैं उनको दे दूँ तो वह उनकी मरम्मत कर के बिलकुल नया बना देगी। इली ने कहीं शायद वह बात सुन ली और उसने आदेश दिया कि जो कुछ मुझे सिलाना या मरम्मत कराना हो उसे दे दूँ और वह बहुत अच्छी तरह सब ठीक ठाक कर देगी। मैंने दोनों का आदेश टालते हुए कह दिया कि सब ठीक है और उन्हें कोई कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। परन्तु दूसरे दिन देखता क्या हूँ कि मेरी फटी हुई कमीज और कटे हुए माँजे सिले सिलाए मेरी मेज पर रखे हुए हैं मगर उन दोनों में किसने यह कष्ट उठाया मुझे मालूम न हो सका। श्रीमती बेकर की बातों और उसके आकर्षण में मैं कभी कभी मातृत्व की भावना की भाँकी पाता और इसीलिए मैं उसकी बातें यों ही टाल दिया करता था। एक दिन कांस्टी ने मुझको बुला कर कहा—

‘देखो ! वह मुझे नहीं तुम्हें चाहती है; मेरी दाल नहीं गलेगी—मुझे ऐसा विश्वास होता जा रहा है ?’

‘कैसी भद्दी बातें कर रहे हो ? देखते नहीं हो वह मेरी माँ के उम्र की है ?’

‘उससे क्या ? तुम्हें आगे बढ़ना ही चाहिए और मैं तुम्हारे रास्ते से अच हट जाऊँगा। हाँ ! तुम्हारे कहने के अनुसार वह युवती नहीं है परन्तु उसके शरीर, उसके स्वास्थ्य, उसकी लहक—इन सबका

कोई जवाब नहीं ?

‘तुम भी रहो ! वेदूदगी की भी हद होती है !’

‘मेरी यह समझ में नहीं आता कि तुम संकोच क्यों कर रहे हो । मेरे कारण अपना अधिकार न खोना । मैं तो दार्शनिक हूँ—और यह कभी नहीं भूल सकता कि समुद्र से जितनी अच्छी मछलियाँ निकाली जा चुकी हैं उतनी ही अच्छी वहाँ पर और भी हैं । उसका अनागत भी नहीं । तुम अभी युवा हो ! मैं भी कभी युवा था । हाथ से अवसर नहीं जाने देना चाहिए ।’

‘कंस्टी की बातों से मुझे प्रसन्नता नहीं हुई और मुझे उस समय विश्वास भी न आता था कि सचमुच यही बात है । मेरी समझ में यह नहीं आता था कि मैं उस स्त्री से कैसे पार पाऊँगा । मुझे उस समय वह सब बातें याद आने लगीं जो मुझसे दोनों स्त्रियाँ पहले किया करती थीं । इली की कही हुई बातें भी अब याद आने लगीं और मेरा विश्वास पक्का हो गया कि जो कुछ हो रहा था वह सब अच्छी तरह जानती थी । कभी कभी जब मैं और श्रीमती वेकर रसोई घर में अकेले होते वह अचानक वहाँ चली आती । मुझे यह आभास मिलने लगा कि वह अपनी आँखें हम लोगों पर लगाए रहती है और मुझे यह रुचिकर न हुआ । मुझे यह भय लगने लगा कि वह हम दोनों को चुपचाप पकड़ लेना चाहती है । मैं यह भी जानता था कि वह श्रीमती वेकर से बड़ी घृणा करती है और मेरा अनुमान था कि यदि उसका संदेह पक्का हो जाता तो वह घर में बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा कर देती और न जाने क्या झूठ सच वेकर से लगा देती । मैं कोई रास्ता सोच न पाता और उसे भुलावा देने के लिए अपने काँ बेवकूफ और भोला बनाए रखने का यत्न करता रहता ; और उस पर यह सदैव कभी भी न होने देता कि वह हम लोगों पर कुछ भी सन्देह रखती है । मैं वहाँ मुखी था और कटाई के पहले वहाँ से जल्दी जाना भी न चाहता था ।’

मैं इतना सुन कर मुस्कुरा पड़ा। मुझे रह रह कर उस समय की लैरी की असमंजसपूर्ण आकृति याद आने लगी। उसकी फटी कमीज, धूप की गर्मी से सांवला मुख, छुरहरा सुडौल शरीर, काली काली आँखें सरल मुस्कान-समी की कल्पना कर मुझे ध्यान आगया कि श्रीमती बेकर—यौवन से उद्वंजित और घर से असन्तुष्ट किस प्रकार लैरी की ओर लालसा के आवेग में दौड़ती चली आई होगी। मैंने पूछा—

‘तब क्या हुआ?’

‘गर्मी आ चली थी। खेतों में हम दोनों जी तोड़ परिश्रम से घाँस-काट कर गट्टों में बाँधते; बाँरों में भर कर बेर इकट्ठा करते; दोनों छियाँ उनको टोकरो में सजा कर रखता और बेकर उन्हें ले जाकर बाजार में बेच आता। हम लोग सबैरे ही उठते और शाम तक काम में जुटे रहते। सबसे बड़ा काम जानवरों की देख-भाल था और हम लोगों को रात गए तक फुरसत न मिलती। मेरा अनुमान है कि श्रीमती बेकर ने मुझे निकम्मा समझ कर धीरे धीरे अपनी कृपादृष्टि फेर ली और मैंने भी बिना उनको जताए हुए अपने को दूर ही दूर रखा। काम करते करते मैं इतना थक जाता था कि रात में जर्मन पढ़ते समय मुझे बहुत नींद आती और इसके फल-स्वरूप धीरे धीरे इली से भी मैं दूर रहने लगा। अपना खाना भी मैं भुवबिल ही में ले आता और वहीं खा पी कर सो रहता। कोस्टी और बेकर सराय से शराब पीकर बहुत रात गए लौटते और तब तक मैं गहरी नींद में सोता रहता। भुसावल में बहुत गर्मी पड़ती थी इस कारण मैं नंगा ही सोता था।

‘एक रात किसी ने मुझे जगाया। क्षण भर तो मैं समझ न पाया कि क्या बात है क्योंकि मेरी नींद गहरी थी। किसी ने अपनी जलती हुई इपेली मेरे मुँह पर रख दी और तब मुझे मालूम हुआ कि कोई मेरे साथ सो रहा है। मैंने फौरन ही हाथ झटक दिया और हटने की चेष्टा करने लगा। इतने ही में किसी ने अपना मुँह मेरे मुँह से लगा

कर मुझे प्रगाढ़ आलिंगन पाश में जकड़ लिया; श्रीमती बेकर के उभरे हुए उरोज मेरे वक्षस्थल को दबाने लगे—

‘चुप रहो !’ उसने हांकते हुए दबे स्वर में कहा ।

‘उसने मुझे अपनी बांहों में भरपूर कस कर मेरे शरीर को गर्म हाथों से सहलाया और जब तक मैं चैतन्य होऊँ उसकी दोनों टांगों ने मेरी दोनों टांगों को अपने में लिपटा लिया ।’

इतना कह कर लैरी चुप होने जा ही रहे थे कि मुझे, हँसी आगई और मैं खिलखिला पड़ा—

फिर क्या हुआ ? मैंने उत्सुकता से पूछा ।

उन्होंने लज्जित मुस्कान और भर्त्सना-पूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा और मुझे ऐसा अनुमान हुआ कि वह मुझसे कह रहे हैं कि क्या जानते नहीं हो जो पूछ रहे हो ।

‘मैं कर ही क्या सकता था ! मेरे पास ही कोस्टी गहरी नींद में खराटे ले रहा था । मुझे अपनी उम्र बार बार याद आ रही थी । मैं मुश्किल से तेईस वर्ष का था । मेरे लिए शोर मचाना या उसे डाँट कर भगा देना और भी कठिन था और मैं उसका दिल भी तोड़ना न चाहता था । मैंने वही किया जो ऐसे समय किया जाता है ।’

‘उसके बाद वह धीरे धीरे उठी और दबे पाँव भुसावल के बाहर हो गई । मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जब तक वह चली नहीं गई तब तक मैं साँस रोके पड़ा रहा और उसके जाने के बाद ही मेरी जान में जान आई । मैंने मन ही मन सोचा कि हे भगवान ! कितना बड़ा खतरा मैं झेल गया । मेरा विचार था कि बेकर रात को शराब के नशे में चूर घर आया होगा और उसको वहीं चारपाई पर छोड़ वह मेरे पास चली आई होगी । मुझे डर विशेषतः इसलिए लग रहा था कि वह दोनों साथ ही साथ सोते थे और कहीं बेकर जाग न गया हो और चारपाई खाली पाकर ढूँढ़ता ढूँढ़ता वह भुसावल ही में न आ जाय । फिर साथ ही साथ इली का डर भी कुछ कम न था । वह सदैव कहा

करती थी कि रात में उसे नींद बिलकुल नहीं आती थी और कहीं उसने श्रीमती बेकर को नीचे उतरते देख लिया हो तो गजब ही हो जायगा। कहीं वह पीछे पीछे आकर देख न रही हो। इतने में यका-यक मेरा ध्यान पलटा। श्रीमती बेकर ने जब मुझे अपने आलिंगन पाश में जकड़ा था उस समय मुझे याद आया कि टन्डी धातु का कोई टुकड़ा मेरे बदन में गड़ा था। उस समय वह चीज मेरे ध्यान से उतर गई और वह ऐसा अवसर भी नहीं था जब इस तरह की बातें याद रहें। अब मुझ पर एक दम से सारा रहस्य खुला। मैं अपने सब किए धरे का फल सोचने लगा और एक विशेष बात की याद आते ही मैं उच्चक कर बैठ गया। वह धातु का टुकड़ा इली के पति का नाम खुदा हुआ चांदी का पदक था जो उसके पति का प्रेम-चिन्ह बन कर रह गया था।

इतना सुनते ही मैं कहकहा मार कर हँसने लगा और किसी प्रकार भी मेरी हँसी रुक नहीं रही थी। वह फिर रुक कर बोले—

‘आपको हँसी आ रही है ! मगर उस समय मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ।’

‘अगर आप सब बातें सोचें तो मालूम होगा कि वास्तव में हँसने वाली ही बात हुई है।’

‘हो सकता है। उस समय मैं बड़े असंमंजस में था; मैं अपने किए का फल सोच रहा था जो प्रायः हुआ करता है। फिर इली मुझको लेश मात्र भी न सुहाती थी; मैं उससे तो दूर ही भागता था।’

‘क्या आप पहचान भी न सके ?’

‘पहचानता कैसे ! एक तो इतना अंधेरा था कि हाथों हाथ सुभाई न देता था और दूसरे उसने केवल मेरा मुँह बन्द करने के सिवाय दूसरी बात भी नहीं की। दोनों ही लम्बी, चौड़ी, सुडौल खिरियाँ थीं। मेरा अनुमान था कि श्रीमती बेकर ही की निगाहों पर मैं चढ़ा हुआ हूँ और इली वस्तुतः ऐसा कर बैठेगी मुझे स्वप्न में भी ध्यान न

आया था। वह तो सदा अपने पति की ही बातें किया करती थी। मैंने सिगरेट मुलगाई और सोचने लगा और जितना अधिक मैं सोचता उतनी ही मुझे ग्लानि होती। मैंने निश्चय कर लिया कि वहां से चल निकलना ही श्रयस्कर होगा।

‘कोस्टी को प्रायः मैं कोसा करता था कि वह सो जाने पर उठाए न उठता। जब हम दोनों साथ साथ ग्वदान में काम करने सवेरे साथ साथ जाते तो कोस्टी को जगाने का भार मेरे ऊपर रहता और मैं जब चिस्लाते चिस्लाते थक जाता तभी वह आँखें खोलता। मगर उस दिन मैंने उसको और उसकी नींद को बहुत सराहा। मैंने अपनी लालटेन जलाई और कपड़े पहने। कपड़े पहनकर मैंने अपनी चीजें बेग में रखीं; चीजें थीं ही बहुत कम इसलिए मैं पाँच मिनट में ही तैयार हो गया। कंधे पर बेग लटका कर मैं चुपचाप नंगे पैर सीढ़ियों से उतरा। मैं जरा भी शोर न होने देना चाहता था। नीचे उतरते ही मैंने लालटेन बुझा दी; घोर अन्धकार था और चंद्रिका की ज्योति भा कहीं पर छिटकी न थी। परन्तु मैं सड़क से परिचित था और खेलों की मेड़ें पार करते ही वहाँ जा निकला। सबेरा होते होते मैं वहाँ से दूर हो जाना चाहता था। सड़क पर सिवाय मेरे पावों की आहट के कोई भी दूसरा शब्द न सुन पड़ता था। सबेरे का झुटपुटा हो रहा था और क्षितिज के पूर्व से एक हलकी ज्योति की कोर फूटती दिखलाई दे रही थी। हरियाली पर छाया हुआ धुंधलका हलका होता जा रहा था; दूर पर चिड़ियाँ यकायक चहचहा उठीं। सबेरा हो चला था। मैं वहाँ से तीन मील दूर आ चुका था। पहले पहल मैं डाकखाने गया और अपने बैङ्क को तार दिया कि मेरा सामान राइन के पास बोन नगर के बैङ्क के पते पर शीघ्र भेज दे?’

‘बोन नगर ही आपने क्या चुना?’ मैंने पूछा।

‘सिर्फ इसलिए कि जब मैं जर्मनी में घूम रहा था तब मेरी इच्छा बोन में कुछ दिनों रहने की थी। वहाँ पहुँचने के पहले मैंने अपनी

वेशभूषा कम से कम भले मानसों सी बनाने के लिए बाल कटवाए और कुछ कपड़े सिलवाए। कुछ सिले-सिलाए कपड़े भी खरीद लिए और उसके लिए एक बक्स भी ले लिया। वहाँ मैं करीब करीब कुल मिला कर एक वर्ष तक रहा।'

'खदान पर काम करने और खेतों की देख भाल द्वारा कुछ आपको अनुभव विशेष भी हुए या यों ही समय बीतता गया?'

'अवश्य हुए।' उसने सिर हिला कर कहा।

मगर उन्होंने मुझसे स्पष्ट रूप से नहीं बतलाया कि उनके अनुभव किस प्रकार के थे। मैं उनके स्वभाव से पूरातया परिचित था इसलिए मैंने कुछ और जानने का आग्रह भी नहीं किया क्योंकि मैं भली भाँति जानता था कि वह जब तक स्वयं न चाहें उनसे कोई बात नहीं कर सकता। आग्रह हाँते ही वह बात टालते और दूसरी चलती फिरती चीजों पर बातें शुरू कर देते। फिर ये उपरोक्त बातें उन्होंने मुझे दस वर्ष बाद बतलाई थीं और तब तक मैं उनका स्वभाव भी जान गया था। दस वर्ष तक तो उनकी मुझे जरा भी खबर न लगी और इस भेंट के बाद मुझे वह बहुत दिनों तक नहीं मिल पाए। चूँकि मेरी मित्रता इलियट से बनी रही इस कारण कभी कभी आइजाबेल के सम्पर्क में उनकी चर्चा हो जाया करती थी। इलियट समय समय पर आइजाबेल की बातें मुझे बतलाते रहे और कदाचित् ऐसा न होता तो मैं लैरी का अस्तित्व ही भूल गया होता।

३

लैरी से सगाई छूटने के वर्ष भर के अन्दर ही आइजाबेल का विवाह ब्रे सेट्टरिन से हो गया। विवाह जिन दिनों हो रहा था वह पेरिस में चहल-पहल के दिन थे। ऐसे समय पेरिस छोड़ना

इलियट के लिए कठिन ही नहीं कष्टकर भी था। उनको पच्चीसों दावतों से बख्ति होना पड़ता; कई जगह जाकर क्षमा याचना करनी पड़ती और अपनी पहले से दी गई दावतों की तिथि बदलनी पड़ती। परन्तु उनका परिवार-प्रेम भी कुछ कम न था। उनके लिए यह भी एक सामाजिक कर्त्तव्य था। आइजाबेल के दोनों भाई अपनी अपनी नौकरियों पर लगे हुए थे और वे वहाँ से आ न सकते थे इसलिए उन्हें ही जाकर विवाह की सम्पूर्ण व्यवस्था करनी पड़ी। उन्हें स्मरण था कि फ्रांसीसी अभिजात व्यक्ति जब फाँसी पड़ने जाते थे तब भी अपनी वेष भूषा का बहुत ध्यान रखते थे इसीलिए ऐसे अवसर पर वे लन्दन गए और एक सूट सिलवाया और उसके लिए उपयुक्त पहनने की टाई दिन भर ढूँढ़ते फिरे। तत्पश्चात् टाई को कमीज में फँसाने के लिए एक मोती लिया जाय या हीरा इसका निश्चय वह दो दिन बाद कर सके। मोती ही उन्हें पसन्द आया क्योंकि उन्हें मेहमानों की आवभगत करना था और हीरा जरा शांख मालूम होता।

इलियट इस विवाह से बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न थे। सबसे अधिक प्रसन्नता उन्हें इस बात पर थी कि आइजाबेल ने अपने श्रेष्ठ कुल के ही अनुसार अपना वर चुना और देश की सामाजिक व्यवस्था को धक्का न लगने दिया क्योंकि उनके विचार से इस मर्यादा की रक्षा से ही राष्ट्र की सत्ता बनी रह सकती थी। ग्रे के पिता हेनरी मेटूरिन ने वर-वधू के लिए एक नयी कोठी खरीद दी थी जो ओमती लुइसा और उनके निजी बंगले के पास थी। इलियट ने अपनी व्यापारिक कुशलता से उस कोठी की खरीदारी ऐसे समय की थी जब भ्रिगरी, जो वर सजाने में कुशल थे, शिकागो में कुछ दिनों के लिए आ गए थे और उन्हीं को सारा काम सौंप दिया गया था। उन्होंने बहुत परिश्रम से उस कोठी को फ्रांसीसी नरेशों की कोठियों के समान सजाया और स्नान घर की दीवारें शीशे की बनवाई गईं और उस

पर तैरती हुई 'ग-विरंगी मछलियाँ चित्रित कर दी गईं' । विवाह का सम्पूर्ण विवरण अनेक दैनिक और मासिक पत्रों में छपा था और इलियट ने सब कतरने इकट्ठी कर रखी थीं । उन्होंने बड़ी लापरवाही से उन्हें मेरे सामने फेंक दिया । जब तक मैं उन्हें देखता रहा उन्होंने बहुत से चित्र भी मेरे सामने लाकर रख दिए जिनमें ग्रे, श्रीमती लुइसा, आइजाबेल और इलियट राजसी ठाठ से बैठे हुए थे । ऐसा दिखलाई देता था कि किसी फ्रांसीसी राजकुमारी का विवाह हुआ है—विशेषतः कपड़ों से तां ऐसा हो ज्ञात होता था । चित्रों को देखने के पश्चात् मैंने श्रीमती लुइसा के स्वास्थ्य की बात पूछी—

‘बीमारी के कारण उनका वजन बहुत घट गया है; रंग भी कुछ सांवला हो चला है; मगर फिर भी वह अच्छी मालूम होती हैं । विवाह के काम काज ने उन पर बड़ा वांछ डाल दिया था; अब वे विश्राम ही करेंगी और आकर्षक होती जायँगी ।’

एक ही वर्ष के अनन्तर आइजाबेल ने कन्या शिशु को जन्म दिया और उस समय के सामाजिक फैशन के अनुसार उसका नाम जोन रखा गया । दूसरे वर्ष फिर एक लड़की हुई और चूँकि तब तक फैशन बदल चुका था उसका नाम प्रिसिला रखा गया ।

हेनरी मैट्रिन के भा भाग्य चमके । उनका एक साझीदार उसी बीच स्वर्गवासी हुआ और दूसरा हिस्सेदार भी अस्वस्थ रहने के कारण अवकाश ग्रहण करने पर विवश हुआ; इस कारण सारा व्यवसाय हेनरी के ही अधिकार में आ गया । उनकी पुरानी अभिलाषा अब पूर्ण होने आई । उन्होंने ग्रे को अपना व्यवसायी साझादार बनाया और उनकी कम्पनी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करने लगी ।

इलियट ने मुझे बड़े गर्व से बतलाया—

‘आप जानते हैं कि ग्रे की आय इस समय क्या है ? शायद नहीं ? वह करोड़ों की सम्पत्ति का अधिकारी है और अभी तो उसकी

यह प्रारम्भिक अवस्था है और उसकी वयस भी कुल सत्ताइस वर्ष की है। अमरीका के व्यावसायिक भाण्डार अन्त्य हैं। यह अकस्मात नहीं हुआ: सभी श्रेष्ठ राष्ट्र इसी स्वाभाविक रूप से ही उन्नति करते हैं।^१ इतना कह कर उनकी छाती फूल उठती और राष्ट्र-प्रेम की गर्वन ज्योति उनके नेत्रों में उतर आती। वे फिर कहने लगते—

‘हेनरी भी क्या बहुत दिन जीवित रहेंगे? मेरा तो अनुमान है वे कुछ ही दिनों के और मेहमान हैं। खून का दौरा नित्य बढ़ता ही जाता है और कदाचित् बढ़ता ही रहेगा; फिर तो मेरी गणना देश के प्रसिद्ध व्यवसायियों में होगी—राजा महाराजाओं की वह समता किया करेगा। इस पर लेशमात्र भी सन्देह मत कीजिएगा। वह लड़का बहुत ही योग्य है।’

अपने परिवार को प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए इलियट श्रीमती लुइसा से पत्र व्यवहार सदैव किया करते थे और समय समय पर वह उन्हें आइजाबेल और उसके शिशुओं की बातें लिखा करती थीं। ‘आइजाबेल और ग्रे बहुत सुखी हैं और बच्चे तो बहुत ही प्यारे हैं’—यह वह सदैव लिखतीं और इलियट अपने तर्क और मनुष्यों के पट्टचान की शक्ति की सदा-प्रशंसा किया करते। इलियट को सन्तोष इसलिए था कि वे दोनों उन्हीं के सामाजिक आदर्शों पर चल कर जीवन सुखी बना रहे हैं। वे प्रति दिन या तो दावत देते या दावत खाते और उन दावतों में ऐसा खाना खिलाते जिसकी चर्चा बहुत दिनों तक होती रहती। एक ही शानदार दावत उनके मित्रों तथा स्वयं उनके लिए दृष्टों बातचीत का महत्वपूर्ण विषय बन जाती। इस तीन महीने के अन्दर ग्रे और आइजाबेल ने शायद ही एक दिन अपने घर खाना खाया हो। दावतों की चहल-पहल में कुछ कारणों से थोड़ी बाधा आ पड़ी थी। श्रीमती हेनरी मेट्रिन-ग्रे की माता का देहान्त अचानक हो गया था। यद्यपि वह अमुन्दर और रांगी थीं हेनरी ने उनसे बहुत वर्ष पहले विवाह इस कारण कर लिया था कि

उनका वंश अच्छा था और हेनरी को अपने नगर में प्रतिष्ठा पाने का दूसरा कोई सहज उपाय न दिखलाई पड़ रहा था। उनको प्रतिष्ठा मिलने में कठिनाई इस बात से अत्यन्त अधिक थी कि उनके पिता देहात से नए-नए आए थे और उनको लोग देहाती कह कर सम्बोधित करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् यह आवश्यक था कि रंगरलियों कुछ दिनों स्थगित कर दी जातीं। माता की आत्मिक शान्ति और अपने निजी दुःख प्रदर्शन के लिए वे केवल छ महेमानों को ही दावतों में बुलाया करते थे और उन्होंने यह नियम दो तीन सप्ताह तक बनाये रखा।

इलियट ने इस महत् विषय पर अपने विचार प्रकट किए—‘मैं तो ऐसे अवसरों के लिए आठ आदमी उचित समझता हूँ। आठ व्यक्तियों की उपस्थिति से दावत भरी पूरी ज्ञात होती है और बात-चीत का विस्तार भी बढ़ जाता है; मगर छ से तो कुछ भी नहीं होता; न इधर न उधर।’

‘वे अपनी पत्नी के प्रेम में डूबा रहता है और उसके लिए वह जी खोल कर खर्च भी करता है। उसकी उदारता का सब से बड़ा प्रमाण यह था कि जब उसका पहला बच्चा हुआ तो वे ने उसके लिये चौकोर कटी हुई हीरे की अँगूठी बनवा ली और जब दूसरा शिशु जन्मा तो एक बहुत कीमती कोट उसको भेंट किया। उसको अपने व्यवसाय से फुरसत ही न मिलती मगर जब कभी उसे अवकाश मिलता वह शिकागो में अपने पिता की खरीदी हुई कोठी में जाकर अवश्य रहता। हेनरी मेटूरिन ने भी अपने पुत्र के अध्यवसाय और परिश्रम से प्रसन्न होकर उसके लिए दक्षिणी कैरोलीना में छोटी सी जमींदारी खरीद दी थी जहाँ मुर्गाबी के शिकार से वह अपना जी बहला सकता था।’

श्रीमती लुइसा और इलियट की जायदाद और उनकी इधर-उधर व्यवसायों में लगी हुई सम्पत्ति की देखभाल हेनरी मेटूरिन

अनेक वर्षों से बड़ी सफलता-पूर्वक करते आ रहे थे। उन दोनों को हेनरी की व्यापारिक कुशलता और व्यवसाय पटुता में पूर्ण विश्वास इसलिए था कि उन्होंने उनका रुपया लाभप्रद व्यवसायों में लगा रखा और एक पैमे का भी नुकसान न होने दिया। उनकी छोटी सी रकम इस समय लाखों में परिणत हो गयी थी और उसको सोच कर वे हर्षित और आश्चर्यित होते थे। इलियट ने मुझे बतलाया कि हेनरी की व्यापारिक दक्षता के कारण जो सम्पत्ति उनके पास १६१८ में थी वह दस वर्ष में चौगुनी हो गई। इलियट की वयस इस समय पैंसठ साल की रही होगी; उनके सिर के बाल तीन चौथाई सफेद हो गए थे, मुख पर बुढ़ापे की रेखाएँ दौड़ती चली जा रहीं थीं और उनकी आँखों के नीचे के पपोटे फूल आए थे और आँखों की रोशनी भी कम हो चली थी मगर अब भी उनकी कमर न झुकी थी। वे विलकुल सीधे होकर चलने की आदत डाल रहे थे और उसमें सफल भी हो गए थे। उन्होंने बुढ़ापे और समय से हार न मानने का जैसे प्रण सा कर लिया था।

जब तक लन्दन के दर्जी, पारिवारिक नाई तथा शरीर की मालिश करने वाले नौकर जीवित थे तब तक इलियट को बुढ़ापा हट भाग्य और हीन नहीं बना सकता था। ये तीनों मिलकर उनके झूलते हुये शरीर को कील कांटे से दुस्त रख सकते थे। बातचीत में वे सबसे यही कहते कि उन्होंने कभी छोटे व्यवसायों की ओर देखा भी नहीं और सदैव प्रतिष्ठा का ध्यान रखा। कभी कभी नए व्यक्तियों के सम्मुख वह यह संकेत देते थे कि युवावस्था में वह विदेशी विभाग में राजदूत के पद पर अनेक स्थानों में रह चुके हैं। मेरा अनुमान है कि यदि मुझे किसी राजदूत का चित्र चित्रकार की हैसियत से खींचना पड़ता तो मैं निस्संकोच इलियट का ही नमूना सामने रखता।

परन्तु समय ने किसकी आन रक्खी है। जिन श्रेष्ठ वर्ग की

महिलाओं ने इलियट की सेवाओं के बदले में उनको प्रतिष्ठित बनाने में अपना सहयोग दिया था अब बुढ़ी हो चली थीं। समाज से उनका प्रभाव हट चला था और उनका स्थान नई नवेलियों ने ले लिया था। पुराने लार्ड वंश की विधवाओं की जायदादें, सरकार ने अपने संरक्षण में ले ली थीं। अनेक कोठियाँ, जिनमें इलियट ने अपनी युवावस्था में रंगरलियां की थीं या तो अब अजायबघर हो गई थीं या व्यवसायिक कम्पनियों के वहाँ दफ्तर बन गए थे। नए फैशन के युवक और नई रोशनी की युवतियां इलियट को निकम्मा, वक्की, भक्की और डोंगियल समझतीं और उनके विचारों के अनुसार इलियट स्वयं अजायबघर में सुरक्षित कर देने लायक व्यक्ति रह गए थे। इलियट के दिए हुए निमन्त्रण पर वे उनके यहाँ जातीं तो अवश्य मगर वहाँ पहुँच कर अपनी गोष्टी अलग बना लेतीं और अपना अपना परिचय बढ़ाया करतीं। इलियट बेचारे अकेले पड़ जाते। उनकी मेज पर निमन्त्रण-पत्रों की भरमार अब न रहती। पहले वे घंटों इस निर्णय में लगाते थे कि किस निमन्त्रण को स्वीकार करें, किसे अस्वीकार करें, किससे क्षमा मागें और किससे अवकाश की कमी की दुहाई दें। जितने निमन्त्रण पत्र आते उन्हें स्वीकार ही करना पड़ता इसलिए और भी कि उन्हें बुलाते ही बहुत कम लोग थे। ज्यादातर वे घर ही पर अकेले खाना खाते और चुपचाप बैठ रहते। ऐसा उन्होंने अपने जीवन में शायद ही किया हो। अंग्रेजी समाज की प्रतिष्ठाप्राप्त महिलाएं जिनके विषय में अवैध प्रेम की कहानियाँ प्रचलित हो जातीं वे ज्यादातर बाहर न जातीं और न उन्हें कोई बुलाता ही। वे अपना समय ललित-कलाओं की उपासना में बितातीं और चित्रकारों, कवियों, गायकों और मूर्त्तिकलाकारों से सम्बन्ध कर लेतीं। ऐसी व्यवस्था के सामने इलियट सिर झुकाए को तैयार न थे।

‘अंग्रेजी समाज को मृत्यु-कर और मुनाफाखोरों ने तबाह कर

दिया है।' इलियट ने सोचकर कहा। 'अब तो जैसे कोई किसी की बात ही नहीं पूछता। फिर भी लन्दन में, अब भी अच्छे दर्जी, बढ़िया जूते बनाने वाले और फैशनेबिल हैट बेचने वाले बाकी रह गए हैं और मुझे आशा है कि वे मेरे जीवन काल तक मुझे सहारा दिये रहेंगे। लन्दन में इन्हीं लोगों की बदौलत जान बाकी है; इनके बाद सब खत्म ही समझिए। लन्दन अब मिटने ही वाला है—आपको मालूम है न कि कुछ होटलों में खियां खाना परसने के लिए नियुक्त हो गई हैं—बस हद है !'

उपरोक्त आलोचना इलियट ने एक लाड की दी हुई पार्टी से लौटते हुये रास्ते में की थी। उस दावत में बातों ही बातों में कुछ तैश की बातें हो गई थीं। लार्ड साहेब के पास अनेक बड़े चित्रकारों के चित्रों का अच्छा संकलन था जिसे उन्हें पैमे की कमी के कारण बेचना पड़ा। पाल वार्टन नामक एक मेहमान ने बिना यह जाने हुए कि वे चित्र वहाँ नहीं हैं, उन्हें देखने की इच्छा प्रकट की—

‘आपके पास तो चित्रों का सुन्दर संकलन था !’

‘था अवश्य। मगर अब नहीं है। हम लोगो को बहुत दिन हुये कुछ पैसों की अकस्मात आवश्यकता पड़ गई थी और उसे मेरे दलाल ने एक बुड्ढे, खबोस यहूदी के हाथ बेच दिया।’

इलियट को ये शब्द तीर ऐसे लगे। हेनरी मेटूरिन ने उनके लिए वह संकलन बहुत सस्ते में खरीद लिया था। अपनी शान के विरुद्ध सुने हुए शब्द उनके गले से उतर नहीं रहे थे। उनके वंश, उनकी प्रतिष्ठा, उनकी शान का किस अव्यक्त रूप से धक्का लगा है उसका वह कोई जवाब उस समय नहीं दे सकते थे। समस्त जीवन में उन्हें इतना अपमान न सहना पड़ा था। पाल वार्टन ने जान बूझ कर यह प्रश्न पूछा था; कदाचित् उसे मालूम था कि उन्हीं ने वे चित्र खरीदे हैं और भरी दावत में उसने उनकी प्रतिष्ठा धूल में मिला दी। वार्टन के प्रति इलियट की प्रतिहिंसा घबक उठी। उससे वे पहले से ही

क्रुधित थे। इसका कारण यह था कि बार्टन लन्दन में लड़ाई समाप्त होते ही आया और सारे अंग्रेजी समाज पर छा गया। उसकी उम्र थी तेईस साल और वह अत्यन्त सुन्दर भी था—भूरा रंग; मछली सी चंचल आँखें; नृत्य कला में पटु और फिर पैसे वाला। वह लन्दन आकर पहले पहल इलियट से ही मिला था क्योंकि केवल उन्हीं के लिए उसके पास परिचय-पत्र थे। इलियट ने उसको अपना मेहमान बना कर, अपनी स्वाभाविक उदारता के साथ उसे अपने समस्त मित्रों से मिला दिया था। उन गोष्ठियों से भी उसका परिचय उन्होंने करा दिया था जिनके वह संरक्षक थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने उसको कुछ ऐसे सामाजिक और व्यावहारिक नियम भी बतला दिए थे जिसके बल पर वह अनेक स्त्रियों का सहज ही प्रेम-पात्र हो सकता था और अपनी गोटी कहीं पर भी लाल कर सकता था। अपने अनुभव द्वारा उन्होंने उसे यह शिक्षा भी दी थी कि किस तरह बुढ़ी स्त्रियों की देख भाल तथा इशारों पर चल कर वह समाज में अपना आगे का रास्ता साफ कर सकता है।

मगर बार्टन को नयी दुनियाँ इलियट की उस पुरानी दुनियाँ से कहीं भिन्न थी जिसमें केवल अथक परिश्रम और अथर्वसाय से ही वह अपनी सी कर लेते थे। यह नवीन समाज केवल मनोरंजन और विह्वल प्रेम का अभिनय चाहता था। उसमें इलियट की सिखाई हुई कला काम न आती और यदि कोई उसी पुरानी पद्धति पर चलता रहता तो समाज उसे निकाल फेंकता। बार्टन की मनोरंजन प्रियता, प्रेमभिनय तथा बाहरी आनवान ऐसी थी कि कुछ ही हफ्तों के अन्दर वह अनेक महत्वपूर्ण गोष्ठियों का प्रियपात्र बन गया। ऐसी गोष्ठियों में जहाँ पर इलियट की पहुँच बरसों की मेहनत, खुशामद और उपासना के बाद हुई होती बार्टन वहाँ चुटिकियाँ बजाते पहुँच जाता और उसके लिए आँखें बिल्ला जाती। कुछ ही दिनों बाद उसे इलियट के सहारे की आवश्यकता बिलकुल ही न रही। वह इलियट की परवाह

भी नहीं के बराबर किया करता था। जब वह उनसे मिलता तो हँसता बोलता तो जरूर मगर अव्यक्त रूप से उन्हें जता देता कि वह विलकुल निष्क्रमे आदमी है। इलियट अनेक व्यक्तियों को अपनी दावतों इसी कारण बुलाते थे कि उन लोगों की बदौलत वहाँ चहल-पहल, हँसी-मजाक रहता और पार्टी उससे सफल होती। निमन्त्रित लोगों से न तो उन्हें प्रेम होता और न उनकी वह कोई विशेष परवाह ही करते। चूँकि बार्टन अनेक पार्टियों में पहुँचते ही वहाँ नई जान डाल देता और सबका समरूप में मनोरंजन करता रहता वह उसे अवश्य बुलाते। एक तरह से उन्हें उसे झकमार कर बुलाना ही पड़ता क्योंकि ज्यों ही लोग एकत्रित होते बार्टन की बातें छिड़ जातीं। उसकी लोक-प्रियता के नाते इलियट उसकी आवभगत करते रहे। मगर दो बार बार्टन ने उनका निमन्त्रण इसलिए अस्वीकार कर दिया था कि वह अपने दूसरे मित्रों के यहाँ निमन्त्रण पहले से स्वीकार कर चुका था। इलियट को यह असह्य था कि कोई उनका निमन्त्रण अस्वीकार करे। वे अब उसके नाम से भुन उठते थे—

‘आपने देखा नहीं? कैसा तोताचश्म है! पहले मेरे ही घर रोटियाँ तोड़ता रहा और अब मुझ पर ही हाथ साफ करना चाहता है। चित्र और चित्रकला की बातें बघार रहा था। एक चित्र अगर दिखला दूँ तो बच्चा को पहचानने में छुक्के छूट जायेंगे। मुझी पर रोब गांठना चाहता है—कमीना कहीं का!’ उनका क्रोध कम नहीं हो रहा था—

‘संसार में वह सबसे बड़ा खुशामदी है और मुझे यह आदत सहन नहीं। मेरे बिना उसको टके को तो कोई पूछता नहीं। आपको शायद मालूम नहीं कि उसका पिता दफ्तरों के लिए मेज-कुर्सियाँ बनाया करता है। अगर मैं जरा सा अपना मुँह खोल भर दूँ तो बेटा कौड़ी के तीन हो जायेंगे। इससे अधिक किसका परिवार इतना हीन और निकृष्ट हो सकता है। और अंग्रेजी समाज को मैं क्या कहूँ—उसमें

अब जान ही नहीं रह गई; उसमें तो अब कुत्तों की ही गुजर है ।^१ उनके शब्दों में घृणा और तिरस्कार की आग प्रज्वलित हो रही थी ।

इलियट का अनुमान था कि फ्रांस की भी हालत कुछ अच्छी न थी । जिन महिलाओं की तूती इलियट की युवावस्था में बोलती थी वे अगर जीवित थीं तो केवल ब्रिज के खेल और अपने नाती-पोतों की देखभाल में अपने दिन बिता रही थीं । जिन जिन विशाल कोठियों में पहले श्रेष्ठ वर्ग के व्यक्ति रहते या राजे महाराजे टिकते थे उनमें अब तरह तरह के मामूली व्यापारी और तलाक दी हुई स्त्रियां रहती थी । अभिजात परिवारों के बजाय इधर उधर के गए बीते राजनीतिज्ञ, संवाददाता, प्रेस-प्रतिनिधि, अभिनेता तथा गई बीती अभिनेत्रियों द्वारा ही वहां के लोगों का मनोरंजन हुआ करता था । बड़े बड़े कुलीन अब दूकानदारों और मजदूरों की बेटियों से विवाह करके अपना वंश मिट्टी में मिला रहे थे । पेरिस में चहल पहल थी तो अवश्य मगर कितनी भद्दी और निर्जीव ! वहां के युवकों को केवल एक गन्दे क्लब से दूसरे गन्दे क्लब में जाकर गन्दी और गिरी हुई स्त्रियों के साथ नाच-गाने में रात काटने के अतिरिक्त कोई दूसरा मनोरंजन ही नहीं ! घुए, शराब की बू, अश्लील वातावरण में तो इलियट को मतली आने लगती । यह पेरिस-बढ़ तीस वर्ष पुराना पेरिस न था जिसको इलियट अपना आत्मिक और आध्यात्मिक देश मानते आए थे; यह पेरिस बड़ पेरिस न था जो अच्छे अमरीकनों का स्वर्गाश्रम समझा जाता था । सभी अमरीकनों का यह विश्वास था कि मरने के बाद ईश्वर उन्हें पेरिस ही में जन्म देगा !

पेरिस कै अश्लील, गन्दे और दूषित वातावरण से छुटकारा पाने के लिए इलियट ने यह निश्चय किया कि किसी ऐसे स्थान पर कोठी

लेकर रहा जाय जहां सभ्य, शिष्ट और सामाजिक प्रतिष्ठा के व्यक्ति अपना शान्त सामाजिक जीवन बिता सकें। रिबीयरा उन्हें पसन्द आया। वहां पर अनेक श्रेष्ठ वर्ग के लोगों ने अपनी अपनी कोठियाँ बनवा लीं थीं और धीरे धीरे वहां का जीवन स्फूर्तिमय और आनन्दपूर्ण होता जा रहा था। पत्र-पत्रिकाओं में उन लोगों के नाम छपते जिन्होंने रिबीयरा के जीवन को गतिशील कर वहां की रौनक बढ़ाई थी और उन व्यक्तियों के नाम पढ़ कर इलियट को मानसिक सन्तोष इसलिये होता कि रिबीयरा उनकी कल्पना और इच्छा के अनुकूल ही प्रगति कर रहा था। गर्मियों में भी वहाँ के होटल खुले रहेंगे और अपने अपने निजी सम्पर्क वहाँ बढ़ सकेंगे इस कारण इलियट को वह स्थान और भी रुचिकर हुआ—

‘मैं संसार के व्यस्त जीवन से ऊब उठा हूँ; अब मेरी अवस्था ऐसी आ गई है जब मुझे प्रकृति की गोद में आश्रय लेना अधिक श्रेयस्कर मालूम होता है।’

इलियट की सदैव यह धारणा रही थी कि सामाजिक जीवन की प्रगति में प्रकृति बड़ी अड़चन डालती है और जो व्यक्ति चित्रकला के संग्रहालयों के आकर्षण को छोड़कर पहाड़ों अथवा समुद्र की सैर को निकल जाते इलियट उन्हें या तो मूर्ख समझते या फिजूलखर्च। उनके पास इस समय काफी धन था। हेनरी मेटूरिन को ग्रे वार वार लिखा करता कि अमरीका के तमाम लोग दिनों दिन लखपती होते जाते हैं और वह अपनी दकियानूसी नीति लिये बैठे हैं। वह उन्हें वार वार उकसाता कि वह सट्टा करके लखपती क्यों नहीं बन जाते। मेटूरिन का बुढ़ापा कब तक अपने प्रण पर अटल रह सकता था। उन्होंने इलियट को लिखा कि यों तो वह सदैव जुए और सट्टेबाजी के विरोधी रहें हैं मगर आधुनिक समय के सट्टे का व्यवसाय जुआ नहीं कहा जा सकता—यह तो अमरीका की विभूति और अत्यंत राष्ट्रीय सम्पत्ति का उपयोग मात्र है। सम्पत्ति को दुगुना और तिगुना करने की आशा थोड़े विचारों

पर नहीं वरन तर्क-शक्ति पर निर्भर थी। उनको अमरीका की उन्नति का मार्ग प्रशस्त ही होता दिखलाई देता था। कोई ऐसा कारण भी न था जो उस प्रगति में बाधक होता। इस आशा की डोर इतनी बलवती थी वे अपने को रोक न सके और उन्होंने श्रीमती लुइसा के नाम में बहुत से शेयर खरीद लिये हैं जिनसे उनकी वार्षिक आय करीब करीब बीस हजार डालर के हो जायगी। उन्होंने इलियट की राय लेनी चाही कि यदि वह भी आशा दें तो उनके लिए भी इसी तरह कुछ रुपया चलते चलाते बना लिया जाय। मेट्रिन ने विश्वास भी दिलाया कि उन्हें शिकायत का अवसर कभी नहीं मिला और न मिलेगा और उनकी रकम दूनी हो जायगी। इलियट खुशी-खुशी राजी हो गए और उस दिन से उनकी दिन-चर्या कुछ बदल सी गई। यों तो वे सबेरे उठकर चाय पीते समय अखबारों में विवाह, दावत इत्यादि की खबरे पढ़ते थे मगर उस दिन से वह बाजार-भाव का खबरें पढ़ने के लिये उत्सुक रहने लगे। हेनरी की व्यावसायिक कुशलता इतनी अधिक थी कि कुछ ही दिनों में इलियट की वार्षिक आय बैठे बिठाए पचास हजार डालर सालाना की हो गई।

उन्होंने अपने शेयरों की आमदनी से रिवीयूरा पहुँच कर एक कोठी खरीद ली। उसको उन्होंने आधुनिक फैशन की मेज-कुर्सियों और पर्दों से सजाया और अनेक चित्रकारों के सस्ते में खरीदे हुए चित्रों को दीवारों पर लटका कर कोठी को आकर्षक बनाया जहाँ पर उनके मेहमान आकर दावतें खा सकते और उनका मनोरंजन कर सकते। इस कोठी में सजे हुए चित्रों और फैशन की अद्वितीय चीजों के संकलन को देख कर और अपने मेहमानों को दिखला कर उन्हें आत्मिक शान्ति और सन्तोष मिला करता था। इस कोठी की खरीदारी के बाद से इलियट के जीवन का स्वर्णयुग आरम्भ हुआ। उन्होंने पेरिस से अपना पुराना रसोइया और खानसामा बुला भेजा। कुछ ही दिनों में उनकी कोठी का नाम अखबारों में छपने लगा।

उन्होंने अपने चपरासियों को शानदार वर्दी में सजाकर अपने ड्राइंग रूम के सामने मूर्तिवत खड़ा कर दिया और थोड़े ही दिनों में उनकी दावतों और मित्रों की चर्चा घर-घर होने लगी। रिबियरा के चारों ओर अनेक बड़े लोगों ने अपनी कोठियाँ बना ली थीं। इनमें कुछ तो युरोप के राजे महाराजे थे जो वायु-परिवर्तन के विचार से बाहर जाते थे; कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो अपने देश से निकाले हुए शरणार्थी थे; परन्तु अधिकतर वे ही श्रेष्ठ व्यक्ति थे जो अपनी युवावस्था में इतने बदनाम हो चुके थे कि उनका बुढ़ापा भी उन्हें समाज के व्यंगवाणों से नहीं बचा सकता था। रूस, फ्रांस, स्वीडेन, यूनान, इटली, आस्ट्रिया—युरोप के सभी देशों के अभिजात पुरुष, निर्वासित राजे, परित्यक्ता रानियाँ, तलाक दी हुई अभिनेत्रियाँ, प्रौढ़ाएँ जो जीवन के नए क्षेत्रों में उत्साह-पूर्वक फिर से पदार्पण करना चाहती थीं—सभी इलियट की दावतों में आतीं और इलियट उन्हें उनकी प्रतिष्ठा के अनुसार आबभगत दे अपना सम्मान बढ़ाते।

इन महत्वपूर्ण दावतों में इलियट अक्सर मुझे निमन्त्रित करते रहे और मैं जाता भी रहा। वहाँ पहुँचकर मैं उनकी इस नवीन सामाजिक प्रतिष्ठा का माप लगाया करता। मुझे अवकाश न रहने पर भी उनका यही आग्रह रहता—

‘आपको जैसे हो आना ही पड़ेगा। यह आप भी जानते हैं और मैं भी मानता हूँ कि ये निकृष्ट राजे महाराजे दावतों में आकर उसे चौपट कर देते हैं; मगर क्या किया जाय—उनको भी तो कोई उठाने, बैठाने वाला चाहिए। उन बेचारों का यहाँ है भी कौन? उनके लिए आने जाने के भी स्थान तो नहीं हैं—वे जायं भी तो कहाँ जाँय। ईश्वर जानता है वह हम लोगों की आबभगत के सुपात्र भी नहीं है। वे सबके सब बड़े स्वार्थी, कृतघ्न और हृदय हीन हैं। वे अपनी बढ़ती के लिए आपसे पूरा लाभ उठाएंगे और काम निकल जाने पर आपको दूध की मक्खी सा निकाल फेंकेगे;

ऐसी तांते-चश्मी करेंगे जैसे कभी पहचानते भी नहीं थे ।’

इसी बीच में इलियट ने अपनी जान-पहचान नगर के गिरजे के पादरी से बढ़ा ली थी । पादरी पहले तो फौज में घुड़सवार सेना के अधिनायक थे मगर अब गिरजे की नौकरी से ईसाइयों को हर इतवार बड़े जोश में धर्मोपदेश देते थे । नाटा कद, मोटा शरीर, फूझी हुई नाक, सिर के आगे के बाल गायब—यही उनकी हुलिया थी । मजाक करने, अवैध प्रेम के किस्से कहानी सुनाने और चुटकियाँ लेने में वह बड़े अभ्यस्त थे । जिस उत्साह के साथ वे गिरजे में प्रार्थना कराकर स्वर्ग का द्वार खोलते उसी उत्साह से वे खाना खाते, चुहलवाजी करते, शराब पीते और सबका मनोरंजन करते । उनकी मित्रता से इलियट को आत्मिक सन्तोष हुआ । उनके लिए अब स्वर्ग में भी कोई अड़चन न होगी । अब तो उनके दोनों हाथ लड्डू थे ।

इलियट में गर्व की मात्रा अत्यधिक थी । उनको इस बात का बड़ा चाव था कि उनकी बहिन आकर उनकी नई कांठी देखे और उनके इस नए ऐश्वर्य के सामने चकाचौंध होकर उनकी प्रशंसा करे कि केवल उन्हीं की वदौलत उसके वंश का इतनी प्रतिष्ठा और ख्याति है । वह अक्सर इलियट की बातों को महत्वहीन समझा करती थीं । उनको इलियट की बहुत सी बातें ना पसन्द भी थीं । इलियट को अब ऐसा अक्सर मिल गया था कि बहिन की सारी गलतफहमी दूर कर दे और फिर उनको मानना पड़े कि हाँ ! इलियट भी कुछ हैं । इस निश्चय के पश्चात् उन्होंने श्रीमती लुइसा को एक आप्रह-पूर्ण पत्र लिखा कि वह ग्रे और आइजाबेल को लेकर उनके यहाँ अवश्य चलीं आएँ । वह उनके ठहरने की व्यवस्था पास के होटन में कर देंगे क्योंकि स्वयं उनकी कोठी में मेहमानों के लायक जगह न थी । श्रीमती लुइसा ने पत्र के उत्तर में लिखा कि उनका स्वास्थ्य बहुत खराब रह रहा है और वह लम्बी यात्रा नहीं कर सकतीं । रही ग्रे की बात—उसको दम मारने की फुरसत नहीं रहती क्योंकि इस समय बाजार

खूब ऊँचा जा रहा है और वह दिन रात निन्यानवे के फेर में रहा करता है। उसका इस समय शिकागो छोड़ना असंभव है।

इलियट को अपनी वहिन से स्वभावतः प्रेम था और उनकी बढ़ती हुई बीमारी का हाल सुनकर वे चिन्तित हुए। उन्होंने तुरन्त ही आइजाबेल को तार दिया। आइजाबेल का जवाब जल्द ही आया और उसने लिखा था कि मैं बीमार अवश्य हूँ मगर कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं है। मेरे बारे में उसने लिखा कि उनको आराम करने की बड़ी आवश्यकता है क्योंकि रात में देर तक काम करने से उनका भी स्वास्थ्य गिर गया है। उनके पिता हेनरी मेटूरिन सब काम संभाल ही लेंगे और वह मेरे को लेकर कुछ ही महीने बाद स्वयं आएंगी।

बीस दिन बाद—अक्टूबर २३, १८२६ को अमरीका के बाजार में बड़े जोरों की मन्दी आई। तहलका मच गया।

५

मैं उस समय लन्दन में था। इंगलिस्तान के लोग पहले तो स्तब्ध हुए और अनुमान न कर सके कि इसका परिणाम कितना विषम हो सकता है। अपने लिए तो मैं कह सकता हूँ कि मुझे पहले तो बड़ा क्रोध आया मगर लेखा-ज्याड़ा बैठाने पर ज्ञात हुआ कि मुझे थोड़ा सा ही घाटा हुआ है। मुझे मालूम था कि इलियट बड़े जोरों में सट्टा कर रहे हैं और उन्हें करारा घक्का लगा होगा; मगर मेरी उनकी भेंट कई महीने तक न हो सकी। बड़े दिन में जब वह रिचीयरा आए तब उनसे मेरी पहली भेंट हुई। उन्होंने बतलाया कि हेनरी मेटूरिन की तो मृत्यु हो गई और मेरे तबाह हो गया।

जहाँ तक मैं बाज़ार का रंग ढंग समझ सका उससे मेरा विचार था कि जो तबाही हेनरी मेटूरिन की कम्पनी पर आई उसका उत्तर-दायित्व उन्हीं की जिद और मेरे की जल्दबाजी पर था। सट्टे में तैश

स्वभावतः आता है और उसे संभालना बड़े बड़े खिलाड़ियों का ही काम है। हेनरी मेटूरिन ने पहले पहल तो यह समझा कि यह कुछ विदेशी व्यापारियों की चाल है जो अपने खास लोगों को लाभ पहुँचाना चाहते हैं। इस अनुमान पर उन्होंने अपनी पूँजी बाजार भाव को ठीक रखने में लगाई। उनका निश्चय यह था कि वह अपनी सारी पूँजी लगा कर अपने मुवक्किलों की रक्षा करेंगे। इसी कारण वे अपने मुवक्किलों को क्षति से बचाने के लिये अपनी पूँजी लगातार लगाते गए। उन्होंने कहा कि चाहे वह मिट जायँ मगर दूसरों के आगे वह अपनी आँखें नीची न होने देंगे। उन्होंने समझा था कि यह उनकी उदारता और दान वीरता थी। वास्तव में यह उनका अहंकार था जो उन्हें ले हूबा। उनकी सारी सम्पत्ति साफ हो गई और जिस रात यह सूचना आई उन्हें हृद्-रोग का दौरा हुआ। उनकी उम्र साठ वर्ष की थी। अपनी युवावस्था में वह खुल खेले थे और उनमें दम न रह गया था। खाते भी वह बहुत थे; फिर शराब भी कम न पीते थे। इन कारणों से मौत और भी पास आती गई। कुछ घंटों की असह्य वेदना सहन कर उन्होंने अपनी आँखें सदा के लिए बन्द कर लीं।

ग्रे को अकेले ही सब विपत्ति उठानी पड़ी। उनको न तो अपने पिताके समान अनुभव था और न सूझ फिर भी उनकी आदत गहरे दाँव लगाने की हो गई थी। वह स्वयं बड़ी कठिनाई में फँस गए थे। अपने बचाव की उन्हें कोई सुरत न दिखाई देती थी। बैंकों ने उधार देने से हन्कार कर दिया था। बुड्ढे और अनुभवी लोगों ने उन्हें दिवालिया बन जाने की सलाह दी क्योंकि किसी भी उपाय से वह अपना कर्ज अदा न कर पा रहे थे। हार कर उन्होंने अपने को दिवालिया घोषित कर दिया। अपना घर उन्होंने पहले ही से गिरवी रख दिया था; उनको पिता का भी मकान बेचना पड़ा। कर्ज की भूल अब भी न मिट पाई थी। आइजाबेल ने अपने सारे आभूषण और जवाहिरात बेच दिए। उनके पास कुछ न रह गया; केवल वही थोड़ी सी दक्षिणी केरोलीना की जमींदारी

वची हुई थी। उसको खरीदने के लिये कोई तैयार न हुआ। ये पैसे पैसे को मुहताज हो गया। यह उसकी तबाही की पराकाष्ठा थी।

‘मगर आप पर क्या बीती आगने नहीं बतलाया?’ मैंने उत्सुकता से पूछा।

‘जो कुछ ईश्वर की मर्जी थी वही हुआ; वह सबकी रक्षा कुछ न कुछ करता ही है।’

इतना सुन कर मैंने आगे कुछ पूछना उचित न समझा। उनकी आमदनी के जरिए शायद ही कोई जानता हो—मगर मुझे इतना विश्वास था कि उनकी भी काफी हानि हुई होगी।

इस व्यावसायिक उथल पुथल का प्रभाव रिबीयरा के जीवन पर पहले तो बहुत कम पड़ा। मुझे वहाँ केवल दो एक ही ऐसे व्यक्ति मिले जिनका काफी नुकसान हुआ था। अनेक होटल और क्लब तो भरे पड़े रहे मगर बहुतों की शिकायत थी कि इस साल बहुत ठाला रहा। दो वर्ष तक तो किसी न किसी तरह रिबीयरा का जीवन इसी तरह चलता रहा मगर दो वर्ष के बाद ही जमींदारियाँ, कोठियाँ और बंगलों का नीलाम शुरू हुआ और कुल मिला कर छोटी बड़ी अंड़तालीस हजार कोठियाँ नीलाम हुईं और अनेक बड़े बड़े होटलों के शेयरों के दाम बहुत गिर गये। होटलों ने रहने और खाने पीने के भाव बहुत गिराए भी मगर लोगों में इतनी गरीबी आ चुकी थी कि उनके पास खर्च करने के लिये पैसा ही न था; वे खर्च क्या करते? दुकानदार निराश हो चुके थे। चारों ओर तो इतनी विपदा थी मगर इलियट ने न तो अपने नौकर चाकर कम किए और न अपनी शानदार दावतों का सिलसिला ही तोड़ा। पहले ही की तरह बढ़िया से बढ़िया शराबें उनके यहाँ ढाली जातीं और अच्छे से अच्छे खाने पकाए जाते। अपने लिए उन्होंने एक नई मोटर ब्योड़ी कीमत पर अमरीका से खरीदी। उस पर टैक्स लगाने के कारण कीमत ब्योड़ी हो गई थी। गिरजे के पादरी ने एक फन्ड खोला था जिससे भूखों और बेकारों को भोजन दिया जाता था और उस

फन्ड में उन्होंने कई हजार डालर दान देकर अपना नाम दानियों की सूची में सर्व-प्रथम लिखा लिया। संक्षेप में उन्होंने अपना रहन-सहन पुरानी शान-शौकत के साथ बनाए रखा और जिस आर्थिक विपत्ति से आधी दुनियाँ हिल उठी थी उससे वे जरा भी प्रभावित न हुए।

इसका असली कारण मुझे बहुत दिनों बाद मालूम हुआ और वह भी जब इलियट ने स्वयं अपने आपही मुझे बतलाने का कष्ट किया। अपने कार्य-क्रम में उन्होंने केवल एक ही परिवर्तन किया था। वे पहले तो हर महीने इंगलिस्तान जाकर अपने कपड़े सिलावाते और धुलवाते थे मगर अब वे केवल साल में एक ही बार एक पखवाड़े के लिए वहाँ जाते थे। मगर अब भी हर तीसरे महीने अपने सब साज-सामान के साथ पेरिस अवश्य जाते और वहाँ की चढ़ल-पढ़ल में शामिल होते। वहाँ पर वह मौसम और फैशन के अनुकूल रंग-विरंगे पतलून पहनते और अनेक पुरानी अभिनेत्रियों के सम्पर्क में रह कर समय व्यतीत किया करते।

अवकाश पाकर मैं भी एक दिन के लिए पेरिस रवाना हुआ। वहाँ मेरी मुलाकात इलियट से हुई और हम दोनों खाना खाने साथ ही साथ एक होटल में पहुँचे। मगर वहाँ भी वीराना सा था और पहले की चढ़ल-पढ़ल विलकुल गायब थी। खाना खाने के बाद हम लोग यों ही बाजार की ओर घूम पड़े। वहाँ इलियट को कुछ काम भी निकल आया। एक मशहूर दर्जी की दूकान पर वे खड़े हो गए और अपने आर्डर दिए हुए कपड़ों को माँगवाया। यह थीं नौकरों की वर्दियाँ—पतलून, वेस्ट-कोट, पेटी, साफा सब पर इलियट का नाम कड़ा हुआ था। उन्होंने मुझे बतलाया कि अपने श्रेष्ठ पूर्वजों के अनुसार उन्होंने भी अपने नौकरों और खानसामों को एक विशेष प्रकार की वर्दी देने का निश्चय किया है। उसी वर्दी के साथ-साथ उन्होंने अपने लिए भी शानदार कपड़े अपने अपूर्व लार्ड वंश के अनुकूल बनवाए थे और जिसकी परम्परा उनके कथनानुसार एक

हजार वर्ष से कम पुरानी न थी। जो सूट उन्होंने सिलाए थे उस पर कढ़ा हुआ एक चन्द्राकार तमगा भी था—

‘मैं आपको बतलाना शायद भूल गया था—यह अभिजात चिन्ह मेरे पूर्वजों को पहले पहल देश-सेवा के बदले में मिला था और नगर के पादरी ने अपनी कृपा द्वारा उन्हें फिर से उसे प्रयोग करने की आज्ञा प्रदान की थी। गिरजे के प्रधानाध्यक्ष ने ऐसी कृपा पिछले सौ वर्षों में शायद ही किसी पर की हो। मुझ पर उनकी असीम कृपा है और मेरे जीवन को आदर्श-रूप मान कर उन्होंने अनेक सुविधाएँ भी प्रदान की हैं जो शायद कभी भी किसी को नहीं मिलीं। कैथलिक मतावलम्बी अधिकारियों को आध्यात्मिक ज्ञान पर पूर्ण अधिकार है। उनकी दूरदर्शिता को कोई नहीं पा सकता। दो साल पहले जब मैंने अपने जीवन के बारे में उनसे परामर्श किया तो उन्होंने मुझे बतलाया कि मुझे अपने समस्त अमरीकी कम्पनियों के शेयर फौरन बेच देने चाहिए। मैंने हेनरी मेटूरिन को कई बार लिखा मगर उन्होंने विरोध किया और राजी न हुए। मैंने उनको फिर डाँट कर लिखा कि मेरे सब शेयर बेच कर वह सोना खरीद लें और उनको हार मान कर मेरा आदेश मानना पड़ा। मैंने श्रीमती लुइसा के शेयरों के बारे में भी उनको लिखा मगर उनको मुझ पर विश्वास न आया। आप जानते ही हैं कि महीने भर बाद ही संसार पर ऐसी विपत्ति आई कि जिससे अनेक परिवार मिट्टी में मिल गए।’

‘इसी से जब मन्दी आई और बाजार बिगड़ा तो आपकी कोई हानि न हुई?’

‘हानि की क्या बात थी! मेरा तो कुछ फायदा भी हो गया। मैंने अपने पुराने शेयरों को फिर से कौड़ियों के मोल खरीद लिया। ईश्वर की इतनी कृपा मेरे ऊपर हुई थी कि उसके बदले में मैंने धर्मार्थ काफ़ी चन्दा भी दिया। धर्म की सेवा भी मैंने उचित और आवश्यक समझा।’

मैंने उनको टोकना ठीक न समझा और ध्यान लगा कर सुनता रहा।

‘गिर्जे के प्रधानाध्यक्ष ने मुझ से प्रार्थना भी कि हर स्थान पर उपनिवेश बनते जा रहे हैं और धर्म की रक्षा और मनुष्यों के परलोक-हित गिर्जाघरों की बहुत कर्मा दिखलाई दे रही है इसलिए यह जरूरी है कि कोई दानवीर धर्म की रक्षा में अपना कदम बढ़ाए। मैं उनका इशारा समझ गया और एक प्रसिद्ध मूर्त-कलाकार को उसका एक पत्थर का नमूना बनाने का आदेश दिया। एक कलाकार से उसका रंगीन चित्र भी खिंचवा कर मैंने प्रधानाध्यक्ष को भेंट किया। इससे उनकी बड़ा सन्तोष हुआ और उन्होंने मेरी ईश्वर-भक्ति और कलात्मक-रुचि की भूरि भूरि प्रशंसा की। उनको सन्तोष इस बात से कहीं अधिक था कि मानव की इस गिरी हुई सामाजिक और आध्यात्मिक अवस्था में भी कुछ एक मेरे ऐसे लोग रह गए हैं जो ईश्वर पर श्रद्धा बनाये रख सकते हैं।’

बाजार का घूमना समाप्त हो चुका था और मैंने विदा माँगी। उन्होंने मुझसे चलते चलते कहा था कि कुछ ही दिनों बाद वे रिवीयरा। लौटेंगे मगर वे आ न सकें। अपना सारा सामान भी उन्होंने पेरिस भेज दिया था। पेरिस में रहने के लिए जब वह तैयारी कर रहे थे उसी समय उनको आइजाबेल ने सूचना दी कि श्रीमती लुइसा का स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ चुका है। इस खबर के पाते ही उनका पारिवारिक स्नेह उमड़ पड़ा और वे दूसरे ही दिन जहाज से सीधे शिकागो चल पड़े। अपने पहुँचने की सूचना देते हुए उन्होंने मुझे लिखा की श्रीमती लुइसा इतनी दुबली हो गई है कि उन्हें पहचानना तो दूर, उन्हें देख कर डर लगता है। वह ज्यादा से ज्यादा कुछ ही हफ्ते शायद और चल सकें। इसलिए उनका अब यह पारिवारिक कर्त्तव्य है कि उनके साथ अन्त तक रहें और उन्हें सान्त्वना दें। उन्होंने अपने देशवासी-अमरीकी व्यापारियों की उस पत्र में बड़ी

भर्त्सना की थी और लिखा था कि अमरीकी विपत्ति में जरा भी धैर्य से काम नहीं लेते और सारा सामाजिक जीवन अस्तव्यस्त कर देते हैं। उन्हें ईश्वर पर विश्वास भी नहीं है। उन्होंने अपने अनेक मित्रों को अभिवादन कहलाया और मुझने आग्रह किया कि मैं इन लोगों को अवसर पाकर उनके न आ सकने का प्रधान कारण बतला दूँ— 'इलियट का पारिवारिक कर्त्तव्य ज्योंही समाप्त होगा वे समाज की सेवा में शीघ्र से शीघ्र प्रस्तुत होंगे।'

एक महीने बाद मुझे उनका दूसरा पत्र मिला। श्रीमती लुइसा की मृत्यु हो गई थी। प्रत्येक शब्द में उनकी सहानुभूति और पारिवारिक भावुकता टपक रही थी। जिन शब्दों में और जिस शैली में उन्होंने अपना दुःख प्रकट किया था उसमें किंचित मात्र न तो दिखावा ही था और न उनका खुशामद-पसन्द स्वभाव। दोनों ही बातें न जाने कैसे गायब थीं। मुझे ज्ञात हुआ कि वास्तव में वह बड़े उदार, सच्चे और स्नेही व्यक्ति हैं। श्रीमती लुइसा के दोनों पुत्र जिनमें एक जो 'फिलिपाइन्स' में था अपनी स्त्री के साथ वहाँ आया था और निजी आवश्यक कार्य के कारण अन्त्येष्टि-क्रिया के बाद ही वह फौरन लौट गया और दूसरा चूँकि वह राजदूत या अवकाश न पाने के कारण केवल सहानुभूति-सूचक पत्र ही भेज सका। इसलिए इलियट के लिए श्रीमती लुइसा का घर संभालना एक नैतिक कर्त्तव्य भी हो गया था। श्रीमती लुइसा की जायदाद उनके तीन सन्तानों में विभाजित कर दी गई थी; मगर पिछले व्यावसायिक उथलपुथल में उनकी इतनी आर्थिक हानि हो गई थी कि बाँटने के लिये बहुत कुछ रह भी न गया था। उनकी वही एक कोठी बची हुई थी जिसको इलियट और आइजाबेल उनके जीवन काल में ही बेच कर दूसरी खरीदना चाहते थे; मगर श्रीमती लुइसा के होते हुए यह सब न हो सकता था क्योंकि जिस घर में वह फूली-फली थी उसी में मरना भी चाहती थी। उनके मरने के पन्द्रह दिन बाद ही वह कोठी नीलाम पर चढ़ा दी

गयी और धन की बहुत शीघ्र आवश्यकता होने के कारण अधिक मोलभाव भी न हो सका। कोठी विकने के बाद भी आइजाबेल के हाथ कोई खास रकम न लग पाई।

इधर ग्रे की भी अवस्था बड़ी शोचनीय हो गई थी। तवाही के बाद उसने उन दलालों के यहाँ क्लर्क के लिए दौड़धूर की जिनकी थोड़ी बहुत साख बाजार में बाकी रह गई थी। मगर न तो व्यवसाय ही चल रहा था और न उसके चलने की कोई आशा ही थी। इसलिए उन्हें नौकरी भी कहीं न मिल सकी। अपने पुराने मित्रों को ग्रे ने अपनी अवस्था से सूचित भी किया और उनसे सहायता चाही। उसमें भी उन्हें सफलता न मिली; बहुतों ने तो उनके पत्र का उत्तर भी नहीं दिया। बाजार के उतार-चढ़ाव के समय उन्होंने जी तोड़ मेहनत की थी; अपनी असमर्थता, नैराश्य और पतन की याद उन्हें पागल कर रही थी जिसका असर उनके हृदय पर इतना गहरा हुआ कि वे बीमार हो गए और उनके सिर में रह रह कर इतना दर्द होने लगा कि वे बेचैन हो जाते और चौबीस घंटे तक तो बिलकुल बेकार और निश्चेष्ट पड़े रहते। उनकी मानसिक अवस्था इतनी खराब हो गई थी कि आइजाबेल उनको और बच्चों को लेकर दक्षिणी कैरोलीना चली गई क्योंकि और कोई जगह उसके लिए बाकी न रह गई थी। वहाँ की जमींदारी से उन्हें साल में कुछ न कुछ मिल जाया करता था मगर देख भाल न हो सकने के कारण वहाँ घास-पात के जङ्गल उग आए थे और केवल जंगली बच्चों का शिकार ही वहाँ हो सकता था। किसी न किसी तरह उन्हें अपने बुरे दिन काटने ही थे। उनका विचार था कि अब वे वहीं रहेंगे और जब तक ग्रे अच्छे न हो जायेंगे और बाजार रास्ते पर न आ जायगा तब तक वे अमरीका न लौटेंगे।

‘मैं उन्हें इस बात की कभी इजाजत नहीं दे सकता था।’ इलियट ने मुझे लिखा। ‘उनका जीवन तो सुअरों से भी बदतर था।’

न तो आइजाबेल के लिए कोई परिचारिका थी, न बच्चों के लिए धाय और न ग्रे के लिए खानसामा। केवल दो हव्शी नौकरानियाँ ही दिखलाई देती थीं जिनको देखकर मनली आती थी—फिर उनके हाथ का खाना-ईश्वर ! ईश्वर ! यह मुझे सहन न हो सका। इस विचार से मैंने उन्हें अपनी पेरिस की कोठी रहने के लिये दे दी। अपने सब नौकर चाकर भी मैंने उनकी सेवा में लगा दिए हैं और आशा है कि इस नवीन वातावरण और मेरे नौकरों की देखभाल से वे सुखी होंगे। इस व्यवस्था का मतलब यह हुआ कि मैं स्वयं पेरिस न रह सकूँगा और मुझे रिवीयरा में ही रहना पड़ेगा। पेरिस का नवीन वातावरण तो मेरे सर में दर्द पैदा कर देता है; रिवीयरा में ही श्रेष्ठ जीवन कुछ बाकी रह गया है। मैं वहीं रहूँगा और तब भेंट अक्सर होता रहेगी। आइजाबेल की कोठी के सब पुराने चित्र भी विक्रवाने हैं; उसका इन्तजाम हो रहा है। जब पेरिस में उनके रहने का अलग इन्तजाम कर लूँगा तब उन्हें साथ ले जाऊँगा।

कौन कह सकता है कि अमरीका के अभिजात खुशामदी इलियट उदारता, दयालुता और कल्याण की प्रतिमूर्ति न थे ?

चौथा परिच्छेद

१

ये को अपने पेरिस वाले घर में रखकर और उनकी सुविधाओं की व्यवस्था पूरी कर इलियट अपनी रिक्वीरा की कोठी में लौट आए। उस कोठी को उन्होंने इस प्रकार बनवाया था कि वह केवल उन्हीं को आराम दे। दूसरों को उसमें ठहरने का सुभीता न था। इसी से इलियट अपने मेहमान होटलों में ही ठहराया करते और इस पर उन्हें किंचितमात्र भी दुःख न होता। वह समझते थे कि श्रेष्ठ-वर्ग की मित्र मण्डली की खातिर वाइरी आदमी के सामने ठीक न हो पायेगी। उनको डर था कि उनके भांजे, भतीजे अक्सर वाचा देते रहेंगे और उन लोगों को भी ऐसी पार्टियों में रखना पड़ेगा जिसमें इलियट स्वयं ही सर्वेसर्वा रहना चाहते थे। फिर हर समय का साथ भी अच्छा नहीं—

‘उन दोनों को पेरिस में रहकर सभ्य-समाज का अनुकरण करना’ चाहिए; ऐसे समाज से वह इतने दिनों अलग रहे हैं कि वे सब शिष्टाचार भूल गए होंगे। उनकी दोनों लड़कियाँ भी बड़ी हो रही हैं और उनके स्कूल जाने का प्रबन्ध भी मैंने पास ही के कान्वेन्ट में कर

दिया है। वहाँ सभी कुलीन बच्चे पढ़ने आते हैं।'

पेरिस में रहने के कारण ग्रे और आइजाबेल से मेरा सम्पर्क बहुत दिनों के लिए छूट गया। न तो उनका खीयरा आना हुआ और न मैं ही पेरिस जा सका। मैंने निश्चय किया कि मैं वसन्त के अवसर पर पेरिस अवश्य जाऊँगा और कुछ हफ्ते वहीं रहूँगा। परन्तु कुछ काम आ जाने के कारण मुझे पहले ही से वहाँ जाना पड़ा। एक हाटल में मैंने सुन्दर कमरा ले लिया था जिसमें पुराने समय की याद दिलाने वाली अनेक कुर्सी मेजे थीं और उन सबसे एक प्रकार की गन्ध आया करती थी। कुर्सियों पर मड़े हुए चमड़े से जो गन्ध आती, उन्ने सूँघकर मुझे बात होता कि मैं भी उसी युग का एक बच्चा हुआ प्राणी हूँ।

पेरिस पहुँचने के दूसरे ही दिन मैं आइजाबेल से मिलने गया। उससे मिले दस वर्ष का समय बीत चुका था और मेरी उत्सुकता भी बहुत बढ़ गई थी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वह एक फ्रांसीसी लेखक का उपन्यास पढ़ रही थी और मुझे देखते ही बड़े चाव से उठ खड़ी हुई और हाथ मिलाया। अपनी उस आग्रहपूर्ण मुस्कान से जो उसके सौन्दर्य की पुरानी निधि थी—उसने मुझे विटलाया। कदाचित् उससे दस पाँच बार मैं मिल चुका था और अकेले तो केवल दो ही बार, परन्तु अपने हार्दिक स्वागत से उसने जाला दिया कि हम दोनों बड़े पुराने परिचित हैं। इन दस वर्षों ने एक और आश्चर्यजनक कार्य किया। मेरी प्रौढ़ावस्था और उसकी यौवनावस्था में जो स्वाभाविक संकांच का व्यवहार पहले था अब बिलकुल ही भिन्न गया था। आयु की असमता, समता प्राप्त कर रही थी। प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर होती हुई युवतियों की सहज चाटूक्तियों से उसने मुझे यह आभास दिया कि मैं उसका यदि समवयस्क नहीं तो समकालीन अवश्य हूँ। उसके चरित्र में शान्ति, निरुद्देशता, विश्वास-तीनों का समन्वय हो रहा था।

उसके शरीर को देखने पर मुझे कुछ अधिक आश्चर्य हुआ। मुझे स्मरण हो आया कि पहले वह सुन्दर, स्वस्थ, चंचल और कुछ स्थूलता लिए हुए थी। कदाचित् यह जान कर कि कहीं वह बहुत मोटी न हो जाय उसने अपने को सुकुमार रखने का भरसक प्रयत्न किया है और उसका वजन भी कम हो गया है। हो सकता है बच्चे हाने के उपरान्त उसका स्वास्थ्य और उसकी कोमलता उसी स्तर की हो गई थी जो सर्व प्रिय हो सकती थी। कपड़ों के कारण उसकी सुकुमारता और भी खिल उठी थी। ऐसा मालूम होता था कि काले रेशम की फ्राक उसके बदन पर रखकर ही सिला गई थी। दर्जी की, खास कर पेरिस के दर्जी की सम्पूर्ण कला उसमें विदित थी मगर जिस सहज भव से वह उसे पहने थी उससे मालूम होता था कि वह उस तरह के कीमती कपड़े बचपन से ही पहनती आ रही है। इलियट के आदेशानुसार जो कपड़े बनते और पहिने जाते थे उनमें दिखावा और कृत्रिमता बहुत होती थी। श्रेष्ठ घर की फैशनेबिल स्त्रियाँ उसे देखकर पहले कह सकती थीं कि उसमें यौवन की सहज ललकार और उसका तीखावन न था परन्तु अब शायद किसी को यह शिकायत नहीं हो सकती थी। उसके मुख की आकृति और भी आकर्षक हो गई थी। सीधी नाक, पतले होठ, यौवनोचित लालसापूर्ण नेत्र—सबमें पहले से कहीं अधिक सामंजस्य था। उसने कोमल गालों पर लाली कलापूर्ण ढङ्ग से लगाई थी और पाउडर की हलकी सफेद छाया मनोहर प्रतीत हो रही थी। उसके कटे हुये भूरे बाल कंधों पर फूलों के गुच्छों के समान सजे थे क्योंकि युवतियों के समाज में वही प्रचलित फैशन था। उसी फैशन के अनुसार स्त्रियाँ दिन में घुटने से ऊपर तक साया पहनतीं और आइजाबेल भी उसी नियम के अनुसार हलके पीरोजी रंग का साया पहने हुए बैठी थी। पेरिस की अनेक सुन्दरियों के पैर और टाँगों ने उनके सम्पूर्ण सौन्दर्य को मिट्टी में मिला दिया था और आइजाबेल भी उसी रास्ते पर थी।

परन्तु अपने सौन्दर्य-कला-ज्ञान से उसने उन्हें ठीक उसी कोमल स्तर पर बनाये रखा जिसमें उसके सहज यौवन का भार नैसर्गिक रूप से बहान होता चले। यह अवश्य था कि उसने अपने शरीर, चाल डाल, और चंचल प्रकृति का सौन्दर्य-कला से वश में कर रखा था और मैं अपने सम्मुख उसके सरल, समन्वित, सुकुमार, रस-पूर्ण अवयवों को देखकर पूर्णतया पराजित था। उस समय यदि इलियट उसे देखते तो वह भी कहीं उँगली न उठा सकते थे।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो ग्रे घर पर न थे। वह गोल्फ खेलने निकल गए थे और आइजाबेल ने मुझे बैठाते हुए कहा कि वह शीघ्र ही आते होंगे। आइजाबेल ने कुछ सोचकर कहा—

‘आपसे मैं अपनी दोनों बच्चियों का परिचय अभी कराती हूँ: वे दो कि दोनों वाग में चली गई हैं; अब आती ही होंगी; मुझे वे बड़ी प्यारी लगती हैं।’

हम लोग इधर उधर की बातें करते रहे। पेरिस में वह बहुत प्रसन्न थीं और इलियट ने अपने अनेक मित्रों से उनका परिचय करा दिया था जिसके कारण उनका समय आनन्द-पूर्वक कट जाता था। इलियट के समान ही वह दावतें देती, दावतें खातीं और समाज में अपनी लोकप्रियता बढ़ाने का प्रयत्न करती रहतीं।

‘अपनी इस नवीन अवस्था पर मुझे कभी कभी बड़ी हँसी आती है। हम लोग सब कुछ खोने पर भी ऐसे रह रहे हैं जैसे हम पर कुछ बीती ही नहीं है।’

‘क्या वास्तव में आप लोगों की बहुत अधिक हानि हुई?’ मैंने डरते डरते पूछा। आइजाबेल ने अपनी सहज लालसायुक्त मुस्कान मुँह पर लाकर कहा—

‘ग्रे के पास एक कौड़ी भी नहीं रही। मेरी आमदनी इस समय उतनी भी नहीं है जितनी विवाह के प्रस्ताव के समय लैरी की थी। मैं समझती थी कि उतनी रकम कम होगी। अब तो मैं अकेली भी

नहीं, दो दो वच्चे हैं फिर भी बड़े मजे में काम चलता ही जाता है ।
हैं न तमाशे का वात ?

‘मुझे प्रसन्नता है कि आप अब सब बातें समझ रही हैं ।’

‘लैरी की कुछ खबर आपको मिली ?’

‘मुझे कैसे मिलती ! जब आपसे पिछली बार पेरिस में भेंट हुई थी तभी उन्हें मैंने देखा था । मैंने उनके विषय में कुछ जान पहचानी लांगो से पूछा भी मगर कोई खास पता न चला; कोई कुछ भी न बतला सका कि वह कहाँ हैं ? मालूम होता है कि वह बिल्कुल गायब हो गए ।’

‘शिद्दागं के एक बैंक के मैनेजर द्वारा कभी कभी हम लोगों को खबर लगती रहती । वह उनसे हिसाब किताब माँगा करते थे और उनका पत्र अजीब अजीब स्थानों से आया करता था जैसे चीन, बर्मा और भारतवर्ष । तब से वह शायद घूम ही रहे हैं ?’

मेरे मन में ठठा एक प्रश्न उठा और मैं निस्संकोच पूछ बैठा—

‘अगर आप उनके बारे में कुछ जानना चाहती थीं तो सबसे सरल उपाय तो यह था कि पत्र लिखकर उनका हाल चाल पूछ लेती । क्या आपको कभी यह विचार भी आता है कि आपने यदि विवाह उन्हीं से किया होता तो कहीं अच्छा होता ?’

उसकी मुस्कान सूखी हँसा में फूट पड़ी—

‘मैं ग्रे के साथ बहुत सुख में रही हूँ । वह मेरी बड़ी खातिर करते रहे हैं और जब तक उनका व्यवसाय चमकता रहा हम लोगों ने बड़ा आनन्द मनाया । हम लोगों में कभी एक क्षण के लिए भी वैमनस्व नहीं हुआ—जो मैं चाहती बड़ी वह किया करते । विवाह के दिन से आज तक कभी भी उन्होंने अपने प्रेम में कमी नहीं होने दी । हम दोनों के विचार, रहन सहन एक से हैं और वह मुझे संसार में सबसे अधिक चाहते हैं और हर समय मेरी प्रशंसा किया करते हैं ।

आप उनकी उदारता और सम्मान का माप शायद नहीं लगा सकेंगे। मेरे लिए उनको सभी भेंट योग्य वस्तुएँ तुच्छ ज्ञात होती हैं। आज तक उन्होंने हमेशा मेरी ही बात रखी है और कभी एक शब्द भी मेरा जी दुखाने के डर से नहीं कहा। वास्तव में मैं बड़ी भाग्य-शाली हूँ।’

मैं सोच रहा था कि क्या वह मेरे प्रश्न का उत्तर भी दे रही है या दो ही बातें गड़ती चली जा रही हैं। मैंने बातचीत का विषय बदल दिया—

‘आपकी छोटी वच्चियाँ अभी तक नहीं आईं?’

मैंने इतना कहा ही था कि दरवाजा खुला और वे-दोनों अपनी धाव के साथ साथ अन्दर आ गईं। जोन दाँनों में बड़ा थी; उससे मेरा परिचय पहले हुआ। उन आठ वर्ष की लड़की ने मुझसे हाथ मिलाते समय अपनी गर्दन एक तरफ झुका कर यह सूचित किया कि मुझसे मिलकर वह बहुत प्रसन्न हुई। छोटी लड़की छ साल की थी। उसने भी गर्दन हिलाई। दोनों ही अपनी वयस के हिसाब से ज्यादा लम्बी थीं। आइजाबेल स्वयं भी लम्बी थी और माँ की लम्बाई और उसकी नीली आँखें दाँनों ने ही पाईं थीं। घर में एक अपरिचित के होते हुए भी वे दोनों निस्संकोच बातें करती रहीं और अपने सैर की चर्चा करती रहीं। चाय बन चुकी थी और खाने का स्वादिष्ट सामान लगाया जा रहा था। वे एक मार्मिक आकांक्षा से चुपचाप खाने की वस्तुओं को देखती रहीं मगर उनकी हिम्मत उन्हें उठाने की न पड़ रही थी। उन्हें केवल एक चीज ले लेने की आज्ञा मिली। आज्ञा सुनकर उनका मानसिक अहङ्ग देखने लायक था। उनकी आँखों में उनके विह्वल तर्क की प्रतिच्छाया दिखलाई दे रही थी। आइजाबेल के समत्व और उनके सारल्य ने मुझे मुग्ध कर लिया। जब वे दोनों अपनी अपनी चुनी हुई चीजें खा चुकीं तो उनकी धाव उन्हें आकर ले गई और उन्होंने क्षण मात्र भी वहाँ ठहरने की

उत्कण्ठा नहीं दिखाई। मुझे विश्वास होने लगा कि आइजाबेल उनका श्रेष्ठ समाज के रहन सहन के अनुकूल ही शिक्षित कर रही है।

जब वे दोनों चली गईं तो मैंने साधारणतया वही बातें की जो लोग मां से वच्चों की प्रशंसा करते हुए कहा करते हैं और आइजाबेल मेरी प्रशंसा से प्रसन्न भी हुई। मैंने ग्रे के बारे में भी बातें शुरू की और पूछा कि वे पेरिस में आकर प्रसन्न तो हैं—

‘प्रसन्न ही हैं। चाचा जी ने अपनी मोटर हम लोगों के आराम के लिए यहाँ छोड़ दी है और वह अक्सर कभी घूमने, कभी क्लब, कभी ताश खेलने चले जाते हैं। चाचा जी की मेहरबानी की हम लोग जितनी प्रशंसा करें थोड़ी है। उनका स्नेह हम लोगों के लिए बरदान हो रहा है। ग्रे का दिल टूट गया है और अब भी उन्हें अक्सर इतने जोर की पीड़ा सिर में होती है कि वह पागल हो जाते हैं। अगर इस समय कोई नौकरी उन्हें मिल भी जाय तो इस बीमारी से वह उसे संभाल न सकेंगे। इस विचार से वह लुभित हो उठते हैं। वे चाहते हैं कि काम करें: अपना कर्त्तव्य भी वह यही समझते हैं और जब उन्हें ढूँढ़ने पर भी नौकरी नहीं मिलती तो उन्हें बहुत आत्म-ग्लानि होती है और उनका धैर्य छूट जाता है। उन्हें रह रह कर अपनी सम्पन्नता याद आती है और वह इतनी व्यथा अनुभव करते हैं कि मैं कुछ कह नहीं सकती; कभी कभी तो वह आत्महत्या की बातें करने लग जाते हैं। वे चाहते हैं कि उन्हें फिर कुछ ऐसा काम मिले जिससे पहले की तरह वह अपनी जीविका श्रेष्ठ व्यक्तियों और व्यवसायियों की भाँति चलावें। उन्हें चाचा जी का एहसान बोझ समान मालूम होता है और वह अकर्मण्य जीवन से घृणा करते हैं। मैं उनको बहुत समझा बुझा कर यहाँ ले आई हूँ। मेरा विश्वास है कि इस नए वातावरण में रह कर उनकी तबियत बदल जायगी और वह स्वस्थ हो जायेंगे। मगर मैं यह भी जानती हूँ कि जब तक वह अपने

व्यवसाय में फिर से नहीं लग जाते उन्हें शान्ति नहीं मिलेगी ।’

‘इन दो ढाई वर्षों की आपत्ति से आप लोगों के जीवन में अस्त-व्यस्तता फैल गई ?’

‘मैं क्या बतलाऊँ ! जब मन्दी आरंभ हुई तो पहले तो मुझे किंचित मात्र भी विश्वास न हुआ कि कोई आपत्ति आने वाली है । फिर मैं कभी इस बात का स्वप्न भी न देखती थी कि ऐसा कभी हो भी सकता है कि हम लोग वर्वाद हो जाय । हो सकता है कि दूसरे बिगड़ जाय मगर हम लोगों का यह अवस्था हो जायगी इसका मुझे जरा भी अनुमान न था । जब विपत्ति एक दम से हम पर आ गई तो हम लोगों ने सोचा कि अब जीवन व्यर्थ है । मैं भविष्य सोच कर कांश उठी और एक महीने तक तो मैं खोई खोई सी रही । मैं सोचती कि हे ईश्वर ! क्या हम लोगों को सब कुछ खाना पड़ेगा—कोठियाँ जायदाद, आभूषण, जवाहिरात क्या सब की आहुति देनी पड़ेगी ? मैं रो पड़ती थी । परन्तु थोड़े ही दिनों में मैंने अपने को संभाल लिया और सोचा कि जो होगा देखा जायगा । जो बीत गई वह बीत गई; उसका रोना क्या; जब तक था, आनन्द था; जब नहीं रहा तो नहीं सही ।’

‘पेरिस की शानदार कोठी में आनन्द-पूर्वक रहकर कौन विपत्ति नहीं भूल जायगा ? यहाँ तो आपत्ति पंख भी नहीं मार सकती; फिर आराम से खाना-पीना और समाज की रंगरलियाँ और पेरिस में घूमते हुए हड्डियों के ढाँचे जो केवल दर्जी की कृपा और उसकी कला से मनुष्य-वत् ज्ञात होते हैं उनका संसर्ग क्या कम स्वर्गीय है ? ऐसा जीवन तो सब कुछ भुला सकता है ।’

आइजाबेल खिलखिला कर हँस पड़ी—

‘इन दस वर्षों में आप में जरा भी परिवर्तन नहीं आया । वही निष्ठुर व्यंग अब भी आप में कूट कूट कर भरा है । आप शायद मुझे झूठी समझेंगे और स्वभावतः आपको वैसा समझना भी चाहिए ।

मैं केवल ग्रे के ही कारण पेरिस आई। ग्रे और बच्चों के लिये ही मैंने चाचा इलियट का निमंत्रण स्वीकार किया नहीं तो आप सच मानिए मैं यहाँ कभी न आती। अट्टाइस सौ डालर सालाना की निजी आय से मैं अपनी केरोलीना की जमींदारी में बड़े चैन से रह सकती थी। वहाँ मैं गेहूँ और बाजरे की खेती कराती, सुअर और मुर्गे-मुर्गियाँ पालती और सुख से रहती। मुझे कमी ही क्या थी। आखिर मैं भी तो जमींदारियों में ही पाली-पोसी गई हूँ—वहाँ के जीवन से मैं अनभिज्ञ तो हूँ नहीं।'

‘हाँ! हाँ! क्यों नहीं—जमींदारों और खेतिहरों के जीवन में कुछ बहुत भेद तो है नहीं?’ मैंने व्यंग से कहा।

इतने ही में ग्रे आगए। मैं उन्हें बारह वर्ष बाद देख रहा था। इसके पहले मैंने उनका केवल एक चित्र इलियट के यहाँ देखा था जो सोने के फ्रेम में मढ़ा कर राजा-महाराजाओं के चित्रों की पंक्ति में रखा हुआ था। वह चित्र उनके विवाह के समय लिया गया था। ग्रे को देखते ही मेरा हृदय धक से हो गया। सिर के सारे बाल झड़ गए थे और एक अज्ञात आशंका से उनका मुख विकृत था। वह और भी मोटे हो गये थे और मुख का रंग लाल हो रहा था। गर्दन पर मांस झूल आया था। कदाचित् दिन रात मौज में रहते रहते और ज्यादा शराब पीने के कारण उनका वजन भी बढ़ा हुआ था। सबसे बड़ा परिवर्तन आँखों में हुआ था। उनकी आँखों की सहज ज्योति जो पहले कभी उनकी सरलता और निर्भोक्ता से प्रेरित थी अब शिथिल और अव्यक्त भय से धूमिल हो चुकी थी। अगर मैं उनकी विपत्ति की कहानी न भी जानता होता तो भी मैं सहज ही कह सकता था कि उनका विश्वास अपने ऊपर से हट गया है और संसार उन्हें सूना ही सूना दिखाई दे रहा है। उनकी आँखों से साफ टपक रहा था कि उन्होंने कोई घोर अनैतिक पाप किया है जिसके लिए उन्हें हार्दिक क्षमा है। उनकी निष्ठा, उनका विश्वास, उनकी शारीरिक और

मानसिक शक्ति की नींव हिल गई थी। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझसे हाथ मिलाया और ऐसा आभास दिया कि मानों मैं उनका पुराना शुभचिन्तक हूँ। परन्तु उनकी बात चीत में साफ भूँक रहा था कि यह दिवाशा मात्र है और उनका मनःस्वतः किसी और ही विचार में व्यस्त है। थोड़ी देर ठहर कर मैं उनकी इधर उधर की बातें सुनता रहा और दूसरे दिन के लिए खाने का निमंत्रण दे मैंने विदा मांगी।

इस बीच करीब करीब हर दूसरे तीसरे मैं आइजाबेल से मिलने अवश्य चला जाता था। शाम को अक्सर अवकाश रहता और उन के यहाँ जाकर इधर उधर की बातों से अगना जी बहल जाता। उस समय वह ज्यादातर अकेली ही रहती और बड़ी प्रसन्नता से बातें करना आरंभ कर देती। जिन व्यक्तियों से इलियट ने उनका परिचय कराया था वे उनसे वयस में बहुत बड़े थे और समवयस्क बहुत ही कम। उनकी माँहक और सुखद व्यवहार से वशीभूत हो मैं वहाँ घन्टों बैठता और कभी अपने पुराने परिचितों, कभी उनके परिचितों, कभी कला-सभी विषयों पर बातें होती और समय बातों ही बातों में बीत जाता। जब मैं उनके सामने जाता तो उनका सौन्दर्य मुझमें एक विचित्र स्फूर्ति भर देता और मैं उनके भरे हुए मुख, पतले होठ और नीली आंखों के आकर्षण से पराभूत बातें सुना करता।

इतने में ही एक बड़े मार्के की घटना घटी।

प्रायः सभी बड़े नगरों में समाज की एक विचित्र व्यवस्था दिखलाई पड़ती है। समाज कुछ विशेष गोष्ठियों में विभक्त हो जाता है—श्रेष्ठ वर्ग के लोग अगनी अलग दुनियाँ बनाये रहते हैं और केवल आपस में ही मिलते जुलते हैं, दुःख सुख कहते हैं, प्रेमालाप करते हैं और चाय

पार्टियों और दावतों का लेखा रखते हैं। मध्यम वर्ग के लोग भी अपनी अलग दुनियाँ वसाए रहते हैं—इस गोष्ठी के लोग आपस में मिलकर अपनी कष्ट कथाएँ एक दूसरे से कहकर, एक दूसरे की आलोचना कर, दूसरों की दावतों का लेखा रख कर जीवन व्यतीत करते रहते हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि ये दोनों वर्ग समुद्र में तैरते हुए टापुओं के समान हैं जो एक दूसरे के पास नहीं पहुँच पाते। श्रेष्ठ वर्ग की गोष्ठी में कोई अपरिचित अथवा निम्न वर्ग का व्यक्ति सम्मिलित नहीं होता—क्या यों कहिये किया नहीं जाता। यों तो वैसे ही व्यवसायियों, कलाकारों, लेखकों और अभिजात वर्गों की दुनियाँ अलग अलग होती है परन्तु इस विपमता का नग्न रूप यदि कहीं देखने को मिलता है तो वह है पेरिस। हर एक वर्ग की दुनियाँ घोघे के समान दिखाई पड़ती है—अपने ही में व्यस्त अपने ही में सुखी। गायक केवल गायकों से मिलते हैं; चित्रकार इकट्ठे ही दिखाई पड़ते हैं; और लेखकों का एक ही अड्डा रहता है—हर एक से दूर, हर एक से परे और अपरिचित। यही व्यवस्था लन्दन में भी है मगर इतने नग्न रूप में नहीं और एक ही वर्ग या समुदाय के लोग हर दूसरे से मिलते जुलते दिखाई दे जाते हैं—लार्ड वंश के व्यक्ति अभिनेत्रियों से गर्व करते हैं, लेखक व्यवसायी व्यक्तियों से मिलते रहते हैं और कभी कभी तो एक ही दावत या अधिवेशन में लार्ड, व्यवसायी, चित्रकार, राजनीतिज्ञ, अभिनेत्रियाँ, दर्जों और लेखक सब एक साथ ही मिल जायेंगे।

अनेक कारणों से मेरे जीवन में ऐसी घटनाएँ घटित हुई हैं कि मुझे पेरिस की सभी गोष्ठियों के अन्तरतम जीवन को देखने का अवसर मिला है। श्रेष्ठ वर्ग का द्वार तेलियट ने ही खोल दिया था और अनेक वर्गों में मैं यही अपनी लोकप्रियता के कारण आमन्त्रित हुआ करता था। पेरिस में विशेष कर मुझे एक ऐसा होटल पसन्द आ गया था जहाँ खाना तो अच्छा मिलता ही था और साथ साथ हर प्रकार के व्यवसायी व्यक्तियों से भी भेंट हो जाया करती थी।

पेरिस के सभी वर्गों के लोग कुछ न कुछ संख्या में वहाँ अवश्य मिल जाते और दूर दूर से आये हुये—रूसी, जापानी, जर्मन, अंग्रेज वहाँ बैठ कर खाना खाते, गन मारते और अपने अपने देश की विशेषताएं प्रदर्शित करते । होटल क्या था एक अन्तर्गोष्ठीय क्लब था ।

पेरिस पहुँचने के करीब बीस दिन बाद मैं उसी होटल में बैठे शाम को खाना खा रहा था । मौसम बड़ा सुहावना था । बारजों पर खड़े हुए पौधों की भीनी भीनी खुशबू भिगरेट और सिगार के धुएँ से मिल कर एक विशेष प्रकार की सुगन्ध फैला रही थी । हर ओर ऐसी स्निग्धता थी मानो बरसान के बाद वादल खुल गये हैं और आसमान साफ हो गया है । हर एक के मुख पर आनन्द का लहर सी फैलती हुई दिखलाई दे रही थी । अचानक एक व्यक्ति मेरे पास आकर खड़ा हो गया और मुस्कराने लगा । उसके मांती ऐसे चमकदार दांत देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था । उसका बदन लम्बा और उसका शरीर दुबला था । बाल उसके इतने बड़े हुए थे कि सारी गर्दन ढक सी गई थी । होठों और टुडुई पर एक घनी दाढ़ी थी जिसने उसके आकृति को काफी ढक रखा था । हाथ और मस्तक शायद कड़ी धूर लगने से काले हो गये थे । कमीज उसकी फटी-फटी सी थी और गले में टाई नदारद । काँट भी कई जगह से चिथड़ा हटा गया था और पतलून तो ऐसा मालूम होता था जैसे कोई उसे पहन कर हफ्तों सोया हो ! वह कुछ आवाज़ सा दिखाई देता था और जहाँ तक मैं सोच सका मैंने उसे शायद जीवन में पहली ही बार देखा था । मैं समझ रहा था कि पेरिस के जीवन का वह निष्ठुरतम उदाहरण है और थोड़े ही देर में कोई विपद कहानी गढ़ कर कुछ पैसा एंठने की चेष्टा करेगा । पतलून की जेब में हाथ डाले वह ठीक मेरे सामने खड़ा था : धीरे धीरे मुस्करा कर मेरी ओर देखते हुए उसने कहा—

‘आपने मुझे पहचाना ?’

‘विलकुल नहीं ! अपने जीवन में अब तक तुम्हारे ऐसा आदमी कभी नहीं देखा ?’

‘मैं चाहता था कि उसे कुछ पैसे देकर छुटकारा पा जाऊँ । घोखा-धड़ी में आकर मैं ठगाना नहीं चाहता था ।’

‘लैरी !’ उसने कहा—

‘लैरी ! हे ईश्वर ! अरे तुम यहाँ ! बैठो, बैठो ।’ मैंने विस्मय-पूर्ण आश्चर्य से कहा ।

‘मेरी परेशानी देखकर वह खिलखिलाया और सामने पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया ।’

‘तो कुछ-पियों !’ मैंने बिना उसकी अनुमति के खानसामा को बुला कर शन्तरे का शर्बत लाने का आदेश दिया । ‘तुम यह आशा कैसे करते थे कि इस नई सज-धज में तुम्हें मैं पहचान लूँगा । इतने बड़े हुए वाल ! खैरियत तो है ?’ उसकी चमकती हुई आँखें मेरी ओर एक टक देखती रहीं—उनमें एक आन्तरिक प्रकाश था और कभी कभी वे धूमिल हो जाती थीं ।

‘पेरिस में कितने दिनों से हो ?’ मैंने पूछा ।

‘एक महीना हुआ ।’

‘और कब तक ठहरोगे ?’

‘कुछ ही दिन और ।’

मैं प्रश्न तो करता जा रहा था मगर मेरा मस्तिष्क अत्यन्त व्यस्त था । उसका पतलून कई जगह से फटा था और उसके कोट की बाहों में कई जगह छेद थे—था भी वह विलकुल भिखारी जैसा । मैंने सोचा कदाचित् पिछली व्यावसायिक मंथनी में उसका सब कुछ डूब गया हांगा और वह पैसे पैसे को मुहताज है । मैं जरा स्वभाव से स्पष्ट—वक्ता हूँ और मैंने निस्संकोच उसकी आर्थिक स्थिति का पता लगाने का प्रयत्न किया ।

‘क्या तुम पर भी तवाही आ गई ?’

‘नहीं तो ?’ ‘आपको यह कैसे सूझा ?’

‘तुम्हारी यह फटी हालत और कपड़े-लत्ते दूसरा देखकर अनुमान ही क्या हो सकता है ?’

‘ऐसी बात है ?’ उसने आश्चर्य में कहा । ‘मैंने उन पर ध्यान ही नहीं दिया था । मैं चाहता था कि कुछ कपड़े-लत्ते बनवा लूँ, मगर कुरसन ही न मिली और मैं इधर ही उधर में रह गया !’ ‘लापरवाही कहिए ?’

मुझे खयाल आया कि कदाचित्त वह संकोच कर रहा है अथवा गर्व के कारण ऐसी बातें कर रहा है । क्योंकि मुझे यह विश्वास ही न हो सका कि कोई इतनी भी लापरवाही कर सकता है ।

‘कैसी बेवकूफी की बातें कर हो ! मैं कोई लखवनी नहीं मगर हजार दो हजार तो तुम्हें दे ही सकता हूँ—इतने में मैं विक्र नहीं जाऊंगा । अगर तुम्हें पैसे की कमी हो तो निस्संकोच कहना ?’

वह कहकहा मार कर हंस पड़ा । कई बार हंसने के बाद बोला—

‘बहुत बहुत धन्यवाद ! मुझे पैसे की बिलकुल आवश्यकता नहीं; जितना मेरे पास है उतना ही मैं नहीं खर्च कर पाता ?’

‘व्यावसायिक उथला-पुथल के बाद भी ?’

‘उसका प्रभाव मुझ पर जरा भी नहीं पड़ा । जो कुछ भी मेरे पास था वह सरकारी-वाँड में लगा हुआ था । अगर उनकी भी कीमत घट गई हो तो मैं नहीं जानता; मगर जब जब मैं रुपया निकालता रहा कोई अड़चन नहीं आई । मालूम होता है अमरीका की साख अब भी बनी हुई है । वास्तव में पिछले वर्षों में मैंने इतना कम खर्च किया है कि मेरा विचार है कि काफ़ी पूंजी इकट्ठी हो गई होगी ।

‘तुम अभी आ कहीं से रहे हो ?’

‘भारत से ।’

‘मुझे यह पता तो चल गया था कि तुम वहाँ गए हो । आइजा-

बेल ने ही मुझे यह बतलाया था। शायद तुम्हारे बैंक के मैनेजर द्वारा उन्हें खबर मिली थी।’

‘आइजाबेल !’ उन्हें आपने कब देखा ?

‘कल।’

‘मगर वह पेरिस में तो नहीं है ?

‘हैं कैसे नहीं ! इलियट की कांटी में रह रही हैं।’

‘बहुत खूब ! तब तो मैं उनसे अवश्य मिलूँगा।’

मैं अपनी आँखें उसके मुख पर गड़ाए उसके अन्तरतम की भावनाओं को समझने का प्रयत्न कर रहा था। उनमें केवल विस्मय ही था और किसी प्रकार की उत्तमन दृष्टिगोचर न हांती थी।

‘मेरे भी उनके साथ ही है। उनका विवाह हो गया है।’

‘हाँ ! मेरे चाचा डाक्टर नेल्सन ने मुझे सूचना दी थी। कई वर्ष हुए उनकी मृत्यु हो गई।’

मेरा अनुमान था कि डाक्टर नेल्सन की मृत्यु के बाद शिकागो से उनका रहा सदा सम्बन्ध टूट गया होगा और आइजाबेल के बारे में उन्हें कोई भी नवीन सूचना न मिल पाई होगी। मैंने उन्हें बतलाया कि आइजाबेल अब दो लड़कियों की माँ हैं, हेनरी मेटूरिन तथा श्रीमती लुइसा की मृत्यु हो गई; मेरे पर तबाही आ गई और इलियट की उदारता के कारण ही वे सुखी हो सके हैं।

‘क्या इलियट भी यहीं पर हैं ?’

‘नहीं।’

चालीस वर्षों में यह पहला ~~वर्ष~~ बसन्त का अवसर था जब इलियट पेरिस न आ सके थे। यद्यपि वे चेहरे-मोहरे से बुढ़े नहीं प्रतीत हांते थे परन्तु उनकी अवस्था सत्तर के ऊपर हो रही थी। इसी कारण कभी कभी उन्हें थकान मालूम होती और वह अक्सर बीमार रहते। टहलने के सिवाय कोई और कसरत भी वह नहीं करते थे। रह रह कर अपने स्वास्थ्य का उन्हें ध्यान आया

करता और हफ्ते में दो बार डाक्टर आकर बारी बारी उनके चूतड़ों में किसी प्रचलित फैशन वाली दवा की सुई लगाता और अनेक औषधियों से उनका पुनरुत्थान तथा मानसिक प्रफुल्लता बढ़ाने का प्रयत्न किया करता। खाना खाने के बाद एक सोने की डिबिया से दो सुनहली गोलियां निकाल वह दूध से निगल जाते और उनके मुख से ऐसा मीठा होता कि वह कोई मदान आध्यात्मिक कार्य कर रहे हैं। उनके डाक्टर ने उन्हें हवा बदलने को भी राय दी मगर जो गिरजाघर वह बनवाने वाले थे उसका नक्शा अब तक ठीक से तैयार न हो पाया था इसलिए उनका बाहर जाना न हो पाता था। पेरिस से उनका चित्त फट चला था क्योंकि वहां का वर्तमान समाज उनकी दृष्टि में निकम्मा, अश्लील तथा बर्बर होता जा रहा था। बुद्धे मनुष्यों से उनका मन न लगता था और युवाओं के प्रति उनकी ईर्ष्या और विरक्ति बढ़नी जाती थी। केवल गिरजाघर बनवाना ही अब उनके जीवन का मुख्य ध्येय हो गया था और उसको सजाने के लिए वह अनेक चित्रकारों के चित्रों का संकलन खरीदने में व्यस्त रहा करते थे। इस कार्य से उनको दो प्रकार की आत्मिक शान्ति मिली—एक तो चित्र खरीदने की लालसा पूरी होती और दूसरे ईश्वर की सेवा द्वारा परलोक बनाने का अवसर मिलता। देश-विदेश घूम-घूम कर वे चित्र और मूर्तियाँ, रंगीन पत्थर और कुर्सी-मेज इत्यादि खरीदते जाते और ईश्वर के ऐश्वर्य को बढ़ाने में सलग्न रहते।

‘पेरिस तो ग्रे को अवश्य अच्छा लगता होगा?’ लैरी ने पूछा।

‘जहाँ तक मैं जान पाया हूँ उनकी तबियत उचाट पर रहा करती है?’

मैंने उन्हें ग्रे की मानसिक स्थिति का विवरण बतलाना आरम्भ किया। मुझे ऐसा आभास मिल रहा था कि वह कानो से मेरी बात न सुन कर मनस्तल की किसी विशेष अंग द्वारा मेरी बातें सुनने का प्रयत्न कर रहे थे। मुझे उनकी आँखों की अन्तर्दृष्टि तथा उनके ध्यानावस्थित

मुद्रा से कुछ उलझन सी मालूम होने लगी।

‘जब मिलोगे तब स्वयं ही देखोगे ?’

‘अवश्य मिलूंगा। मैं बहुत उत्सुक हूँ ! उनका पता टेलीफोन की किताब में तो मिल ही जायगा।’

‘मिल तो जरूर जायगा। मगर मेरी सलाह है कि जरा अपनी धज बदल कर जाइएगा। इस धज में देख कर कहीं वे लोग पागल न हो जाय और बेचारे बच्चे कहीं घबरा कर भाग न जाय। वाल कटाने और दाढ़ी बनवाने में कुछ खर्च तो होगा मगर थोड़ी बहुत भलमनसाहत अवश्य आजायगी।’

वह हंसा।

‘यह तो मैं खुद ही सोच रहा था। मैं न तो उन्हें डराना चाहता हूँ और न अपनी नई सजधज से उन्हें प्रभावित ही करना चाहता हूँ।’

‘जहाँ इतना करने पर तत्पर हो वहाँ यह भी अश्छा होता कि एक कोट पतलून भी बिलवा लेते।’

‘आप ठीक कह रहे हैं; इन कपड़ों में मैं गन्दा जरूर मालूम होता हूँ; मगर जब मैं भारत से चला तो मेरे पास कोई और कपड़े ही न रह गए थे।’

इस संसर्ग की बातें खत्म कर हम लोग फिर ग्रे और आइजाबेल की बातें करने लगे। मैंने ही बात छेड़ी—

‘मैं तो बहुत दिनों से उन लोगों से मिलजुल रहा हूँ ? वे दोनों बहुत प्रसन्न दिखाई देते हैं। ग्रे तो अकेले में बात चीत का अवसर मिला नहीं मगर जब-जब मैंने आइजाबेल की बातें छेड़ी वह चुप ही रहे मगर मुझे विश्वास है कि आइजाबेल के प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह है। चेहरे से वह बहुत उदास और व्यस्त दिखाई पड़े मगर जब वह आइजाबेल की ओर देखने लगते उनकी आँखें मार्मिक करुणा से भर जाती और कभी-कभी सजल भी हो उठतीं। मेरा अनुमान है कि इस

घोर विपत्ति के समय आइजाबेल ने उनके प्रति जो सहानुभूति और भ्रद्धा रखी उसे सोच कर वह हबित हो जाते हैं और उसके प्रति अपने आदर और श्रृण की बे थाह नहीं लगा पाते । आइजाबेल भी बहुत बदल गई है ।'

मैंने उन्हें यह बतलाना न चाहा कि आइजाबेल इस समय दास्तव में पूर्ण सुन्दरी जान पड़ने लगी है और उसके उभय उराजों की उन्मुक्त उन्मुक्ता कहीं अधिक बड़ गई है । मेरा ऐसा अनुमान था कि आइजाबेल को देख कर भी उनकी आँखें उनके वर्तमान स्त्रियोचित सौन्दर्य के आकर्षण को न जान पाएँगी । कुछ लोग स्वभावतः स्त्रियों के सौन्दर्योत्पादक तथा सौन्दर्यवर्धक आधुनिक कलात्मक उपायों से विरक्त हो खीझ उठते हैं ।

'मेरे के प्रति उसकी बड़ी भ्रद्धा है और वह उसका स्वास्थ्य ठीक करने का भरमझ प्रयत्न कर रही है ।'

रान होने वाली थी और यकायक उसने उठ कर विदा माँगी । मेरे खाना खाने के निमंत्रण को भी उसने श्रन्यवाद-पूर्वक अस्वाकृत किया और जल्दी से होटल के बाहर हो गया ।

३

दूसरे दिन मैं ग्रे और आइजाबेल से मिलने गया । लैरी की सूचना पाते ही उन्हें मुझसे कहीं अधिक आश्चर्य हुआ । आइजाबेल तो उनसे मिलने के लिये बहुत उत्तीवली हो उठी—

'उन्हें फौरन ही यहाँ बुलाना चाहिए । बड़ा आनन्द रहेगा ।'

उसी समय मुझे यह स्मरण हो आया कि उनके ठहरने का स्थान तो मैं उनसे पूछना भूल ही गया । इतना सुनते ही आइजाबेल बौखला उठी और लगी मुझे खरी-खरी सुनाने । मगर मैं करता ही

क्या। मैंने अपनी सफाई देते हुए कहा—

‘कदाचित् मेरी अन्तर्चेतना ही इसकी जिम्मेदार है : आप लोगों को भी तो स्मरण होगा कि वह कभी अपने ठहरने का स्थान किसी से भी न बदलाते थे। यह उनकी पुरानी जिद रही है; वह किसी समय भी आ सकते हैं।’

‘तब तो वह विलकुल नहीं बदला है?’ अरे मेरा समर्थन करते हुए कहा। पहले भी वह वहीं होता जहाँ उसकी कभी कल्पना भी न होती। आज यहाँ तो कल वहाँ। कभी कभी तो बात करते ही करते वह अन्तर्ध्यान सा हो जाया करता था।’

‘उनकी बहुत सी बातों से बड़ी घबराहट होने लगती थी। यह तो मानना ही पड़ेगा कि अपने आगे वह किसी की भी चपने न देते थे। वह तभी आएंगे जब उनका मन होगा।’ आइजाबेल ने सैद्धांतिक मुलाक़ाति बनाते हुए कहा। लैरी न तो उस दिन आया और न उसके दूसरे दिन। कई दिन तक उसका पता न रहा। आइजाबेल ने मुझको झूठा समझा और कहा कि मैंने लैरी की कहानी केवल उन लोगों को सताने के लिए गढ़ ली है। मैंने बहुत कुछ सफाई दो मगर एक न चली। मेरा भी अनुमान हुआ कि शायद उसने यही निश्चय कर लिया हो कि उसका अरे और आइजाबेल से मिलना न तो उचित होगा और न आनन्ददायक और यही सोच कर वह कहीं और चन दिया होगा। क्या ठीक कि उसने पेरिस ही छोड़ दिया हो, क्योंकि ठिक कर तो वह कहीं भी नहीं रहा और एक ही मिनट के अन्दर वह कहीं भी, कितनी दूर भी, चलने का उद्यत हो जाया करता था। इसका मुझे पूरा स्मरण था।

अकस्मात् एक दिन वह आ ही पड़ा। पानी बरस रहा था। अरे, आइजाबेल और मैं—हम तानों बैठे हुए थे। मैं और आइजाबेल दोनों चाय का प्याला लिए हुए थे और अरे हिसकी ढाल रहा था। दरवाजा खुला। हम लोगों ने देखा कि बाहर लैरी खड़ा खड़ा मुस्कुरा रहा है।

आइजाबेल उसे देखते ही दौड़ पड़ी, और उसे अतिगन पाश में बांध कर उसके दोनों कपोलों पर स्नेहांकन देती हुई कुछ देर उ एकटक देखती रही। ग्रे का चेहरा कुछ और लाल हो गया था और उसने खड़े होकर बहुत देर तक उनमें हाथ मिलाया। उसका गल भर आया—

‘लैरी ! क्या बताऊं तुम्हें देख कर बड़ी प्रसन्नता हो रही है।’

अपने आंखों को बार बार रोकने के प्रयत्न में आइजाबेल अपने होठ काटती जा रही थी और उसकी आँखें सजल थीं।

ग्रे ने कुछ लड़खड़ाती जयान से कहा—‘भाई ! कुछ पियो ! न जाने कितने दिनों बाद मिले हैं।’

लैरी ने हम लोगों के हाथ में चाय के प्याले देखकर कहा—, तो चाय पीऊंगा ?’

‘चाय ! कैसे दकियानूसी हो !’ ग्रे ने कहा ‘शैम्पेन के सिवा कुछ भी नहीं मिलेगा !’

‘मुझे चाय ही पसंद रही है और अब भी है।’

उनकी शान्त-चित्ता तथा स्वाभाविक संयम ने सबको प्रभावित कर दिया। सब लोग अपनी अपनी जगह पर बैठ गए। हम सब उनकी सरल, स्निग्ध और गहरी आँखों में आँखें डाल देखते रहे। उन्होंने अपने व्यवहार में रूखापन जरा भी नहीं आने दिया। इसके विपरीत मुझे फिर ज्ञात होने लगा कि उनकी आँखों में किसी दूर देश का संकेत है परन्तु उनकी बोली में वही मिठास थी और उनकी मुद्रा में वही पुरानी, सरल गंभीरता।

‘आप उसी दिन हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आए ? क्या बड़ी शान हो गई है ?’ आइजाबेल ने कृत्रिम क्रोध की भावना लिए हुए कहा। ‘मैं पूरे हफ्ते भर सड़क पर आँखें लगाए खिड़की से झाँका की और जब जब घन्टी बजती मेरा कलेजा मुँह को आ जाता।’

लैरी अस्पष्ट हँसी हँसा। उसने मेरी ओर संकेत करके कहा—

‘इन्होंने ही मुझे डरा दिया कि मैं विलकुल आवारा मालूम देता हूँ और जब तक मैं नए कपड़े-लत्ते न बनवा लूँ तब तक तुम्हारी कोठी में नौकर खुशने नहीं देगा। इसीलिए कुछ कपड़े, सिलवाने में लन्दन चला गया था।’

मैंने अपने वचाव में कहा—‘अगर आपको कपड़े ही सिलवाने थे तो वे यहीं सिल सकते थे।’

‘मैंने सोचा कि अगर सिलवाने ही हैं तो फैशन के मुताबिक सिलें, उसमें कोर कमर क्यों रखी जाय : इसीलिए लन्दन जाना पड़ा। करीब दस वर्ष से मैंने कोई भी युरोपीय पोशाक न बनवाई थी और न पहनी। जब मैंने दर्जी से अपना सूट तीन दिन में देने के लिए कहा तो उसने पन्द्रह दिन की अवधि मांगी और अन्त में चार दिन पर समझौता हुआ। लन्दन से मुझे यहाँ आए सिर्फ बन्टा भर ही हुआ होगा।’

लैरी नीले सर्ज का सूट पहने हुए था जो उसके शरीर पर खिल भी खूब रहा था। सफेद कमीज पर नीली टाई और भी रंग ला रही थी। उसके जूते भूरे रंग के थे और मोजे भी उसी रंग के। शक्ल-सूरत से मानो वह फैशन का अवतार मालूम पड़ रहा था। सूरत उसकी ऐसी बदल गई थी कि यह विश्वास ही न होता था कि यह वही व्यक्ति है जिसे मैंने होटल में देखा था। उसके गालों के ऊपर की हड्डी उभर आई थी और उसकी कनपटी में गहरे गड्ढे दिखाई दे रहे थे। काले वालों से घिरा हुआ गिर, भुर्री-रहित चिकना मुँह उसकी युवावस्था का पूर्ण परिचय दे रहे थे। ग्रे से वह एक वर्ष छोटा था परन्तु देखने पर ग्रे इस समय उससे दस वर्ष बड़ा जान पड़ता था। ग्रे की चाल-ढाल उसकी स्थूलता के कारण भही मालूम हो रही थी और इसके विपरीत लैरी की स्वस्थ चाल और उसका दुबला शरीर उसके शारीरिक आकर्षण के मुख्य अंग थे। कभी-कभी तो उसकी चाल और बात-चात में लड़कपन की झलक दिखाई दे जाती

थी मगर साथ ही साथ उसके मुख पर इतनी शान्ति और सरलता थी जो कदाचित् मैंने कम व्यक्तियों में देखी थी। बातें जोरों पर थीं। पुराने मित्र अपनी-अपनी कहते जा रहे थे। कभी संवन्धियों की, कभी व्यवसाय की, कभी शिकायतों की, कभी अपनी बीती सुना रहे थे। आइजाबेल वही उत्कृष्टता से बातें करती जा रही थी और ऐसा ज्ञात होता था कि उसकी बातें रूकेगी ही नहीं। कभी-कभी हँसी से कमरा गूँज उठता और कभी शान्त वातावरण हटा जाता। मैं बार-बार लैरी के मनस्तल को परखने का प्रयत्न कर रहा था। यद्यपि वह निस्संकोच बातें कर रहे थे और बड़े सजीव रूप से सब का उत्तर देते जाते थे और सरलता और निष्पटता भी उनके प्रत्येक शब्द से टपकती थी फिर भी मेरा ऐसा विश्वास था कि उनको ध्यान कहीं और था और एक प्रकार की अन्तर्प्रेरणा उन्हें उस वातावरण से अलग-विलग किए हुए थी। उनकी आकृति और भ्रमंगिमा उस संकेत को और भी स्पष्ट कर रहे थे।

आइजाबेल की दोनों लड़कियाँ बुलाई गईं और उनको लैरी का परिचय दिया गया। परिचय पाते ही उन्होंने अपनी छोटी-छोटी गरदनें झटक कर सन्तोष प्रकट किया। लैरी ने उनसे हाथ मिलाया और अपनी सहज, आकर्षक तथा सुकोमल दृष्टि से उन्हें देर तक देखते रहे। और वह भी कुछ शान्त और गंभीर सुत्रा बनाए उन्हें घूरती रहीं। आइजाबेल ने उनके लिखने-पढ़ने की प्रशंसा करते हुए उनके कपोलों को चूमने के बाद उन्हें विदा किया—

‘तुम दोनों जाकर सो रहो; मैं थोड़ी देर में तुम्हारे पास आऊँगी।’ वह लैरी को जितनी देर हो सके देखने का लोभ संवरण न कर सकी।’

दोनों लड़कियाँ अपने पिता से मिलने गईं। वह दृश्य देखने योग्य था। ग्रे अपने मोटे भट्ठे अधरोष्ठों से उनका लालिमार्जित कपोल चूम कर आर्शावाद दे रहा था और उसके मोटे, भट्टे मुख पर

स्नेह और ममता की आँख-मिचौनी दिखाई दे रही थी।

‘बच्चे बड़े प्यारे हैं ! क्यों आइजाबेल !’ लैरी ने उन्हें प्रेम पूर्ण दृष्टि से देख कर कहा।

‘अगर ग्रे की चले तो वह इनको बिगाड़ कर रख दें। वह मुझे मिठाई न देकर इन्हीं को सारी मिठाई खिला देते हैं ?’

ग्रे ने मुस्करा कर आइजाबेल की ओर देखा—

‘प्रिये ! भूठ क्यों बोल रही हो और फिर जानबूझ कर। मैं तो तुम्हारे लिए सदैव आँखें बिल्खाए रहता हूँ।’ आइजाबेल की आँखों में शरारत-भरी मुस्कान चमक उठी जिसमें उसका मूक प्रत्युत्तर निहित था। वह प्रसन्न दिखाई दी। पति-पत्नी का आदर्श सुत्र भी यही है ? यहीं तो प्रेम की पराकाष्ठा है !!!

आइजाबेल ने आग्रह किया कि हम लंग खाना खाने के लिए ठहर जाय परन्तु मैंने सोचा कि वे एकान्त अवश्य चाहते होंगे और मैंने जल्दी से विदा माँगी। मगर आइजाबेल कब मानने वाली थी। ग्रे भी चाहते थे कि मैं ठहरूँ। फिर मैं भी तो यही चाहता था इसलिए उनका आग्रह क्यों कर टालता। आइजाबेल ने कहा कि खाने में कमी नहीं पड़ेगी—

‘मैं जाकर एक मिनट में सब ठीक किए देनी हूँ। शोरबे में गाजर बढ़वा दूँगी और वह हम चारों के लिए पर्याप्त हो जायगा। एक सुर्य भी है। आग और ग्रे टाँगें ले लेंगे; मैं और लैरी डेने; और शोरबा भी थोड़ा बहुत रहेगा ही।’

जब तक खाने का इन्तजार हाता रहा तब तक आइजाबेल लैरी से अपनी कहानी कहती रही। मैं उससे सब कुछ पता ले ही बतला चुका था मगर उसने खूब नमक मिर्च लगाकर विपत्ति की कहानी जितने खुशी से कही जा सकती थी कही। ग्रे का मुँह आइजाबेल की बातें सुन सुन कर उतरा चला जा रहा था और इसे देखते ही आइजाबेल ने सान्त्वना-पूर्वक कहा—

‘मगर जो बीत गई, बीत गई, इसका रोना क्या ? दुनियां बहुत लम्बी चौड़ी है और हम लोगों को पैरों पर खड़े होने में जरा भी देर नहीं लगेंगी । फिर सारा भविष्य भी आगे पड़ा है; ज्यों ही बाजार ठीक हुआ ग्रे फिर काम में जुट जायेंगे और लाखों के वारे-न्याये करेंगे ।’

खाना शुरू होने के पहले शराबें आईं । दो एक गिलास पीते ही ग्रे की उदासी दूर हो गई और उसका मुरझाया मुख हँसने लगा । लैरी को भी एक गिलास दिया गया जिसे उसने छुआ भी नहीं । ग्रे ने बिना देखे हुए खानसामा से दूसरा गिलास लाने का आदेश दिया मगर लैरी ने मना कर दिया । शैम्पेन खोजी गई और ग्रे ने जब लैरी का गिलास भरना शुरू किया तो उन्होंने फिर मनाकर दिया । तब आइजाबेल ने आग्रह किया—

‘एक गिलास तो लेना ही पड़ेगा । चाचा इलियट ने इसको बहुत दामों में मगवाई थी और इसे वह खास-खास मेहमानों को ही देते थे ।’

‘सच तो यह है कि मैं पानी ही पीने का आदी हूँ । इतने दिनों पूर्व में रहने के बाद पानी ही अच्छा लगता है और उसमें कोई खतरा भी नहीं रहता ।’

‘मगर आज के अवसर पर तो इन्कार न होना चाहिये’—वह मुस्कराई ।

‘अच्छी बात है; मैं एक गिलास ले लूँगा ।’

खाना बहुत ही अच्छा पका था; मगर आइजाबेल तथा मैंने देखा कि लैरी ने बहुत ही कम खाया । आइजाबेल को यकायक ध्यान आया कि कदाचित् वही सबसे ज्यादा बातें करती आई और लैरी केवल सुनते ही रहे हैं इसलिए उसने प्रश्न करने आरम्भ किए ।

लैरी अपनी स्वाभाविक सरलता से सबका उत्तर निष्कपट रूप से देते रहे । दस वर्षों में वह जहाँ-जहाँ रहे सबका संक्षिप्त वर्णन उन्होंने दिया मगर इतनी उड़ती हुई बातों की कि कुछ विशेष पता न चला

कि वह वहाँ क्या करते रहे ।

‘तुम तो जानती ही हो मैं आबारागर्दी पर निकला था । एक वर्ष जर्मनी में रहा फिर कुछ महीने स्पेन और इटली में मगर ज्यादातर पूर्व में ही चक्कर काटता रहा ।’

‘इस समय कहाँ से आ रहे हो ?’

‘भारत से ।’

‘वहाँ कितने दिनों रहे ?’

‘पूरे पाँच वर्ष ।’

‘कुछ मजा आया ?’ अ ने पूछा । ‘शेर-चीतों का शिकार भी किया ?’

‘नहीं ।’

‘तब पाँच साल तक भारत में क्या भुक्त मारते रहे ?’ आइजाबेल ने मुस्करा कर कहा—

‘इधर-उधर मौज में घूमता फिरा ?’ उसकी मुस्कान में तीव्र व्यंग था ।

‘अच्छा तुमने जादू की रस्सी से चढ़ते हुए आदमी आसमान में गायब होते देखे ?’ अ ने उत्सुकता से पूछा—

‘कभी नहीं ?’

‘फिर क्या देखा ?’

‘बहुत कुछ ।’

मैंने एक प्रश्न किया—

‘क्या यह सच है कि भारत में कुछ ऐसे योगी हैं जिनका चमत्कार देख कर मालूम होता है कि उनमें दैवी-शक्ति है ?’

‘दावे के साथ तो मैं नहीं कह सकता मगर यह सच है कि समस्त भारत में ऐसा लोक-प्रिय विश्वास अवश्य है । परन्तु वहाँ के सन्त इसकी कुछ भी महत्ता नहीं मानते । इस प्रकार की शक्ति को वे आध्यात्मिक प्रगति में बाधक समझते हैं । एक महात्मा ने मुझे

वतलाया कि वहाँ एक ऐसा ही योगी था जो इस तरह की शक्ति का प्रयोग किया करता था। एक दिन वह नदी किनारे आया और मांभी में पार चलने को कहा। मगर मांभी मुफ्त में उसे पार ले जाने पर राजी न हुआ। योगी अपना खड़ाऊँ पहने पानी पर लगानार चलता चला गया और नदी पार कर लिया। जिस सन्त से मैंने यह कहानी कही उसने घृणायुक्त स्वर में कहा—

‘इस तरह का चमत्कार अत्यन्त निकृष्ट कोटि का है; इसका मूल्य तो केवल एक पैसा है क्योंकि एक पैसा देकर आदमी नाव में उस पार जा सकता है।’

‘क्या आपको विश्वास है कि योगी पानी पर चलता गया और पार पहुँच गया?’

‘जिस योगी ने मुझे यह वतलाया उसको इस बात पर पूर्ण विश्वास था।’

लैरी की बातें सुनने में अपूर्व आनन्द आ रहा था क्योंकि उनका स्वर बहुत ही मीठा, कोमल और भावानुकूल विभिन्नतापूर्ण था। खाना समाप्त कर हम लोग बैठक में आराम से काफी पीने लगे। मैं भारत कभी नहीं गया था और वहाँ के विषय में मेरी उत्सुकता बहुत थी—

‘कुछ लेखकों और दार्शनिकों से भी आपकी भेंट हुई?’

‘दोनों में तो जमीन आसमान का भेद है’—आइजाबेल ने मुझे चिढ़ाने की इच्छा से कहा।

‘इसी में तो मेरा विशेष समय कटता था।’ लैरी ने उत्तर दिया।

‘उनसे बातें आप किस भाषा में करते थे? अंग्रेजी में?’

‘उनमें कुछ तो टूटा फूटी अंग्रेजी बोल लेते थे मगर समझ बहुत ही कम पाते थे। मैंने स्वयं हिन्दुस्तानी सीख ली और जब मैं दक्षिण गया तो वहाँ की तामिल भाषा भी सीखी, इससे मेरा काम बहुत आसानी से चलता रहा।’

‘कितने प्रकार की भाषा आप बोल सकते हैं ?’

‘ठीक-ठीक तो याद नहीं—यही छः या सात ।’

‘योगियों के विषय में मुझे कुछ और बतलाइए ? क्या आपकी किसी से घनिष्ठता भी हुई ?’ आइजाबेल ने उत्सुकता से पूछा ।

‘जो व्यक्ति अनन्त-चिन्तन में लगे रहते हैं उनसे घनिष्ठता बढ़ ही कितनी सकती है ।’ वह मुस्कराया—‘मैं एक योगी के आश्रम में दो वर्ष रहा ।’

‘दो वर्ष ।’ ‘आश्रम क्या चीज है ?’

‘वहाँ योगी रहा करते हैं; वे साधुओं का जीवन व्यतीत करते हैं । ज्यादातर वे अकेले ही रहते हैं—कभी हिमालय पहाड़ पर, कभी पर्वतीय कन्दराओं में, कभी जंगलों में, कभी मन्दिरों में । कुछ ऐसे भी हैं जो शिष्य बना कर विद्यार्थियों को अपने साथ रखते हैं । कभी कभी दानी व्यक्ति धर्म के नाते अपना परलोक बनाने के लिए कुछ एक कमरे बनवा कर उस योगी को, जिसकी धार्मिकता से वे प्रभावित होते हैं, दान दे देते हैं । योगी के शिष्य भी वहीं रहते हैं और कभी तो वे वरामदे में सोते हैं, कभी चौके में या पेड़ के नीचे ही बिस्तर लगा देते हैं । मेरे लिए एक छोटी सी कुटिया थी जिसमें मैंने अपनी तारपाई, एक कुर्सी, एक टेबुल और एक किताब रखने की आलमारी लगा रखी थी ।’

‘कहाँ पर रहे थे आप ?’

‘प्रवनकोर में । यह नगर हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा है और मन्द-मन्द बहती हुई नदियों से सारा प्रदेश भरा हुआ है । पहाड़ों पर कभी कभी शेर, चीते, हाथी और लगली भैंसे दिखाई दे जाते थे मगर आश्रम एक घाटी में बना हुआ था जहाँ नारियल और ताड़ के पेड़ों का छोटा अद्वितीय वन था । शहर से वह स्थान चार-पाँच मील की दूरी पर था मगर अक्सर लोग मीलों पैदल चल कर योगी के दर्शन करने आते थे । जब कभी वह प्रवचन देते तब भी सैकड़ों की भीड़ इकट्ठा

हो जानी। कभी कभी जब दोनों मौन हो जाते तो एकत्रित लोग केवल उनके सम्मुख बैठकर ही अनन्त शान्ति का अनुभव करने लगते। ऐसा मालूम होता था कि उनके सामीप्य में फूलों का पराग और गुग्गुलु उठ-उठ कर सम्पूर्ण वातावरण को मुरमित कर रहा है।

अंशु अचानक ने हाँकर इधर उधर देखने लगे। मेरा अनुमान था कि इस प्रकार के वार्तालाप में उन्हें उलझन मालूम हो रही थी। उन्होंने मेरी ओर देख कर कहा—

‘लॉजिए, कुछ पॉजिए ?’

‘धन्यवाद ! इस समय आवश्यकता नहीं !’

‘मैं तो एक गिलास और लूँगा ?’ ‘आइजाबेल ! तुम भी तो लो !’ आइजाबेल चुप रही।

‘वहाँ कुछ अन्य सुनोती भी थे या आप अकेले थे ?’

‘मैं ही अकेला था ?’

‘दो वर्ष तक कैसे रहे ?’ आइजाबेल ने आश्चर्य में पूछा।

‘समय तो देखते-देखते बीत गया ? जीवन में पहले तो मैंने एक-एक दिन ऐसे बिताए हैं जो वर्ष के समान मालूम होते थे।’

‘दिन भर करते क्या रहते थे ?’

पढ़ता था, घूमता था, नदी की सैर करता था और साधना में समय लगाता था। साधना बड़ी कठिन होती है और दो तान घण्टे के बाद ऐसी थकान मालूम होती है जैसे कोई चार-पाँच सौ मील मोटर चला कर आ रहा है।

आइजाबेल की त्वोरी चढ़ रही थी। उसे यह सब बातें पहेली समान थीं और वह कुछ डरी-डरी सी दिखाई देती थी। मेरा अनुमान है कि वह यह समझ रही थी कि तैरी पढ़ते से बिल्कुल ही बदला हुआ है। यद्यपि न तो उसकी वेश-भूषा बदली, न बात-चात का ढङ्ग ही बदला मगर उसमें कुछ ऐसा अव्यक्त परिवर्तन आ गया है जिसके फलस्वरूप वह उसके हाथ के बाहर की चीज प्रतीत हो रहा था।

‘कितने प्रकार की भाषा आप बोल सकते हैं ?’

‘ठीक-ठीक तो याद नहीं—यही छुः या सात ।’

‘योगियों के विषय में मुझे कुछ और बतलाइए ? क्या आपकी किसी से घनिष्ठता भी हुई ?’ आइजाबेल ने उत्सुकता से पूछा ।

‘जो व्यक्ति अनन्त-चिन्तन में लगे रहते हैं उनसे घनिष्ठता बढ़ ही कितनी सकती है ।’ वह मुस्कुराया—‘मैं एक योगी के आश्रम में दो वर्ष रहा ।’

‘दो वर्ष ?’ ‘आश्रम क्या चोज है ?’

‘वहाँ योगी रहा करते हैं; वे साधुओं का जीवन व्यतीत करते हैं । ज्यादातर वे अकेले ही रहते हैं—कभी हिमालय पहाड़ पर, कभी पर्वतीय कन्दराओं में, कभी जंगलों में, कभी मन्दिरों में । कुछ ऐसे भी हैं जो शिष्य बना कर विद्यार्थियों को अपने साथ रखते हैं । कभी कभी दानी व्यक्ति धर्म के नाते अपना परलोक बनाने के लिए कुछ एक कमरे बनवा कर उस योगी को, जिसकी धार्मिकता से वे प्रभावित होते हैं, दान दे देते हैं । योगी के शिष्य भी वहीं रहते हैं और कभी तो वे बरामदे में सोते हैं, कभी चौके में या पेड़ के नीचे ही बिस्तर लगा देते हैं । मेरे लिए एक छोटी सी कुटिया थी जिसमें मैंने अपनी तारपाई, एक कुर्सी, एक टेबुल और एक किताब रखने की आलमारी लगा रखी थी ।’

‘कहाँ पर रहे थे आप ?’

‘द्रावनकोर में । यह नगर हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा है और मन्द-मन्द बहती हुई नदियों से सारा प्रदेश भरा हुआ है । पहाड़ों पर कभी कभी शेर, चीते, हाथी और जंगलों में से दिखाई दे जाते थे मगर आश्रम एक घाटी में बना हुआ था जहाँ नारियल और ताड़ के पेड़ों का लड़ा अद्वितीय था । शहर से वह स्थान चार-पाँच मील की दूरी पर था मगर अक्सर लोग मीलों पैदल चल कर योगी के दर्शन करने आते थे । जब कभी वह प्रवचन देते तब भी सैकड़ों की भीड़ इकट्ठा

हो जानी। कर्मी कभी जब दोगी मौन हो जाते तो एकजित लोग केवल उनके सम्मुख बैठकर ही अनन्त शान्ति का अनुभव करने लगते। ऐसा मालूम होता था कि उनके सामीप्य से फूलों का पराग और सुगन्ध उठ-उठ कर सम्पूर्ण बानावरण को सुरमिन् कर रहा है।

ब्रेकुल अनमने ने होंकर इधर उधर देखने लगे। मेरा अनुमान था कि इस प्रकार के वार्तालाप में उन्हें उलझन मालूम हो रही थी। उन्होंने मेरी ओर देख कर कहा:

‘लॉजिए, कुलु पीजिए ?’

‘धन्यवाद ! इस समय आवश्यकता नहीं ?’

‘मैं तो एक गिलास और लूँगा ?’ ‘आइजाबेल ! तुम भी तो लो ?’ आइजाबेल चुन रही।

‘वहाँ कुछ अन्य युगोरीर भां थे या आप अकेले थे ?’

‘मैं ही अकेला था ?’

‘दो वर्ष तक कैसे रहे ?’ आइजाबेल ने आश्चर्य में पूछा।

‘समय तो देखते-देखते बीत गया ? जीवन में पहले तो मैंने एक-एक दिन ऐसे बिताए हैं जो वर्ष के समान मालूम होते थे।’

‘दिन भर करते क्या रहते थे ?’

पढ़ता था, घूमता था, नदी की सैर करता था और साधना में समय लगाता था। साधना बड़ी कठिन होती है और दो तीन घण्टे के बाद ऐसी थकान मालूम होती है जैसे कोई चार-पाँच सौ मील मोटर चला कर आ रहा है।

आइजाबेल की त्थोरी चढ़ रही थी। उसे यह सब बातें पहेली समान थीं और वह कुछ डरी-डरी सी दिखाई देती थी। मेरा अनुमान है कि वह यह समझ रही थी कि लैरी पहले से बिलकुल ही बदला हुआ है। यद्यपि न तो उसकी वेश-भूषा बदली, न बात-चात का ढङ्ग ही बदला मगर उसमें कुछ ऐसा अव्यक्त परिवर्तन आ गया है जिसके फलस्वरूप वह उसके हाथ के बाहर की चीज प्रतीत हो रहा था।

उसका पुराना परिचित लैरी—सस्ल, सुबोध, सुकोमल प्रवृत्तियों वाला लैरी जिसको वह अपनी उंगलियों पर नचा सकती थी—वह लैरी जो उसका वातें ध्यान से सुन-सुन कर मुस्कुराता रहता—वही लैरी हाथ में पकड़ी हुई सूर्य-रश्मि के समान उसकी मुट्ठी से निकल गया। मैं उसको बहुत ध्यान से देख रहा था—उसे देखने में ही विशेष आनन्द मिला करता था। जब आइजाबेल की आँखें लैरी के घने बालों पर पड़तीं तो ऐसा ज्ञात होता मानों उन आँखों में असीम प्यार की लहर उमड़ती चली आ रही है। लैरी के कानों में वह कुछ अव्यक्त सन्देश कहते प्रतीत होती। ज्यों-ज्यों उसकी आँखें लैरी के चिकने मुख, शान्त नेत्र, सीधी नाक और पतले होठों से फिसलती, हुई उनके वक्षस्थल पर टिक जातीं तो एक अस्पष्ट वेदना से उसकी पुतलियाँ भर उठतीं। वह बहुत देर तक उनके पतले, लम्बे हाथों को देखती रही। नए कपड़े वह ऐसे सहज-रूप से पहने थे मानों वह उन्हें वचपन से ही पहनते आ रहे हैं। मुझे ऐसा आभास होता कि उन्हें देखते ही आइजाबेल की आँखें मातृत्व की ममता से भर उठतीं। कदाचित् उसके दोनों वच्चों से कहीं अधिक मात्रा में लैरी द्वारा उसमें ममता जाग्रत हो रही थी। वह अनुभवी स्त्री समान थी; लैरी उसके सामने बालक सा था। उसके मुख पर अपने बालक के प्रति गर्व की भावना व्यक्त होती जा रही थी। जो कुछ वह कह रहे थे यद्यपि उसकी समझ के बिलकुल परे था फिर भी वह एकटक उनकी ओर अपनी आँखें लगाए थी।

मैंने पुनः अपने प्रश्न आरम्भ किए।

‘वह यांगी था कैसा?’

‘देखने सुनने में या बात चीत में? देखने में न तो वह बहुत लम्बे थे, न मोटे, न दुबले; बाल बहुत छोटे और सफेद थे और रंग था—दमकता हुआ—साँवला। मैंने उन्हें सिर्फ एक लंगोटी ही लगाए देखा मगर वह उसे इस तरह से बाँधते थे मानो किसी बहुत

ही फैशनेबिल दुकान से वह खरीदी गई हो ।’

‘उनमें आने विशेष आकर्षण की क्या बात देखी ?’

‘लैरी कई मिनट तक मेरी ओर ऐसे देखते रहे मानों उनकी आँखें मेरे अन्तरतम की ओर घूर रही हों । तत्पश्चात् बोले—

‘साधुता ।’

इस उत्तर ने मेरा सन्तोष न हो सका । उस बड़े कमरे में जिसमें रंग विरंगी तस्वीरें लगी थीं और भारी-भारी कुर्सी-मेजें सजो हुई थीं, उनमें इस शब्द से ऐसा प्रतीत हुआ जैसे बालू में पानी की छींट पड़ गई हो ।

‘हम लोगों ने अनेक सन्तों की कहानियाँ पढ़ी हैं जो हजारों वर्ष पहले संसार में आए मगर मैं जीता-जागता सन्त देख लूँगा इसकी मुझे कल्पना तक न थी । जिस क्षण मैंने उन्हें देखा मुझे विश्वास हो गया कि वास्तव में जो व्यक्ति मेरे सम्मुख खड़ा है कोई महान आत्मा है; उस समय मुझे स्वर्गीय अनुभव हुआ ।’

‘मगर आपको उनसे मिला क्या ?’

‘शान्ति ।’ उन्होंने मुस्कुरा कर कहा । इतना कह कर वह यकायक उठ बैठे और जाने के लिए विदा माँगी ।

‘इतनी जल्दी क्या है ?’ ‘अभी तो कुछ देर भी नहीं हुई !’ आइजाबेल ने आग्रह किया ।

‘लैरी ने जैसे उसकी बात सुनी ही न हो—‘नमस्कार !’ कह कर वह उठ चले । चलते-चलते आइजाबेल के कपोलों पर स्नेह-चिन्ह अंकित कर वह दरवाजे की ओर बढ़े ।

‘मैं दो एक दिन में फिर आकर मिल जाऊँगा ।’

‘मगर ठहरे कहाँ हो ? मैं स्वयं बुलवा लूँगी ?’

‘उसमें परेशानी होगी; पेरिस में टेलीफोन का नम्बर यों ही बड़ी मुश्किल से मिलता है और फिर हमारा टेलीफोन हमेशा बिगड़ा ही रहता है ।’

जिस सफाई से लैरी ने अग्रना पता बताने से इन्कार किया उस पर मैं मन ही मन हँस रहा था। उनकी यह स्वाभाविक विचित्रता थी। चलते-चलते मैंने सब को दूसरे दिन खाने का निमन्त्रण दे दिया और वह स्वीकृत भी हो गया। लैरी और हम दोनों साथ ही साथ बाहर सड़क पर आए और मैंने विचार किया कि मैं उनको कितना दूर पहुँचा दूँगा। सड़क पर आते ही उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया, नमस्कार किया और गल की गली में गायब हो गये।

४

हम लोगों ने यह तय किया था कि सब लोग आइजाबेल के यहाँ इकट्ठे होंगे और वहीं में साथ-साथ खाना खाने चलेंगे। बच्चे के पहले शराब की व्यवस्था भी कर ली गई थी। लैरी के पहुँचने के बहुत पहले मैं वहाँ पहुँच गया था। मैंने उन्हें पेरिस के सब से फैशनेबिल होटल में खाना खिलाने का इन्तजाम कर रखा था और मेरा विश्वास था कि आइजाबेल अबसर के अनुकूल अत्यन्त सुन्दर कपड़े पहन कर निकलेगी और होटल में पहुँचते ही सब को चकाचौंध में डाल देगी। परन्तु मुझे आइजाबेल को देख कर बड़ा असन्तोष हुआ—वह केवल एक सादा ऊनी फ्राक पहने हुए थी।

‘मेरे को आज फिर सिर दर्द का दौरा उठ गया है; उन्हें घोर वेदना हो रही है और मैं उन्हें छोड़ कर कहीं न जाऊँगी। मैंने रसोइये को छुट्टी दे दी है। बच्चों को खिलाने-पिलाने के बाद मेरे लिए स्वयं कुछ खाना बना कर ले जाऊँगी तभी वह शायद कुछ खा सकेंगे। आप और लैरी-दोनों को अकेले ही जाना पड़ेगा।’

‘क्या मेरे सो रहे हैं?’ मैंने सहानुभूति-सूचक शब्दों में कहा।

‘नींद उन्हें कहाँ आती है—अगर नींद ही आ सकती तो सब कष्ट ही मिट जाता। पुस्तकालय में बैठे हुए अपना सिर पीट रहे हैं।’

भहे गाँवों पर मांस सिकुड़ने लगा और मांस-पेशियाँ अन्दर ही अन्दर तड़प कर अपना दर्द बाहर निकाल फेंकने की चेष्टा करने लगीं। दरवाजा धीरे धीरे खुला और लैरी अन्दर आये। आइजाबेल ने जल्दी-जल्दी ग्रे के सिर-दर्द की कहानी कहूँ डाली।

‘मुझे बहुत दुःख है।’ उन्होंने ग्रे पर करुण-दृष्टि डालते हुए कहा। ‘इनका दर्द हटाने के लिए क्या कुछ भी नहीं हो सकता?’ वह कुछ सोचने लगे।

‘कुछ नहीं भाई!’ ग्रे ने आँखें बन्द ही किए हुए कहा। ‘सबसे अच्छी बात यही है कि आप सब लोग मुझे चुपचाप एकान्त में छोड़ दें और जाकर खाना वगैरह खा आएँ।’

मैंने सोचा कि ठीक तां यही होगा मगर मेरा अनुमान था कि आइजाबेल ग्रे को छोड़ चलेने पर राजी न होगी और उसकी आत्मा उसे क्षमा न करेगी।

‘अच्छा। जरा मैं तो देखूँ कि तुम्हारा दर्द हटाने में सफल होता हूँ या नहीं?’ लैरी ने कहा—

‘मेरा दर्द दूर करने में कोई सफल नहीं होगा। वस मेरी जान निकल जाती तो सब ठीक हो जाता।’ ग्रे ने आन्त-स्वरो में कहा।

‘तुमने शायद मुझे गलत समझा। मेरा मतलब था कि दर्द तो तुम स्वयं ही दूर करते और मैं केवल तुम्हारी उसमें सहायता करता।’ लैरी ने दृढ़ स्वरों में उत्तर दिया।

ग्रे ने अपनी आँखें धीरे-धीरे खोल कर लैरी की ओर देखा।

‘यह कैसे हो सकता है?’

अपनी जेब से लैरी ने एक चांदी का गोल, भद्दा सा सिक्का निकाला और उसे ग्रे की मुट्ठी में रख दिया।

‘अपनी मुट्ठी कसते जाओ और उँगलियाँ नीचे की ओर रखो। चुपचाप रहो। देखो! दृढ़ मत करना। चेष्टा भी कुछ न करना केवल इस सिक्के को मुट्ठी में कस कर पकड़े रहो। जब तक मैं बीस तक

गिनती गिन्नूँगा तिकका तुम्हारे हाथ से अपने आप छूट कर जमीन पर आ गिरेगा ।’

जैसा कहा गया था ग्रे ने वंसा ही किया । लैरी सामने की मेज पर बैठ गये और गिनती गिनने लगे ।

मैं चुपचाप खड़ा था; आइजाबेल भी कोने में दबकी हुई थी । एक, दो, तीन, चार—गिनती आरंभ हुई । पन्द्रह तक गिनने पर भी कोई विशेष प्रभाव न विदित हुआ । इसके एक क्षण बाद ही मुझे ऐसा लगा जैसे ग्रे की उँगलियाँ काँप रही हों; उँगलियाँ ढाली होने लगीं; अंगूठा फलग हुआ और ज्योंही गिनती उन्नीस तक पहुँची मुट्ठी खुल चुकी थी और तिकका भूत ने जमीन पर मेरे पैरों के पास लुङ्कता हुआ आ गिरा । मैंने उसे उठा लिया । तिकका काफी भारी था और भद्दी तरह ने बना था । उसके एक और किमी राजा का चित्र था । मुट्ठी अपने आप खुल जाने के कारण ग्रे अत्यन्त चकित थे—

‘मैं सच कहता हूँ मैंने अपने आप तिकका नहीं गिराया ।’

वह अपने सिर को दाहिने हाथ पर रखे बैठा हुआ था ।

‘तुम्हें इस कुर्सी पर आराम तो है ?’ लैरी ने पूछा ।

‘जब मुझे शिर-पीड़ा सताती है तो मुझे यहीं पर आराम मिलता है ।’

‘अच्छा ! आराम से हाथ पैर ढीले कर बैठ जाओ । किसी प्रकार की चेष्टा न करो । कुछ मत करो । बस चुपचाप शान्त, निस्चेष्ट बैठे रहो । ज्यों ही मैं बीस तक गिनती गिन्नूँगा त्योंही तुम्हारा दाहिना हाथ उठेगा । वह हाथ उठकर तुम्हारे सिर पर जायगा और वहाँ से पूरा ऊपर उठ जायगा ।’

‘एक, दो, तीन, चार ।’

लैरी धीरे-धीरे, दृढ़तापूर्वक अपने कोमल, सुमधुर स्वर से गिन रहे थे ।

‘पाँच, छः, सात, आठ ।

ज्योंही वह नौ तक पहुँचे ग्रे का दाहिना हाथ उठना आरम्भ हुआ और कुर्सी के हत्ये से दो इंच उठकर रुक गया।

‘दस, ग्यारह, बारह, तेरह।’

बांह को एक झटका सा लगा। धीरे धीमे पूरी बांह उठने लगी। हत्ये का सहारा अब विलकुल नहीं रहा। आइजाबेल ने डर कर मेरा हाथ पकड़ लिया। विचित्र दृश्य था। हाथ स्वाभाविक रूप से उठता हुआ नहीं मालूम पड़ा और ऐसा जान पड़ता था मानो कोई आदमी सोते से उठकर चल दिया हो। जानबूझ कर और होश में होते हुए उस तरह कोई भी हाथ नहीं उठा सकता था। इच्छा-शक्ति का ताँ बहाँ लेश भी नहीं था। कदाचित् मनःस्तल का कोई संकेत ही हाथ उठाये जा रहा था।

‘पन्द्रह, सोलह, सत्रह।’

जिस तरह किसी एक छेद से पानी टप टप किसी बाल्टी में गिरे उसी प्रकार एक के बाद दूसरी गिनती लैरी के मुख से निकल रही थी। ग्रे का हाथ उठने लगा। उठते, उठते, उठते सिर के ऊपर तक उठा और सिर पर दो चार क्षण रुक कर एक दम से कुर्सी के हत्ये पर गिर पड़ा।

‘मैंने अपना हाथ विलकुल ही नहीं उठाया—न जाने कैसे वह अपने आप ही उठ गया।’ ग्रे ने समझाते हुए कहा।

लैरी धीरे-धीरे मुस्कुरा रहे थे।

‘इसकी परवाह मत करो। मैं केवल यही चाहता था कि तुममें कुछ विश्वास की मात्रा बढ़ जाय। वह सिक्का तुमने कहाँ रखा?’

मैंने फौरन ही सिक्का उनके हवाले किया।

‘इसको अपनी मुट्ठी में रखो।’ ग्रे ने मुट्ठी बाँध ली। लैरी ने अपनी घड़ी निकालते हुए कहा—

‘अभी सवा आठ बजे हैं। साठ सेकेंड के अन्दर तुम्हें सो जाना होगा। तुम्हारी पलकें मारी होंगी; तुमको सोना पड़ेगा। तुम केवल ६ मिनट सोवांगे। तुम्हें आठ बज कर चौबीस मिनट पर अपनी आँखें

खोलनी होंगी। उस वक्त तुम जागोगे और तुम्हारे सिर का दर्द विलकुल गायब हो जायगा।’

आइजाबेल और मैं चुपचाप स्तब्ध खड़े थे जैसे कोई स्वप्न देख रहे हों। हम दोनों की आँखें लैरी पर जमी हुई थीं। वह चुपचाप एकटक ग्रे का देव रहे थे मगर उनकी आँखें जैसे उसको पार करती हुई न जाने किस अनीम की भेदनी चली जा रहीं थीं। उस शान्त बानावरण में एक विचित्र सूनापन और उत्सुकता थी—मानो रात में किसी बाटिका में फूल बिलते जा रहे हों। यकायक मैंने देखा कि आइजाबेल ने मेरा हाथ कस कर पकड़ लिया। मेरी निगाह ग्रे पर जा पड़ी। उनकी आँखें बन्द हो गई थीं। वह लगातार धीरे-धीरे सांस ले रहा था। नींद का प्रभाव उस पर पूरा पूरा था। ब्रह्मसो गया। छ मिनट हम लोगों के लिए युग-ममान बात रहा था। मैंने चाहा कि सिगरेट जला लूँ जिससे धवराष्ट मिट जाय मगर मेरी इतनी हिम्मत न पड़ी कि दिवासलाई जलाऊँ। लैरी मूर्तिवत खड़े थे। उनकी आँखें ग्रे के शरीर का चोरती हुई अनन्त को भेदती चली जा रहीं थीं। आँखें खुली तो थीं मगर ऐसा ज्ञात होता जैसे उन पर किसी ने जादू कर दिया हो। धीरे-धीरे उसकी आँखें शिथिल होने लगीं और अपने साधारण रूप पर आ गईं। लैरी ने घड़ी निकाल कर देखा। उसी समय ग्रे ने आँखें खोल दीं।

शायद मैं कुछ देर के लिए सो गया था। उसने कहा। ‘अरे ! मेरा दर्द तो विलकुल गायब है।’

उसके मुख पर छाई हुई मुर्दनी गायब हो गई थी। लैरी ने सन्तोष-प्रद स्वर में कहा—

‘तुम विलकुल ठीक हो; लो एक सिगरेट जलाओ और हम सब खाना खाने साथ चलेंगे।’

‘यह तो बड़े आश्चर्य की बात हुई है; मेरी तपियत तो अब ऐसी है जैसे मैं कभी बीमार ही न था; यह तो बातलाओ कि यह हुआ कैसे?’

‘मैंने क्या किया ? कुछ भी तो नहीं ! सब कुछ तुमने अपने आप ही किया है ।’

आइजाबेल कपड़े बदलने चली गई । मैंने और ग्रे ने एक एक गिलास उठा लिया । लैरी ने इस घटना पर बात न करना चाहा मगर ग्रे कब मानने वाला था—

‘मुझे पहले तो विश्वास नहीं आया कि तुम्हारी बातों से कोई फायदा होगा मगर दर्द के मारे मैं वहम भी नहीं कर सकता था इसी लिए मैंने तुम्हारी बात मान ली ।’

हम बीमारी का आरम्भ कैसे हुआ, उसने क्या क्या इलाज किया, कहाँ कहाँ इस सिलसिले में गया और इस पीड़ा के फल स्वरूप वह कितना व्यथित और हताश हो उठता था, ग्रे ने बड़े विस्तार से बतलाया । वह किस प्रकार अब इतना स्वस्थ मालूम हो रहा था वह स्मरण न पाता । आइजाबेल कपड़े बदल कर लौट आई । वह ऐसी पोशाक पहने थी जिसे मैंने पहले नहीं देखा था—चम्बा नाया जो जमीन तक लटकता था और ऐसा चमकदार फ्राक जिसे देख कर स्वर्ग की अप्सरा का अनुमान होता था । मुझे विश्वास हो गया कि वह होटल में पहुँचने ही सबकी आंखों में ससा जायगी ।

होटल में बड़ी चहल-पहल थी । लैरी मजेदार बातें करते चलते और हम सब हँसते रहते । उन्होंने अपनी बातों से हम लोगों का इतना मनोरंजन शायद ही कभी किया था । मेरा अनुमान है कि जिस विचित्र प्रयोग से उन्होंने ग्रे को स्वस्थ कर दिया उस पर वह चर्चा न होने देना चाहते थे और इसीलिये हम लोगों का ध्यान इधर-उधर बटा रहे थे ।

मगर आइजाबेल की उत्सुकता बहुत बढ़ी-चढ़ी थी । वह समझ रही थी कि लैरी बातें बना रहा है और मन ही मन समझ कर वह भोली बनी हुई सुनती रही । मगर ख़िशा अपने ध्येय को कब भूली हैं ! जब हम लोग खाना खा चुके, शराब चल चुकी और काफी की बारी आई तब आइजाबेल को अवसर मिला । वह समझ रही थी कि

जब लैरी ने पूरा गिलास खाली कर लिया और हँस-हँस कर बातें शुरू कीं तब उस पर सफलता-पूर्वक वार हो सकता था ।

‘अच्छा अब इधर-उधर की बातें छोड़ कर यह बतलाइए कि आपने ग्रे को अच्छा कैसे किया ?’

‘यह तो आप लोगों ने स्वयं ही देखा; उसमें बतलाने की क्या बात है ?’ वह मुस्कुराया ।

‘क्या आपने भागत में ही इस कला को सीखा ?’

‘हाँ ।’

‘ग्रे की वेदना मुझसे देखी नहीं जाती । क्या आप सदा के लिए उन्हें स्वस्थ कर सकते हैं ?’

‘कह नहीं सकता । कोशिश करूँगा ।’

‘अगर वह अच्छे हो गये तो उनका जीवन बन जायगा । इस बीमारी ने उन्हें हतभाग्य कर दिया है । वह जब घंटों बिमारि रहते हैं तो किसी नौकरी की भी आशा नहीं हो सकती और जब तक वह काम में नहीं लग जायेंगे तब तक उन्हें शान्ति भी नहीं मिलेगी ।’

‘मैं कोई जादूगर तो हूँ नहीं । यह तो तुम जानती ही हो !’

‘मगर काम तो जादू का ही किया है ? यह अपनी आंखों हम सबने देखा है ।’

‘ऐसा तो कहना गलत है । मैंने सिर्फ ग्रे के मस्तिष्क में एक नवीन भाव ला दिया और जो कुछ भी हुआ उन्होंने किया ।’

उन्होंने ग्रे की ओर देखा—‘कल तुम्हारा क्या प्रोग्राम है ?’

‘मैं कल गोल्फ खेलने जाऊँगा ।’

उन्होंने आइजाबेल की ओर मनोहर मुस्कान से देखते हुए पूछा—

‘बहुत दिनों से हम दोनों ने साथ-साथ नृत्य नहीं किया—शायद दस वर्ष हो गए ? क्यों आइजाबेल ?’

‘तब फिर कल ही सही; मुझे भी देखना है कि आप सब कुछ भूल तो नहीं गए ।’

इस घटना के बाद हम लोगों की भेंट लैरी से अक्सर हुआ करती थी। दूसरे हफ्ते से ही उन्होंने ग्रे की चिकित्सा आरम्भ कर दी। वह हर दिन शाम को आते और आध घण्टे तक पुस्तकालय में बैठ कर उसके साथ बातें करते। हम लोग को वह बतलाया करते कि ग्रे में केवल आत्म-विश्वास की कमी है। जब उसका आत्म-विश्वास बढ़ जायगा तो दर्द अपने आप ही चला जायगा। जितना कुछ ग्रे हम लोगों को बतला सका उससे मेरा अपना यह अनुमान हुआ कि लैरी अपने आत्म-विश्वास की भी परीक्षा ले रहे हैं। दस दिन तक ग्रे को शिर-पीड़ा का कोई दौरा नहीं हुआ मगर ग्यारहवें दिन न जाने कैसे दर्द फिर उठ गया। पीड़ा अधिक नहीं थी परन्तु लैरी उस दिन शाम को झप्टे धाले नहीं थे। लैरी की चिकित्सा-शक्ति पर ग्रे को इतना अधिक विश्वास था कि बार-बार वह उन्हीं को बुलाने को कहता। उसे विश्वास सा हो गया था कि अगर लैरी आ जाते तो दो चार मिनट में ही दर्द दूर हो जाता। टेलीफोन को किताब इधर-उधर उलट-पलट कर देखी गई मगर उसमें न तो कोई नम्बर ही मिला और न कोई यही बतला सका कि वह कहाँ रह रहे हैं। आतिशयकार अकस्मात् लैरी आदी गये। उन्होंने दो तीन मिनट के अन्दर ही ग्रे को स्वस्थ कर दिया और ग्रे को उनके ऊपर दुगुना विश्वास होने लगा। लैरी क प्रति ग्रे की श्रद्धा बढ़ने लगा। बातों ही बातों में ग्रे ने उनका पता पूछा क्यों कि न जाने उसे किस समय आवश्यकता पड़ जाय।

‘अमरीकन एक्सप्रेस’ सर्वाचार-पत्र के दफ्तर में फोन कर देना और मैं आ जाऊँगा।’ दृढ़-स्वरों में उन्होंने कहा—‘मैं वहाँ से हर सबेरे सब खबरें जान लेता हूँ।’

आइजाबेल ने वाद में मुझसे पूछना शुरू किया कि लैरी अपने रहने का पता क्यों नहीं बतलाते। वह पहले भी उसे गुप्त रखते थे

और अब भी उनकी वही आदत है। पहले तो पता लग ही गया था कि वह एक पुराने होटल में रहते थे जहाँ केवल मामूली आदमी ही इकट्ठे हो पाते हैं।

‘मैं कह नहीं सकता कि कारण क्या है’—‘मैं केवल अनुमान लगा सकता हूँ, ‘शायद मेरा अनुमान बिल्कुल ही गलत हो’—‘वह किसी अज्ञात प्रेरणा द्वारा और अपनी आत्म-शक्ति की सुरक्षा के लिए ही वहाँ रहते हैं।’

‘यह कैसी ऊल-जलूल बातें आप कर रहे हैं ? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।’ आइजाबेल ने क्रोध-मिश्रित स्वर से कहा।

‘आप कदाचित् उन्हें ठीक-ठीक देख नहीं पाती हैं ? जब-जब वह हम लोगों से शान्त, सरल, और सहज-रूप से बातें करते रहते हैं तब क्या आपको यह ज्ञात नहीं होता कि उनका आध्यात्मिक कहीं और ही रहता है। उनमें एक प्रकार का अलगाव दिखाई देता है और वह कुछ अलग-अलग खोये-खोये से रहते हैं। मुझे तो ऐसा ज्ञात होता है कि वह अपनी कोई छिपी प्रेरणा, छिपी अभिलाषा अथवा अपनी अन्तरात्मा का कोई अंश अपने अन्तरतम में छिपाये हुये यहाँ वहाँ सब जगह फिरते हैं और वही हम सब लोगों को उनसे बिलग रखती है।’

‘मैं उन्हें बचपन-से जानती हूँ और अब तक कोई ऐसी बात उन में न थी।’ आइजाबेल ने विकृत स्वर से कहा।

‘मुझे तो ऐसा मालूम होता है जैसे वह किसी नाटक में कोई पार्ट खेल रहे हैं। रहते तो वह हम लोगों के साथ ही साथ हैं, फिर भी दूर-बहुत दूर।’

‘अब मेरी समझ में कुछ कुछ आ रहा है। जब हम लोगों से वह बातें करते हैं तो बहुत बातें अनसुनी भी कर देते हैं और मुझे ऐसा मालूम होता है कि जैसे मैं सिगार से उठे हुए धुएँ को मुट्ठी में भरने का प्रयत्न कर रही हूँ और वह उंगलियों से फिसलता हुआ भागता

चला जाता है।' 'आपकी समझ में वह कौन सी वस्तु हो सकती है जो उन्हें इस तरह अलग-विलग किये रहती है और वह हम लोगों को अब कुछ अजब से लगते हैं ?

'शायद कोई बहुत ही साधारण—दिन प्रतिदिन दिखाई देने वाली वस्तु होगी जिसे हम देखकर भी नहीं देख पाते हैं ?'

'जैसे ?'

'जैसे—भलाई, अच्छाई, नेकी—दया, प्रेम !!'

आइजाबेल की त्वोरी चढ़ गई ।

'मैं आरकी इस तरह का बातें सुन कर तड़प उठती हूँ; मुझे ऐसा ज्ञात होता है जैसे कोई मेरे हृदय की एक रग कां जोरों से मरोड़ कर फिर छोड़ दे हा ।'

उसने सिंगरेट जलाई और कुर्सी पर आराम से लेट गई और उड़ते हुये धुएँ के छल्लों को एकटक देखने लगी ।

'अगर आरकी आज्ञा हो ताँ मैं जाऊँ ?' मैंने पूछा ।

'नहीं । जल्दी क्या है ?'

मैं चुपचाप उसकी ओर निहारता रहा—उसकी सुडौल नाक और आकर्षक आकृति देखते जी न भरता था ।

'क्या लैरी के प्रति आपका प्रेम फिर उमड़ आया है ?'

'क्या मैंने किसी और से भा अब तक प्रेम किया है ?' 'यह तो ईश्वर ही जानता है ?' उसने निश्वास छोड़ते कहा ।

'तब आपने प्रे से विवाह क्यों किया ?'

'विवाह तो मुझे किसी न किसी से करना ही था । वह मेरे पीछे पागल थे । माँ भी चाहती थी कि विवाह उन्हीं से हो । सब लोगों ने मुझे समझाया कि लैरी से जान छुड़ाना ही ठीक होगा । मुझे प्रे पसन्द भी थे; वह अब भी मुझे अच्छे लगते हैं । आप नहीं जान सकते कि वह मेरी कितनी खातिर करते हैं; दुनियाँ में शायद ही कोई दूसरा हो जाँ मेरी इतनी देख भाल रख सके । उनको देखने से तो

मालूम होता है कि उनमें क्रोध बहुत है मगर वह मेरे सामने भेड़ जैसा शान्त रहते हैं। जब वह अमीर थे तब वह मेरी खातिर में पानी ऐसा धन खर्च करते थे; सिर्फ इसीलिए कि उन्हें मुझे प्रसन्न करने का अवसर मिले। मैंने एक दिन बातों ही बातों में कहा था कि अगर हम लोगों के पास अगना कोई वजरा होता तो दुनियाँ भर की सैर उस पर हो जाती और विश्वास मानिये कि यदि यह अकस्मात् विपत्ति न आई होती तो उन्होंने खरीद भी लिया होता।'

मैं चुपचाप उसकी बात करने का अवसर देता रहा।

'हम लोगों ने बड़ी मौज की है और मैं उसके लिए ग्रे का आभारी भी हूँ; उन्होंने मुझे बहुत ही प्रसन्न रखा है।'

मैंने उसकी ओर आग्रह से देखा और फिर चुप हो रहा।

'मेरा विचार है कि मैं कभी भी उनसे वास्तविक प्रेम नहीं करती थी; मगर बिना प्रेम किए हुए भी तो काम चल ही सकता है। अपने हृदय में लैरी की प्रतिमा छिपाए फिरती थी, उन्हें पाने की मुझमें उत्कट लालसा थी। जब तक वह मुझसे दूर रहते मुझे कुछ न अनुभव होता। मगर आपने ही तो शायद कहा था कि जब तीन हजार मील लम्बा समुद्र मैं पार कर जाऊँगी तो प्रेम दुःखदायी न रह जायगा और मैं बहुत कुछ भूल जाऊँगी। उस समय मैं इसे केवल कोरी कल्पना ही समझती थी मगर वास्तव में बात ठीक निकली।'

'अगर लैरी को देखने से आपको दुःख होता है तो यह कहीं अच्छा होगा कि आप लोग उनसे मित्रता छोड़ दें।'

'ऐसा दुःख तो मैं सदा सहने को तैयार हूँ; इसमें एक स्वर्गीय आनन्द मिलता है। फिर आप यह भी जानते हैं कि लैरी आज यहाँ तो कल वहाँ—न जाने कब वह फिर वर्षों के लिए अर्गंतव्यान हो जाय।'

'ग्रे का तलाक देने की क्या आपकी इच्छा होती है?'

'मुझे कारण भाँ तो बतलाना पड़ेगा।'

'केवल इसी बठिनाई से तो आपके देश में स्त्रियाँ अपने पति को

तलाक देने में हिचकती नहीं ! वह तो उनकी इच्छा की वस्तु है ।’

आइजाबेल हँसने लगी ।

‘क्या आप जानते हैं कि वे ऐसा क्यों करती हैं ?’

‘जैसे आर नहीं जानती जो मुझमें पूछ रही हैं ?’ ‘अमरीकी स्त्रियाँ अपने पतियों में वही श्रेष्ठ गुण ढूँढ़ती हैं जो अंग्रेज स्त्रियाँ केवल अपने खानसामों में पाने की आशा करती हैं ।’

आइजाबेल ने बड़े गर्व से अपना सिर हिला कर प्रतिरोध किया ।

‘आप समझते हैं कि ग्रे चुप्पा हैं—इसलिए उनमें अन्य कोई गुण ही नहीं ।’

‘मैंने यह तो कभी नहीं कहा । उन्हें देखते ही मालूम हो जाता है कि उनमें इतनी संवेदना भरी हुई है । उनमें प्रेम करने की बहुत क्षमता है—एक क्षण ही उन्हें देख कर यह ज्ञात हो जाता है कि आपने प्रति उनका स्नेह कितना प्रगाढ़ है । वह बच्चों को तो आपसे कहीं ज्यादा प्यार करते हैं ।’

‘अब शायद आप यह कहने वाले हैं कि मैं बहुत बुरी माँ हूँ ।’

‘इसके ठीक विपरीत मेरा आशय है । मैं समझता हूँ कि आप आदर्श माँ हैं; आप उनकी देख रेख करती हैं, खाना-पीना देखती हैं, स्वास्थ्य की अच्छाई-बुराई पर ध्यान रखती हैं; उनको सद्ब्यवहार सिखलाती हैं, प्रार्थना कराती हैं, और अगर वे बीमार पड़ें तो आप स्वयं डॉक्टर के पास दौड़ कर जायँगी । इतने पर भी जितना ग्रे उनमें लिप्त है उतनी आप नहीं ।’

‘यह तो कोई बहुत जरूरी नहीं । मैं मानव हूँ और उन्हें भी मैं मानव ही समझती हूँ । अगर कोई माता अपने बच्चों को अपना जीवन-ध्येय बना लेती है तो वह बच्चों के प्रति अन्याय कर उन्हें बिगाड़ती है ।’

‘आप ठीक कहती हैं ?’

‘इस पर भी वे मुझ पर ही श्रद्धा रखते हैं ।’

‘मैंने इसे स्वयं देखा है। आप उनके लिए सब बातों में आदर्श-रूप हैं। सुन्दरता, सुकुमारता, दैनिक जीवन, सब में वे आपको ही निरखते हैं मगर वे आपके साथ सच्चा आनन्द नहीं पाते; खुल कर नहीं बोलते-बैठते; मेरे के पास ही उन्हें स्वभावतया आनन्द आता है। वे श्रद्धा आप पर रखते हैं जरूर, मगर प्रेम वे मेरे से ही करते हैं।’

‘प्रेम के योग्य वह हैं भी तो।’

मुझे उसकी इस बात से सन्तोष हुआ। आइजाबेल में सत्य को सहन करने की निर्भीक क्षमता थी। उसके चरित्र की यही सब से बड़ी खूबी थी।

‘जिस दिन से हम लोगों पर विपत्ति आई मेरे अपना सारा धैर्य खो बैठे मगर फिर भी वह जो तोड़ मेहनत करते रहे वह आधी आधी रात तक दफ्तर में बैठे-बैठे लिखा पढ़ी किया करते। स्थिति संभल जाय। मैं घर पर बैठी-बैठी सोचा करती कि कहीं वह हताश हो आत्महत्या न कर बैठे। उनके पिता और स्वयं उन्होंने अपनी व्यावसायिक क्षमता और इमानदारी के लिए बहुत नाम कमाया था और वह चाहते थे कि वश का नाम न डूबे और और उनकी शान और आन दोनों बनी रहे। उन्हें क्षोभ इसलिए नहीं था कि हम लोगों का घन डूब गया मगर इसलिए कि जो लोग उन पर विश्वास कर अपनी पूँजी उनके पास जमा कर गये थे वे तबाह हो रहे थे। उन्हें आत्म-ग्लानि इसलिए और भी था कि उन्होंने समझदारी और सूझबूझ से काम क्यों नहीं लिया। उन्हें मैं विश्वास ही न दिला पाती कि इसमें उनका कोई भी दोष नहीं।’

आइजाबेल ने अपने हैन्ड-बैग से लाली निकाल कर होंठों पर लगाना शुरू किया।

‘मगर जो वास्तविक बात मैं कहना चाहती थी वह दूसरी ही है। हम लोगों की थोड़ी बहुत जमीन्दारी कैरोलीना में ही बच रही थी और मैं चाहती थी कि मेरे अपना स्वास्थ्य बनाने वहीं चले चले’

इसीलिए मैंने वृच्चों को मां के पास छोड़ा और उन्हें लेकर वहीं चली गई। वह स्थान उन्हें बहुत पसन्द था। एक लम्बी चौड़ी भील जो पास ही थी वहीं सबेरे सबेरे चले जाते और मछली का शिकार करने के वजाय उन्हें एकटक निहारते रहते। भील के दोनों ओर लहराती हुई सरपत के बीचबीच वह चुपचाप टहला करते और ऊपर नीलाकाश देखकर उन्हें बड़ी शान्ति मिलती। जब मैं उनके लौटने पर पूछती कि उन्होंने वहाँ क्या क्या किया तो यह बतला न पाते। मैं जान अवश्य लेती थी कि उनके मन में क्या क्या भाव होते। प्रकृति का निश्चेष्ट सौंदर्य, आकाश की अपार शान्ति, भील के पानी की अबाधगति फिर उसकी लहरियों पर पड़ती हुई सायंकाल की स्वर्णिम लम्बिम। ऐसा मालूम होता कि कोई भोली बालिका राजमुकुट पहने खड़ी रही है। यह सब देख कर उनका हृदय अपरिमित आनन्द से विभोर हो उठता था। फूटती हुई वसन्त कलिकाएं; पराग और वायु से विलोडित पुष्पों की पंखुड़ियां, पक्षियों का अविरल कलरव; काई पर जमी हुई प्रगाढ़ हरियाली पर तितलियों का थिरकना ग्रे के हृदय में चुभ चुभ उठते थे। प्रकृति की दी हुई सौन्दर्य-मदिरा पी कर वह जैसे अघाते ही न थे और जब वह घर लौट कर अपने देखे हुये दृश्यों का वर्णन देते तो मुझे ज्ञात होता कि वह किसी दूसरे स्तर पर खड़े हैं; उनका रोम रोम पुलकित हो उठता और उन्हें मालूम होता कि यदि ईश्वर कहीं है तो उसका साक्षात्कार वह वहीं कर रहे हैं।

बातें करते करते आइजाबेल भावुक हो उठी। आँखों से ढलकते हुए अश्रुविन्दु उसने रुमाल की कोर से पोंछ डाले।

‘आप कदाचित् रोमांचक संसार में चल पड़ी थीं।’ मैंने हँसते हुए कहा। ‘मेरा ऐसा अनुमान है कि ये विचार ग्रे के नहीं थे; ये समस्त विचार और अनुभव आप चाहती थीं कि ग्रे में प्रादुर्भूत हों— वयों?’

‘यह कैसे हो सकता है कि जो भाव उनमें न हो वह मुझे

स्पष्टतया दिखाई दे जाय। आप तो मुझे जानते ही हैं। शहरों की सड़कों पर चलकर, सजी हुई कोठियों में रातें बिताकर, आकर्षक कपड़े पहन और बाजार में शीशे की आलमारियों में बन्द शृंगार की वस्तुओं को देखकर ही मैं सुखी हो सकती हूँ। शारीरिक आकर्षण बनाये रखने के लिए मैं प्रकृति से कहीं दूर रहती हूँ।'

मैं यह आत्म-विश्लेषण सुनकर मुस्कराता रहा और आइजाबेल कहती गई—

'मैं ग्रे को कभी तलाक नहीं दूँगी। हम लोग बहुत दिनों साथ भी रह चुके हैं; और हमारे दो बच्चे हैं; फिर मुझ पर ही उनका जीवन निर्भर है। इस भावना से हृदय में हर्ष होता है कि मैं किसी का भला तो कर रही हूँ और कोई मुझ पर निर्भर तो है—और फिर इसके साथ साथ.....?'

'इसके साथ साथ क्या?'

उसने मेरी ओर कनखी से देखा जिसमें शरारत भरी मुस्कान छिपी हुई थी। मेरा अनुमान है कि वह शायद इसलिए साफ साफ कहने में हिचक रही थी कि उसकी बात का न जाने मेरे ऊपर कैसा प्रभाव पड़े।

'ग्रे के साथ साथै उसका आनन्द तो पूछिए मत : तीनों त्रिलोक हाथ में आ जाते हैं। दस वर्ष विवाह के बीत गए मगर ग्रे में न तो उत्साह की कमी आई और न किसी प्रकार की शिथिलता। यह आपने ही तो कहा था कि शायद ही कोई पति ऐसा हो जो पाँच वर्ष से अधिक एक स्त्री से प्रेम कर सकता हो। वह बात ग्रे ने गलत प्रमाणित कर दी। उनकी चाह मेरे लिए दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जाती है और फिर मैंने जैसा बतलाया उनके संसर्ग के आनन्द का कहना ही क्या? मुझे देख कर आप चाहे अनुमान न लगा सकें—पुरुष को अपने में समो लेने की लालसा मुझमें अपार है।'

'आप अपने को गलत समझे बैठी हैं; मेरा ही अनुमान अधिक

ठीक है ?'

‘शायद ऐसी विशेषता आपको रुचिकर नहीं और इस आनन्द को आप कोई महत्व नहीं देते ।’

‘बहुत अधिक ।’ मैंने उसकी ओर तीखी निगाह से देखा । ‘क्या आपको इसका दुःख है कि दस वर्ष पहले आपने लैरी से विवाह नहीं किया ।’

‘अगर मैं करती तो मेरा पागलपन होता । मगर अब मुझमें कभी कभी यह विचार उठता है कि यदि मैं लैरी के साथ तीन महीने भी रह लेती तो उसे अपनी राह लगा लेती ।’

‘अच्छा किया जो आपने यह प्रयोग नहीं किया । ऐसा भी हो सकता था कि आप स्वयं ही कहीं उसके रास्ते लग जातीं और फिर उसके ध्वंसन को तोड़ ही न पाती ।’

‘नहीं ! ऐसी बात नहीं । वह आकर्षण केवल शारीरिक ही था । यह आप भी जानते हैं कि इच्छा और लालसा पर विजय पाने का सबसे श्रेष्ठ उपाय उसकी पूर्ति ही है ।’

‘कभी आपने यह भी सोचा कि आप में अधिकार-लिप्सा बहुत ही अधिक है । आपने ही कहा था कि ग्रे में काव्य की भावुकता है और वह उत्कृष्ट प्रेमी भी हैं मगर इन दोनों बातों के सिवाय कुछ और भी है जिसे आपने व्यक्त नहीं किया । वह यह है कि आप अपने छोटे-छोटे कामल हाथों की मुट्ठी में ग्रे को सहज ही बन्द रख सकती थीं और लैरी उससे सहज ही निकल भाग सकता था ।’

‘आपको शायद यह गर्व है कि आप ही स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध की जटिलताओं को समझते हैं ? आप बहुत ही कम जानते हैं । पुरुष को स्त्री अपनी मुट्ठी में केवल एक ही तरह से रख सकती है ; और वह भेद मैं आपसे अब बतलाती हूँ—स्त्री-पुरुष की पहली मुलाकात से कोई भी बन्धन टूट नहीं होता ; वह टूट होता है दूसरी बार के मिलन में, तीसरे या चौथे मिलन में और जब वह उस समय उसे

सन्तुष्ट कर देती है; अपने में पूरी तरह एकाग्र कर लेती है, तभी अपनी उँगलियों पर वह उसे नचा सकती है।'

‘आपकी पहुँच इस कला में अद्वितीय जान पड़ती है।’

‘अपनी आँख और अपने कान भी तो खोले रहती हूँ; जहाँ जाती हूँ वहाँ से कुछ सीख भी आती हूँ।’

‘मगर यह तथ्य आपने कैसे जाना?’

शरारत भरी आँखें उसने मेरी ओर फिर से फेरी; अब तक वह अपने वेग को उलट-पुलट रही थी। ‘यह मैंने पेरिस की एक बड़ी फैशनेबिल स्त्री से सीखा। मैंने सुना था उसकी पहुँच बड़ी बड़ी जगह है। और मैंने निश्चय किया कि उससे मित्रता अवश्य करूँगी। मेरी उसकी भेंट एक दावत में हुई थी। पहले तो वह मुझसे छौकती रही मगर अमरीकन लड़कियों का कोमल, सरल स्वभाव मैंने ग्रहण कर उसे घेर हा तो लिया और अपने यहाँ खाना खाने के लिये निमन्त्रित किया। मगर वह आने पर इसलिए न राजी हुई कि लाग मुझ पर उगलियाँ उठावेंगे। अन्त में मैंने ही उसके यहाँ जाकर उससे यह कला सीखी। वह मुझे बहुत सी बातें बतलाती रही। उन बातों को मैं कभी कभी दुहराया भी करती हूँ।’

‘आप एक लेख क्यों नहीं लिख देती—बहुत सी स्त्रियों के काम आएगा?’

‘हुश!’ वह हँसने लगी।

कुछ देर मैं चुप रहा। उसकी आँखों की शरारत अब भी वैसी ही थी।

‘क्या कभी आप से लैरी भी यथार्थ प्रेम करते थे?’

इतना सुनते ही वह उठ बैठी और क्रोध की झूमंगिमा मुख पर लाते हुये कहा—

‘आपको क्या विश्वास नहीं होता? उन्हें मुझसे प्रेम अवश्य था। क्या कोई ऐसी भी लड़की है कि जिससे कोई प्रेम करे और उसे

मालूम ही न हो ?

‘यह मैं कब कहता हूँ कि उन्हें प्रेम नहीं था; मगर वह एक विशेष प्रकार का ही प्रेम था। उनका मेल मिलाप दूसरी लड़कियों से नहीं था और वह केवल आपको ही जानते थे। आप दोनों बचपन से साथ खेले खाए थे और उन्हें यह अनुमान था कि वह आपसे प्रेम करते हैं। जैसा स्वभावतः सब में होता है उनमें लालसा थी और यह समझना भी उनका स्वाभाविक था कि आप उनसे बिवाह भी कर लेंगी। फिर आपके और उनके सम्बन्ध में कोई विशेष नई बात भी न होती—केवल यही होता कि आप दोनों का घर एक होता और आपका विस्तार एक होता।’ आइजाबेल की आँखों का संकेत पाकर मैं बोलता ही रहा क्योंकि मेरा यह सदा का अनुभव है कि जब कोई प्रेम और लालसा का विषय छिड़ता है तो स्त्रियाँ बड़ी उत्सुकतापूर्वक वार्तालाप करती हैं।’

‘कुछ भूले हुए नीतिज्ञ लालसा और प्रेम का अलग अलग अस्तित्व समझा करते हैं। यह कहना कोरी मूर्खता है कि प्रेम और लालसा में कोई घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं—है और अवश्य है। जब लोग यह कहा करते हैं कि लालसा के उबार के बाद जो भाटा-स्वरूप गति शेष रह जाती है वह प्रेम है, अनुभव-हीन होते हैं और वे अपना मानसिक विश्लेषण ठीक प्रकार से नहीं कर पाते। कदाचित् प्रेम से उनका तात्पर्य रहता है—अच्छाई से, स्नेह से, भाई-चारे से; करुणा, दया, उदारता से अथवा केवल स्वभाव या सहज प्रकृति से। कदाचित् सहज प्रकृति से ही उनका अभिप्राय-विशेष रहता है। दो व्यक्ति, अपनी अपनी लालसा की भूल एक दूसरे के सहज प्रकृति द्वारा भुंका सकते हैं और वह कार्य उतना ही महत्वपूर्ण होगा जितना रोज रोज का खाना पीना। हाँ, प्रेम बिना इच्छा जीवित रह सकता है और इच्छा को लालसा कहना भारी भूल है। इच्छा तो लालसा-प्रदत्त केवल प्रवृत्ति मात्र है और उसका महत्व उतना ही है जितना किसी

अन्य प्रवृत्ति का। यह न समझ कर ही स्त्रियाँ जब जब उनके पति परिस्थिति से बाध्य अथवा प्रेरित हो कुछ कर बैठते हैं तो हाय-तोबा मचाने लगती हैं।

‘क्या यह पुरुषों के लिये ही लागू है !’

मैं उसका व्यंग समझ कर मुस्कुरा पड़ा।

‘अगर आप जिद करेंगी तो मैं मान भी लूँगा कि यह लागू दोनों पर होता है। केवल फर्क यही होता है कि पुरुष के लिये तो वह एक राह-चलतू संबन्ध था और स्त्रियों के लिये वह एक प्रभावपूर्ण और गहरा अनुभव होगा, जो हो सकता है उसके समस्त भावना-संसार को सदा के लिए विकृत कर दे।’

‘वह तो स्त्री के चरित्र पर निर्भर होगा; कोई सिद्धान्त तो इससे बन नहीं सकता।’

मुझे उसके टोकने की परवाह न थी—

जब तक प्रेम लालसा-युक्त नहीं, प्रेम नहीं; वह कुछ और ही वस्तु होगी। लालसा की प्रगति उसकी वृत्ति पर नहीं, अवरोध पर निर्भर है। जब तक वह चीज हमारी मुट्ठी के बाहर होती है हम उसके पीछे पीछे दौड़ा करते हैं और हमारी लालसा उदीम रहती है; मगर जब वह चीज हाथ लग गई तो फिर क्या—‘तब दिल में क्या रहा जो तमन्ना निकल गई।’ आप का और लैरी का प्रेम स्वाभाविक था और यह कुशल हुई आप अन्त में बुरी नहीं रहीं। आपने सम्पन्न परिवार में विवाह कर सुख पाया और लैरी ने संसार भ्रमण कर देवलोक का आह्वान सुना; बन-देवी का गीत सुना; अपना आत्म-संगीत मुखरित किया। इसमें लालसा का स्थान कहाँ ?

‘यह आपको कैसे मालूम ?’

‘लालसा प्रत्येक अवरोध का मूल्य चुकाने पर तत्पर रहती है— वृत्ति साधन के लिए कोई भी वस्तु ऐसी अमूल्य नहीं जिसे वह बे खटके न दे सकती हो। दिल की दुनियाँ बाह्य तर्क-संसार से कहीं

भिन्न होती है और समय-समय पर अपने सन्तोष के लिए हमारा हृदय नये नये तर्क ढूँढ़ निकालता है और सबकुछ निछावर करने को तैयार हो जाता है। उसके तर्क का अन्त नहीं, उसे अवरोध का मान नहीं। मान और मर्यादा की पुकार वह चुटकियों में उड़ा देता है और अपमान का ध्यान उसे एक क्षण के लिये भी नहीं सताता। लालसा विनाशकर है। इसने संसार के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ प्रेमियों का विनाश कर सन्तोष पाया है—और जब वह सन्तुष्ट हो जाती है तो प्राण तज देती है। यदि वह विनाश नहीं करती तो स्वयं निर्जीव हो जाती है: विनाश उसका जीवन है, तृप्ति मृत्यु। लालसा अपने आधार-वृत्त की सुन्दरता, असुन्दरता नहीं देखती। वह देखती है केवल अपना लक्ष्य—अवरोध पर विजय का एकाकी ध्येय। चाहे अन्त में उसे शान्त भी हो कि उसका आधार वृत्त तो हीन, निष्प्रभ, कुरूप, तथा दा कौड़ी का था परन्तु उसको रत्ती भर भी उसकी परवाह नहीं।’

मैं अपना भाषण बड़े उत्साह और सतर्कता से दे रहा था। मगर मैं यह भी देख रहा था कि आइजाबेल का ध्यान कहीं और है। वह अपने ही ध्यान में मग्न थी। उसके प्रश्न ने मुझे कुछ चकित सा कर दिया—

‘क्या आपके विचार से लैरी ब्रह्मचारी हैं?’

‘उनकी आयु जानती हैं क्या है—बत्तीस वर्ष?’

‘मुझे पूरा विश्वास है।’

‘कारण?’

‘यह तो प्रत्येक स्त्री अपनी सहज-बुद्धि से जान लेती है।’

‘मुझे बहुत पहले एक ऐसा नवयुवक मिला था जिसको कभी न तो असफलता मिली और न किसी स्त्री की ओर से कोई अवरोध; उसका प्रेमाभिनय रुदैव सफल रहा करता और वह सब स्त्रियों को सदैव सरलता-पूर्वक यह समझा दिया करता था कि वह ब्रह्मचारी है—’

‘आपके अनुभव से नहीं मैं अपनी सुबुद्धि से जानती हूँ।’

देर हो रही थी। ग्रे और आइजाबेल दोनों को अपने किसी मित्र के यहाँ निमन्त्रण में जाना था। आइजाबेल कपड़े पहनने उठी और मैंने विदा ली। रास्ते भर मैं आइजाबेल की बातें सोच सोच कर हँसता रहा। उसकी बातों और उसके तर्कों से मुझे बरबस सुजेन का ध्यान आ गया। मैंने उसे बहुत दिनों से देखा भी नहीं था और यह सोच बर कि यदि उसे अवकाश हुआ तो समय अच्छी तरह कटेगा, मैं उसके घर की ओर चल पड़ा।

६

मैंने सुजेन का परिचय बहुत पहले दिया है। हेनरी मेडरिन की दावत में पहले पहल मेरी उसकी भेंट हुई थी और अब मेरी उसकी जान-पहचान दस बारह वर्ष पुरानी हो चुकी थी। उसकी अवस्था अब चालीस के करीब थी। सुन्दरी तो वह कभी न थी; एक प्रकार से उसे कुरूप ही कहना चाहिए। लम्बा कद, जो साधारणतया फ्रांसीसी स्त्रियों का नहीं होता, छोटा घड़, लम्बे हाथ पैर और चाल से ऐसा मालूम होता मानो वह अपने लम्बे हाथ पांव और छोटे घड़ में सामंजस्य प्रस्तुत करने में असफल हो थकी सी चली चल रही है। अपने बालों को इच्छानुसार हर दूसरे दिन बदल-बदल कर वह रगती रहती परन्तु उसका साधारणतया प्रिय रंग था गहरा-भूरा। उसका चेहरा छोंटा था परन्तु गालों की हड्डियां ऊपर उठी हुई थीं जिन्हें वह बड़े कलापूर्ण ढङ्ग से रंजित किए रहती थी। मुँह भी कुछ बड़ा न था और आकर्षण-हीन। परन्तु उसमें आकर्षण था केवल आंखों का—चितवन का—चितवन के संकेतो का। उसके शरीर का रंग हल्का पीला—बसन्त में फूली सरसों की परछाईं समान। मोता से दांत थे और कटाक्ष-पूर्ण भौंहें। बरौनियों का प्रगाढ़ काली छाया में वह अपनी बड़ी बड़ी वासना-युक्त पुतलियों का झूला झुलाया

भिन्न होती है और समय-समय पर अपने सन्तोष के लिए हमारा हृदय नये नये तर्क ढूँढ निकालता है और सब कुछ निछावर करने को तैयार हो जाता है। उसके तर्क का अन्त नहीं, उसे अवरोध का मान नहीं। मान और मर्यादा की पुकार वह चुश्कियों में उड़ा देता है और अपमान का ध्यान उसे एक क्षण के लिये भी नहीं सताता। लालसा विनाशकर है। इसने संसार के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ प्रेमियों का विनाश कर सन्तोष पाया है—और जब वह सन्तुष्ट हो जाती है तो प्राण तज देती है। यदि वह विनाश नहीं करती तो स्वयं निर्जीव हो जाती है: विनाश उसका जीवन है, वृत्ति मृत्यु। लालसा अपने आधार-वृत्त की सुन्दरता, असुन्दरता नहीं देखती। वह देखती है केवल अपना लक्ष्य—अवरोध पर विजय का एकाकी ध्येय। चाहे अन्त में उसे ज्ञात भी हो कि उसका आधार वृत्त तो हीन, निष्प्रभ, कुरूप, तथा दा कौड़ी का था परन्तु उसको रत्ती भर भी उसकी परवाह नहीं।

मैं अपना भाषण बड़े उत्साह और सतर्कता से दे रहा था। मगर मैं यह भी देख रहा था कि आइजाबेल का ध्यान कहीं और है। वह अपने ही ध्यान में मग्न थी। उसके प्रश्न ने मुझे कुछ चकित सा कर दिया—

‘क्या आपके विचार से लैरी ब्रह्मचारी हैं?’

‘उनकी आयु जानती हैं क्या है—बत्तीस वर्ष?’

‘मुझे पूरा विश्वास है।’

‘कारण?’

‘यह तो प्रत्येक स्त्री अपनी सहज-बुद्धि से जान लेती है।’

‘मुझे बहुत पहले एक ऐसा नवयुवक मिला था जिसको कभी न तो असफलता मिली और न किसी स्त्री की ओर से कोई अवरोध; उसका प्रेमाभिनय सदैव सफल रहा करता और वह सब स्त्रियों को सदैव सरलता-पूर्वक यह समझा दिया करता था कि वह ब्रह्मचारी है—’

‘आपके अनुभव से नहीं मैं अपनी सुबुद्धि से जानती हूँ।’

देर हो रही थी। ग्रे और आइजाबेल दोनों को अपने किसी मित्र के यहाँ निमन्त्रण में जाना था। आइजाबेल कपड़े पहनने उठी और मैंने विदा ली। रास्ते भर मैं आइजाबेल की बातें सोच सोच कर हँसता रहा। उसकी बातों और उसके तर्कों से मुझे बरबस सुजेन का ध्यान आ गया। मैंने उसे बहुत दिनों से देखा भी नहीं था और यह सोच बर कि यदि उसे अवकाश हुआ तो समय अच्छी तरह कटेगा, मैं उसके घर की ओर चल पड़ा।

६

मैंने सुजेन का परिचय बहुत पहले दिया है। हेनरी मेडरिन की दावत में पहले पहल मेरी उसकी भेंट हुई थी और अब मेरी उसकी जान-पहचान दस बारह वर्ष पुरानी हो चुकी थी।^१ उसकी अवस्था अब चाँचीस के करीब थी। सुन्दरी तो वह कभी न थी; एक प्रकार से उसे कुरूप ही कहना चाहिए। लम्बा कद, जो साधारणतया फ्रांसीसी स्त्रियों का नहीं होता, छोटा घड़, लम्बे हाथ पैर और चाल से ऐसा मालूम होता मानो वह अपने लम्बे हाथ पांव और छोटे घड़ में सामंजस्य प्रस्तुत करने में असफल हो थकी सी चली चल रही है। अपने बालों को इच्छानुसार हर दूसरे दिन बदल-बदल कर वह रंगती रहती परन्तु उसका साधारणतया प्रिय रंग था गहरा-भूरा। उसका चेहरा छोटा था परन्तु गालों की हड्डियाँ ऊपर उठी हुई थीं जिन्हें वह बड़े कलापूर्ण ढङ्ग से रंजित किए रहती थी। मुँह भी कुछ बड़ा न था और आकर्षण-हीन। परन्तु उसमें आकर्षण था केवल आँखों का—चितवन का—चितवन के संकेतों का। उसके शरीर का रंग हल्का पीला—बसन्त में फूली सरसों की परछाईं समान। मोता से दांत थे और कटान्त-पूर्ण भौंहें। वरौनियों का प्रगाढ़ काली छाया में वह अपनी बड़ी बड़ी वासना-युक्त पुतलियों को झूला झुलाया

करती थी। स्वभाव का उसके कहना ही क्या—चलते फिरते मित्र बना लेती और फिर उन्हें भूल कर भी न भूलती। उसके शरीर में लोच था पर साथ ही साथ आन्तरिक पुष्टता भी, और जिस प्रकार का जीवन वह व्यतीत करती थी उसके लिए यह आवश्यक भी था। उसकी मां एक सरकारी कर्मचारी की पत्नी थी जो विधवा होने पर अपने गांव लौट आई और सुजेन जो उस समय सत्रह वर्ष की थी एक दर्जी की दूकान पर काम करने लगी। कभी कभी वह गांव जाकर मां से मिल भी आती परन्तु अधिकतर वह ग्राहकों का मनोरंजन ही किया करती थी। उन दिनों वह गांव ही में थी जब वहाँ एक चित्रकार आकर ठहरा और प्रकृति-चित्रण करते करते सुजेन के सरल मानस-पट पर अपना भी चित्र बनाकर उसे लेकर चलता बना। यद्यपि उसने कुछ दिनों बाद पूछा भी कि वह गांव वापस जाना चाहे तो जा सकती है मगर न तो गाँव में पैसा और न उसकी पूछ। जब वह चित्रकार पेरिस जाने लगा तो सुजेन प्रसन्नता-पूर्वक उसके साथ चल पड़ी। एक वर्ष तक सुजेन ने उसके साथ आनन्द-पूर्ण जीवन व्यतीत किया।

एक वर्ष बीतने के पश्चात् चित्रकार प्रेमी ने स्पष्टतया कहा कि अब तक वह एक भी चित्र नहीं बेच पाया और उसके पास एक कौड़ी भी नहीं; इसलिए वह अपने ऊपर प्रेयसी का विलास-भार रखने में बिलकुल असमर्थ है। कुछ दिनों से सुजेन यही समझ भी रही थी और जब उसने यह बात साफ-साफ सुनी तो उसे जरा भी न तो दुःख हुआ और न परिताप। घर जाने पर भी वह राजी न हुई। उनके प्रेमी ने ढूँढ़-ढाँढ़ कर बतलाया कि पास ही में एक दूसरा चित्रकार है जो प्रसन्नतापूर्वक उसे अपने साथ रखेगा और यदि वह तैयार हो तो उसका प्रबन्ध उसके घर सरलता से हो जायगा। जिस नये चित्रकार-प्रेमी का नाम लिया गया उसने पहले भी कई बार सुजेन की ओर अनेक स्पष्ट संकेत किए थे

जिसे समझ कर उसने उसे डांट भी दिया था; परन्तु उसकी डांट भी इतनी प्रिय थी कि उसे बुरा नहीं लगा और वह खुले हाथों उसका स्वागत करने को अब भी प्रस्तुत था। सुजेन ने यह प्रस्ताव मान लिया। उसे नए चित्रकार में कोई विशेष अरुचि भी नहीं थी। नया घर इतना पास था कि सामान ले जाने के लिए भी किसी खर्च की आवश्यकता नहीं पड़ी। नवीन परिचय में इस बचत का भी उसे विशेष ध्यान था।

दूसरा प्रेमिक पहले वाले की अपेक्षा आयु में बड़ा परन्तु स्वस्थ था और देखने सुनने में भी बुरा नहीं जँचता था। उसने अपनी इस नई प्रेयसी का चित्र खींचना आरम्भ किया। उसके अंग-प्रत्यंग हर प्रकार के रंगों में चित्र-पट पर उतरे। प्रत्येक आसन तथा प्रत्येक सज्जित और नग्न अवस्था में उसने उसे चित्रित किया। कदाचित् ही किसी अंग की भंगिमाँ बची हो जो उस चित्रकार ने प्रतिबिम्बित न की हो। वह उसे चित्रित कर अघाता भी न था। सुजेन को भी अपने प्रेमिक का (माडेल) मूर्त्तिधार बनने में गर्व था। उसके ही कुछ विशेष अंगों को चित्रित करने के बाद ही कलाकार को सफलता और मान दोनों मिला। वह दौड़ कर एक सचित्र मासिक-पत्र उठा लाई जिसमें उसके ही विशेष चित्र थे जिसे एक अमरीकी संग्रहालय ने खरीद ले। वह नग्न खड़ी थी—सागर की लहरों से आनन्दित, उद्वेलित, मानों स्वर्ग की अप्सरा किसी योगी को चुनौती दे रही हो। कुछ चित्रों में कलाकार ने उसकी टाँगें और बांहें और भी लम्बी प्रदर्शित की थीं और उसका शरीर भी दुबला पतला कर दिया था और उसकी नीली आँखों में आकाश की समस्त शान्ति प्रदर्शित कर दी थी। संग्रहालय के मैनेजर ने उस चित्र में आधुनिकता की पूरी छाप देख कर फौरन ही चेक काट दिया। इस चित्र की प्रशंसा से चित्रकार और उसके निजी जीवन पर इधर उधर टीका टिप्पणी होनी आरम्भ हुई और इसी कारण अनेक कलाकारों की गोष्ठियों में उसकी पूछ शुरु हो गई।

सुजेन अब अपना मूल्य जान गई। उसे चित्राधार बनने में अब आनन्द आने लगा। अंग-प्रत्यंग का उच्छ्वास और उसकी लपेट-समेट, प्रदर्शित करने में उसे हर्षोल्लास होता। सायंकाल होते ही वह सजधज कर होटलों में निकल जाती, मनोमुकूल शराबें पीती और खाना खाने के बाद वहां पर एकत्रित कलाकारों, उनकी प्रेयसियों और प्रेमिकाओं तथा प्रेमिकाओं से अन्य प्रणयार्थियों से कला, समाज, शराब अनेक विषयों पर विचार विनिमय करती, और रात भर आनन्द की हिलोरों में किलोलें करती हुई इतनी थक जाती कि सबेरे तक सोती रहती। इस तरह जीवन व्यतीत करने के थोड़े ही दिनों बाद उसे यह आभास मिला कि उसे अपना दूसरा घर बनाना चाहिए। कहीं ऐसी नौबत न आए कि कोई उससे कुछ मुँह खोलकर कहे, उसने स्वयं एक नवयुवक चित्रकार से परिचय बढ़ाकर उसे अपना जीवन सौंप दिया। जैसे बिना किराएदार के मकान खाली रहता है, वैसे ही उस समय वह चित्रकार खाली था। उसमें कला थी, कला के प्रति श्रद्धा थी और वह बहुत स्वस्थ भी था। नये प्रेमी को अपना जीवन सौंपते सुजेन बोली—

‘मैं बहुत ही अच्छी गृहणी हूँ। मैं तुम्हारी देखभाल करूँगी, पैसा बचाऊँगी और तुम्हें भी सरलतापूर्वक एक बना बनाया मूर्त्ताधार मिल जायगा।’ अपनी कमीज तो देखो—चिथड़े चिथड़े हो रही है—और मोजे !! उन्हें बिनने वाले की जरूरत और खोज है। तुम्हारा चित्रालय भा अस्तव्यस्त है, तुम्हारी देख-रेख के लिए एक स्त्रियों की शीघ्र आवश्यकता है।’

चित्रकार जानता भी था कि इस प्रेयसी में अनेक गुण हैं। इस प्रस्ताव पर उसे कुछ गुदगुदी सी मालूम हुई और सुजेन जान गई कि उसे कोई विशेष आपत्ति नहीं है।

‘एक बार साथ-साथ रह कर देखने में हर्ज ही क्या है?’ उसने कहा। ‘अगर गाड़ी नहीं चली तो नहीं सही, घाटा किसी का भी

नहीं ।’

वह कलाकार नितान्त प्रगतिशील था और अपना नया आदर्श कला में प्रस्तुत करना चाहता था । उसने त्रैकोण, त्रिकोण और षट्कोण में उसके चित्र प्रदर्शित किए—कभी एक ही आँख, कभी एक ही कपोल, कभी केवल ग्रीवा, कभी होठ और सभी रंगों में । वह उसके साथ डेढ़ वर्ष रही और अपने आप ही न जाने किस तरंग में आकर उसे छाँड़ बैठा—

‘आपने ऐसा किया क्यों ? क्या आपको वह पसन्द नहीं आ रहा था ?’ मैंने उत्सुकता से पूछा ।

‘हाँ कुछ ऐसी ही बात थी । लड़का वह बहुत अच्छा था मगर मैं देख रही थी कि वह आगे नहीं बढ़ रहा है—बार बार अपने पुराने भावों को ही दुहराया करता था ।’ अन्यमनस्क भाव से उसने उत्तर दिया ।

परन्तु वह बहुत दिनों खाली न रही । रिक्त स्थान ले लेने वाला दूसरा कलाकार शीघ्र ही मिल गया । जीवन पर्यन्त वह चित्रकारों की भक्त रही—

‘मेरा सम्पर्क चित्रकारों से ही विशेष रहा है ।’ उसने भावुक स्वर से कहा । ‘एक वार मैं मूर्त्तकलाकार के साथ भी द महीने के करीब रही मगर न जाने क्यों उसके साथ मुझे जरा भी आनन्द नहीं आया । परन्तु, छेनी; शुष्कता, शोर; उसमें जीवन कहाँ ?’ उसे इस बात पर विशेष सन्तोष था कि किसी भी प्रणयी के यहाँ से वह न तो दुःखित लौटी और न असन्तुष्ट । जब तक रही हाथों-हाथ रही; जब चली गई तो मधुर स्मृति छोड़ गई । वह केवल सफल चित्राधार ही नहीं पट्ट गृहणी भी थी आर चित्रालय को सुसज्जित रख सकती थी । पाकशास्त्र में उसकी रुचि थी और बहुत थोड़े ही व्यय में वह सुस्वादु भोजन बना सकती थी । अपने प्रेमियों के कपड़े सिलने, मांजे बिनने, उनकी हर प्रकार से देख-रेख में उसे सुख मिलता था—

‘पता नहीं कलाकार इतने गन्दे क्यों रहते हैं ?’ उसने उपेक्षा की दृष्टि से कहा । ‘कला के लिए क्या अस्तव्यस्त जीवन आवश्यक है ? यह मैं अब तक समझ नहीं पाई ।’

इस नियम के विपरीत उसने केवल एक अंगरेज चित्रकार का ही जीवन देखा । उसके पास पैसा बहुत था और एक मोटर भी थी—‘मगर वह भी बहुत दिनों तक नहीं चल सका । वह शराब पीने लगा और अपनी बकबक की आदत से दूसरों का जीवन नीरस बनाने लगा । अगर वह अच्छा चित्रकार भी होता तो मैं उसके पास अवश्य ठहरती मगर वह चित्रकार क्या—बहुत ही बेढङ्गा और हास्यास्पद व्यक्ति था । मैंने जब उससे अपना निश्चय बतलाया कि मैं उसे छोड़ रही हूँ तो वह बच्चों जैसा रोने लगा और सिसक-सिसक कर कहने लगा—

‘मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ ।’

मैं हँस पड़ी । मैंने कहा—‘प्रेम प्रेम की बात तो मैं जानती नहीं; उसकी चर्चा-छोड़ो । मगर मैं यह जानती हूँ कि न तो तुम में कला है और न तुम्हें प्रोत्साहन की ही आवश्यकता है, इसलिए अपने देश लौट जाओ और कोई दुकान बगैरह खोल कर जीविका कमाओ । तुम केवल इसी योग्य हो ।’

‘क्या उसने आग्रह नहीं किया ?’ मैंने पूछा ।

वह मेरे ऊपर मारे क्रोध के बरस पड़ा और बोला—‘निकल जाओ मेरे घर से !’ मगर मैंने उसे नेक सलाह दी थी और मेरा विचार है कि वह उससे लाभ उठाता । शायद बाद में उसने मेरी सलाह मान भी ली होगी । आदमी वह बुरा नहीं था; मगर कला उससे मीलों दूर थी ।’

साधारण सुबुद्धि और सांसारिकता द्वारा सुजेन जैसी स्त्रियाँ पर्याप्त जीवन-संबल पाकर अपनी जीवन-यात्रा सुख से काट सकती थीं; मगर उसमें भी न जाने कैसे—किसी दैवगति से—उतार चढ़ाव आही

जाते हैं—

एक वार वह स्वयं एक से प्रेम करने लगी—

‘वह मनुष्य नहीं देवता था—लम्बा, चौड़ा, स्वस्थ, देव समान ! बाल सुनहले और जादू भरे और शरीर तो ऐसा मीठा जैसे शहद । कलाकार भी वह अच्छा था और कूँची के लम्बे चौड़े प्रयोग से वह चित्र खींचा करता था ।’

उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह उससे सन्तान का वरदान मांगेगी । पहले तो वह उपेक्षित रही परन्तु विश्वास दिलाने पर कि वह स्वयं उत्तरदायित्व ओढ़ लेगी, वह राजी हो गया ।

‘जब शिशु हुआ तो वह इतना सुन्दर, इतना प्रिय, इतना भोला और स्वस्थ था जैसे ठोक उसका पिता ही देह धर कर आ गया हो । उसकी फूल सी देह, गुलाब से कपोल, हल्के-भूरे बाल देखते ही बनते थे । लड़की थी वह ।’

सुजेन उसके साथ तीन वर्ष रही ।

‘कभी-कभी मैं उससे ऊँच भी उठती थी । वह अक्सर मूर्खता भी कर बैठता; पर वह इतना प्यारा, इतना सुन्दर था कि मैं वे अवगुण देख ही नहीं पाती थी ।’

कुछ ही दिनों बाद एक तार आया जिससे ज्ञात हुआ कि उसका पिता मरण-शय्या पर है और वह शीघ्र ही चल दिया । यद्यपि उसने वचन दिया था कि यह शीघ्र ही लौटेगा मगर सुजेन का विश्वास था कि शायद अब वह कभी नहीं आएगा । उसने अपनी सारी सम्पत्ति सुजेन के नाम कर दी थी और दस हजार फ्रैंक (सिक्का) भेंट में भेज दिए थे । फिर भी वह हताश नहीं हुई । उसने अपना सारा धन और अपनी भोली बच्ची माँ के हवाले की जहाँ उसकी देख रेख ठीक हो क्योंकि वह अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से जान गई थी कि उसकी लड़की उसके जीवन के विशेष कार्यक्रम में सदा बाधक होगी—

‘अपनी बच्ची से विदा लेते समय मेरा हृदय फटा जा रहा था ।

मैं समझती थी कि मैं उसके बिना रह नहीं सकूँगी मगर जीवन में सबको व्यावहारिकता से काम लेना पड़ता है ।’

‘उसके बाद क्या हुआ ?’ मेरी उत्सुकता कम नहीं हो रही थी ।

‘मेरा काम चलता रहा । मुझे एक दूसरा मित्र मिल गया ।’

उसके बाद उसे टाईफायड हा गया । इस बुज़ार में न जाने क्यों वह एक अपनत्व देखती थी और जिस प्रकार धनी ‘अपनी कोठी’, ‘अपनी वाटिका’, ‘अपना जीवन’ इत्यादि कहा करते हैं उसी प्रकार वह टाईफायड में अपनत्व समझकर उसे ‘अपनी बीमारी’, ‘अपना टाईफायड’ कहा करती थी । बुखार इतना तेज होता कि वह जीवन की सारी आशा छुड़ देती । तीन महीने तक वह अस्पताल में पड़ी पड़ी सड़ा की और जब वह वहां से वापस आई तो उसका शरीर हड्डी का ढाँचा मात्र रह गया था । सूख कर वह कांटा हो गई थी; चलना फिरना दूभर हो गया था । वह किसी भी मतलब की नहीं रही—न तो वह चित्राधार ही बन कर रह सकती थी और न किसी का प्रेम ही पा सकती थी । पैसा भी उसके पास नहीं था ।

‘कुछ दिनों तक तो मैं बड़ी कठिनाई में रही मगर संसार में मित्र सदैव कहीं न कहीं मिल ही जाते हैं; और यही हुआ भी । मगर कलाकार योही निर्धन होते हैं, फिर मैं भी उतार पर थी—अपने बीसवें साल का आकर्षण मैं कहां से लाती—केवल काम चलाऊ बात रह गई थी । अपने एक पुराने मित्र कलाकार के यहाँ मैं जा पहुँची । उसने विवाह के बाद अपनी पत्नी को तलाक दे रखा था और मैंने उसकी जगह ले ली । मैं उसके लिए चित्राधार बन गई; वह अकेला तो था परन्तु वह केवल खाना-कपड़ा ही दे सकता था; ऊपर से कुछ नहीं; और मैंने सोचा चलो कुछ दिन ऐसे ही सही ।’

उसके बाद ही सुजेन की भेंट एक व्यवसायी से हुई । व्यवसायी एक दिन उसके चित्रालय में आ पहुँचा और इधर उधर चित्र उलटने पलटने लगा मगर उस दिन बिना कुछ खींचे ही चला गया और

दूसरे दिन आने का बचन दे गया। जिस मित्र के साथ वह पहले पहल आया था उसी के साथ वह फिर आया और ऐसा ज्ञात हुआ कि वह चित्र देखने के बजाय सुजेन को ही अधिक देख रहा है। जब उसने विदा ली तो सुजेन से हाथ मिलाते समय उसका हाथ जरा बे मुनासिब ढङ्ग से दबाया और उसकी गदेली कुछ देर तक अपने हाथों में जिए तौलता रहा। उसी दिन शाम को जब सुजेन बाजार में खाने पीने की चीजें खरीद रही थी वह मित्र फिर मिला और उसने बतलाया कि व्यवसायी की आंख उस पर लग गई है और उसने पुछवाया है कि क्या वह उसके यहां दावत का निमन्त्रण स्वीकृत करेगी। उसे कुछ विशेष बातें भी करनी हैं।

‘मुझमें उन्होंने क्या विशेष बात देख ली है जो इतनी उतावली है?’ सुजेन ने पूछा।

‘वह आधुनिक कला के प्रशंसक हैं और जब उन्होंने आपके चित्राधारित कलात्मक चित्रों को देखा तो उन्हें आपसे सम्पर्क बढ़ाने की उत्कट अभिलाषा हुई।’

‘उनके पास कुछ रकम भी है या ऐसे ही?’ उसने सहज स्वभाव से पूछा।

‘रकम की कोई कमी नहीं।’

‘तब तो मैं अवश्य चल्नूंगी; उनसे मिलने में मुझे कोई भी आपत्ति नहीं।’

वह खाना खाने गई मगर कपड़े बहुत ही सादे और सुथरे पहन गई। रास्ते में जब वह अन्य स्त्रियों को देखती तो उसे ज्ञात होता कि वह भी भले घर की स्त्रियों समान ही दिखाई पड़ती होगी और कोई कहीं उंगली न उठा सकेगा। वह व्यवसायी से मिल कर प्रसन्न हुई। उसने शैम्पेन की बोतल मंगवाई और इस बात ही से समझ गई कि वह व्यक्ति वास्तव में बहुत ही शरीफ है। खाने के बाद जब काफी पीने का समय आया तो उसने अपना प्रस्ताव रखा और वह बहुत ग्रह्य

भी था। उसने बतलाया कि हर सप्ताह, अपने व्यवसाय सम्बन्धी समितियों की बैठक में उसे पेरिस आना पड़ता था और शाम को वह इतना थक जाता कि उसे अकेले खाना खाना भार स्वरूप हो जाता और फिर उसके पश्चात् रात काटने के लिए उसे वेश्याओं की शरण लेनी पड़ती। विवाहित और दो बच्चों के पिता होने के नाते यह पुराना कार्यक्रम उन्हें नहीं रुचता और न यह उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा के अनुकूल ही था। उस मित्र द्वारा उन्हें शत हुआ था कि वह सुबुद्धि पूर्ण स्त्री है और वह सरलता से संबंध निभा सकती है। चूँकि वह युवा नहीं था और प्रौढ़ हो रहा था वह यह नहीं चाहता था कि किसी कम वयस्क छिछोरी नवयुवती के प्रेम पाश में बंध जाय। उसे आधुनिक कला से रुचि थी और जिन जिन का इस कला से सम्पर्क होता स्वभावतया उसके प्रेम-पात्र हो जाते। उसने बहुत साफ साफ बातें की। वह एक किराए की कोठी और एक हजार फ्रैंक प्रति मास भेंट करने को प्रस्तुत था। इसके बदले में वह केवल प्रत्येक सप्ताह एक बार उसके साथ रह कर मनोरंजन चाहता था। सुर्जन को इतनी रकम और इतनी सुविधा शायद ही कहीं मिली हो; और उसने फौरन अपने मन में हिसाब लगा कर समझ लिया कि इतने धन से वह बहुत ही शान शौकत से भले घर की स्त्रियों के समान पहन आँढ़ सकती है। और फिर अपनी बच्ची की देख भाल भी कर सकती है और बुढ़ापे और आड़े दिनों के लिए बचा कर रख भी सकती है। परन्तु वह शीघ्र तैयार न हुई। उसने कहा कि वह सदा से ललित कला की सेवा में लगी रही है और उसी में उसका चित्त भी लगता था और अब एक साधारण व्यवसायी की प्रेयसी बन कर रहने में उसकी प्रतिष्ठा गिर सकती थी। उसके हिचकने पर व्यवसायी ने बड़े सरल भाव से कहा—

‘यह तुम्हारी तबियत पर है; इसके आगे मैं कह ही क्या सकता हूँ?’

न तो उसमें स्वास्थ्य था न रूप, मगर वह विशेष कुरूप भी न था। परन्तु उसके कोट पर लगे हुए तमगों से यह विदित हुआ कि वह समाज में बहुत प्रतिष्ठित था और देश-सेवा में भी उसकी विशेष रुचि थी।

‘मैं तैयार हूँ।’ उसने कहा और मुस्कराई।

७

सुजेन बहुत दिनों कलाकारों के मुहल्ले में रही थी और अब उसने निश्चय किया कि उसे प्रतिष्ठित मुहल्लों में रहना चाहिए और अपनी सामाजिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना चाहिए। उसने एक बड़ी कोठी में तीन कमरे किराए पर ले लिए और दो एक नौकर भी रख लिये।

प्रथम मिलन के कई महीने बाद तक सुजेन अपने व्यवसायी प्रेमिक के साथ रही और वह प्रति सप्ताह समितियों की बैठक में पेरिस आया करते और रात में जब तक उनकी इच्छा होती सुजेन से अपना मनोरंजन कराते और फिर सो जाते। पेरिस से वापस जाने वाली गाड़ी बहुत तड़के छूटती थी इसी कारण वह बहुत सबेरे उठते और अपने होटल वापस जाकर सामान बांधते, काम-धाम सँभालते और फिर लौटकर अपने परिवार के संयम-पूर्ण जीवन में लग जाते। सुजेन ने एक दिन उनका ध्यान उनके बेकार खर्च की ओर आकर्षित किया जो उनके अलग होटलों में ठहरने के कारण हुआ करता था। व्यवसायी होने के नाते उसका तर्क उनकी समझ में आ गया और उन्होंने उसकी बड़ी सराहना की। जो स्त्रियाँ अपनी ही नहीं बरन अपने प्रेमिकों के व्यय-अपव्यय का भी ध्यान रखती हैं सदा सराही जाती हैं।

जब जब वह पेरिस आते तब तब खाना कभी होटलों में खाते

और कभी सुजेन स्वयं उनके लिए सुस्वादु भोजन बनाकर उनको सन्तुष्ट करती। कलापूर्ण चित्रों के खरीदने की उनकी पुरानी आदत थी और सुजेन अपनी कलापूर्ण आलोचना से उनको रोकती और उनका अपव्यय नहीं होने देती। दलालों से आख बचाकर वह अपने पुराने परिचित कलाकारों के पास उन्हें ले जाती और आधे दामों में चित्र खरीद देती। उनको मालूम था कि जितना पैसा उसको मिलता है उसमें से वह काफी बचा भी लेती है और जब एक रात प्रणयाभिनय के समय उसने बतलाया कि बची हुई रकम से उसने अपने गांव में थोड़ी बहुत जमीन भी खरीद ली है तो उन्हें बहुत गर्व हुआ। यह जानते हुये कि प्रत्येक फ्रांसीसी युवती की स्वाभाविक प्रवृत्ति निजी जायदाद रखने की रहती है उन्हें और भी सन्तोष हुआ और उसकी उन्होंने बड़ी सराहना की।

सुजेन भी बहुत सुखी और सन्तुष्ट थी। स्वाभावतः वह न तो किसी से परहेज करती और न विशेष असंयम से ही रहती। तात्पर्य यह कि वह किसी से स्थायी संबंध न करती और यदि चलते फिरते कोई जौहरी मिल जाता तो उसे उसको सन्तुष्ट करने में कोई आपत्त भी न होती; परन्तु इसका सदा ध्यान रखती कि उसकी कोठी में कोई रात भर न रहने पाए। किसी दूसरे व्यक्ति को अपने स्थायी प्रेमी का स्थान वह कभी न देती और इस व्रत का सदा पालन करती। ऐसा न करना एक प्रकार की कृतघ्नता ही होती क्योंकि जिस व्यक्ति ने उसे सामाजिक प्रतिष्ठा दी उसके साथ विश्वासघात करना अन्याय ही होता।

मैं सुजेन को सबसे जानता था जब से वह एक कलाकार मित्र के यहां रहती थी और चित्राधार का कार्य किया करती थी। चित्रालय में मैंने घंटों उसे अनेक आसनों पर बैठे देखा और जब तक वह प्रतिष्ठित मुहल्ले में आकर न रहने लगी उससे अपना परिचय अनिष्ट न होने दिया। जब व्यवसायी से उसका स्थायी संबंध हो

गया तो उसने मुझे अपने यहां निमंत्रित कर मेरा उनसे परिचय कराया। वह नाटे कद थे—दो चार इंच सुजेन से छोटे ही थे। मूँछे खिचड़ी थीं, बाल जंग के रंग के, शरीर कुछ कुछ स्थूल और तोंद बढ़ी हुई थी जैसा कि हर पैसे वाले की बढ़ जाया करती है। उन्होंने खाना बहुत अच्छा खिलवाया और बड़े तपाक से बातें की; और इस बात पर उन्हें बहुत सन्तोष हुआ कि मैं सुजेन का मित्र हूँ। बातों ही बातों में उन्होंने आग्रह भी किया कि मैं कभी कभी आकर उस बेचारी की देख-भाल भी कर जाया करूँ। वह इतनी अकेली पड़ जाती है कि उसका समय काटे नहीं कटता। मुझ जैसे साहित्यिक की मित्रता उन्हें और भी पसन्द इसलिये आई कि वे स्वयं कलाविद थे—

‘साहित्य और कला फ्रांस की राष्ट्रीय निधियां हैं। सैन्य शक्ति तो उसकी ऐतिहासिक है ही; और जहाँ तक मेरा सवाल है, चित्रकार और साहित्यिक को मैं राजनीतिज्ञों और सेनापतियों से किसी तरह भी कम नहीं समझता।’

कौन साहित्यिक ऐसी बातें नहीं सुनना चाहता।

कुछ दिनों बाद ही सुजेन ने अपनी नौकरानी को भी निकाल दिया। एक तो इससे बचते हुई और दूसरा कारण वह स्वयं बताना नहीं चाहती थी। शायद वह यह नहीं चाहती थी कि उसके घर की बातें बाहर जाँय; और दूसरों को उसके कामों में मीन-मेख निकालने का अधिकार ही क्या? वह स्वयं ही अपने घर-बार की मालिक थी। वह अपना घर स्वयं झाड़ती बुझारती, साफ रखती और फैशन के अनुसार सजावट बदलती रहती। अपना खाना भी पकाती और फ्राक और साये के नीचे पहनने वाले कपड़े स्वयं सीती। इतना सब करने पर भी समय काफी बच रहता था। वह बहुत मेहनती स्त्री थी और जब वह चित्राधार बनने का कार्य स्थगित कर चुकी तो उसे यकायक ध्यान आया कि क्या वह स्वयं चित्र नहीं खींच सकती? यह निश्चय करते ही उसने तख्तियाँ, परदे, बुद्दश, रंग—सब कुछ खरीद डाले और

जब कभी मैं उससे सबेरे मिलने जाता वह तिपाई पर बैठी हुई वड़े श्रम से चित्रों में रंग भरती मिलती थी। जिस प्रकार से स्त्री का गर्भाशय मानव-प्रगति के अनेक स्तरों को स्मरण कर शिशु को जन्म देता है उसी प्रकार सुजेन की कूची उसके सब पुराने प्रेमियों की चित्र-शैलियों को जन्म देने लगी। उसने हर आधुनिक शैली का प्रयोग किया; और यद्यपि वह अच्छी चित्रकार न थी पर फिर भी उसे रंगों के सामंजस्य का अच्छा ज्ञान था और इस कार्य से उसका यथेष्ट मनोरंजन भी हुआ करता था।

अपनी प्रेयसी की इस कलात्मक प्रतिभा को व्यवसायी प्रोत्साहन देता रहा और उसे इसके द्वारा गर्व-पूर्ण सन्तोष भी मिलता। उसने सुजेन के बनाए हुए चित्र प्रदर्शनी में भी भेजे और आलोचकों को दावतें खिलाकर उनकी प्रशंसा भी अनेक पत्रों में छपाई। परन्तु उसने कुछ दिनों बाद एक सलाह भी दी—

‘प्रिये! अपने चित्रों को पुरुषों की शैली में न चित्रित करो, उसमें स्त्री की अनुभूति डालो। अपना ध्येय यह मत रखो कि चित्र गहरे और प्रभावशाली हों—उन्हे केवल सुकोमल और हृदयग्राही बनाओ और फिर सत्य और यथार्थ का भी ध्यान रखो।’

जिस समय का मैं संस्मरण दे रहा हूँ उस समय तक सुजेन व्यवसायी के साथ पाँच वर्ष तक रह चुकी थी।

‘बहुत दिनों से मैं उनमें उत्साह और उत्तेजना की कमी देख रही हूँ, मगर वह बुद्धिमान हैं और उनकी प्रतिष्ठा भी अच्छी है। मेरी अवस्था अब ऐसी हो गई है जब मुझे अपनी स्थिति की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा।’

सुजेन में सहानुभूति थी, तर्क था, समझदारी थी और व्यवसायी उसकी बुद्धि के विषय में बड़ी श्रद्धा से बातें करता था। जब वह अपने व्यवसाय और परिवार संबंधी बातें करता तो वह बड़े प्रेम से सुनती और परामर्श देती। जब उसकी लड़की परीक्षा में असफल

रही तो सुजेन ने अपनी 'हार्दिक सहायुभूति प्रकट की और जब उसके पुत्र ने एक धनी परिवार की लड़की से प्रणय-संबंध स्थापित किया तो उसने सहर्ष बधाई दी। व्यवसायी ने स्वयं अपना विवाह अपने त्रिरोषी फर्म के मैनेजर की कन्या से करके दोनों व्यवसायों को अपने में सम्मिलित कर वार्षिक आमदनी तिगुनी करली थी और उसे इस बात पर हर्ष था कि उसके पुत्र ने यह सैद्धान्तिक रूप से जान लिया था कि वैवाहिक आनन्द के लिए आर्थिक-संगठन अत्यन्त आवश्यक है। उसने सुजेन की कन्या का विवाह भी अभिजात कुल में करने की इच्छा प्रकट की—

‘क्यों नहीं ! इस में कठिनाई कौन सी हो सकती है।’ उसने कहा।

व्यवसायी ने सुजेन की लड़की को कान्वेन्ट भेज कर शिक्षा दिलाने का भार ओढ़ लिया और वचन दिया कि शिक्षित होने के पश्चात् वह उसे अपनी कम्पनी में टाइप करने की नौकरी दे देगा और इसके बाद वह आसानी से किसी व्यवसायी की सेक्रेटरी बन जायगी और अपना जीवन आनन्द से व्यतीत करेगी।

‘बड़ी होने पर वह सुन्दरी होगी।’ सुजेन ने मुँहसे बतलाया। ‘टाइप का काम सीख लेगी तो प्रतिष्ठा तो पा ही जायगी। फिर अभी तो वह बिल्कुल छोटी है; मगर जिस तरह मैंने उसे सिखाया पढ़ाया है मुझे आशा है कि उसमें किसी जीवन विशेष की ओर कोई अस्वाभाविक प्रवृत्ति न आने पाएगी—आशा है—देखा जायगा।’

सुजेन ने अपनी बात बड़े करीने से कही थी। मैं उसका अभि-प्राय पूरी तरह समझ गया।

८

पहले या दूसरे सप्ताह के अन्दर ही यकायक लैरी से मेरी भेंट हो

गई। मैं और सुजेन दोनों बैठे हुए सिनेमा देख रहे थे और इन्टरवेल में पास के रेस्तरा में बियर पीने जा रहे थे। इतने में ही वह आ पड़े। सुजेन उसे देखती ही हाँफ उठी और उसे जोर से पुकारा। पास आकर उसने सुजेन के दोनों कपोलों को प्यार किया और मुभ्से हाथ मिलाया। वह उसे देखकर आश्चर्यित हो रही थी मगर बोल न सकी।

‘मुझे बहुत जोरों की भूख लगी है; कहिए तो यहीं बैठ जाऊँ।’

‘अरे! आप आसमान से कब उतरे—पहले यह तो बतलाइए!’ सुजेन के नेत्र चमक रहे थे। ‘इतने वर्षों तक कहाँ अन्तर्ध्यान रहे! हे ईश्वर! मैं तो समझती थी कि आप परलोक में ही दिखाई देंगे!’

‘वहाँ तो अभी तक नहीं जा पाया हूँ।’ लैरी ने शरारत से मुस्कुराकर कहा। ‘ओडेट कैसी है?’

ओडेट सुजेन की लड़की का नाम था।

‘वह तो अब बड़ी हो गई है—बड़ी सुन्दर है। वह अक्सर आपको याद करती है।’

‘आपने मुझे यह कभी नहीं बतलाया कि आप लैरी को जानती हैं?’ मैंने कहा।

‘यह मैं कैसे कहती; मुझे क्या मालूम कि आप इन्हें जानते हैं? हम दोनों बड़े पुराने मित्र हैं।’ लैरी का खाना आ गया था। सुजेन ने अपने और अपनी लड़की के विषय में बातचीत छोड़ दी। लैरी मुस्कुरा मुस्कुरा कर ध्यान से उसकी बातें सुनते रहे। उसने अपनी चित्रकारी की भी चर्चा की और मेरी ओर देखकर कहा—

‘मैं समझती हूँ कि मेरी कला प्रगति कर रही है—क्यों आपकी क्या राय है?’ ‘मैं यह नहीं कहती कि मैं श्रेष्ठ कलाकार हूँ मगर जितने लोग कलाकार बन बैठे हैं उनसे तो अच्छी ही हूँ।’

‘कुछ चित्र विकते भी हैं?’ लैरी ने पूछा।

‘बेचने की आवश्यकता ही क्या? मेरे पास अपने निजी

चैसा ही है जैसे कोई चाँद से प्रेम करे, सूर्य-रश्मि या बादल के टुकड़े से प्रेम करे। ईश्वर का लाख लाख धन्यवाद कि उसने मेरी रक्षा की! अब भी जब मैं सोचती हूँ काँप उठती हूँ।'

मेरी उत्सुकता की अब सीमा न थी। मेरे लिए रुकना भी असंभव था और मैंने आग्रह किया कि वह अपनी बातें जारी रखे। परन्तु सुजेन को आग्रह की आवश्यकता न थी वह रुकना जानती ही न थी।

‘आपकी भेंट उनसे कब और कहाँ हुई?’ मैंने पूछा।

‘ओह! बरसों की बात हो गई। शायद छः या सात या शायद आठ वर्ष हुए होंगे, ठीक याद नहीं पड़ता, ओडेट केवल पाँच वर्ष की थी। मेरे तीसरे प्रेमिक मार्सेल से, जिसके साथ मैं रहती था, लैरी का घनिष्ठ परिचय था। वह कभी कभी चित्रालय आकर बैठा करते। उस समय मैं चित्र के लिए आधार बन कर बैठी होती। हम लोगों को उन्होंने बहुत बार निमन्त्रित भी किया और बहुत खातिर की। कभी कभी वह प्रतिदिन सायंकाल आते और कभी दफ्तों गायब रहते। मार्सेल उनसे बहुत प्रेम करता था और कहा करता कि जब तक लैरी बैठे रहते तब तक उसके चित्र बहुत अच्छे बनते मगर बुलाने पर भी वह हमेशा नहीं आते थे। उसी समय मेरे टाईफायड ने मुझे आ घेरा और मेरे शरीर की तबाही आ गई। जब मैं अस्पताल से लौटी तो ऐसा मालूम होता था कि मैं वक्र से निकली चली आ रही हूँ।’ उसने लम्बी आह छोड़ी और कहा—‘वह सब तो मैं आपको पहले बता ही चुकी हूँ। उसी दशा में मैं दर-दर मारी मारी घूम रही थी कि कहीं कुछ काम मिल जाय मगर मेरी पूछ कहीं नहीं हुई। पूछता भी कौन; मेरी दुर्दशा जो हो गई थी। उस दिन मैंने एक गिलास दूध के सिवा कुछ भी नहीं पिया; बड़ी भूख लग रही थी। किराया दो महीने से बाकी था; मैं निकाली जाने वाली थी। इसी सोच में मैं सिसक रही थी कि यकायक इस आदमी ने मुझसे पूछा—

‘मालूम पड़ता है आप दुःखी हैं, क्या खाना खायेंगी ?’ उसके स्वर में इतनी सहानुभूति थी कि मैं जोर से रो पड़ी।

‘पास ही हॉटल था और मेरा हाथ पकड़े पकड़े वह मुझे अन्दर ले गया और मुझे इतनी भूख मालूम हो रही थी कि मैं वहाँ ईंट, पत्थर तक खा सकती थी। मगर खाना देखते ही तबियत भर गई; मैं दो एक ग्रास से ज्यादा न खा सकी। तब जबरदस्ती उसने मुझे आग्रह से खिलाया और शराब का गिलास सामने रख दिया। मेरी गिरी हुई तबियत में धीरे धीरे जान आ गई और मैंने अपनी सारी कहानी उससे बतला दी। मैं हड्डी-हड्डी हो रही थी और मुझे कोई फूटी आखां न देखता था। मैं किसी का सहारा भी उस हीन दशा में न पा सकती थी। मैंने उससे प्रार्थना की कि मुझे मेरे गाँव भेज दे; वहाँ मेरी लड़की तो है। उसी को देख कर मैं जीऊँगी। जब मुझसे उसने पूछा कि क्या मैं पेरिस से विलकुल ही चली जाना चाहती हूँ तब मैंने भिन्नकृत हुये कहा कि गाँव में मेरी माँ मुझे बोक समान ही समझेगी क्योंकि उसके पास अपने लिए ही पैसा नहीं मुझे कहाँ से खिलाएगी और जो कुछ मैंने ओडेट के लिए भेजा था अब वह भी समाप्त हो गया होगा। हाँ ! अगर मैं उसके गले ही पड़ जाऊँ तो वह माँ के नाते मुझे दुत्कारेगी तो नहीं, मगर मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। सब सुन चुकने के पश्चात् मेरा अनुमान हुआ कि वह उपेक्षा से कहेगा कि उसके पास पैसा नहीं है, मगर उसका उत्तर सुनते ही मैं दातों तले उंगली दबा बैठी।’

‘अपनी लड़की को साथ लेकर क्या तुम मेरे साथ चल सकोगी; वह जगह जहाँ मैं ठहरा हूँ यहाँ से पास ही है और आवहवा बदलने से तुम्हारा स्वास्थ्य और भी अच्छा हो जायगा। मैं वहाँ आराम करने जा रहा हूँ : तुम चलना चाहो तो चल सकती हो ?’

मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। मुझे हँसी आ गई। मैंने शुष्क मुस्कान से कहा—

‘इस अवस्था में मैं आपके किस काम की, हूँ! आगे चाहे हो भी जाऊँ!’

‘मुझे देख कर वह अपनी स्वर्गीय मुस्कान से मुस्कुगाया। आपने उसकी मुस्कान तो देखी ही होगी, कितनी मीठी है वह—शहद जैसी।’

‘तुम बिल्कुल भोली हो! मैं उस चीज की सोच ही नहीं रहा हूँ।’

मैं सहानुभूति के बाहुल्य से फफक कर रो पड़ी। मेरी आवाज नहीं निकल रही थी। उसने मुझे काफी खर्च भी दिया कि मैं जा कर अपनी बच्ची को ले आऊँ। मगर हम दोनों साथ ही गाँव गए और बच्ची को लेकर आबहवा बदलने चल दिए। कितनी सुन्दर जगह थी वह?

सुजेन ने उस स्थान का वर्णन किया जहाँ वे दोनों घूमते, नाव पर नदी की सैर करते, हरियाली देखते फिरते और प्रकृति की छटा निहारते हुए घंटों व्यतीत किया करते थे। एक होटल भी था जहाँ खाना बहुत अच्छा मिलता था। वहाँ अनेक लोग शामको खाना खाने आते। हम लोगों की प्रसन्नता का पारावार न था।

‘ओडेट को तो वह अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था। वह भी उसके पीछे पीछे लगी रहती थी। कभी कभी तो वह उसे इतना परेशान करती कि मैं स्वयं खीझ उठती मगर उसे जरा भी बुरा न लगता। वह सबको हँसाता रहता। मुझे तो वह और ओडेट दो छोटे छोटे बालक समान ज्ञात होते—मैं अत्यन्त सुखी थी।’

‘आप स्वयं दिन भर क्या किया करती थीं?’ मैंने प्रश्न किया।

‘वहाँ कुछ तो हमेशा ही करने को रहा करता। कभी नदी में दिन भर मछलियाँ पकड़ते या टमटम की सवारी करते जो उन्हें बहुत प्रिय थी। उस स्थान की शान्ति उनके हृदय में घर करतो जा रही थी। अक्सर उनके मुख पर स्वर्गीय शान्ति आती जाती प्रतीत होती—हम दोनों बहुत प्रसन्न थे।’

उन्हीं दिनों लैरी ने सुजेन से अपने मित्र की कथा बतलाई थी जिसने उनको बचाने में अपने प्राण न्योछावर कर दिये। उस कहानी का वर्णन मैं पाठकों को पहले दे चुका हूँ।

‘आप ही से उन्होंने अपना यह अनुभव क्यों बतलाया—यह मैं नहीं समझ पाया ?’ मैंने पूछा।

‘कह नहीं सकती। घूमते-फिरते हम लोग एक शाम कवरिस्तान की ओर जा निकले : कतार पर कतार कब्रें बनी हुई थीं। मैं बहुत देर तक वहाँ न ठहर सकी क्योंकि मुझे डर सा लगने लगा। लौटते समय लैरी चिन्तामग्न रहे। खाना भी उन्होंने बहुत कम खाया; यों भी वह बहुत ही कम खाते हैं। बड़ी सुहावनी रात थी। नदी के तट पर बैठे हुए हम दोनों चन्द्रिका की अठखेलियाँ देख रहे थे। हम लोगों के पीछे लम्बे चीड़ के वृक्षों की छाया पड़ रही थी। लैरी ने अपना पाइप सुलगाया और यकायक अपने मित्र की चर्चा करने लगे कि किस प्रकार उसने उन्हें बचाने के हेतु अपने प्राणों की आहुति दे दी।’

‘लैरी क्या पढ़ते रहते थे ?’

‘अनेक प्रकार की पुस्तकें—विशेषतः दर्शन; और यों तो सभी विषयों पर—कभी इतिहास, कभी मनोविज्ञान, कभी कविता, कभी नाटक। कभी-कभी तो हम दोनों नाटक खेलते—वह नायक बनते और मैं नायिका। अब भी मेरे पास उनकी कई पुस्तकें पड़ी हुई हैं। कितने आनन्द के दिन थे वे—उनकी याद आते ही जी में हूक उठ जाती है—लैरी देवता हैं आदमी नहीं ?’

मुझे कुछ-कुछ हँसते देख कर सुजेन ने समझा कि वह शायद अधिक भावुक हो गई और वह एकदम स्वयं ही हँस पड़ी।

‘आपसे मैं पहले भी बतला चुकी हूँ कि जब मेरी आयु ढल चलेगी और मैं किसी के काम लायक न रह जाऊँगी तो मैं अपना ज्ञान-ध्यान ईश्वर की ओर लगाऊँगी और गर्जें में जाकर अपना

परचाताप प्रकट कर आत्मिक शान्ति प्राप्त करूंगी; मगर लैरी के साथ मैंने जो कुछ भी कहने सुनने के लिए पाप किया उसकी क्षमा कभी भी नहीं मांग सकती, कभी नहीं—कभी भी नहीं। वे ही मेरे स्वर्गीय सुख के दिन थे।’

‘जो कुछ आपने बतलाया उसमें तो कहीं क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती!’

‘मैंने तो अभी आधी कहानी भी नहीं बतलायी। लैरी के साथ रहते-रहते मेरा शरीर धीरे-धीरे अच्छा होने लगा। प्रकृति-भ्रमण और खुली हवा का आकर्षण, सुन्दर राते, शान्त दिन, निश्चिन्तता, गहरी नींदें, सबने मेरा लुटा हुआ यौवन मुझे वापस कर दिया। मेरे कपोलों की लाली लौट आई; मेरे बालों पर स्वर्णिम आभा दौड़ गई। मेरे जीवन का बीस-वर्षीया उभार फिर से आ गया। नित्य प्रातःकाल लैरी नदी में तैरते और उनका सुन्दर स्वस्थ शरीर मैं अपलक निहारा करती। कितना सुन्दर था उनका शरीर, कितनी आकर्षक उनकी भ्रूभंगिमा, कितना सुडौल उनका मुख, कितनी मनोमुग्धकारी उनकी मुस्कान!’

‘जब तक मैं कमजोर रही तब तक मेरा ऐसा अनुमान है कि उन्होंने सन्तोष और धैर्य से काम लिया और जब मैं पूर्णतया स्वस्थ हो गई तो मुझे विचार आया कि अब उन्हें आगे बढ़ना चाहिए और वह मुझे तैयार भी पाते। मैंने उन्हें दो चार बार संकेत भी दिया कि मैं उनकी सब कुछ होने को तैयार हूँ; मगर उन्होंने मेरे संकेतों को जैसे देखा ही नहीं—वह जैसे पहले थे वैसे ही रहे। एंग्लो-सैक्सन जाति के लोग विचित्र होते हैं—या तो वे निरे भावुक होते हैं या निरे क्रूर। मैंने सोचा कि कदाचित् वह कहीं यह न सोच रहे हों कि उन्होंने मेरे ऊपर जो इतने उपकार किए हैं वह अब उसका बदला चाहते हैं। उसमें बदले की तो कोई बात ही न थी—वह तो उनका सहज अधिकार था—उनके सुन्दर शरीर का; उनकी सुडौल आकृति का।

‘आज रात तुम्हारे पास आऊँ ?’

मैं करती भी तो क्या करती। अपने कमरे में उन्हें बुलाना इसलिए नहीं ठीक था कि ओडेट वहीं सोती थी। उन्होंने अपनी बड़ी बड़ी आंखों से मुस्कुरा कर मेरी ओर देखकर कहा—

‘क्यों नहीं ! इतना सुन्दर, स्वस्थ, सुडौल शरीर !!!’

‘मैं फौरन ही ऊपर गई और कपड़े बदल कर चुपचाप दवे पांव उनके कमरे में चली आई। वह लेटे लेटे पुस्तक पढ़ रहे थे और उनका पाइप सुलग रहा था। उन्होंने किताब बन्द की, पाइप अलग रख दिया और मेरे लिए स्थान बनाने के लिए एक ओर सरक गये।’

‘ऐसा प्रेमिक तो मैंने कभी देखा भी नहीं था। इतना सुमधुर, इतना स्नेही, इतना कोमल, इतना पुनस्त्व लिए—फिर भी अत्यन्त भीरु। इसके साथ ही साथ निर्मल, स्वच्छ, धुली हुई चांदनी की तरह था उनका प्रेम—नाप का कहीं लेश नहीं; स्वार्थ की कहीं झलक भी नहीं। उन्होंने अछूते नवयुवक के समान मुझसे प्रेम किया। मेरा जी भर आया। मुझे ही उनका आभारी होना चाहिए था। जब मैं उनके पास से हट गई तो उन्होंने पुनः अपनी किताब उठा ली और पाइप सुलगा लिया।’

मुझे बेतहाशा हसीं छूट पड़ी ।

‘हां ! शायद आपको हँसी इसी समय जरूर मालूम हो रही है ।’
उसने अपेक्षा के भाव से कहा । वह स्वयं भी मुस्कराई—‘मगर

आपको शायद यह नहीं मालूम कि यदि मैं उनके बुलाने के इन्तजार में रहती तो जीवन भर इन्तजार ही करती रह जाती ।^१

‘उसके पश्चात् जब जब मेरी इच्छा होती मैं चुपचाप उनके पास चली जाती और आनन्द की नींद में सो जाती । वह सदैव मेरा ध्यान रखते थे । मेरा ऐसा अनुमान है कि उनमें पुरुषों के समस्त सहज मनोभाव थे परन्तु वह अपने सोच विचार में इतने मग्न रहते कि उन्हें किसी और बात का ध्यान ही न आता । जब वह अपने ध्यान में व्यस्त रहते तो न उन्हें खाने की सुध रहती और न किसी अन्य संसारी कार्य का ध्यान रहता । मगर जब कोई स्मरण दिला देता तो वह खाना भी मजे में खाते, बातें भी खूब करते । मेरे हृदय में यह विचार उठा कि यह व्यक्ति यदि मुझे पेरिस वापस लाकर अपने साथ साथ रखता तो मुझे चिन्ता न रहती । प्रत्येक स्त्री स्वभावतः जान लेती है कि कौन सा व्याक्त उससे प्रेम करता है और कौन नहीं । यदि मैं यह समझती कि लैरी मुझसे प्रेम करते हैं तो मुझसे बढ़कर मूर्ख कदाचित् ही कोई स्त्री होती; परन्तु इतना मैं जानती थी कि वह अपने सहज स्वभाव से किसी को भी अपना सकते थे—मेरा संबंध भी उनके सहज स्वभाव का एक अंग सा हो गया था । उनमें न आसक्ति थी और न विरक्ति—बस केवल आदत । मेरी बच्ची जो उनको बहुत प्यार करती थी मेरे साथ ही साथ रहती और इसका मुझे बड़ा चाव था कि मैं अपनी आँखों के सामने ही उसे रखूँ । मेरे अन्तरतम ने मुझसे स्पष्ट कह रखा था कि लैरी से प्रेम की साक्षात् मेरे लिए कोरा भ्रम होगा और उन मरीचिका से मैं धोखा खाती खाना चाहती थी । कदाचित् आप यह सिद्धान्त नहीं मानते कि जब स्त्री प्रेम करने लगती है तो वह आकर्षण हीन और निष्क्रिय हो जाती है । इसलिए मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि मैं साधु ध्यान रहूँगी ।’

सुजेन ने अपने सिगरेट से एक लम्बा कश खींचा और कुछ

धुँआँ मुँह से और ज्यादा नाक से छोड़ती रही। देर हो गई थी मगर फिर भी लोग इधर उधर मंडरा रहे थे।

एक दिन जब मैं जलगान कर चुकी तो नदी के किनारे चली गई और वहाँ बैठ कर मोजे बिननें लगी। ओडेट छोटे छोटे पत्थरों को इकट्ठा कर दीवाज बनाने का असफल प्रयत्न कर रही थी। इतने में लैरी आ पहुँचे—

‘मैं तुमसे विदा मांगने आया हूँ।’ उन्होंने कहा।

‘क्या कहीं जा रहे हो?’ मैंने आश्चर्य से पूछा।

‘हाँ।’

‘क्या फिर नहीं लौटोगे?’

‘अब तो तुम अच्छी हो गई हो। गर्मी भर यहाँ रहने के लिए काफी पैसा भी है और अब तो आसानी से पेरिस लौटकर तुम अपना जीवन फिर से उत्फुल्ल बना सकती हो।’

कुछ क्षणों के लिए तो मैं स्तब्ध रह गई और जान न पाई कि क्या कहूँ। वह चुपचाप अपनी सहज मुस्कान से मेरी ओर देखते हुये खड़े रहे।

‘क्या मुझमें अप्रसन्न हो?’

‘बिल्कुल नहीं। इसका तो तुम्हें स्वप्न में भी ध्यान नहीं आना चाहिए। मुझे कुछ काम है। हम लोग यहाँ जब तक रहे वढ़ें सुब से रहे। ओडेट! इधर आओ। मैं तुमसे भी विदा लूँ।’

ओडेट बहुत छोटी थी और इतनी अज्ञान कि उसे कुछ भी ज्ञात न हुआ कि किस निर्मोही से वह विदा ले रही है।

‘लैरी ने उसे गोद में लेकर उसका मुँह चूम चूम कर प्यार से भर दिया और होटल में वापस चले गये। थोड़ी ही देर में मैंने मोटर जाने की घरघराहट सुनी। मैंने अपने हाथ के पैकेट को देखा जो लैरी छोड़ गये थे। वह थे वारह हजार फ्रैंक। वारह हजार! मुझे अपने पर विश्वास न हुआ। हे ईश्वर! यह क्या? परन्तु मैंने

अपने को बहुत सराहा ! अपने को मैंने उनके प्रेम में डूबने के पहले ही बचा लिया । परन्तु मैं अब तक समझ न पायी कि मेरा बिलुप्त मित्र मनुष्य था या देवता ?

मैं हँसने पर विवश हुआ ।

‘आपने फिर वही पुरानी शरारत की । मैं फिर कहती हूँ कि लैरी विचित्र जीव है । उसके कार्य भी कुछ कम विचित्र नहीं । हम लोगों ने ऐसे व्यक्ति देखे ही नहीं जो ईश्वर के नाम पर बिना उस पर विश्वास या अविश्वास किए, अपना प्रेम दूसरों पर बिखेरते रहते हैं ।’

सुजेन ने अपना गिलास भरा । मैं विदा हुआ ।

पाँचवाँ परिच्छेद

१

अपने कार्य के सिलसिले में मैं काफी दिनों के लिए पेरिस में ठहरा रहा। वसन्तागमन के समय पेरिस की रौनक का क्या कहना ? सड़कों के किनारे, फूल अपना सुगन्धित पराग वायु के मधुर झोंकों के साथ इधर-उधर बिखराया करते और रात की कलियाँ यकायक चिटल कर प्रातःकाल फूलों में परिणत हो जातीं। चहल-पहल इस मौसम में बहुत हो जाती है और जो लोग घरों से बाहर निकलने के अभ्यस्त नहीं रहते वे भी बड़े शौक से इधर-उधर चहल-कदमी करते हुए दिखालाई देने लगते हैं। बसन्त की वायु-लहरियों में एक प्रकार की मादकता—एक प्रकार की मस्ती ज्ञात होती और लोगों के बँधे हुए हाथ पैर मानो खुल से जाते। अपने मित्रों की गोष्ठियों में मैं ज्यादातर भाग लिया करता था जिसके कारण अनेक पुरानी स्मृतियाँ और भी स्पष्ट रूप से जाग पड़ती थीं; उन्हीं को सोच-सोच कर मैं मुस्कुरा पड़ता था।

आइजाबेल, ग्रे, लैरी और मैं—चारों अक्सर इधर-उधर आस-पास के सुन्दर स्थानों को देखने चले जाया करते और समय हँसी

खुशी में कट जाता। जहाँ-जहाँ हम लोग जाते खूब खाना खाते और खूब घूमते। ग्रे, कुछ तो अपने भीमकाय शरीर को बनाये रखने और कुछ अपनी जबान से विवश हो, कस कर खाना खाता और शराव के गिलासों का नम्र भी कुछ न कुछ बढ़ाए रखता। उसका स्वास्थ्य लैरी की चिकित्सा से अथवा समय बीतने के साथ साथ अच्छा होता गया। उसकी शिर पीड़ा बिलकुल मिट गई; और उसकी आँखों की प्रलाप-भावना जो पहले स्पष्ट-रूप से दिखाई दिया करती थी अब गायब हो चुकी थी। यों तो वह कम बातें करता मगर जब कभी अपने व्यवसायी मित्रों के बारे में वह लम्बी-चौड़ी उड़ान लेता तब हम लोग ऊब उठते परन्तु मेरी और आइजाबेल की ठिठोलियों पर वह कहकहा मार कर हँसा अवश्य करता था। वह प्रसन्न भी स्वभावतः बहुत रहता और इतनी जल्दी प्रसन्न किया भी जा सकता था कि कभी-कभी मुझे उसके इस गुण पर आश्चर्य होने लगता था। इसी गुण के कारण वह सब को वशीभूत किए रहता। उसको पहले-पहल देखने पर तो यह मालूम होता कि इस व्यक्ति के साथ कदाचित् एक दिन भी रहना दुभर हो जायगा मगर जान-पहचान बढ़ते ही महीनों उसके साथ हँसी खुशी में व्यतीत हो सकते थे।

आइजाबेल के लिए उसका प्रगाढ़ प्रेम देखते ही बनता था। उसके सौन्दर्य का वह दास था और उसके अनुमान और विचार में कदाचित् ही कोई दूसरी सुन्दरी हो जो उसकी समता कर सके। लैरी के प्रति उसकी भावना—वैसी ही आदरपूर्ण और श्रद्धायुक्त थी जैसी भगवान के प्रति भक्त की अथवा स्वामी के प्रति कुत्ते की। वह उसके इशारों पर चलता और आत्म-समर्पण के लिये सदैव प्रस्तुत रहता। लैरी भी प्रसन्न दिखलाई पड़ता और हँसी खुशी में अपना पूर्ण सहयोग देता; परन्तु उसको देखने पर ऐसा ज्ञात होता कि मानों वह किसी छुट्टी में स्कूली लड़कों ऐसा घर आया है और छुट्टी व्यतीत होते ही वापस चला जायगा। जो कार्यक्रम उसने अपने मन में स्थिर

कर लिया था उसकी छाया भी न मिलती परन्तु इतना स्पष्ट मालूम होता था कि उसका आधा हृदय कहीं और ही है। बात तो वह ज्यादा कभी भी न करता परन्तु उसका सहयोग ही बहुत आनन्दपूर्ण होता और उसका चुप रह कर मुस्कराना ही अनेक लोगों की बात-चीत से कहीं अधिक आकर्षक था। यद्यपि उसने एक भी हास्यपूर्ण बात अथवा व्यंगोक्ति नहीं कही मगर यह स्पष्ट था कि बिना उसके हम लोग अवश्य ऊब उठते।

एक दिन जब हम लोग शाम को घूम-फिर कर वापस लौट रहे थे तो मैंने एक ऐसा दृश्य देखा जिसने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। हम लोग मोटर में बैठे हुये पेरिस लौट रहे थे। ग्रे मोटर चला रहा था और लैरी उसके बगल में बैठा था। आइजाबेल और मैं पीछे बैठे थे। दिन भर के घूमने-फिरने से हम लोग थक से गए थे। लैरी अपना हाथ ग्रे की पीठ के सहारे रखे हुये बैठा था। उसकी कमीज काफी ऊपर सरक गई थी और उसके भूरे हाथ और सुडौल कलाई के रुफेद और भूरे रोएँ शीशे से छुन कर आती हुई शाम की ढलती धूप की किरणों में चमक रहे थे। आइजाबेल बहुत देर तक हिली-डुली न थी जिसके कारण मेरा ध्यान यकायक उसकी आर गया। ऐसा मालूम होता था जैसे किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। मन्त्रमुग्ध-सी एकटक वह देख रही थी और उसकी साँस तेज थी। उसकी आँखें लैरी की सुडौल भूरी कलाई पर टिकी हुई थीं—ऐसी आँखें जिनसे मालूम पड़ता था वह उन्हें निगल जायगी। उसकी आँखों में मुझे ऐसी राक्षसी भूख दिखाई दी जो मैंने शायद ही कहीं और देखी हो। उसमें उद्दाम लालसा विस्फारित रूप से प्रकट थी। मैं सिहर उठा। उसके सारे मुख पर लालसा का गहरा लाल घूंघट लिपटना चला जा रहा था। ऐसी अप्राकृतिक लालसा! ऐसी अदृष्ट वासना! मानो उपा का तमतमाया हुआ मुख हो। उसमें सारस्व की जगह तीव्रता थी, मानवता की जगह पाशविकता। और यदि किसी

वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा उसके मुख का सौन्दर्य-भाग हटाया जा सकता, तो वह ऐसी मालूम होती जैसे कोई पिशाचिनी अभी-अभी अपना शिकार ढूँढ़ने निकली है अथवा जैसे कोई गर्माई हुई कुतिया इधर-उधर चीखती चली जा रही है। मुझे मतली आने लगी। उसे किसी का भी ध्यान न था—न अपना, न मेरा—केवल उसकी आँखें थीं और लैरी की सुडौल कलाई और उद्दाम वासना की साँसें ! यकायक उसका ध्यान उचछा जैसे किसी ने उसके गालों पर चिकोटी काट दी हो। वह भरभरा कर ठिठक उठी; आँखें बन्द हो गईं और वह कोने में निश्चेष्ट लुढ़क गई।

‘जरा एक सिगरेट तो दीजिए ।’ रुधे हुए कण्ठ से आवाज आई—मैं पहचान ही न सका कि यह गला कभी आइजाबेल का भी हो सकता है।

मैंने सिगरेट-केस से एक सिगरेट निकाल कर उसे दिया और दियासलाई जलाई। जल्दी-जल्दी कई कश खींचने के बाद उसने खिड़की के बाहर देखना शुरू कर दिया। फिर वह एक शब्द भी नहीं बोली।

जब हम लोग ग्रे की कोठी पहुँचे तो उसने लैरी से मुझे मेरे होटल तक पहुँचा देने का आग्रह किया। लैरी ड्राइवर-की सीट पर बैठ गया और मैं उसके वगल में जा बैठा। आइजाबेल ने मोटर से उतरते ही ग्रे की बाइ पकड़ ली और उससे सटी-सटी चलने लगी और सिट्ठियों पर चढ़ते-चढ़ते उससे चिपटती ही चली गई। उसकी भावभंगी का मतलब मैं साफ-साफ समझ गया—ग्रे की शयन-संगिनी उसे आज विशेष सुख देगी; परन्तु इस मूक कामुक-आदेश के पीछे आत्मा की कितनी भर्त्सना थी ! क्या उसका उसे कोई आभास मिलेगा ?

गर्मी आ रही थी। इलियट के अनेक मित्र अमरीका जाने वाले थे इसलिये उन्होंने अपनी कोठियाँ और उद्यान ग्रे को रहने और

घूमने-फिरने के लिए आग्रह-पूर्वक दे दिए। लैरी ने कुछ दिनों और पेरिस में रहने का निश्चय कर एक पुरानी मोटर खरीद ली। मैंने भी पेरिस से रिवीयरा जाने का निश्चय किया। अपने जाने के एक दिन पहले मैंने अपने तीनों मित्रों का खाना खाने के लिए आमन्त्रित किया। उसी रात हम लोगों की भेंट सांफी से हुई।

२

आइजाबेल ने कुतूहल-वश पेरिस के अनेक शराबी-अड्डों और वासना-लयों को देखने का आग्रह बहुत दिनों से कर रखा था। इन अड्डों से मेरा परिचय बहुत पुराना था इसीलिए मुझे सबका नेता बनना पड़ा। पहले तो मैंने टाल वताई क्योंकि इन स्थानों के लोग बाहरी आदमियों को संदिग्ध दृष्टि से देखते हैं और यह नहीं चाहते कि इधर उधर के अपरिचित लोग उनके जीवन की देख भाल या उसमें मीन-मेल निकालने आएँ। बाहरी आदमियों को देखते ही वे आवाजे कसने लगते और बदतमीजी पर भी उतारू हो जाते; इसलिए मैंने आइजाबेल से बिलकुल सीधे-सादे कपड़े पहन कर चलने का आदेश दिया। मैंने पहले से चेतावनी दे रखी थी कि हम लोग वहाँ थोड़ी ही देर में ऊब उठेंगे परन्तु आइजाबेल के आगे किसकी चलती। उस रात हम लोगों ने देर से खाना खाया और इधर उधर घूमने के बाद एक ऐसे अड्डे पर जा पहुँचे जहाँ जुआड़ियों और ठगों के जत्थे अपनी अपनी प्रेमिकाओं को लिए हुए उनको गुदागुदा-गुदगुदा कर अपना मनोरंजन किया करते थे। वहाँ के मैनेजर से मेरा परिचय था इसलिए हम लोगों के लिए उसने एक लम्बी मेज लगा दी और हम लोगों को वहाँ बिठला दिया। उस पर, फिर भी अनेक लफंगे और तिलगें आकर बैठ गए; मगर मैंने सबके लिए शराब मंगवाई। एक दूसरे के स्वास्थ्य की मंगल

कामना करते हुए हम लोग देर तक गिलास पर गिलास ढालने लगे धुआँ, गर्द, बदबू—तीनों से कमरा सराबोर था। उसके बाद मैं उन्हें एक दूसरे फैशनेबिल अड्डे पर ले गया जहाँ पर नंगी युवतियाँ एक लम्बी मेज के दोनों ओर बैठी थीं। उनके उन्नत उरोज कभी कभी मेज के किनारों से रगड़ खाते अथवा उसी मेज के किनारे किनारे छोटे बड़े गेदों के समान टिके रहते। स्तनों के निपुल मेज पर पड़े हुये रंग विरंगे फूलों को इधर उधर बिखेरने में प्रयुक्त हो रहे थे। जिस तरह छोटे लड़के गोली खेलते हुए, गोलियाँ एक दूसरे से टकरा देते हैं उसी प्रकार स्तनों को डिपनियाँ फूलों से गोली खेल रही थीं ? यकायक बेंड वजा और मेज पर टिके हुए उरोज एक दम से ताल देकर भरभरा उठे और उसी क्षण नृत्य आरंभ हो गया। दोनों ओर मेज पर युवतियाँ उछल कर खड़ी हो गईं। बैण्ड की आवाज, पैरों की चाप, स्तनों का झुत्ताव, आँखों की चटक-मटक सबने मिलकर निःशब्द नर्तन आरम्भ कर दिया। डूबती, तिराती, मडलाती, आँखें और आँखों की पुतलियाँ कुछ खास खास स्वस्थ व्यक्तियों पर टिक जातीं; फिर नर्तकी के थिरकन के साथ दो चार मूक संकेत दे पलट जातीं। हम लोगों ने शैम्पेन की एक बोतल मगाई। ज्यों ही आइजाबेल ने अपना गिलास उठाया त्यों ही पाम से जाती हुई दो नर्तकियों ने उसकी ओर बहुत गहरी आँख मारी। पता नहीं वह उसका अर्थ समझ पाई अथवा नहीं ? पूछना कठिन था।

कुछ देर बाद हम लोग तीसरे अड्डे पर जा पहुँचे। भीड़ बहुत थी मगर मैनेजर ने हम लोगों की शकल से भाग लिया कि हम लोग पैसा खर्च करने आए हैं और जगह निकालनी ही चाहिए। उसने पहले से बैठे हुए दो चार लोगों को उठा कर दूसरी जगह बिठा दिया और हम लोगों के लिए स्थान बना दिया। जो लोग इस तरह से हटाए गए, हट तो गए मगर जाते-जाते उन्होंने ऐसी-ऐसी बातें कहीं कि जिनका आशय बतलाना कठिन तो नहीं मगर अश्रद्धास्पद अवश्य है।

हम लांग अनसुनी कर गए। ज्यादातर नवयुवक ही हर ओर थे—
 दुबले, पीले, चुमे हुए—शिथिल। कुछ बाजे बजा रहे थे, कुछ गा
 रहे थे, कुछ आपस में धौल-धप्पड़ कर रहे थे। बहुत से नाच रहे थे।
 कुछ मस्त्ताह लाल लाल टोपियां लगाए और कुछ गले में रुमाल
 लपेटे भूम रहे थे, कुछ जवान स्त्रियां अंगना, कुछ नव-वयस्काएँ
 सरासर नंगी, कुछ लाल चोली और नीले साए पहने, नंगे सर इधर
 उधर टूट पड़ने के लिये आतुर हो रही थीं। उनकी रंगी हुई आँखें
 और काजल से खींच कर लम्बी की हुई भौंहें और बगैनियाँ आदमियों
 को घूरने और उनकी शकलें समेटने में लगी हुई थीं। कुछ अथेड़,
 गोरे, नाटे, मोटे लड़कों के साथ-जिनकी आँखों में सुरमा भरा था
 नाच रहे थे: मोटी, लम्बी, चौड़ी स्त्रियां दूसरी नाटी मोटीं भद्दी औरतों
 के साथ, जिनके बाल रंगे हुए थे नाच रही थीं। पुरुष हर किसी के
 साथ दिखाई दे रहे थे। धुएँ का कुहरा सा छाया था, शराब की
 भभक उड़ रही थी, पर्साने की बदबू में कमरा भरा पड़ा था। बाजे
 लगातार बज रहे थे और नाचने वालों के जतये के जतये इधर उधर घूम
 रहे थे। पर्साने की चमक उन रुबके चेहरों पर थी और उन पर गंभीर
 तथा बीभत्स भावों का द्वन्द्व प्रदर्शित था। कुछ लम्बे चौड़े व्यक्ति भी
 दिखाई दिए मगर उनके मुख पर पाशवेकता के निशान कुछ और न
 था; मगर अधिक लांग नाटे, दुबले, चुमे हुए ही थे। इतने ही में तीन
 आदमियों ने मिलकर बाजा बजाना शुरू किया। लांगों की धौल-
 धप्पड़, नाच कूद, और बदबू एक ओर, और दूसरी ओर बाजों की
 आवाज—एक अजनबि समझा हुआ था! गाने वालों ने गाना बन्द
 करके गन्दे रुमालों से पसीना पोंछा और शिथिल होकर बैठ गए।
 यकायक एक अमरीकी कण्ठ से आवाज आई—

‘ईसा के नाम पर !!!’

एक स्त्री दूर की भेज के पास से उठी चली आ रही थी। जो
 पुरुष उसके साथ था उसको रोक रहा था मगर उसने हाथ झटक

दिया और लड़खड़ाती हुई आगे बढ़ने लगी। नशे में वह धुत् थी। हम लोगों के मेज के पास आकर वह खड़ी होने की चेष्टा में डगमग-डगमग होती रही और मूर्खों की हंसी हंसने की कोशिश करती रही। हम सभी लोग उसके लिये कौतुक की वस्तु हो रहे थे और हम लोगों को वह घूरती चली आ रही थी। मैंने अपने साथियों की ओर निगाह डाली। आइजाबेल अवाक् उसकी ओर देख रही थी; ग्रे के मुख पर क्रोध और घृणा की लकीरे गहरी होती जा रही थीं; लैरी ऐसे देख रहा था जैसे उसे अपनी आंखों देखे पर विश्वास ही न हो रहा हो।

‘हलो ! हलो !’ उसने कहा।

‘अरे सोफी !’ आइजाबेल आश्चर्य से बोली।

‘और तुम किसको समझ रही थीं ? सोफी नहीं, तो और कौन ?’ उसने धरधराते स्वरों में कहा। पास से जाते हुए खानसामे को उसने झकझोरा—‘देखो जी ! एक कुर्सी लाओ ?’

‘खुद क्यों नहीं ले आती ?’ वह हाथ झटक कर चलता बना।

‘हरामीका....!’ उसने उसकी ओर मुँह कर के थूक दिया।

‘बैठ जाओ ! बैठ जाओ !’ एक मोटे, भट्टे, गन्दे आदमी ने कबाब से सने हुए हाथ अपने वालों में पोछते हुये अपनी कुर्सी पास ला रखी।

‘जरा देखो तो ! हम लोगों की भेंट भी खूब हुई !’ उसके कदम डगमगा रहे थे। ‘हल्लो लैरी ! ओ खोह ! हलो ग्रे !’ वह पीछे पड़ी हुई कुर्सी पर घड़ाम से गिर पड़ी। संभलते संभलते बोली—

‘इतने लोगों से मुलाकात का जलसा तो मानना ही चाहिए—शराब लाओ !’ वह चीखी।

मैनेजर की निगाहें बहुत पहले से ही हम सब पर लगी थीं। वह कदम बढ़ाता पास आकर खड़ा हो गया।

‘सोफी ! तुम शायद इन मेहमानों को पहले से जानती हो !’

मैनेजर ने सोफी को प्रेम-संवोधन देते हुये कहा ।

‘क्यों नहीं ! ये सब हमारे बचपन के साथी हैं ।’ उसने दाहिने हाथ को सर्राटे से घुमाते हुए कहा । ‘और देखो ! मैं इन लोगों की खातिर के लिए शैम्पेन (शराब) की बोतल मंगवा रही हूँ ! शैम्पेन ही भेजना ! अपना रखा हुआ पेशाब नहीं ! ऐसी चीज जो बिना क्रय किए हुए हमें हजम हो जाय ! समझे ! चलो ! चलो ! लाओ—ओ-ओ !!!’

‘तुम बहुत नशे में हो सोफी !’ उसने डरते डरते कहा ।

‘तुम्हारी ऐसी की तैसी ।’ सोफी ने उसे भगाते हुए कहा ।

मैनेजर खुशी खुशी शैम्पेन की बोतल लाने चला । हम लोग-सोडा और ब्रैन्डी पी रहे थे । शैम्पेन की नई परिभाषा से हम लोगों को थोड़ी डर लगने लगा । सोफी ने दो-एक क्षण मुझे घूरने के बाद कहा —

‘आइजाबेल ! यह तुम्हारा नया शिकार कौन है ?’

आइजाबेल ने मेरा नाम बतलाया ।

‘ओखोह ! याद आया । आपको मैंने शिकागो में देखा था । हाँ ! दावत में !’ उसने सिर खुजलाते कहा । ‘कुछ ऐसे ही वैसे-बेकार किस्म के व्यक्ति थे आप !’

‘हो सकता है ।’ मैंने मुस्कुरा कर कहा ।

मुझे उसका ध्यान बिलकुल ही नहीं रहा था । दस वर्ष उसे देखे हो गए थे और इस अरसे में अनेक नये आदमियों से भी मिल चुका था । फिर एक मुलाकात और वह भी मामूली—क्या याद रहती ।

सोफी काफी लम्बी हो गई थी—खड़े होने पर तो वह जरूरत से ज्यादा लम्बी मालूम पड़ती । मगर बहुत दुबली । हरे रेशम का ब्लाउज जो बिलकुल गुड़ी मुड़ी हो रहा था उसके ऊपरी हिस्से को ढके था और आधी जाँघों को ढके हुए काले रंग का साया नीचे था । छोटे छोटे कटे हुए बाल कन्धों पर लटक रहे थे और उन पर मेंहदी का रंग

चढ़ा हुआ था। उसका सारा शरीर शराब की बू और हिना की खुशबू से सराबोर था। गालों पर क्रीम और पाउडर का गहरा पज़स्तर था; लाली, गहरी करके आँखों तक लगी थी। पलकें और बरौनियाँ नीले रंग से रंगी थीं। भौंहें, काले क्रीम से अपना विस्तार बढ़ा कर कानों को छूने का प्रयत्न कर रही थीं। होठों की लाली आग हो रही थी। लाल पेन्ट चढ़े हुए नाखून और गन्दे हाथ वह इधर-उधर फटकार रही थी। वह भले घर की स्त्री तो किसी तरह से भी नहीं मालूम हो रही थी—केवल वरसों से खेली-खाई फूड़ड़ स्त्री समान दिखाई दे रही थी। मेरा अनुमान था कि उस पर शराब ही नहीं अफीम का भी काफी असर था। इतना होते हुए भी बनाव-चुनाव, शृंगार और गहरे हरे रंग की पुतलियों के कारण उसमें एक पाशविक आकर्षण था। उसकी गर्दन एक विशेष कोण से मुड़ती रहती जिसके द्वारा वह अपनी कही हुई बातों को ताल देती जाती। नशे में धुत होते हुए भी उसमें एक ऐसी निर्लज्जता प्रस्तावित थी जो मनुष्य के पाशविक प्रवृत्तियों को अपने चंगुल में सहज-रूप से रख सकती थी। उसने एक एक करके हम सब को गले लगाया।

‘पता नहीं आप लोगों को मुझसे मिल कर प्रसन्नता भी हुई या ऐसे ही……? उसने पूछा।

‘हम लोगों को पता ही नहीं था कि तुम पेरिस में हो?’
आइजाबेल ने रुखे स्वर में कहा।

‘तुम मुझे बुला सकती थीं—टेलीफोन तो था!’

‘हम लोग तो स्वयं कुछ ही दिन से यहाँ हैं!’

‘मे ने स्थिति संभालने की चेष्टा की—

‘तुम तो बहुत मजे में यहाँ होगी? क्यों सोफी?’

‘बहुत मजे में! तुम तो मैंने सुना तबाह हो गए थे।’

‘मे का मुख तमतमा कर गिर गया।

‘हाँ।’

‘मगर तुम पर असर बिलकुल ही नहीं है। शिकागों में उथल पुथल अब भी शायद है; अच्छा हुआ जो मैं वहाँ से बहुत पहले निकल आई।’ ‘ईसा के नाम पर !!! पता नहीं वह हरामी का..... हम लोगों के लिए शराब क्यों नहीं लाता।’

‘वह सामने आ रहा है।’ मैंने समझाते हुए कहा। खानसामा पूरे में गिलास और बोतल रखे दूर से आता दिखाई दे रहा था।

‘मेरे प्यारे साले ससुरों ने मुझे शिकागों से निकाल ही फेंका—समझते थे कि उनको इज्जत में बढ़ा लग रहा है।’

उसने कर्कश हंसी का ठहाका लगाया।

शॉम्पेन आते ही उसने कांते हाथों से गिलास भर कर अपने मुँह से लगाया—

‘बेकार जिन्दगी ! नपुंसको ! तुम्हारा सत्यानाश हो !’ कह कर उसने एक घूँट में गिलास खाली कर दिया।

‘तुम्हारी जवान कहीं खो तो नहीं गई लैरी ?’ उसने लैरी को सम्बोधित किया।

लैरी निस्पन्द भाव से उसे देर से देख रहा था; जब से वह वहाँ आया उसकी आँखें उसी पर डटीं रहीं। अपनी सहज मुस्कान से उसने कहा—

‘मैं तो बातूनी कभी भी नहीं रहा। यह कोई नई बात तो नहीं।’

बाजे फिर से बज उठे। एक आदमी सामने से आता हुआ दिखाई दिया—लम्बा, तगड़ा, मुड़ी हुई नाक, मोटे-मोटे कामुक होठ और चमकदार, काले, घुंघराले बालों का गठुर समान सिर !

‘सोफी ! इधर चलो ! हम लोग नाचने जा रहे हैं !’ उसने अधिकार-युक्त वाणी से कहा।

‘चले जाओ ! देखते नहीं मैं अपने दोस्तों के साथ हूँ ! मुझे फुरसत नहीं !’

‘तुम्हारे दोस्तों की ऐसी की तैसी ! तुमको हमारे साथ नाचना होगा !’ उसने बढ़कर सोफी का हाथ पकड़ा मगर सोफी ने बड़े जोरों से उसका हाथ झटक दिया ।

‘छोड़ दो नहीं तो कच्चा चबा जाऊँगी’—उसने विकृत स्वरों में कहा ।

‘मैं जान ले लूँगा ! मैं तेरी....दूँगा !’

‘निकम्मा ! बेशरम ! अपनी शकल तो देख !’

उन दोनों की अश्लील, सांकेतिक भाषा सुनकर ग्रे इस उलझन में था कि क्या किया जाय; परन्तु आइजाबेल पाशविक प्रवृत्तियों से आश्चर्यजनक रूप से परिचित थी (और सभी सच्चरित्रा स्त्रियों का स्वाभाविक गुण भी यही होता है) और उसे एक दम से उनका आशय समझ में आ गया । वह सिहर उठी; और वहाँ के सम्पूर्ण वातावरण से उसे अरुचि और घृणा होने लगी । उस आदमी ने अपना हाथ उठाया—वह बलिष्ठ हाथ जिनसे बड़ी-बड़ी मशीनें तक हिलाई डुलाई जाती थीं । जोरों का तमाचा पड़ने ही वाला था कि ग्रे तन कर खड़ा हो गया—

‘निकल जाओ जंगली कुत्ते..... !’ उसने कर्कश स्वरों में डांटा । उठा हुआ हाथ ज्यों का त्यों गिर पड़ा । उस व्यक्ति ने ग्रे को खूनी दृष्टि से देखा ।

‘लू लू है !’ सोफी ने उसे मुँह चिढ़ाते हुए कहा—‘बन्चू ! जमीन सूँघ जाओगे !’

उस व्यक्ति ने ग्रे को फिर ऊपर से नीचे तक देखा; अपने कन्धे झाड़े और गाली देकर जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गया । सोफी नशे में मस्त खिल खिलाती रही । हम लोग चुपचाप बैठे रहे । उसका गिलास खाली देख कर मैंने उसे भर दिया । गटक ! गटक ! गटक ! की तीन आवाजेँ आईं और गिलास फिर खाली हो गया ।

‘तुम शायद पेरिस में रह रहे हो ? लैरी !’ उसने लड़खड़ाती

जवान से कहा ।

‘कुछ दिनों के लिए ।’

शराब में बدمस्त व्यक्ति से बात करना विशेषतः ऐसे लोगों को जो अपने पूरे होश-हवाश में रहते हैं बहुत कठिन होता है । कुछ देर तक तो हम लोग आपस में बातें करते रहे मगर खिचे-खिचे से और परेशान सब थे । सोफी ने अपनी कुर्सी पीछे सरकाई ।

‘अगर मैं अपने दाँस्त के साथ नाचने नहीं जाती तो वह पागल हो जायगा । वनैला सुअर है । जंगली ! मगर हाय ! ईसा ! ईसा के नाम पर कह रही हूँ—उसके ऐसा मजा कौन देगा ?’ वह लड़खड़ाती हुई उठी । ‘अच्छा दोस्तो ! फिर कभी ! ईसा ! ईसा के नाम पर फिर आना । मैं यहाँ हर क्षण आती हूँ ।’ भीड़ को चीरती, लड़खड़ाती हुई वह भाग निकली और हम लोग चुपचाप उसे जाते देखते रहे । आइजाबेल का मुख घृणा से विकृत हो उठा । उसकी इस भाव भङ्गी पर मुझे हँसी आ गई ।

‘यह तो बहुत ही गन्दी और भ्रष्ट जगह है ।’ उसने रुक रुककर कहा । ‘चलिये हम लोग चले ।’

हम लोगों ने ब्रैन्डी और सोफी की खरीदी हुई शैम्पेन की बातल के दाम चुकाये और बाहर निकले । लोग नाचने में व्यस्त थे और हम लोग बिना कुछ नई आवाजों के शिकार हुए सही सलामत बाहर निकल गए । रात के दो बज रहे थे मगर ग्रे को भूख लगी थी जिसकी वजह से हम लोगों को होटल में जाकर बैठना पड़ा । खाना मंगाया गया और ग्रे लुट पड़ा । आइजाबेल कम से कम बाह्य-रूप से शान्त हो चली थी । पेरिस के भ्रष्ट जीवन और वासनालयों से परिचय रखने के उपलक्ष्य में उसने मुझे व्यंगपूर्ण बधाई दी ।

‘यह तो आपकी जिद थी ।’

‘मुझे तो खूब मजा आया । रात अच्छी कटी ।’

‘ओ, छी, मुझे तो नर्क वहीं दिखाई दिया—और सोफी छी !’

छी !' ग्रे ने क्रोध और घृणा मिश्रित स्वरों में कहा ।

'क्या आपको उसकी याद नहीं ?' आइजाबेल ने मुझसे पूछा ।
'जिस दिन आप पहले पहल हमारे यहां खाना खाने आए थे वह आप के पास ही बैठी थी । उसके बाल तब इतने भयानक रूप से रंगे न थे ।'

मैंने अपनी स्मरण शक्ति को जागृत कर सोचना आरम्भ किया । मुझे एक नव-वयस्का का ध्यान आया जिसकी नीली आँखें, हरी भरी हँसी और भुकी हुई आकर्षक गर्दन मुझे पसन्द आई थी । सुन्दर तो वह न थी और उसका सीना लड़कों जैसा सपाट था मगर उसकी सहज लज्जा और तीव्र बुद्धि मुझे अब भी याद आ रही थी ।

'हाँ ! हाँ ! मुझे अब ठीक याद आ रहा है; मुझे उसका नाम पसन्द था ।'

'उसका विवाह एक बड़े होनहार लड़के से हुआ था—नाम था बॉब मेकडानल ।'

'बहुत ही भला था बेचारा ! मैं उससे कई बार मिला भी था ।' ग्रे ने कहा ।

'लड़का तो वह हजारों में एक था । पता नहीं उसने सोफी में क्या खास बात देखी जो लट्टू हो गया । मेरे बाद ही उसने भी विवाह कर लिया । सोफी के माता पिता का तलाक हो गया था—शायद तेल का व्यवसाय किया करते थे । बचपन में तो सोफी अपने पिता के घर वालों के साथ ही साथ रहा करती थी और हमारी कोठी के पास ही उसका भी घर था । उसी समय से मेरी उसकी घनिष्टता बढ़ी । विवाह के बाद से ही उसने सबसे मिलना जुलना छोड़ दिया; तब से हम लोग उसे भूल से गए । बॉब मेकडानल बड़ा हमेनहार वकील था । यद्यपि उसकी वकालत बहुत चलती न थी पर उसके पास दो एक घर थे जिनसे कुछ न कुछ काम चला जाता था । फिर वे किसी से मिलते जुलते भी न थे और दोनों एक दूसरे में ही लिप्त रहा करते थे । मैंने

शायद ही कोई ऐसा पागल दम्पति देखा हो। विवाह के दो वर्ष बीत जाने के बाद तक और बच्चा होने के पश्चात् भी वह दोनों साथ ही साथ सिनेमा जाते और वह उसकी कमर में अपना हाथ डाले रहता और सोफी उसकी छाती पर अपना सिर रखे बैठी रहती—विलकुल नये प्रेमियों के समान। शिकागो में उन दोनों का काफी मजाक चला करता था।

लैरी आइजाबेल की बातें चुन्चाप सुनता जा रहा था। उसके मुख के भावों को पहचानना असभव था। 'फिर क्या हुआ?' मैंने पूछा।

'एक रात वे दोनों अपनी मोटर पर शिकागो वापस आ रहे थे। सोफी अपने बच्चे को गोद में लिए बैठी थी क्योंकि नौ मराना न होने के कारण उसे घर पर अकेले छुड़ना मुश्किल था। वह स्वयं ही घर का सारा काम-काज करती; और बच्चा तो उसे जैसे प्राणों से भी अधिक प्यारा था। उनकी गाड़ी धीरे धीरे जा रही थी, पर दूसरी ओर से नशे में चूर कुछ लोग एक बड़ा मटर पर अस्सी मील की रफ्तार से भागे चले जा रहे थे। उन्होंने गाड़ी सामने से टकरा दी। बाँव ताँ पहली ही टक्कर में चल बसा; बच्चा भी गिरते ही खतम हो गया। सोफी के सर में गहरी चोट आई और उसकी दाँ पसलियाँ टूट गईं। वह तीन महीने अस्पताल में पड़ा रही; करीब महीने भर तो विलकुल बेहोश रही। उससे किसी ने कुछ नहीं बतलाया; सब लोग बातें छिपाए रहे। मगर कहाँ तक छिपाते—दूसरे महीने बतलाना ही पड़ा। खबर सुनते ही वह पागल हो गई। वह रोज चिल्ला-चिल्ला कर आत्महत्या का प्रयत्न करती। बहुत दिनों तक वह पागलखाने में रही और एक दिन अगर वार्डर बचा न लेता तो वह छत से कूद ही पड़ी थी। हम लोगों से जो कुछ बन पड़ा हमने किया मगर वह हम लोगों से घृणा ही करती रही। पागलखाने से निकलने पर वह फिर महीनों अस्पताल में पड़ी रही।'

‘ईश्वर ! ईश्वर ! बड़ो विपत्ति सही बेचारी ने ।’

‘अस्पताल से निकलते ही उसने शराब पीना आरम्भ कर दिया । जब वह शराब पी लेती तो जिसके साथ चाहती जाकर पड़ रहती । उसके घर वालों के लिए यह बड़े अपमान और लज्जा की बात हो गई कि वह इस तरह अपनी इज्जत लुटाती फिरे । वे बेचारे बड़े सभ्य और शिष्ट थे और बदनामी से बचना चाहते थे । हम सब लोगों ने भी जहाँ तक हो सका मदद की मगर सब बेकार । जब-जब हम लोग उसे दावत में बुलाते तो वह शराब में धुत् रहती और खूब बन-ठन कर आती । बाद में शहर के लफंगों से वह संपर्क बढ़ाने लगी और तब हम लोगों को उसका साथ छोड़ना पड़ा—क्या करते—बदनामी का कितना डर था ? जो कोई चाहता उसे अपने यहाँ ले जाता और रात भर रख कर सवेरे बाहर कर देता ।’

‘क्या उसके पास रुपया पैसा नहीं था ?’ मैंने पूछा ।

‘बॉव का बीमा था—उसकी रकम उसे मिली और जिन लोगों की मोटर द्वारा वह मरा उनसे भी उसे कुछ मिल गया । मगर यह सब कितने दिन चलता ? दो ही साल में उसने सब उड़ा-पुड़ा कर सत्यानाश कर दिया । उसकी दादी भी उससे घृणा करने लगी । उसके साले-ससुरों ने कहा कि यदि वह युरोप-जाय्य रहे तो वे उसे कुछ न कुछ धन भेज कर उसकी मदद करते रहेंगे । मेरा विचार है कि उन्हीं के दिए हुए पैसों से वह यहाँ दिन काट रही है ।’

‘यह तो नई बात होने लगी ! पहले तो इस प्रकार की वहिष्कृत स्त्रियाँ अमरीका भेजी जाती थीं अब वे उल्टे अमरीका से युरोप में बसाई जाने लगीं ।’

‘बेचारी की सब तरह दुर्दशा ही रही ।’ ग्रे ने सहानुभूति से कहा । ‘मुझे बड़ा तरस आ रहा है ।’

‘तरस आ रहा है ? क्या खूब ! यह सब तो उसकी ही करनी का फल है; उसमें सहानुभूति कैसी ?’

‘यह सही है कि उस पर मुसीबत आ गई—मगर मुसीबत किस पर नहीं आती। अगर वह ठीक से रहती तो संभल जाती; सभी लोग संभल जाते हैं। मगर जब उसने अपने को मिटाने का रास्ता ढूँढ निकाला तो स्पष्ट है कि उसके चरित्र में कोई न कोई खराबी पहले ही से थी। उसी के कारण वह खुल खेली। वह सदा से ही अनियन्त्रित रही—बॉव के लिए भी उसका प्रेम सब सीमाएँ टुटता चला। अगर वह चरित्रहीन न होती तो अपना जीवन सुधार सकती थी।’

‘ऐसा कहना तो आप ही बड़ी ज्यादाती है ?’ मैंने प्रश्न किया।

‘मैं तो ऐसा नहीं समझती। अपनी साधारण सुबुद्धि से मैं इसमें सरासर सोफी की ही जिम्मेदारी समझती हूँ। ईश्वर जानता है कि ग्रे और बच्चों पर मैं कितनी जान देती हूँ और अगर, ईश्वर न करे, मोटर-दुर्घटना में उनकी जान चली जाय तो क्या इसका मतलब यह होगा कि मैं पागल होकर चीखती फिरूँ और आवरु लुटाऊँ। कुछ ही दिनों के बाद मैं अपने को संभाल लूँगी। क्यों ग्रे ? इसकी अपेक्षा क्या तुम यह चाहोगे कि मैं तुम्हारे बाद शराब के नशे में चूर रहूँ और जिसके साथ चाहूँ मनमाना मौज उड़ाऊँ और बाजारू स्त्रियों के समान जिसके घर चाहूँ पड़ रहूँ।’

ग्रे ने बहुत दिनों से कोई हास्यपूर्ण बात नहीं कही थी—

‘मैं तो प्रिये यह चाहूँगा कि तुम अपने अच्छे से अच्छे कपड़े पहन कर मेरे साथ सती हो जाओ। मगर आजकल इस पर सरकारी प्रतिबन्ध है इसलिए तुम ताश खेलना शुरू कर देना और बाजी पर बाजी मारती जाना।’

मेरे लिए अवसर तो अच्छा था कि मैं आइजाबेल से कह बैठता कि उसका प्रेम ग्रे और बच्चों के प्रति न तो प्रगाढ़ है और न हार्दिक—वह तो केवल सामाजिक और आर्थिक शिष्टाचार का रूप लिए हुए है। पर मैं बात टाल गया। मेरे मुँह पर ये भाव बहुत स्पष्ट हो पड़े

ये जिन्हें आइजाबेल भांप गई और बोली—

‘आप जरा अपनी राय तो बताइए ?’

‘मैं तो ग्रंथ के पक्ष में हूँ—मुझे उस लड़की पर वड़ी दया आती है ?’

‘वह लड़की नहीं है; तीस वर्ष की स्त्री है ।’

‘यही सही । मगर इस विपत्ति ने उसके लिए संसार सूना कर दिया । अपने पति और बच्चे के छिन जाने पर उसके सभी सहारे टूट गए । और जब उसका संसार में कोई रहा ही नहीं तो उसे जीवन से क्या मोह रह जाता; इसीलिए उसने शराब पीकर और इधर उधर रात काट कर उन क्रूर जीवन से बदला लेना शुरू किया जिसने उस को इस तरह आहत कर दिया था । पहले वह स्वर्ग में थी; स्वर्ग छिन जाने पर वह कहीं भी जाय इससे क्या—नर्क ही सही—उसमें फर्क ही क्या होता ? साधारण दुनियाँ के आदशों का मूल्य ही उसके लिए क्या रह गया ? इसलिए वह जहाँ पानी मिला वह चली । जब पतवार ही नहीं तो डूबने का क्या डर । मेरा अनुमान है कि जब वह अमृत न पी सकी तो उसने सोचा जो मिले वही सही-शराब हो सही—कहीं की भी हो, किसी की भी हो—उससे क्या ।’

‘ऐसी ही बातें लेखक-वर्ग उपन्यासों में लिख करते हैं । वह कोरी गप है; सरासर झूठ । और आप जानते हैं कि यह सब सरासर झूठ है । बहुत सी स्त्रियों के पति और बच्चे हाथ छुड़ा कर चले गए । वे सब तो तबाह नहीं हो गईं । बुराई, भलाई से नहीं पैदा होती । बुराई, बुराई से ही जन्म लेती है । उसकी रगों में बुराई पहले से ही छिपी थी । जिस दिन मोटर-दुर्घटना ने उसका पर्दा हटाया वह सामने नश्वर-रूप में आ पड़ी । तब क्या था—नर्क का द्वार चौड़ा होता गया और वह उसमें घँसती चली गई । अपनी सहानुभूति उस पर आप बेकार खर्च कर रहे हैं—वह अब भी वहीं है जो पहले थी ।’

लैरी अब तक चुपचाप रहा था। वह अपने ध्यान में मग्न था और मेरा अनुमान है कि उसने हम लोगों की लम्बी चौड़ी बातचीत सुनी भी नहीं। आइजाबेल के बोल चुकने के बाद कुछ देर सन्नाटा रहा अब लैरी ने बोलना शुरू किया। उसकी बोली में एक विचित्र तटस्थता थी और वह हम लोगों को सम्बोधित भी नहीं कर रहा था। उसकी आंखें मानों ध्यान में हों और पछली बातों की स्मृति उनमें साकार होती जा रही थी—

‘मैंने उसे तब देखा था जब वह चौदह वर्ष की थी—लम्बे बाल, पीछे जूड़े में बँधे हुए। चेहरे पर मुहासे परन्तु मुख गंभीर भावों से भरा हुआ। वह बड़ा लजीली, आदर्शवादी और उच्च विचारों वाली नव-युवती थी। वह हर समय पढ़ती रहती और सदा किताबों की ही चर्चा किया करती।’

‘यह कब?’ आइजाबेल ने भ्रुकुटि चढ़ाते हुए पूछा।

‘बहुत दिन हुए। जिन दिनों तुम अपनी माँ के साथ समा-समाज में दावत वगैरह खाने जाती थीं, उन दिनों मैं उससे मिला करता था। हम दोनों उसके दादा के उद्यान में चले जाते और बड़े-बड़े वृक्षों की छाया में बैठकर कविता पढ़ा करते। उसे कविता बहुत प्रिय थी; वह स्वयं भी कविता करती थी और उसने लिखा भी काफी था।’

‘यह तो उस उम्र में सभी लड़कियाँ किया करती हैं—उसमें कुछ जान तो होती नहीं।’

‘मैं कोई अच्छा आलोचक नहीं था; मगर बहुत दिन भी तो हो गये।’

‘आप तो स्वयं सोलह वर्ष के रहे होंगे?’

‘कविता उसकी अवश्य अनुकरणात्मक थी और अनेक कविताओं को पढ़कर वह उन्हें दूसरे छन्दों में लिखा करती थी, परन्तु उतनी कम वयस की लड़की के लिए यह बहुत प्रशंसा की बात थी। उसे लय और छन्द की तो बड़ी अच्छी पहचान थी। प्रकृति के दृश्यों के

चुनाव, फूलों की गमक, ऋतु परिवर्तन—सभी के लिए उसका हृदय खुला रहता। वसन्त की बयार, वर्षा की पहली छींटों से सूची धरती का यदा-कदा स्नान-सभी उसकी कविता में बार बार आते।

‘मुझे तो आज-पता लग रहा है कि वह कविता भी लिखती थी।’
आइजाबेल ने आश्चर्य-मिश्रित कण्ठ से कहा।

‘वह कभी किसी से कुछ बतलाती न थी और अपनी लिखने की कापी भी छिपाए रखती, क्योंकि उसे भय लगा रहता था कि लोग उस पर हँसेंगे। उसमें लज्जा और संकोच दोनों ही बहुत थे।’

‘आजकल तो उसमें यही दोनों नहीं हैं।’

जब मैं लड़ाई पर से वापस आया वह काफी बड़ी हो गई थी। उसने श्रम-जीवी-वर्ग के बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा था और शिकागो में इस वर्ग के जीवन का अच्छा अनुसन्धान भी किया था। मुक्तक छन्दों में वह उनकी दारुण व्यथा, उनके शोषण, और गरीबी के चित्र खींचती और श्रम-जीवी-समाज के उद्धार के उपाय सोचा करती। मैं इतना कह सकता हूँ कि यह विषय साधारणतया सभी कवियों के होते हैं मगर उसमें कवणा की मात्रा विशेष थी; उसमें यथार्थ था, सच्चाई थी, लगन थी। उस समय वह समाज-सेवा करने का निश्चय कर रही थी। उसके त्याग और उसके अनुराग की यदि मुझे अब भी है। मेरा अनुमान है कि यदि उसे सहयोग और संरक्षण मिलता तो वह बहुत कुछ कर सकती थी। वह मूर्ख नहीं थी और न उसमें कोरी भावुकता ही थी। उसे देखकर मुझे उसकी आत्मिक पवित्रता और आध्यात्मिक उच्चता का आभास मिला करता था। उस वर्ष हम दोनों एक दूसरे से काफी मिलते जुलते रहे।

मैं देख रहा था कि आइजाबेल कुढ़ती चली जा रही थी। ज्यों ज्यों लैरी प्रशंसा करता त्यों त्यों उसकी कुढ़न उसके मुख पर छाया समान बढ़ती जाती। लैरी को कदाचित् यह लेश-मात्र भी अनुमान न था कि उसका प्रत्येक शब्द आइजाबेल के हृदय में घाव करता

जा रहा है और प्रत्येक घाव गहरे रूप में उसे व्यथित कर रहा है ।

उसने अपने मुख पर रूखी मुस्कान लाने की चेष्टा में कहा—

‘उसने तुम्ही से अपने मन की बातें क्यों बतलाईं ?’

लैरी ने अपनी विश्वास-पूर्ण आंखों से उसे देख कर कहा—

‘यह मैं कैसे बतलाऊँ ? हो सकता है वह बेचारी भी अकेली थी; तुम लोगों के समाज से बहिष्कृत थी; सन्तोष भी नहीं पा रही होगी; और मैं भी उसी तरह था । चूँकि मेरे चाचा भी पास ही रहते थे, कदाचित् इसी से आत्मीयता बढ़ी हो ।’

लैरी के कोई संबंधी न थे । हम सब लोगों के कुछ न कुछ भाई भतीजे होते ही हैं जिससे हम लोगों को यह ज्ञात होता रहता है कि हम भी मानव परिवार के अङ्ग हैं । लैरी के पिता अपने बाप के इकलौते बेटे थे; माँ के भी परिवार में कोई बच्चा न था । ससार में शायद ही कोई लैरी के समान अकेला हो ।

‘तुम्हें कभी यह आभास भी मिला कि सोफी तुमसे प्रेम कर रही है ।’ आइजाबेल ने पूछा ।

‘कभी नहीं ।’ वह मुस्कराया ।

‘मैं तो समझती हूँ—जरूर करती होगी ।’

‘अरे ! जब लैरी लड़ाई से वापस घर आये तो सभी लड़कियाँ इन पर प्राण न्योछावर करने को तैयार थीं ।’

‘इसमें शक की क्या बात है ।’ ग्रे ने अपनी सहज, भद्री वाणी में कहा ।

‘इससे भी अधिक ! तुम पर उसकी असीम श्रद्धा थी; वह तुम्हें देवता समझती थी । तुम अब भी छिपाने की कोशिश कर रहे हो जैसे मैं जानती ही नहीं ।’

‘मैं तब भी नहीं जानता था और अब भी नहीं जानता ।’

‘तुम समझ रहे थे कि उसके आदर्श कहीं ऊँचे हैं ? क्यों ?’

‘मैं अब भी उस छोटी लड़की की कल्पना कर सकता हूँ जो अपने

बालों का जूड़ा पीछे बाधे हुये कविता लिखा करती और जिसकी कविता में अनुराग और लगन की आग सदा जला करती थी। पता नहीं वह लड़की अब कहाँ है ?

आइजाबेल ने उसकी ओर मर्म-भेदी कटाक्ष किया।

‘बहुत देर हो गई। अब तो चलना ही चाहिये।’ लैरी चल दिये।

३

दूसरे ही दिन मैंने अपना सामान इत्यादि बाँधा और रिवीयरा चल दिया। वहाँ पहुँचने के दो ही तीन दिन बाद मैं इलियट को पेरिस की खबरें देने गया। वह बहुत अस्वस्थ थे। किसी भी इलाज से लाभ नहीं हुआ था और दवा के सिलसिले में घूमने फिरने का बुरा प्रभाव भी उनके स्वास्थ्य पर गहरे रूप में पड़ा था। वह बिल्कुल शिथिल थे। जो जो वस्तुएँ गिरजाघर सजाने के लिए वह खरीदना चाहते थे उन्होंने खरीद लिया था और अब केवल जहाँ तहाँ उनको रखने की चिन्ता उन्हें थी और जब तक सब वस्तुएँ आकर्षक रूप से सज न जातीं उन्हें शान्ति नहीं मिल सकती थी। उन्होंने अपने खरीदे हुये चित्र, संगमरमर का शवाधार, प्रार्थना की वेदी—सब कुछ बड़े चाव और गर्व से मुझे दिखलाना आरम्भ किया। गिरजाघर यद्यपि छोटा था परन्तु उसकी बनावट बहुत आकर्षक थी। इसलिये सजावट की वस्तुओं को खरीदने में धन और फैशन का दोनों का पूर्ण ध्यान रखा गया था। उनसे इलियट की कलात्मक रुचि का श्रेष्ठ प्रमाण मिलता था।

‘मैंने एक स्थान पर बहुत प्राचीन संगमरमर का शवाधार देखा जिसे मैंने खरीदते खरीदते छोड़ दिया ?’

‘उसका उपयोग क्या करते ?’ मैंने आश्चर्य से पूछा ।

‘वह मेरे ही काम आता : मैं अपनी अन्तिम श्मश्रा उसी को बनाता और उसी में लेट कर पृथ्वी को गोद में चिर-निद्रा में सो जाता । मगर ये प्राचीन समय के ईसाई बड़े मूर्ख थे । उनका कद नाटा, भद्दा होता था और उसी के हिसाब से उन्होंने उसको भी बनवाया था । मैंने नाप कर देखा—उसमें मैं फिट नहीं बैठता था । अगर लेटता तो घुटने उठा कर लेटना पड़ता, जिमसे मेरी सारी हड्डियाँ अकड़ जातीं और मेरे घुटने मेरी तुड्डो छूते होते; मैं आदमी नहीं वरन वच्चेदानी में जकड़े हुए शिशु के समान दिखाई देता । उस तरह तो बहुत कष्ट मिलता ।’

मुझे इलियट की बातों पर हँसी आ रही थी मगर इलियट गंभीर थे ।

‘मुझे फिर एक नई बात सूझी और मैंने उसकी व्यवस्था भी पूरी तरह कर ली । यद्यपि उसमें स्वाभाविक अड़चने थीं, मगर गिरजे के प्रधान अध्वर्यु मेरी बात मान गए । मैंने निश्चय किया है कि प्रार्थना की वेदी के सामने ही मेरी समाधि हो और जब दूर दूर के भक्त अपनी श्रद्धांजलि देने आएँ तो मेरी समाधि पर पैर रखते हुए ऊपर जायें । उनके पैर-चाप से मेरी हड्डियाँ तड़तड़ा उठें—यही मेरी अभिलाषा है । उस समाधि पर केवल एक संगमरमर का पत्थर रहेगा और उस पर कोई सादा लेख-मेरा नाम और मरण-तिथि और दो एक किसी कविता की पंक्तियाँ और बस—जैसे—‘समाधि देखना ही तो अपने सामने देखो—यह वही है, जिसे तुम खाजते आ रहे हो—’हां ! कुछ ऐसी ही चीज ।’

‘मैं आपका आशय नहीं समझा ?’

‘यह तो मैं जानता ही था—श्रेष्ठ वर्ग से सम्पर्क बढ़ाने वाले लोगों की अज्ञानता पर मैं बहुत दुःखित होता हूँ; मैं भूल गया कि मैं एक लेखक से बातें कर रहा हूँ ।’

जीत इलियट की रही। मैं चुप रह कर हँस दिया।

‘मैं यह बतलाना चाहता था कि मैंने अपनी बखीयत लिख डाली है और मैं चाहता हूँ कि आप उसको कार्य में परिणत करने का भार वहन करें—मैं यह नहीं चाहता कि रिबीयरा में जहाँ पेन्शन पाने वाले पुराने फौजी कर्नल अथवा मध्यम वर्ग के लोग समाधिस्थ हों वहीं मेरी भी समाधि बने।’

‘आपकी जो इच्छा होगी और जो आदेश होंगे, सब पूरे किए जायँगे, मगर मेरा विश्वास है कि अभी अनेक वर्षों तक उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।’

‘चला तो मैं चल रहा हूँ और अगर सच पूछते हैं तो अब संसार से उठ चलने में मुझे कोई विशेष आपत्ति नहीं। आपको वह कविता याद है जिसमें जीवन और जीवन से होड़ का विवरण आता है—?’

मेरी स्मरण-शक्ति बहुत खराब होते हुए भी मैंने ‘पंक्तियाँ दुहरादीं—

‘जीवन में एकाकी खेला !

प्रति-द्वन्दी क्या सम्मुख आये,

प्रेयसि-प्रकृति मुझे भरमाये,

कला ! कला की सेवा में ही

जीवन-रस चख लिया अकेला !!

जीवन में एकाकी खेला !

जीवन-घटिका रिक्त हो चली ;

जीवन-ज्वाला शान्त हो चली ;

यही विद्वान की बेला !!

जीवन में एकाकी खेला !!!,

-
- 2 I strove with none, for none was worth my strife
Nature I loved, and, next to nature art;
I warmed both hands before the fire of life
It sinks, and I am ready to depart!’

‘बहुत ठीक ।’ इलियट ने प्रशंसा की ।

मैं मन हो मन सोच रहा था कि किस भोली कल्पना के आधार पर इलियट ये पंक्तियाँ अपने जीवन पर लागू कर रहे हैं ।

‘ये पंक्तियाँ मेरे आदर्शों की पूर्ण प्रतिरूप हैं । अगर मैं इसमें कुछ जोड़ना चाहता हूँ तो केवल यह कि मैंने युरोप के श्रेष्ठात-श्रेष्ठ व्यक्तियों के समाज में जीवन-यापन किया है ।’

‘यहाँ तो इस भाव का लाना कठिन ही होगा ।’

‘समाज निर्जिव हो चला है । पहले मुझे आशा थी कि अमरीका युरोप की जगह ले लेगा और एक ऐसे श्रेष्ठ-वर्ग का निर्माण करेगा जिसके सामने सभी वर्ग घुटने टेकेंगे; मगर पिछली व्यावसायिक उथल-पुथल ने मेरी आशाएँ धून में मिला दीं । अब वह संभव नहीं । मेरा देश मध्यम-वर्गीय लोगों से भरा चला जा रहा है । आपको शायद विश्वास न आए—पिछली बार जब मैं अमरीका गया तो एक टैक्सी-वाले ने मुझे ‘भाई’ कह कर संबोधित किया । मैंने दांतों तले उंगली दवाई ।’

यद्यपि रिबीयरा की दशा पहले जैसी न थी और व्यावसायिक तबाही का असर वहाँ पर भी पड़ा था, परन्तु इलियट अब भी दावतें देते और दावतों में जाते । यहूदियों को वह अपने से दूर ही रखा करते मगर जब धन-कुवेर मिस्टर रायचचाइल्ड दावत देते तो वह कभी न चूकते । वह इन दावतों में बड़े गर्व से आते, अपना सम्पर्क बढ़ाते, कसी से हाथ मिलाते, किसी का चुम्बन लेते—मगर एक तटस्थता सदैव बनाए रखते; और ऐसा जान पड़ता कि कोई निर्वासित नरेश अपना मनोरंजन करने चला आया है । उस समय निर्वासित राजे-महाराजे सिनेमा-अभिनेत्रियों पर आँखें लगाए रहते और जब कभी किसी सुन्दरी से उनकी भेंट हो जाती तो उनकी बाँछें खिल जातीं और वह उनके जीवन का स्वर्ण-दिवस होता । इलियट ने नाट्यकला से सम्पर्क रखने

वाले समुदाय को कभी भी कुछ नहीं समझा, मगर जब एक पुरानी अभिनेत्री ने जो अवकाश-ग्रहण कर चुकी थी, एक कोठी उनके पास में बनवा ली और जहाँ हर तरह के राजमन्त्री, फौजी अफसर, राजे-महाराजे जाकर रातें बिताने लगे तो इलियट ने भी वहाँ आना जाना शुरू कर दिया।

‘तरह तरह के आदमी वहाँ आते तो अवश्य हैं मगर जिन-जिन से मैं बातें करना चाहूँ उन्हीं से बातें करता हूँ; फिर वह युवती मेरी समकालीन है और मैं उसकी सेवा से पीछे न हटना चाहता था। केवल मैं ही उसकी भाषा बोल और समझ सकता था।’

कभी-कभी तो वह इतने अस्वस्थ जान पड़ते कि मुझे डर लगता कि शायद वह दो एक दिन में ही चमक वसंगे और मैं उन्हें समझाता कि दुनियाँ भर की फिक्र अब उन्हें बिलकुल ही छोड़ देनी चाहिए।

‘भाई ! मेरी उम्र पर आकर कोई अपना कार्य छोड़ नहीं सकता। कदाचित् आपको मालूम नहीं कि पिछले पचास साल से मैं श्रेष्ठ-वर्ग की सेवा करता चला आ रहा हूँ और जहाँ दो एक दावतें मैंने छाँड़ीं कि लोग भूल जायेंगे।’

मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि इलियट ने किस तरह अपने मन का चोर अनजाने में बाहर लाकर खड़ा कर दिया। मुझे उन पर हँसी नहीं दया आने लगी। समाज के लिए ही वह जीवित थे। दावतों की बात-चीत और उसकी प्रशंसा में ही उनके प्राण बसते थे; और जब किसी दावत में वह न बुलाए जाते तो उन्हें मर्मन्तक पीड़ा होती। वह बुढ़े हो रहे थे और यह भय उन्हें स्वप्न में भी सताया करता था कि कहीं किसी दावत में उनकी अवहेलना तो नहीं की जा रही है।

गर्मी भर इलियट ने रिवीयरा में जान डाल रखी थी—कहीं चाय, कहीं खाना, कहीं नाच, हर दिन कुछ न कुछ लगा ही रहता। चाहे उनकी तबियत कितनी ही खराब क्यों न होती वह इन दावतों में

अवश्य जाते। अपने घर पर भी उनकी व्यवस्था करते और इस बात की जी तोड़ कोशिश करते कि सब लोग खुश हो कर वापस जाँय और उनकी प्रशंसा करें। गप मारने में उनकी अपूर्व क्षमता थी। अवैध-प्रेम की प्रत्येक नवीन घटना जो हाल ही में घटी होती सबसे पहले उनके पास पहुँच जाती जिसको हर जगह कई बार दुहरा कर वह श्रेष्ठ वर्ग के हमजोलियों का मनोरंजन किया करते। एक क्षण के लिए भी अपना अस्तित्व वह भुलाना नहीं चाहते थे। यदि कोई उन्हें इस बात का संकेत भर देता कि अब उन्हें इन सब कार्यों से हाथ समेट लेने का समय आ गया है तो शायद वह उसने सदा के लिए बात-चीत बन्द कर देते और उसे महामूर्ख समझते।

४

पतझड़ का मौसम आरम्भ हो रहा था और इलियट ने पेरिस जाकर आइजाबेल, ग्रे तथा बच्चों को देखने-सुनने का निश्चय किया। इसके साथ-साथ उन्हें वर्ष में कम से कम एक बार, फ्रांस की राजधानी पेरिस जम्कर, वहाँ के जीवन को देखने-भालने की भी आवश्यकता सदैव ज्ञात होती थी। इसके बाद उन्हें लन्दन जाकर, कुछ नए कपड़े सिलवाने थे तथा कुछ पुराने मित्रों से मिलने-जुलने का अवसर भी निकालना था। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें पेरिस तक मोटर से पहुँचा सकूँगा और जब मैं सहर्ष साथ चलने को तैयार हो गया तो वह बहुत प्रसन्न हुये कि रास्ता अच्छी तरह कट जायगा। हम लोगों ने थाड़ा-थोड़ा करके रास्ता तय किया। रास्ते में वह केवल स्वास्थ्य-वर्धक भरनों का पानी पीते रहे मगर इस बात का सदैव ध्यान रखा कि मुझे अच्छी से अच्छी शराब मिले। मुझे शराब पीते देख कर उन्हें वास्तविक सुख मिलता था, क्योंकि स्वभावतया

जो आनन्द वह स्वयं न उठा सकते उसे दूसरों को उठाते देख उन्हें प्रायः सुख मिलता। उनकी उदारता तो इतनी बढ़ी-चढ़ी थी कि वह मुझे स्वयं कुछ भी नहीं खर्च करने देते और अपने ही सारी खरीदारी का भार ओढ़ने की जिद करते। उनकी इस उदारता का मूल्य चुकाने के लिए मुझे उनकी सारी कहानियों को सुनना पड़ता जो वह अपने पुराने श्रेष्ठ वर्ग से मित्रों के विषय में बड़े चाव से सुनाया करते और इस बात की जरा भी परवाह नहीं करते कि सुनने वाला ऊब रहा है। मुझे होटल में छोड़ वह अपनी कोठी चल दिए।

हम लोगों ने अपने पहुँचने की सूचना आइजाबेल को पहले से दे रखी थी। ज्योंही मैं पहुँचा त्योंही मुझे उसका एक पत्र मिला जिसे पढ़ कर मैं बहुत ही हैरान हुआ—‘ज्योंही आप आए त्योंही मिलें। बड़ी भयानक घटना घटने वाली है; ईश्वर के लिए इलियट को साथ न लाइएगा—जैसे हो फौरन ही आइए।’

मुझमें साधारण मनुष्यों की सी उत्सुकता तो थी परन्तु मुझे नहा कर कपड़े बदलना भी बहुत ही आवश्यक था। इसमें काफी देर लगी और जब तक मैं टैक्सी लेकर पहुँचूँ-पहुँचूँ, आइजाबेल का क्रोध काफी बढ़ चुका था। मेरे पहुँचते ही वह उबल पड़ी—

‘आप इतनी देर तक क्या करते रहे; घन्टों से ब्यापका इन्तजार हो रहा है?’

पांच बजा था और चाय-पानी की चीजें खानसामा सामने मेज पर रख रहा था। आइजाबेल की मुट्ठी बंधी हुई थी और उसका धैर्य छूटता सा जा रहा था। मैं उसकी बात सुनने की परेशानी में इधर उधर देख रहा था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि आखिर बात क्या हो सकती है।

‘यह खानसामा इतना सुस्त है कि मुझे पागल कर देगा!’ उसने क्रोध से कहा।

मैंने आइजाबेल का यह नया रूप उसी दिन देखा।

‘इसकी क्या जरूरत पड़ गई ?’ मैंने पूछा ।

‘वद मेरी पुरानी मित्र है ।’

‘अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो उसके यहाँ जाकर अपना समय न नष्ट करती ।’ मैंने कहा ।

‘तुम, तुम हो; मैं, मैं हूँ ।’ उन्होंने मुस्करा कर कहा ।

‘मैंने अपना मन मार कर बातचीत का विषय बदला । उसके बाद मैं उसके बारे में बिलकुल भूल सी गई । यकायक वह एक दिन आये और कहा कि वह विवाह करने जा रहे हैं ।’

‘बिलकुल गलत ! तुम उससे विवाह नहीं करोगे ! मैं कहती हूँ कि मैं ऐसा नहीं होने दूँगी !’

‘मैं तो करूँगा !’ उसने ऐसे ही कहा जैसे कोई बात ही न हा ।

‘और आइजाबेल ! मेरी इच्छा है कि तुम उससे शिष्टता का व्यवहार कर उसका खयाल रखना ।’

‘यह नहीं हो सकता ! कभी नहीं हो सकता ! पागल हो गए हो क्या ? वह बिलकुल निकम्मी है; बिलकुल निकम्मी, पापी है, खराब—बिलकुल खराब; जरा सांचा तो !’

‘आपने यह धारणा कैसे बना ली ?’ मैंने टोकते हुए पूछा ।

आइजाबेल की आँखें-अंगारा हो रहीं थीं ।

‘वह शराब में धुत् रहती है; जिस किसी आवारे के साथ चाहती है जाकर पड़ रहती है !’

‘इससे यह तो नहीं साबित होता कि वह निकम्मी, खराब और पापी है । आजकल तो श्रेष्ठ समाज के अनेक व्यक्ति शराब में चूर हो जाते हैं और इधर उधर जीकर कुछ सुख ले आते हैं, कुछ दे आते हैं । यह खराब आदतें तो हो सकती हैं—मान लो—जैसे दातों से नाखून काटना ! मगर मैं यह नहीं समझ पाता कि यह निकम्मापन और पाप किस तरफ से है । मैं तो उसी व्यक्ति को खराब कहूँगा जो झूठ बोले, धोखा दे और दयाहीन हो ।’

‘अगर आपने भी उसी का पत्न लिया तो समझ लीजिये मैं आपकी भी जान ले लूँगी।’

‘लैरी की भेंट उसने कैसे हुई ? पता तो वह जानते न थे।’

‘उन्होंने उसका पता टेलीफोन से चला लिया और मिलने गये। वह बीमार थी। और बीमार क्यों न हो; जिस तरह का जीवन वह व्यतीत कर रही थी उसमें और होता ही क्या ? उन्होंने शायद डाक्टर बुला कर उसको दिखलाया और देख भाल के लिए किसी धाय को भी रख दिया। इसी तरह श्री गणेश हुआ। वह तो कहते हैं कि उसने पीना बन्द कर दिया है। वह ऐसे बुद्धू हैं कि समझते हैं कि वह अच्छी होकर ठीक राह पर चलेगी।’

‘क्या आप भूल गईं कि लैरी ने मेरे को भी अच्छा किया था।’

‘वह बात ही दूसरी थी—मेरे अच्छा होना चाहते थे; वह अपना रास्ता कभी नहीं छोड़ेंगी।’

‘यह आप कैसे कह सकती हैं !’

‘मैं औरत पहचानती हूँ। जब कोई स्त्री इस तरह अपने को खो बैठे और हरजाई हो जाय तो उसकी समाप्ति हो समझिए; वह कभी भी सुधर नहीं सकती। सोफी ने आपही अपने को तबाह किया है; वह पढ़ले के स्वभाव थी और अब उसकी खराबी ऊपर आ गई। क्या लैरी से वह कभी निभा पाएगी ? हरगिज नहीं; कभी न कभी वह भाग निकलेगी। यह तो उसके खून में है—वह जानवर चाहती है ! जानवर !—जानवरों से ही उसकी वृत्ति होती है ! वह जानवरों के पीछे-पीछे फिरती जो आई है ! और उन्हीं के पीछे सदा फिरेगी। लैरी का जीवन तो वह नर्क बना कर छोड़ेंगी।’

‘इन बातों की केवल संभावना हो सकती है, मगर जब लैरी जान वृक्ष कर आग से खेल रहे हैं तब कोई कर ही क्या सकता है।’

‘मैं कुछ नहीं कर सकती; मगर आप ! आप अवश्य कुछ कर सकते हैं।’

‘मैं ।’

‘हां आप । लैरी आपको बहुत मानते हैं और आपकी बातें भी ध्यान से सुनते हैं । आप ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका थोड़ा बहुत प्रभाव उन पर है । आप जाकर उन्हें समझाइए कि उन्हें अपने जीवन का इस तरह सत्यानाश नहीं करना चाहिए । अपने इस कार्य से वह कहीं के न रहेंगे !’

‘वह मुझसे यही कहेगा कि मुझे टांग अड़ाने की कोई जरूरत नहीं, अपना रास्ता वह खूब जानता है, उसे किसी के सलाह की आवश्यकता नहीं ।’

‘मगर वह आप पर विश्वास करते हैं । आप उनका हित चाहते हैं और उन्हें समझाना आपका कर्तव्य है ?’

‘उसका सबसे पुराना मित्र तो ये है । अगर वह उन्हें समझाए तो काम आसानी से बन सकता है ।’

‘अरे ये ! ये, भला क्या कह पाएँगे ।’ उसने अधीरता से कहा—

‘कभी-कभी ऐसा भी तो होता है कि वेश्यायें विवाह के बाद सुघर जाती हैं और मैं चार पाँच ऐसे व्यक्तियों को जानता हूँ जिन्होंने उनसे विवाह किया है । विवाह के बाद वे बहुत नेक-चलन स्त्रियाँ बन गईं । वे अपने पतियों पर बहुत श्रद्धा रखतीं और जो सुरक्षा और निश्चिन्तता उन्हें उनके यहाँ मिलती उसके लिए वे बहुत आभारी रहतीं; और पुरुषों को कैसे प्रसन्न किया जाता है वे भली-भाँति जानती भी हैं ।’

‘कैसी ऊटपटांग बातें आप करते जा रहे हैं ?’ उसने क्रोध से कहा—‘क्या इसी दिन के लिए मैंने अपना बलिदान किया था कि लैरी जाकर एक हरजाई तथा पतिता के हाथों बिक जाय !’

‘आपने अपना बलिदान किस प्रकार किया ?’

‘मैंने लैरी को केवल इसीलिए त्याग दिया था कि मैं उनके

रास्ते का रोड़ा नहीं बनना चाहती थी।’

‘भूठ की भी हृद होती है आइजाबेल ! बहुत बातें न बनाओ ! तुमने उसे त्यागा था हीरे की अंगूठी और मखमली कोट के लिए !’

मेरे मुख से यह शब्द निकले ही थे एक भरी हुई तश्तरी जो मेरी ओर फकी गई थी भन्नाटे से मेरे सर के ऊपर होती हुई अंगूठी में जा गिरी। चटाख ! चटाख ! की दो आवाजें हुईं और प्लेट के टुकड़े टुकड़े हो गए। मक्खन—रोटी, इधर उधर बिखर गई।

‘गनीमत हुई जो कैतली नहीं फेंकी—नहीं तो चाचा इलियट उसके टूटने पर आपको कभी माफ नहीं करते। वह एक बड़े महाराजा के लिए खास कर मंगवाई गई थी; वह बहुमूल्य थी।’

‘मक्खन रोटी उठाकर रखिये।’ अप्रतिम स्वरों में वह बोली।

‘मैं क्यों उठाऊँ ! खुद उठाइये, मैंने तो फेंकी नहीं।’

‘इसी बिरते पर अपने को आप सभ्य अंग्रेज कहते हैं ?’ कर्कशता से उसने कहा—

‘यही तो एक चीज है जो मैंने अपने जीवन में अब तक नहीं देखा: कहने की बात तो अलग।’

‘निकल जाइए यहाँ से ! मैं आपकी सुरत भी नहीं देखना चाहती। खबरदार जो आप फिर कभी इधर आए !’

‘यह तो बड़ा कठिन काम है। मुझे तो आपकी सुरत से मुहब्बत है। आपका सुडौल मुखड़ा, तोते ऐसी नाक, मञ्जुलियों जैसे नेत्र, और यौवन से मचलता हुआ शरीर—मैंने बड़े बड़े चित्रकारों के चित्रों में भी नहीं पाया। आपकी टाँगों के लिए कौन सी उपमा दूँ, इतने लम्बे स्वस्थ, और पहलदार—जैसे कदली खंभ हों। पहले तो वे बहुत भड़े थे पता नहीं आपने उन्हें किस तरह इतना सुन्दर बना लिया ?’

‘अपनी अद्वैत इच्छा-शक्ति और संयम से ?’ उसने क्रुधित कण्ठ से कहा—

‘अरे आपके हाथ ! वे तो देवियों के बरद-हस्त के समान आकर्षक और सुन्दर हैं—इच्छा होती है कि उन्हें पकड़े ही बैठे रहें ।’

‘आप तो शायद पहले उन्हें अधिक लम्बे समझते थे ?’

‘आपके कद के हिसाब से अब वे बहुत ही आकर्षक हैं । जिस घुमाव और लचाव से आप उन्हें अपने तेवर जताने में इस्तेमाल करती हैं मुझे उस पर आश्चर्य होता है । स्वभावतः अथवा कला से आप अपने हाथों को इस तरह हिलाती-डुलाती हैं कि सौन्दर्य उसमें आप ही आप फूटा पड़ता है । वह तो कभी फूटती हुई कलियों के समान, कभी सुन्दर पत्तियों के उड़ान के समान दिखाई देते हैं । उनके संचालन की भाषा आपकी मौखिक भाषा से कहीं अधिक मोठी चोट करती है और अब मुझे विश्वास होता जा रहा है कि इलियट चाचा का कहना कि आपके प्रपितामह अवश्य किसी स्पेन-नरेश के वंशज रहें होंगे ठीक ही होगा ।’

उसने ऊब कर मेरी ओर देखा ।

‘यह आपने कैसे जाना ? यह तो मैं पहली बार सुन रही हूँ ।’

इलियट से उसके श्रेष्ठ-वंशज होने के बारे में मैंने जो कुछ सुन रखा था बतलाया और तब तक आइजाबेल अपने लाल रंगे हुए नाखूनों की तराश देखती रही ।

‘किसी न किसी का तो वंशज सब को होना ही पड़ता है ? फिर कुछ सोचते ही उसने तिनक कर कहा—‘छिः ! छिः ! आप बड़े छिछोरे जान पड़ते हैं—असम्भ ! जंगली !’

यह एक बड़ा पुराना विद्वान्त है कि यदि स्त्री के सामने खरी खरी कहा जाय तो उसकी बुद्धि ठिकाने आ जाती है ।

‘कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मैं आपको विलकुल बुरा नहीं समझती ।’ आइजाबेल ने कुछ देर देखने के बाद कहा ।

अपनी जगह से उठकर वह मेरे पास आ बैठी और आते ही मेरे हाथों में हाथ डालकर मेरे ऊपर झुकी ही थी कि चुम्बन ले कि

मैंने अपना मुँह फेर लिया ।

‘मैं अपने कपोलों को आपके होठों की लाली से गन्दा नहीं करना चाहता । हां ! अगर आप तुर्नी ही हुई हैं तो ईश्वर ने उसके लिए होठ बना ही दिए हैं उसी पर कृपा करिए ।’

वह खिलखिलाई और दोनों हाथों से जेग सर जोर से पकड़कर अपनी ओर फेरा और मेरे होठों पर गहरे चुम्बन की हलकी लाली छोड़ दी । कुछ बुरा तो नहीं लगा । शायद अच्छा ही था ।

‘अपनी मनमानी आम्र कर चुकीं; अब बताइए आम्र चाहती क्या हैं ?’

‘मच्छी सलाह ।’

‘मैं उसके लिए विलकुल तैयार हूँ, मगर मुझे विश्वास-सा है कि आप उसे मानेंगी नहीं । आप केवल एक ही बात कर सकती हैं—वह यह कि जो हो रहा है उसे निवाहिए ।’

क्रोध फिर उसकी नाक पर आ गया । हाथ भटककर वह उठी और अगिठी के पास रखे हुए दूसरे सोंफे पर जा बैठी ।

‘मैं लैरी को बरवाद होते नहीं देख सकती । आप चाहते हैं कि वह विनाश-पथ पर चलते-रहें और मैं बैठी-बैठी डुकुर-डुकुर देखा करूँ ?’ ‘मैं सच पतिता से उनका विवाह रोकने के लिए जान लड़ा दूंगी ।’

‘उसमें सफलता नहीं मिलेगी यह मुझसे सुन लो ।’ ‘लैरी के हृदय में उन दैवी भावनाओं का जागरण हो गया है जो मानव-हृदय में प्रलय के समान आते हैं ।’

‘आपका तात्पर्य शायद यह है कि वह सोफी से प्रेम करते हैं ?’

‘विलकुल नहीं; उसके समकक्ष प्रेम तो बहुत ही हीन वस्तु होगी ।’

‘यह बात है ?’

‘आपने ‘न्यू टेस्टामेन्ट’ (ईसाई-धर्म-पुस्तक) पढ़ी है ?’

‘कहने सुनने के लिए ।’

‘आपको याद नहीं कि किस तरह ईसा जंगलों में शैतान के भुलावे में आकर भटके और चालीस दिन तक उपवास करते रहे। जब उनकी लुब्धा ने उन्हें लुब्ध किया तो शैतान सामने आया और कहा—‘यदि तू अपने को ईश्वर का पुत्र कहता है तो इन पत्थरों को रोटी में क्यों नहीं परिणत कर देता।’ ईसा ने लोभ संवरण कर लिया। तब शैतान उन्हें मन्दिर की चोटी पर ले गया और कहा—‘अगर तू ईश्वर का पुत्र है तो इस चोटी से कूदकर देख कि तू देवदूतों द्वारा सुरक्षित रहता है या नहीं।’ ईसा ने फिर भी अपने को प्रलोभन से बचाया। शैतान ने उन्हें पहाड़ों की चोटियों पर ले जाकर संसार का वैभव दिखाया और कहा कि वह संसार का उसे स्वामी इस शर्त पर कह सकता है कि वह उसके सामने घुटने टेककर शैतान की सत्ता स्वीकार कर ले। ईसा ने एक क्षण भी नहीं सोचा—‘शैतान! दूर हो मेरे सामने से!’ यही उस कहानी का अन्त है। मगर शैतान बहुत ही धूर्त था। वह फिर ईसा के पास आया और कहा कि यदि तू संसार के पापों को ढोने के लिये प्रस्तुत हो! यदि तू पतितों और दुखियों का दुःख, अपयश और कलंक अपने आप बहन करने को तैयार हो! यदि तू कांटों का ताज पहन कर, अपने कन्धों पर सूली ढोकर, अपनी जान देने पर तत्पर हो वो तू संसारी जीवों का त्राता कहला सकता है।’ मानव को बन्धन से छुड़ाने और अपने प्रेम से जीवन पर विजय पाने के लिए ईसा प्रस्तुत हो गए! ईसा प्रलोभन में आ गए। उनका पतन हुआ। शैतान मारे खुशी के फूला न समाता था; उसकी हसी से आसमान गूँज रहा था; उसका अट्टहास यह सोच-सोचकर और भी द्विगुणित हो रहा था कि अच्छा हुआ कि ईसा के नाम पर मनुष्य न जाने कितने पाप करेगा, न जाने कितने अपराध करेगा। उसका त्राता तो है ही! मानव को डर ही क्या रहा?’

आइजाबेल ने लोभ से देखते हुये कहा—

‘अच्छा ! तो आपने यह ‘न्यू टेस्टामेन्ट’ में पढ़ा है; कहीं लिखा है यह जरा दिखलाइए तो ?’

‘लिखा कहीं नहीं । यह तो मैंने अपनी कल्पना से गढ़ लिया है ।’

‘यह बिलकुल बेहूदगी है; सरासर लम्पटता है ।’

‘मैं आपको यह सिद्धान्त सुझाना चाहता था कि बलिदान की भावना ऐसी गहरी और तीक्ष्ण होती है कि उसके सम्मुख मूल और वासना का आवेग, दोनों हेच हो जाते हैं । बलिदान की भावना अपने शिकार को इस तरह उद्वेलित करती है कि व्यक्ति को अपनी सत्ता बनाए रखने का लोभ ही नहीं होता और विनाश-मार्ग फूलों का मार्ग हो जाता है ! बलिदान ही उसका सर्वस्व हों उठता है; उसी में वह जीवन की उच्च से उच्च अनुभूति पाता है । बलिदान, वस्तु के हीन, तुच्छ और निकम्मी होने पर नहीं निर्भर रहता । वह अपनी ही ओर देखता है दूसरी ओर बिलकुल नहीं—न तो प्रेम में इतनी शक्ति है और न शराव में इतनी मादकता और न रति में ही इतनी यादकता है जितनी बलिदान-भावना में है । मनुष्य जब बलिदान करने पर प्रस्तुत होता है तो उस क्षण उसकी शक्ति, उसकी महत्ता, ईश्वर से कहीं अधिक-कहीं उच्च होती है । सर्व-शक्तिमान ! अनन्त ईश्वर भन्ना अपने को क्या बलिदान करेगा ? हृद से हृद से वह केवल अपने दत्तक पुत्र की ही आहुति दे सकता है !!!’

‘इसा मेरी रक्षा करो !’ आइजाबेल यकायक कह उठी ।

मैंने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं—

‘आप यह कैसे जानती हैं कि तक और मोह, संसारी दूरदर्शिता और सावधानी उसको रोक लेगी; वह तो ऐसी भयंकर भावना से उद्वेलित हैं कि वह किसी के रोके नहीं रुक सकते । आप जानती हो नहीं कि इतने वप वह बाहर क्यों भटकते रहे हैं ? उनकी खोज का उद्देश्य क्या है ? क्या अभी तक आपने नहीं समझा ? मैं भी पूरा तरह नहीं समझ पाया, मगर मुझे कुछ-कुछ आभास मिलता रहता है ।

वर्षों का अनुभव, वर्षों का अध्ययन अपने निश्चय के आगे वह ठुकरा देगे। यह केवल उनकी चलती-फिरती इच्छा या निश्चय भी नहीं; वह उनके आत्मा की पुकार है, उनके ईश्वरीय अंश की चीत्कार है, जिसने उन्हें उस स्त्री को बचाने, उसे सुखी करने, उसका दुःख हलका करने को ललकारा है। वह उसे उसी बालिका के रूप में देखना चाहते हैं जिसे पन्द्रह वर्ष पहिले वृत्तों की छाया के नीचे कविता पढ़ते देखा था। हो सकता है कि आपके विचारों के अनुसार यह कार्य दुस्तर हो; उन्हें सफलता न मिले; उन्हें नर्क की यातना भुगतनी पड़े; उनका जीवन ध्येय अधूरा रह जाय मगर वह रुकेंगे नहीं ! अपने निश्चित पथ पर वह चल कर ही मानेगे चाहे वज्र ही क्यों न फटे। उनमें वह सहज कठोरता भी नहीं जो सन्तों में भी पाई जाती है; वह तो मानो पृथ्वी के प्राणी ही नहीं।'

‘मैं उनसे प्रेम करती हूँ। ईश्वर जानता है मैं उनसे कुछ नहीं चाहती—कुछ नहीं माँगती; मुझसे अधिक कोई उनसे क्या प्रेम करेगा—मगर उनकी दुर्दशा मुझसे नहीं देखी जायगी।’

वह फूट-फूट कर रोने लगी। मैंने समझा कि इस समय रो लेना उसके लिए हितकर होगा। मैंने टोंका नहीं। उसी समय न जाने कैसे मुझमें एक नवीन विचार उत्पन्न हुआ जिस पर मैं नग्न करता रहा। शैतान ने चुपचाप ईसाइयों के धर्म-युद्ध को देखा होगा; उनकी हत्याएँ, उनकी क्रूरताएँ, मानव के रक्त से रँगे उनके हाथ, उनकी स्वार्थपरता, उनकी बीभत्स निष्ठुरता, उनका पाखण्ड-सब को देख देख वह मुस्कराया होगा, अट्टहास किया होगा। उसने सोचा होगा कि ईसा से मेरा सौदा बुरा नहीं रहा। पाप की बलक कालिमा अब भी मानव के हृदय को दूबध किए हुए है और इस नश्वर ससार के च्छाकाश पर कालिमा की धूमिल रेखाएँ अब भी आच्छन्न हैं। शैतान की भी तो तुष्टि होनी ही चाहिए।

आइजाबेल ने रुमाल निकाल कर अपनी आँखों की कोरों में

उमड़ते हुए आँसू की बूंदों को पोंछा—

‘आपको बड़ा सन्ताप हो रहा है—शायद ?’ उसने तेजी से कहा ।

मैं गंभीरता-पूर्वक उसे देखता रहा और कोई उत्तर नहीं दिया ।
उसने अपना हैंडबैग खोल कर गालों पर पाउडर लगाया और होठों पर लाली लगाई ।

‘आपने अभी-अभी कहा था कि उनके इतने बपों की साधना का उद्देश्य आप जान गए हैं ? अपनी बात साफ-साफ कहिये ?’

‘मैं केवल अनुमान ही लगा सकता हूँ और वह त्रिकुल गलत भी निकल सकता है । मेरे विचार में वह किसी दर्शन अथवा जीवन सिद्धान्त, अथवा धर्म, अथवा कुछ नैतिक नियमों की खोज और उसकी साधना में है जो उनके हृदय और मस्तिष्क दोनों को परितोष दे ।’

आइजाबेल ने लम्बी साँस ली । बह सोच रही थी—

‘क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि एक मामूली कस्बे का रहने वाला एक देहाती युवक इस तरह की बातें सोचे ?’

‘सभी बड़े-बड़े आविष्कारक और सुधारक गावों और कस्बों की धूल से ही उठे हैं—प्रसिद्ध सुधारक लूथर क्या था, लक्षार्धाश फोर्ड क्या था ?’

‘यह सब ता क्रियात्मक चीजें हैं और यह अमरीकी संस्कार में घुले मिले हैं ?’

मुझे हँसी आ गई ।

‘क्या जीवन को सफल सिद्धान्त बनाने के अतिरिक्त भी कोई अधिक क्रियात्मक वस्तु हो सकती है ?’

आइजाबेल के मस्तिष्क पर शिथिलता आ रही थी ।

‘तब मैं क्या करूँ ?’

‘आप लैरी को खोना नहीं चाहती ? क्यों ?’

उसने अपना सिर हिला दिया ।

‘आप जानती ही है कि वह कितने प्रेमी जीव हैं । अगर आपने

उनकी पत्नी की अवहेला की तो वह कभी भी क्षमा नहीं करेंगे। अगर आप में जरा भी सांसारिकता और सुबुद्धि हो तो आपको सोफी को अपनाना चाहिए। उसका पिछला जीवन भुत्ता देना होगा। उसका विवाह होने जा रहा है और उसको कुछ नए कपड़े सिलवाने होंगे। अच्छा हो कि आप उसके साथ-साथ कपड़े खरीदने जायें—वह फौरन तैयार हो जायगी।’

आइजाबेल ने आँखों की कोरें दवा कर मुझे देखना आरम्भ किया। मालूम होता था कि मेरा प्रस्ताव वह अपने मन में दुहरा रही है। कुछ मिनट तक वह सोचती रही पर मैं जान न पाया कि उसके मन में क्या विचार उठ रहे थे। उसके प्रस्ताव ने मुझे चौंका दिया।

‘क्या आप मेरी ओर से उसे दावत खाने का निमन्त्रण दे देंगे।’ जब मैं कल ही लैरी से भुरा भला कह चुकी हूँ तो मेरा उसे बुलाना जरा भद्दा मालूम होगा।’

‘अगर मैं उसे बुलाऊँ तो उससे बर्त्ताव तो ठीक करोगी न?’

‘स्वर्ग की देवी के समान?’ उसने अपनी आकर्षक मुस्कान होठों पर लाकर कहा।

‘मैं अभी दावत का समय ठीक किए देता हूँ।’

कमरे में ही फोन रखा था। मैंने सोफी का नम्बर पा लिया और अपना नाम बतलाया—

‘मैं अभी-अभी पेरिस आया हूँ और मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपका और लैरी का विवाह होने जा रहा है। मैं आपको बधाई देता हूँ; मेरी हार्दिक कामना है कि आप सुखी रहें।’

आइजाबेल चुपचाप मेरे पास खड़ी-खड़ी बातें सुन रही थी और मेरे मुँह से आर्शावाद-सूत्रक शब्दों के निकलते ही उसने इतने जोर से मुझे चिकोटी काटी कि मैं हाय करके रह गया।

‘मैं दो ही चार दिन यहाँ ठहरूँगा मगर मेरी इच्छा है कि आप

और लैरी मेरे साथ ही परसों होटल में खाना खाया। ग्रे, आइजाबेल और इलियट को भी मैं निमन्त्रित कर रहा हूँ। आशा है आप अवश्य आएँगी ?'

'मैं जरा लैरी से भी तो पूछ लूँ। लीजिए, वह आ ही गए।' जरा देर तक सन्नाटा रहा।

'हाँ ! हाँ ! जरूर। हम लोग अवश्य चलेंगे।'

समय निश्चित करने के बाद मैंने फोन काट दिया और आइजाबेल की ओर देखते ही उसकी आँखों में मुझे कुछ शरारत का आभास मिला।

'आप शायद कुछ खास बातें सोच रही हैं ? आपके मुख पर का भाव मुझे न जाने क्यों अच्छा नहीं लग रहा है ?'

'अरुसोस ! मगर अभी-अभी वही चीज आपको बहुत आकर्षक और प्रिय लग रही थी।'

'आइजाबेल ! सच बतलाना कोई पड़यन्त्र तो नहीं रच रही हो ?' उसने आँखें फाड़ कर मेरी ओर देखा।

'सच मानिए अभी तक नहीं। मैं यह सोच रही थी कि जब लैरी ने सोफी को इतना सुधार दिया है तो वह अवश्य देखने योग्य होगी। आशा है कि वह पाण्डर का पुराना पल्लस्तर और गहरी लाली लगा कर नहीं आएगी; अगर ऐसा होगा तो सब उसी को देखेंगे; मुझे कौन पूछेगा ?'

मेरी दावत बुकी नहीं रही। ग्रे और आइजाबेल सबसे पहले आए और उसके पाँच मिनट बाद लैरी और सोफी। आइजाबेल और सोफी ने एक दूसरे का चुम्बन लिया और ग्रे और आइजाबेल ने

उसके विवाहोपलक्ष पर बधाइयाँ दीं। मेरी निगाहें आइजाबेल की आँखों पर लगी थीं। उसने एक क्षण में ही उसे सिर से पैर तक देख लिया। पहले हम लोगों ने उसे हरा कोट और छोटा काला साया पहने होटल में बैठे देखा था। तब उसके बाल गहरे मेंहदी के रंग में रंगे थे और मुँह पर कई परत का पाउडर लिपटा हुआ था। वह इतनी लिपी-पुती थी कि मतली आती थी, मगर उसके अन्दर जो यौवन की लहक थी उस समय बड़ी आकर्षक लग रही थी। आज वह बिलकुल ही बदल गई थी—सादे कपड़े, सादा रंग, बिलकुल फीकी। यद्यपि वह आइजाबेल से दो एक वर्ष छोटी ही थी पर इस समय उससे बड़ी ही जंच रही थी। उसकी गर्दन में वही लचक थी परन्तु उसमें गर्व और लालसा की अपेक्षा करुणा अधिक थी। उसके बाल अपने सहज रंग पर आ रहे थे; होठों पर केवल हल्की लाल रेखा सी थी और कोई भी बनाव-चुनाव नहीं था। उसकी गहरी, हरी आँखों में पीलाग्न छाया हुआ था। उसकी फ्राक लाल रेशमी थी जो नई-नई खरीदी हुई मालूम हो रही थी। हैट, बैग, जूते एक ही रंग के थे। मेरा विचार है कि उसके पहनावे में सुरुचि न थी और उस अवसर के लिए उसमें तड़क-भड़क अधिक थी। उसके गले में एक मामूली, नकली जवाहिरान की माला थी जो उसके थिग्स के उरोजों पर धर धर मंडरा रही थी। आइजाबेल के सामने, जो केवल काली रेशमी ब्लाउज और असली मोलियों की सादी माला पहने बैठी थी, वह सस्ती और फीकी ज्ञात हो रही थी।

मैंने शराब मंगवाई। लैरी और सोफी ने गिलास नहीं उठाया। उसी समय इलियट भी आ गए। होटल में पहुँचते ही उनके चारों ओर बहुत से लोग खड़े हो गए; उन्हें किसी के हाथों को चूमना पड़ा, किसी से हाथ मिलाना पड़ा और जब तक वह हम लोगों की मेज तक पहुँचे वह इस कसरत से काफी थक से गए। मेजों के बीच से होते हुए वह ऐसे ही आ रहे थे जैसे सारा होटल उनकी पैतृक सम्पत्ति थी। उन्हें

सोफी के बारे में केवल यही मालूम था कि उसके पति और बच्चे का देहान्त मोटर दुर्घटना द्वारा हो चुका था और वह अब लैरी से विवाह करने जा रही थी। हम लोगों के पास पहुँचते ही उन्होंने उन दोनों का बड़े शिष्ट शब्दों और बाह्याङ्ग से बधाई दी और इस कला में उनका कोई सानी न था। खाना लग चुका था; मेहमान बैठ रहे थे। खानसामा शराब फिर लाया।

‘आप लोग शराब के बारे में क्या जानें—बेयरा! कार्ड इधर लाओ।’ इलियट ने गर्व से कहा। ‘मैं स्वयं तो केवल विशी^१ का पानी पीता हूँ परन्तु आप लोगों को ऐसी वैसी शराब पीते नहीं देख सकता।’

बेयरे से उनकी पुरानी मित्रता थी और उससे काफी देर बहस के बाद जिसमें अनेक राजाओं और श्रेष्ठ वर्ग के महारथियों का वर्णन आया—शराब का मार्का तय किया गया। वे सोफी की ओर उन्मुख हुए।

‘अपनी मुद्रागरात के लिए कहाँ जाने का निश्चय किया है?’

उन्होंने उसकी पोशाक पर उड़ती हुई दृष्टि डालकर अपनी भँवे संकुचित कीं और मुझे जता दिया कि उसकी पोशाक उन्हें जरा भी नहीं पसन्द आई।

‘हम लोग यूनान जाँयेंगे।’

‘मैं तो वहाँ दस वर्ष पहले से जाना चाहता था।’ लैरी ने कहा, ‘मगर अनेक कारणों से मेरी इच्छा पूरी न हो सकी।’

‘आजकल तो वहाँ का मौसम अत्यन्त सुश्रवना होगा।’ आइजाबेल ने उत्साह से कहा।

मुझे और आइजाबेल को साथ-साथ चकायक ध्यान आ गया कि विवाह का प्रस्ताव करते समय लैरी उसे भी वहीं ले जाना चाहता

^१ ह्वाइप्र-वर्धक पानी का करना।

था। यूनान ने उसके मस्तिष्क में मानो एक अपनी अलग जगह बना ली थी।

बातचीत का दर्रा कुछ बंधन रहा था और अगर आइजाबेल न होती तो कदाचित् बातें जारी रखना भी कठिन ही होता। उसका व्यवहार कौशलपूर्ण रहा। जब जब सन्नाटे का डर होता और मैं सोचने लगता कि अब कोई नई बात छेड़नी चाहिए तो वह शीघ्र ही अपनी सहज प्रतिभा से कोई नई बात छेड़ बैठती। मैं उसका कृतज्ञ रहा। सोफी बहुत ही कम बोली। जब उससे कुछ पूछा जाता तभी वह बोलती और वह भी बड़ी कठिनता से; मानो उसकी शक्ति खो सी गई हो। वह जैसे निर्जीव हो रही थी और मेरा अनुमान है कि कदाचित् लैरी उसको इतना संयमित रख रहा था जितना अभ्यास शायद उसके वश में न था। यदि मेरा अनुमान सही है तो वह शराब के अतिरिक्त अफीम का भी सेवन करती थी। यकायक दोनों से वंचित होने पर उसमें निर्जीवता आना स्वाभाविक ही था। कभी कभी मैं दोनों से अपनी निगाह मिला बैठता। लैरी की आँखों में उसके प्रति उत्साह और कोमलता का संकेत होता; परन्तु सोफी की आँखों में केवल एक गहरी दयनीयता। उसी समय ग्रे ने अनुराग-वश लैरी की प्रशंसा छेड़ दी कि किस प्रकार उसको शिर पीड़ा अच्छी हो गई और इस अनुकम्पा का उसके ऊपर कितना आभार है। उसने लैरी के प्रति अपने सहज प्रेम और कृतज्ञता की कई बार दुहाई दी।

‘अब तो मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ और ज्यों ही मुझे कोई काम मिला मैं चल पड़ूँगा। मेरे मन में बहुत सी व्यावसायिक व्यवस्थाएँ हैं और ज्योंही कोई भी ठीक उतरी त्योंही मैं उसी में जुट जाऊँगा। फिर घर पहुँचने में जो मजा आएगा उसको क्या कहूँ?’

ग्रे का आशय न तो बुरा था और न कदाचित् उसमें कोई व्यंग ही था परन्तु मेरा विचार है कि लैरी ने जो उपाय ग्रे को अच्छा

करने के लिए अपनाया था उसी को उसने सोफी पर भी प्रयुक्त किया था। मेरा अनुमान था कि ग्रे उसी व्यंजन-प्रणाली-चिकित्सा (सजेस्शन) द्वारा स्वस्थ हुआ था।

‘अब तो तुम्हें शिर पाड़ा नहीं होती, क्यों ग्रे?’ इलियट ने प्रश्न किया।

‘तीन महीने से तो दौरा नहीं उठा और अगर मुझे कभी इसका डर हुआ तो मैं सिक्के का कवच हाथ में लेते ही ठीक हो जाता हूँ।’

उसने लैरी का दिया हुआ प्राचीन सिक्का निकाल कर दिखलाया। ‘मैं इसे लाख डालर पर भी नहीं बेचूँगा।’

खाना समाप्त होने पर काफ़ी आई। बेयरा शराब का आर्डर माँगने फिर आया। केवल ग्रे ने ही आर्डर दिया और ब्रैन्डी माँगवाई। जब बोतल आई तो इलियट ने उसको हिला डुला कर उसकी देख भाल की और कहा—

‘हाँ! यह पी सकते हो, इसकी मैं इजाजत दे सकता हूँ; यह तुम्हें नुकसान नहीं करेगी।’

‘श्रीमान के लिए भी एक गिलास प्रस्तुत करूँ?’ बेयरा ने विनय से पूछा।

‘अफसोस। डाक्टरों ने मुझे इससे भी वंचित कर दिया है।’

इलियट ने बड़े विस्तार से बतलाया कि उनके गुर्दे में कुछ खास खराबियाँ आ गई हैं और डाक्टरों ने मदिरा का निषेध कर दिया है।

‘कहिए तो श्रीमान के लिए पोलैण्ड की बनी एक नई चीज लाऊँ—वह गुर्दों का विशेष ध्यान रख कर बनाई गई है—उससे उनमें शक्ति आएगी?’ बेयरा ने विनय से पूछा।

‘अच्छा! ऐसी बात है! तब तो अवश्य लाओ! आजकल तो ऐसी चीजों का मिलना असंभव सा है—बोतल तो दिखलाई!’

बेयरा, चाँदी की जंजीर में बँधी हुई चाभी लिए आलमारी खोलने चला। इलियट ने बतलाया कि पोलैण्ड में कहाँ-कहाँ कैसी कैसी शराबें बनती हैं और जो आने वाली है वह बॉडका समान ही होती है मगर उससे कहीं अधिक मूल्यवान।

‘जब मैं पोलैण्ड में था तो इसका व्यवहार शिकार खेलते समय किया जाता था। कुछ बदशौक पोलैण्ड के राजे-महाराजे इसे रोज पीते थे—गिलास के गिलास—और उन पर सुरूर भी नहीं आता था। यह तो खून की बात होती है; उनकी रग-रग में अभिजात वर्ग का रक्त रहा करता था। सोफी तुम्हें इसे अवश्य चखना पड़ेगा, और आइजाबेल तुम्हें भी। ऐसा अवसर जीवन में बार-बार नहीं आता। तुम्हें इसका मजा अवश्य ही लेना चाहिए।’

शराब आई। मैं, लैरी, सोफी तीनों ने विनयपूर्वक पीने से इन्कार किया परन्तु आइजाबेल ने एक गिलास उठा ही लिया। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि वह कितना पी सकती है क्योंकि वह तीन गिलास-एक (मिलवा) काकटेल, एक ब्राण्डी, एक हिस्की पहले पी चुकी थी। उसने गिलास उठा कर सूँघा।

‘इतनी प्यारी सुगन्ध है!’

‘मैं कहता था न?’ इलियट ने बतलाया, ‘इसने ~~असमिष्ट~~ मसाले जो पड़ते हैं—उन्हीं की महँक है। जायका तो देखो। तुम्हारा साथ देने के लिये मैं भी दो बूंद चख लूँगा। इतनी कम नुक्सान करेगी?’

‘जायका तो अमृत है—अमृत! मालूम होता है जैसे माँ का दूध। मैंने तो जीवन में ऐसी चीज ही नहीं देखी थी।’ इलियट ने अपना गिलास उठाया।

‘मुझे तो अपना पुराना समय स्मरण हो आया। पुराने शिकार; राजे-महाराजों का साथ-ठीक जैसे मध्य-युग का वैभव हो। आठ-आठ घोड़ों की गाड़ी; हर मेज पर बर्दी पहने बेयरा! स्वर्ग

ही था ।’

उन्होंने पोलैण्ड निवासी राजे-महाराजों की दावतों का वर्णन, उनकी वैभव-शाली जीवन-चर्या का विवरण, शराबों के प्रभाव का विवेचन, स्त्रियों के सम्पर्क और संसर्ग की कहानी छोड़ी । बात छिड़ी फिर रुकना कैसा । वात खुली तो बन्द करना कौन सोचे ?

‘आइजाबेल ! दूसरा गिलास उठाओ !’

‘नहीं ! नहीं ! शायद ज्यादा न हो जाय । मगर सच कहती हूँ इसका जायका तो स्वर्गीय है ! अच्छा हुआ जो आज इसका पता लग गया । ग्रे ! हम लोगों को कुछ मँगवा कर रख लेनी चाहिए ।’

‘मैं दो चार वातलें भिजवाने का आर्डर अभी दिए देता हूँ ।’ इलियट ने कहा ।

‘चाचा इलियट ! आप कितने अच्छे हैं । कितना हम लोगों का आप खयाल करते हैं !’ आइजाबेल ने मादक उल्हास से कहा । ‘ग्रे ! जरा चलो तो ! वसन्त की दूब की महक के समान या लवेन्डर फूलों की सुगन्ध है इसमें ! ऐसा बात होता है कि मानो चंद्रिका की छटा में बैठा हुआ कोई स्वर्गीय संगीत अलाप रहा हो ।’

आइजाबेल का ऐसा-वार्तालाप मैंने पहले पहल सुना । उस पर नशा जफ़ जफ़ कर बैठ गया था । खाना-पीना खत्म होते ही मेहमान बिदा हुए । मैंने सोफी से हाथ मिलाया ।

जब मैं सब से बिदा ले रहा था उसी समय आइजाबेल सोफी को अलग ले गई । दो एक मिनट उसने कुछ बातें की और ग्रे से बोली—‘ग्रे ! अभी मैं घर नहीं जाऊँगी । अभी मुझे नवीन पोशाकों की नुमाइश में जाना है और सोफी को कुछ नए नमूने भी देखने हैं—’

‘मैं जरूर चलूँगी ?’ सोफी ने कहा ।

हम लोग बिदा हुए । उस रात मैंने सुजेन के साथ सिनेमा देखा और खाना खाया । दूसरे ही दिन मैं इंगलिस्तान रवाना हो गया ।

पन्द्रह दिन बाद इलियट भी लन्दन आ पहुँचे और उनके आने के दो ही एक दिन बाद मैं उनसे मिला। उन्होंने बहुत से नए सूट बनवा डाले थे और हर एक के बारे में मुझसे विस्तार-पूर्वक बतलाना आरम्भ किया कि कौन कहाँ बना, कितने दाम देने पड़े और कौन किस अवसर पर पहिने जायेंगे। जब वह कुछ सुस्ताने लगे तो मैंने लैरी के विवाह के विषय में पूछा कि कुशलपूर्वक सब कुछ समाप्त तो हो गया।

‘सब कुछ समाप्त हो गया।’ उन्होंने गंभीर भाव से कहा।

‘मैं आपका मतलब नहीं समझा।’

‘मतलब साफ है। विवाह के तीन दिन पहले सोफी गायब हो गई। लैरी हर जगह उसे ढूँढता फिरा।’

‘बड़े आश्चर्य की बात है! क्या दोनों में कुछ कहा सुनी तो नहीं हुई?’

‘कुछ भी नहीं। सब बातें पक्की हो गई थीं; मुझे ही कन्यादान देना था; उसके बाद ही उन्हें अपनी सुहागरात के लिए बाहर जाना था। मेरी समझ में अच्छा ही हुआ। लैरी का पीछा तो-छूट।’

मेरा अनुमान था कि आइजाबेल ने इलियट से सब बातें अवश्य बतला दी होंगी।

‘असल बात क्या हुई?’ मैंने उत्सुकता दिखाई।

‘उस दिन तो याद ही होगा जब हम लोगों ने होटल में दावत खाई थी फिर उसके बाद सोफी पोशाकों की नुमायश देखने गई थी। उसके कपड़े तो याद ही होंगे—विलकुल भाँडे—निलंबज! कच्चे उसके याद हैं न? उसीसे पता चलता था कि सड़क पर किसी घूमते फिरते दर्जी से सिलवाये गये थे। हाँ, माना वह लड़की गरीब थी और कीमती कपड़े नहीं खरीद सकती थी। आइजाबेल की प्रशंसा

मैं सदैव से करता आ रहा हूँ; वह बड़ी उदार है; उसने एक दो पोशाकें उसको भेंट भी कर दीं। दोनों वचपन से साथ-साथ खेली थीं इसलिए इसमें कुछ अनुचित भी नहीं था। उसे शरीफ स्त्रियों ऐसा पहन ओढ़ कर तो विवाह करना ही चाहिए था। आइजाबेल ने सोफी को अपने पास तीन वजे बुलाया था कि दर्जी के यहाँ चल कर पोशाकें काट-छाँट कर फिट कर ली जातीं। सोफी आई तो ठीक समय पर मगर आइजाबेल को वच्चों को लेकर दाँत के डाक्टर के यहाँ जाना पड़ा और उसे वहाँ बहुत देर लग गई। जब वह लौटी तो देखा सोफी गायब। आइजाबेल ने सोचा कि कदाचित् इन्तजार करते करते थककर वह स्वयं दर्जी के यहाँ चली गई होगी। वह दौड़ी हुई दर्जी के यहाँ गई। सोफी वहाँ पर भी न मिली। फिर वह लौट आई। उन्हें उस रात साथ ही साथ खाना भी खाना था। लैरी तो ठीक समय पर आया और आते ही पूछा—‘सोफी कहाँ है?’ आइजाबेल को कुछ पता होता तब तो बतलाती।’

‘पहले तो वह कुछ समझ न पाया; उसने उसके घर पर फोन किया पर कोई जवाब नहीं मिला। वह दौड़ा हुआ उसके घर गया। आइजाबेल जब तक हो सका खाना स्थगित किए बैठी रही। मगर जब वे दोनों नहीं लौटे तो उसे अकेले ही खाना खाना पड़ा। यह तो मालूम ही है कि सोफी का जीवन क्या था! पतिता तो वह जाने कब की थी। आप लोगों को उस वासनालय में जाना ही नहीं चाहिए था। वहीं से यह मुसीबत पीछे पड़ी। लैरी उसको अनेक पुराने अड्डों पर ढूँढ़ता फिरा मगर वह कहीं भी नहीं मिली। उसके घर पर भी वह दिन में कई बार जाता मगर पता यहो लगता कि वह नहीं आई। तीन दिन तक लगातार लैरी उसे ढूँढ़ता रहा मगर वह कहीं हो तब तो मिले—यह जैसे हवा में गायब हो गई। चौथे दिन जब लैरी उसके घर गया तो एक आदमी ने बतलाया कि वह आई थी और एक बेग में कुछ जरूरी सामान ले वापस चली गई।’

‘क्या लैरी को बहुत ज्यादा परेशानी रही ?’

‘मुझसे तो वह मिला नहीं। आइजाबेल ने बतलाया था—‘हाँ, यों ही।’

‘उसने कोई पत्र भी नहीं लिखा ?’

‘नहीं।’

‘मैं समझा कि इतिश्री हो गई।

‘आप कुछ रहस्य सुलझा सकते हैं ?’ मैंने कहा।

‘उसमें रहस्य हो ही क्या सकता था। नर्क से आई थी वहीं वापस चली गई। शराब-खाने में पली थी वहीं फिर जा बसी। यह तो स्पष्ट ही है; मगर उसने इतना तूमार क्यों खड़ा किया ? उसी दिन उसने भाग निकलना क्यों सोचा ? यह मैं नहीं कह सकता।’

‘आइजाबेल पर तो कोई विशेष प्रभाव पड़ा नहीं होगा ?’

‘कोई खास नहीं। उसे दुःख अवश्य हुआ। उसमें सुबुद्धि है और वह भली भाँति जानती थी कि इस विवाह से लैरी का अनिष्ट होता और उसकी मर्यादा गिर जाती।’

‘और लैरी ?’

‘आइजाबेल उसकी हितेच्छु है; मगर-उससे भी वह साफ-साफ कुछ नहीं बतलाता। कुछ दिनों में वह अपने आप टूट डू जायगा। आइजाबेल का तो विश्वास सा है कि वह सोफी से कभी भी प्रेम नहीं करता था। वह केवल भ्रम में पड़कर सहानुभूति के बश उससे विवाह कर रहा था।’

‘मैं यह जानता था कि आइजाबेल की रुचि के विरुद्ध जो कुछ भी होता उसे वह सहन करने वाली स्त्री न थी और जब सारी घटनायें उसके अनुमान में ठीक उतरतीं तो उसे आत्मिक सन्तोष हुआ। मुझे विश्वास था कि जब कभी उससे भेंट होगी तो वह बड़े सन्तोषपूर्वक सब गाथा गाएगी।

एक वर्ष के पहले मेरी उसकी भेंट न हो सकी। अगले कहीं भेंट

हो जाती तो मैं उसे सोफी के विषय में ऐसी सूचना दे सकता था जिस को सुनकर उसे अपने चरित्र को फिर से ठीक प्रकार समझना पड़ता क्योंकि बात कुछ ऐसी ही थी। मैं लन्दन काफी दिनों रुका रहा फिर उसके बाद घर जाने के इरादे से बिना पेरिस में ठहरे रिवीयरा जा पहुँचा; परन्तु अपने लिखने-पढ़ने के काम में लगे रहने के कारण बहुत ज्यादा इधर उधर जा न सका। इलियट से अकसर भेंट हो जाया करती थी। उन का स्वास्थ्य गिरता चला जा रहा था और मुझे डर था कि अगर कहीं वह उसी पुरानी व्यग्रता और उत्साह से मित्रों को दावतें देते और खाते फिरे तो खैर नहीं। वह मेरी कभी-कभी भर्त्सना इसलिए भी किया करते थे कि मैं तीस मील मोटर चलाकर उनकी दावतों में सम्मिलित नहीं होता था—

‘इतने अच्छे मौसम में घर पर पड़े-पड़े लिखना-पढ़ना प्रकृति के प्रति अन्याय है ? समाज के नियंत्रण से मुह चुराना बड़ी भारी कमजोरी है; पता नहीं कि आपका समय कैसे कटता है और फिर रिवीयरा से दूर जिस स्थान पर आप रह रहे हैं वहाँ तो मैं एक क्षण भी नहीं टिक सकता—कितनी भद्दी और पुरानी जगह है वह; वहाँ सोसायटी ही भला किस शरीफ की मिलती होगी।’

वे चारे इलियट अब भी समाज के पीछे पागल थे।

अपना एक उपन्यास समाप्त करके मैं फ्रांस के नगरों, बन्दरगाहों तथा सुन्दर प्रकृति-स्थलों को देखता फिरा। एक दिन टूलन नगर के सायंकाल की आभा, एक होटल की छत से बैठा-बैठा देख रहा था कि यकायक सोफी वहाँ टहलती हुई दिखाई दी। ज्योंही उसने मुझे देखा त्योंही कहा—‘हलो ! आप यहाँ !’ उसने मुस्कुराकर हाथ मिलाया। वह एक मेज पर पहले से बैठी हुई थी और उस पर एक खाली गिलास रखा हुआ था।

‘आइए बैठिए ! कम से कम एक गिलास तो पीजिए !’ उसने आग्रह किया।

‘आप आइए और मेरा साथ दीजिए ।’ मैंने कहा और उसके लिए एक कुर्सी सरका दी ।

उस समय वह सफेद और नीली धारी का कोट जैसे नाविक पहनते हैं पहने थी । पतलून लाल थी और सैन्डल के बाहर उसकी बड़ी बड़ी, रंगी हुई पैरों की उगलियाँ दिखाई दे रही थीं । सर पर हैट नहीं था मगर उसके बाल छोटे-छोटे और घु घराले किए हुए थे । उनका रंग सुनहला हो रहा था । पिछली बार वासनालय में भेंट के समय वह पाउडर और लाली से जितनी लिपी पुती थी उससे कम इस समय भी नहीं थी । यद्यपि वह दो एक गिलास पहले पी चुकी थी पर वह गंभीर थी और मुझसे मिलकर उसे कोई अर्वाच नहीं हुई ।

‘पेरिस का क्या हाल है ?’ उसने पूछा ।

‘सब ठीक ही होगा ।’

‘और हम लोगों के मित्रों का ?’

‘उन लोगों से तो मेरी भेंट केवल उसी दिन हुई जब हम लोगों ने साथ-साथ दावत खाई थी । उसके बाद फिर कोई मिला ही नहीं ।’

उसने अपने मुख और नाक से सिगरेट का गहरा धुआँ फेंका ।

‘अच्छा ही हुआ जो मैंने अन्त में लैरी से विवाह नहीं किया ।’

‘यह तो पता लगा ! मगर ऐसा किया क्यों ?’

‘जब चीज बिल्कुल सामने आ गई तो मुझे ऐसा लगा मानों मैं लैरी को नीचे गिरा रही हूँ; यह मुझसे न हो सका और मैं भाग खड़ी हुई ।’

‘ऐसे समय यह रुचि परिवर्तन तो कुछ समझ में नहीं आया ?’

उसने मेरी ओर भर्त्सना पूर्ण नेत्रों से देखा । तिरछी गर्दन, पिचके हुए स्तन, लम्बी पतली जाँघें और नाविकों के होटल के वातावरण में वह एक शोख लड़के के समान दिखाई दे रही थी । परन्तु इस नई

पोशाक में वह पहले की हरी पोशाक से कहीं अधिक आकर्षक जान पड़ी। मुँह और गर्दन पर कड़ी धूप का काफी प्रभाव था। यद्यपि उसके कपोलों और होठों पर अब भी पाउडर और लाली का बाहुल्य था परन्तु फिर भी उसमें सेवन का आकर्षण काफी था।

‘क्या मैं बतला ही दूँ ?’

मैंने स्त्रीकारात्मक स्िर दिला दिया। तब तक बेयरा शराब ले आया। उसने फिर सिगरेट सुलगाया।

‘बात यों हुई। मुझे तीन महीने से शराब छूने को भी नहीं मिली थी। सिगरेट भी नहीं मिली।’ उसने मेरी छिगी हुई आश्चर्य-सुद्रा कां देखा और हंस दी। ‘सिगरेट से मेरा तात्पर्य सिगरेट नहीं—अफीम से है। मैं त्रिलकुन गिरी-गिरी सी रहने लगी। कभी-कभी जब मैं अकेले होती तो चीखती फिरती और कहती—‘मुझसे यह सहन नहीं होगा ! नहीं होगा ! कभी नहीं होगा !’ जब तक लैरी सामने रहता तब तक तो कोई बात न थी मगर उसके जाते ही मुझ पर भूत सवार हो जाता।’

जब उसने अफीम की चर्चा की तो मैंने उसकी ओर एकाग्रता से देख कर उसकी आँखों की कोरों से जान लिया कि वह वही चीज अब भी पी रही थी और उसकी पुतली पर गहरा हरा रंग चढ़ता उतरता जा रहा था।

‘आइनाबेज मेरे विवाह के कपड़े सजा रही थी; पता नहीं उनका क्या हुआ। वे हल्के फालसद्दी रंग के थे। हम लोगों ने तय किया था कि साथ ही जाकर कपड़े ठीक कराएंगे। वह कपड़े-लत्ते के मामले में बड़ी ही दत्त है—और कौन सा फैशन वह नहीं जानती-सभी ! जब मैं उसके घर पहुँची तो वह डाक्टर के यहाँ बच्चों को लेकर गई हुई थी और कह गई थी कि वह शीघ्र ही लौट आएंगी। मैं उसके कमरे में गई। काफी की केतली मेज पर पड़ी थी और मैंने बेयरे से एक प्याला बनाने को कहा। काफी ही एक-ऐसी वस्तु थी जिसके सहारे

मैं चली चल रही थी। वह काफी लाने चल दिया मगर मेज पर पोलैण्ड की बनी वही स्वर्गीय शराब की बोतल छोड़ गया।’

‘हाँ; उसे इलियट ने आइजाबेल के लिए खरीद कर भेज दिया था।’

‘आप सब लोगों ने उसकी खूब बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा की थी और उसके सुगन्ध पर तो सभी उस समय लट्टू थे। उसे देखते ही मेरी उत्सुकता बढ़ी और मैंने काग खोलकर उसे मँधा। एक सिगरेट भी जला ली और इतने ही में बेयरा काफी भी ले आया। काफी अच्छी तो क्या—काम चलाऊ रूप से अच्छी ही कहिए। मेरी तबियत बहुत गिरी हुई थी और एक प्याला पीने के बाद मुझमें कुछ जान आ गई। मैंने बोतल की ओर निगाह फेंकी—ऐसा प्रलोभन कि मैं क्या बताऊँ। मगर मैंने अपने को रोक कर कहा—‘पीने पर लानत है, मैं उस ओर देखूँगी ही नहीं’ और दूसरा सिगरेट जलाया। मेरा अनुमान था कि आइजाबेल शीघ्र ही आती होगी मगर वह नहीं आई। मैं बैठे-बैठे घबराने लगी और मेरी पुरानी आदत है कि मुझे कहीं भी बैठे-बैठे इन्तजार करने में घोर कष्ट होता है; कमरे में पढ़ने के लिए भी कुछ नहीं था। मैं उठकर टहलने लगी और टंगे हुए चित्रों को देखती रही—मगर मेरी निगाहें बोतल पर से न हटीं। मैंने सोचा एक गिलास ढाल कर कम से कम उसका रंग तो देखूँ—कितना मोहक उसका रंग था।’

‘शायद नई कोंपलों सा हरा और पीला।’

‘ठीक! ठीक वैसा ही था! बड़े आश्चर्य की बात तो यह थी कि जैसा उसका रंग था वैसा ही उसका स्वाद! हलकी हरयाली जो किसी शुभ्र गुलाब की कली के हृदय में होती है ठीक वैसी ही और मैंने सोचा कि देखूँ तो उसका स्वाद भी वैसा ही है या नहीं। एक गिलास से क्या बनता बिगड़ता? मैंने केवल दो ही घूंट लेना चाहा था कि इतने में ही किसी के पैरों की आहट मुझे मिली। मैंने सोचा

कि आइजाबेल आ गई और मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे पीते देख ले। मैं फौरन ही पूरा गिलास गटक से खाली कर गई। पर अच्छा हुआ जो आइजाबेल के आने की आवाज वह न थी। उस गिलास ने मुझमें नया जीवन फूंक दिया; वैसा अनुभव मुझे कई महीनों से नहीं हुआ था। अगर कहीं आइजाबेल आगई होती और कहीं मुझे लैरी से विवाह करना ही पड़ जाता तो ईश्वर जाने कैसी बीतती !'

‘और आइजाबेल नहीं ही-आई !’

‘नहीं ! नहीं आई ! मुझे उस पर बहुत क्रोध आ रहा था; मैंने सोचा कि मुझे हीन और निकृष्ट समझकर ही मुझसे इतनी प्रतीक्षा करा रही है—फिर जब मैंने गिलास की ओर आँखें फीं तो बड़भरा हुआ था। मेरा केवल अनुमान ही है कि मैंने ही उसे भर दिया होगा; सच मानियेगा मुझे पूरा विश्वास अब भी नहीं है कि मैंने ही दूसरा गिलास ढाला। उसे फिर बोतल में उड़ेल देना मेरी समझ में ठीक नहीं जंचा। मैं वह भी चढ़ा गई। ऐसा मधुर ! ऐसा-जैसे किसी नवयुवक का मस्त प्यार; ऐसा था उसका स्वाद ! नवजीवन संचार होने से मुझे स्वर्गीय आनन्द आने लगा और मेरी इच्छा बड़े जोरों से हंसने की होने लगी—मैं महीनों से हंसी भी नहीं थी। आपको याद होगा कि वह लुंडूडा खबूस कह रहा था कि पोलैण्ड के राजे महाराजे उस शराब को पीते हैं और उन पर जग भी नशा नहीं चढ़ता। मैंने सोचा क्या कोई पोलैण्ड का बच्चा मेरे सामने पीएगा ! और मैं कोई भेड़ बकरी नहीं ! मैं उन सबसे ऊंची रहूँगी ! काफी उठाकर मैंने अगीठी में फेंक दी और प्याला शराब से भर कर गटक गई। वह कहती थी—‘मां के दूध के समान !’ क्या जाने वह कैसा होता है ! फिर मुझे ठीक याद नहीं कि क्या हुआ, मगर बोतल में कुछ जरा सा ही बच रहा होगा। मैंने उसे भी साफ कर दिया। तब मैंने सोचा कि अब आइजाबेल आती ही होगी और मुझे फौरन

ही निकल भागना चाहिए। इतना सोचना था कि आइजबेल की ऐसी आवाज मुझे सुनाई दी मानो वह किसी से बातें कर रही है, मैं दुमंजिले की सिङ्ढी पर चढ़ गई और ज्यों ही वह अपने कमरे की ओर मुड़ी मैं तीर ऐसी निकल भागी और नीचे आते ही जाती हुई एक टेक्सी पर बैठ गई और ड्राइवर से कहा—‘जान छोड़ कर भागो।’ मोटर यह गई वह गई और जब मीलों निकल आई तो ड्राइवर ने पूछा—‘कहाँ चलना है?’ मैं ठठा कर हँस पड़ी। मुझे उस समय मानों लाखों की निधि मिल गई हो।

‘आप शायद अपने घर नहीं गईं?’ मुझे मालूम तो था पर मैंने पूछ ही लिया।

‘क्या आपने मुझे बिलकुल ही बेवकूफ समझ रखा है। मैं जानती थी कि लैरी मुझे ढूँढ़ने वहीं आएगा। मैं अपने किसी भी पुराने अड्डे पर नहीं गई क्योंकि मैं जानती थी कि लैरी मुझे ढूँढ़ने में कोई भी जगह छोड़ नहीं रखेगा इसीलिए मैं हकीम के यहाँ चल दी। मुझे विश्वास था कि लैरी वहाँ कभी भी नहीं पहुँच पाएगा; और फिर मुझे अफीम की वड़ी सख्त तलब थी।’

‘यह हकीम कौन?’

‘हकीम! हकीम को कौन नहीं जानता? वह अलजीरिया का निवासी है और अगर आप में पैसा देने की शक्ति है तो वह हमेशा अफीम कहीं न कहीं से निकाल कर दे सकता है; वह मेरा पुराना मित्र भी था। वह सब कुछ ला सकता था—बस मांगने भर की देर थी—ज़ड़का, युवा, औरत, हव्शी—जब जैसी आवश्यकता हो। उसके यहाँ करीब एक दर्जन नौकर रहता करते थे। मैं वहाँ तीन दिन रही और पता नहीं इन तीन दिनों में मैंने कितनों को सुखी किया—वह खिलखिलाने लगी—सभी रंग, सभी रूप के। मैंने इतने दिनों को कसर भर पेट निकाल ली। मगर आप जानते ही हैं

कि मैं पत्नी बनने वाली थी और पवित्र थी; और मेरा विश्वास था कि लैरी ढूँढ़ भी रहा होगा इसलिए पेरिस से भाग निकलने का मैंने इरादा पक्का किया। मेरा पैसा भी सब खत्म हो चुका था। एक पाई नहीं थी—क्योंकि उन हरामजादों को साथ मुलाने के लिए मुझे अपने पास से पैसा जो देना पड़ता था—उनपर मैंने सब न्योछावर कर दिया। चौथे दिन चुपचाप मैं अपने घर गई और नौकर का मुँह एक सौ फ्रैंक और एक मीठे प्यार से बन्द कर दिया और आदेश दिया कि यदि कोई मुझे पूछे तो वह कह दे कि मैं कहीं और चली गई। सामान ले लिया कर मैं टूलन नगर आ पहुँची और जब तक यहाँ पहुँच न गई मेरे मन में हमेशा धुक-धुक होती रही कि कहीं लैरी से भेंट न हो जाय ?

‘तब से आप यहीं हैं क्या ?’

‘यहीं रहूँगी भी। जितनी भी अफीम चाहो मिल सकती है क्योंकि अनेक नाविक पूर्व से चुरा छिपा कर इसी जगह ले आते हैं: वह ऐसी वैसी नहीं होती जैसे पेरिस के बेईमान चोर बेचा करते हैं—ऐसा बढ़िया माल होता है कि जहाँ एक चुस्की लो कि बस—मजा ही मजा। होटल में कमरा ले रखा है। ऐसा हाटल है कि दीवारों से भी अफीम की सुगंध उड़ा करती है।’ उसने नाक से वैसी ही लम्बी साँस अन्दर को ली जैसे वासनालय के अन्दर जाते समय ली जाती है। ‘इतनी मीठी ! इतनी मीठी कि क्या बताऊँ जैसे छोटे हंस के पर लग गए हों और वह लहरों पर फुदकता फिरता हो। और फिर किसी बात की मनाही नहीं—जितने आदमी चाहे कोई ले आवे—दस, बीस, पचास, सौ। सबेरा होते ही नाविकों को जगाने की घन्टी बजाती है और वे सब अरने आप निकल चलते हैं।’ उसी साँस में फिर ‘हाँ ! मैंने आपकी एक किताब अभी हाल ही में एक दूकान पर देखी थी, अगर मुझे मालूम होता कि आपसे भेंट हो जायगी तो एक लेती आती और आपके हस्ताक्षर करा कर उसे भेंट समान रखती।’

‘वह भला क्या पसन्द आई होगी ?’

‘क्यों नहीं ? क्या मैं पढ़ी-लिखी नहीं ?’ उसने मेरी ओर हंसते हुए देखा ।

‘जब मैं छोटी थी तो कविता लिखा करती थी । कभी कभी तो बड़ी जोरदार ! लैरी ने आपसे ज़रूर बतलाया होगा । उसने कुछ हिचक के पश्चात् कहा—‘जीवन तो नर्क का सागर है; मगर जब तक बस चले आनन्द की लहरें ढूँढ़ ढूँढ़ कर छपकड़ियाँ खेलना ही चाहिए ।’ उसने गर्व से अपनी गर्दन को झटका दिया । ‘यदि मैं वह किताब खरीद लाऊँ तो आप उसमें कुछ आनन्द-संकेत लिख तो देंगे ?’

‘मैं कल चला जाऊँगा । अगर वास्तव में वह पुस्तक पसन्द आई है तो एक प्रति घर भिजवा दूँगा ।’

‘तब फिर क्या कहने हैं ?’

उसी समय नाविकों को लिए हुए एक नाव आई और भीड़ गिरती पड़ती उस पर से उतरी । सोफी ने अनेक आज्ञाएँ दीं । एक की ओर इशारा किया—

‘वह मेरा नया मित्र है—लड़का ही है । आप उससे परिचय पाने के लिए उसे एक गिलास पीने का निमंत्रण दे कर जा सकते हैं । वह बहुत ही ईर्ष्यालु है; मुझे किसी दूसरे के साथ देख कर पागल हो उठता है ।’

एक नवयुवक धीरे-धीरे आया और मुझे देख कर ठिठका । उसका लम्बा, चिकना मुख भरी-भरी काली आँखें, लम्बी नुकीली नाक, काले लहरदार बाल देख कर मुझे उत्सुकता हुई । उम्र यही बीस रही होगी, ज्यादा नहीं ।

‘गूँगा है परन्तु कितना सुन्दर !’ उसने प्रेममय कण्ठ से कहा ।

‘तगड़े ही नवयुवक आपको प्रिय हैं ?’

‘जितने तगड़े उतने ही आनन्द-पूर्ण !’

‘इनमें से कहीं कोई आपको खत्म न कर दे ।’

‘तो क्या हुआ ? मिट्टी से उठी, मिट्टी में मिल गई, जान छूटी मानो निधि मिली ।’

‘जरा उसकी बाहें छू कर तो देखिए ?’ वह आग्रह से बोली और अपने मित्र के कोट की बाहें ऊपर सरका दीं ।

उसने अपनी बांह दुहरी की और वेंची हुई मांस-पेशियों का सुडौल चित्र बिच उड़ा । मैंने उसकी शक्ति और सौन्दर्य और पुस्तक की प्रशंसा की—वह हंस पड़ा । शराब के दाम चुका कर मैं उठ बैठा और बिदा ली । रास्ते में मैंने पुस्तक खरीदी और अपना और सोफी दोनों का नाम उस पर लिखा । उसी समय एक कविता की एक पंक्ति याद आई जिसे मैंने पहले पृष्ठ पर लिख दिया ।

उसे सोफी के होटल में छोड़ कर मैं अपनी राह लगा । कई सुन्दर स्थानों में घूम-फिर कर एक सप्ताह बाद मैं घर पहुँच गया ।

७

घर पहुँचते ही इलियट के नौकर जोजेफ से मैंने सुना कि इलियट बहुत बीमार हैं और यदि मैं उनसे मिल सकता तो उन्हें बहुत सन्तोष मिलता । मैं सीधे वहीं पहुँचा । जोजेफ ने मुझसे कहा कि इलियट की अवस्था अच्छी नहीं है और डाक्टरों ने बहुत सावधान रहने का आदेश दिया है । उनको मूत्र-रोग का दौरा उठ गया था और उनके गुरदे इतनी बुरी तरह ग्रस्त हो गए थे कि उनके अच्छे होने की कोई संभावना न थी । जोजेफ इलियट की सेवा में चालीस वर्षों तक रहा था— उसकी आँखों में गर्व और सन्तोष दोनों की मिश्रित झलक थी ।

‘एक न एक दिन तो सभी को जाना है ।’ उसने सिद्धान्त रूप से कहा ।

‘कुछ न कुछ व्यवस्था तो तुम्हारे लिए वह करेंगे ही ?’
मैंने पूछा ।

‘आशा तो है ही !’ उसने शोकाकुल आकृति बनाई ।

कमरे में पहुँचते ही मुझे इलियट को देख कर आश्चर्य सा हुआ—बुढ़ापे की झुर्रियाँ फटीं पड़ रहीं थीं, मुख पर मुर्दानी छाई थी, परन्तु बातचीत में एक विचित्र तेजी थी । दाढ़ी बनी हुई थी, बाल सफाई से कढ़े हुए थे और रेशमी पाजामे पर उनके श्रेष्ठ वर्ग का चिन्ह-स्वरूप पदक-चित्र कढ़ा हुआ था । कमीज की जेब पर भी उनके हस्ताक्षर कढ़े हुए थे ।

मैंने उनके स्वास्थ्य के विषय में चिन्ताजनक प्रश्न किये मगर जवाब मिला—

‘बहुत ठीक हूँ ।’ उनके मुख पर प्रसन्नता का चिन्ह था । ‘थोड़े ही दिनों में ठीक हो जाऊँगा । अनेक दावतों की व्यवस्था करनी है । इटली के पुराने राजमन्त्री शनिवार की शाम को खाना खाने आ रहे हैं और मैंने अपने डाक्टर से कह रखा है कि उन्हें मुझे उस दिन बिलकुल ठीक कर देना होगा ।’

मैं उनके पास आध घण्टे ठहर कर घर चला और जोसेफ से कहता गया कि अगर उनकी तबियत फिर खराब हो तो फौरन सूचना दें । एक सप्ताह पश्चात् जब मैं अपने एक पड़ोसी के यहाँ दावत खाने पहुँचा तो देखा कि वहाँ इलियट पहिले से बैठे हुये हैं । दावत के कपड़े पहने हुए थे और मुख पर मृत्यु की हलकी छाया झलक रही थी ।

‘आपको इतना परिश्रम नहीं करना चाहिए ?’ मैंने, चिन्ता से कहा ।

‘कैसी बातें करते हो । मेरी पुरानी मित्र फ्रेडा के यहाँ राजकुमारी आने वाली हैं; फ्रेडा, मेरी बहिन लुइसा की सहेली है; केवल मेरी ही जान पहिचान उस राजवंश से है; मैं किस तरह इस समय उनका

साथ छोड़ सकता हूँ। जरा सोचने की बात है।'

मैं यह निश्चित न कर सका कि मैं उनकी समाज-प्रियता की प्रशंसा करूँ अथवा आलोचना। इतनी कड़ी बीमारी जिससे मृत्यु के सिवा कोई छुटकारा नहीं; फिर दावतों के लिए इतना उत्साह। मैं हैरान रह गया। बातचीत से तो यह जरा भी पता न चलता था कि उन्हें कोई भी कष्ट या रोग है। जिस प्रकार रंगमंचों पर प्रदर्शित दुःखान्तकी का नायक अपनी पूरी सज्जधन के साथ अन्तिम बातचीत करता हुआ अपना दम तोड़ देता है वही अवस्था इलियट की भी थी। वह बड़ी प्रसन्नता से बातें कर सब का मनोरंजन करने की चेष्टा कर रहे थे। जो जैसा होता उसी योग्य उसकी प्रशंसा और खुशामद होती और पुराने किस्से सुना-सुना कर वह सबको हँसाने का प्रयत्न करते। कदाचित् ही पहले कभी उनके ये सामाजिक गुण पूर्णतया प्रस्फुटित हुए होंगे। जब वे राजकुमारी को विदा देने के लिए भुके तो उनकी आकृति देखने योग्य थी—उसमें सम्मान, वृद्धों की अतृप्त लालसा, तथा गर्व की अटूट भावनाओं का जाल बिछा हुआ था।

दो ही चार दिन बाद उन्हें दौरा फिर उठा। डाक्टर ने चलने-फिरने को विज्ञकुल मना कर दिया जिसके कारण इलियट बौखला उठे। उन्होंने पचासों धनाढ्यों और राजाओं के नाम गिनाना शुरू किया जिनकी दावतों में जाना बहुत ही आवश्यक था।

सप्ताह में दो एक बार मैं उन्हें अवश्य देखने जाया करता था। कभी-कभी वे मुझे चारपाई पर लेटे मिलते और जब कुछ भी अच्छे होते तो अपनी आराम-कुर्सी पर बहुत ही शानदार रंगीन और रेशमी धागों से कड़ा हुआ ड्रेसिंग गाउन पहने लेटे रहते। उनके पास न जाने कितने तरह के ड्रेसिंग गाउन थे और वे हर तीसरे चौथे अदल-बदल कर उन्हें पहना करते थे। अगस्त का महीना शुरू हो गया था और जब मैं उनसे पहले सप्ताह में मिला तब वह असाधारण रूप से शिथिल दिखाई दिए। कमरे में जाने के पहले

ही जोजेफ ने मुझसे बतला दिया था कि उनका स्वास्थ्य बहुत ही खराब है और मुझे वहां पहुँच कर उनकी अवस्था कुछ ज्यादा अच्छी नहीं मालूम हुई। इधर उधर के क्रिस्से सुना कर मैंने उनका मनोरंजन करना चाहा मगर वे जरा भी अनुरक्त न हुए। उनके माथे पर बल पड़ रहा था और उनकी मुद्रा गम्भीर होती चली जा रही थी। यकायक उनकी मुद्रा बदली —

‘क्या एड्रना नोमाली की दावत में आप चल रहे हैं?’

‘नहीं तो; मुझे कोई सूचना नहीं।’

‘क्या आपको उन्होंने निमन्त्रित किया है?’ मैंने फिर पूछा।

‘रिवीयरा में शायद ही कोई बचा हो जिसे उसने न बुलाया हो।’

राजकुमारी नोमाली बड़ी धनान्वय अमरीकन थीं। उन्होंने हाल ही में एक रोमीय राजकुमार से विवाह कर लिया था। ऐरा-गैरा पंच कल्यानी राजकुमार नहीं जो इटली में मारे-मारे फिरते हैं—मगर एक कुलीन परिवार के वंशज जिनकी कुछ थोड़ी बहुत जमींदारी थी। राजकुमारी साठ वर्ष की थीं, विधवा थी और जब फासिस्टों ने उनकी जायदाद पर निगाह लगाई तो उन्होंने अपनी जमींदारी बेच-बाँच रिवीयरा में कोठी बनवाई और वहीं रहने लगीं। उनकी कोठी में संसार के सभी महान चित्रकारों के चित्र थे, और महान कलाकारों ने ही उनकी कोठी की दीवारों पर कामुक और धार्मिक चित्र बनाकर उसे आकर्षित बनाया था। उनकी कोठी की मेजें लकड़ी नहीं बरन संगमरमर की थीं जिसमें मुँह दिखाई देता था और कुर्सियाँ ऐसी जिस पर बड़े बड़े राजा महाराज अपनी युवावस्था में बैठ चुके थे। इलियट ने भी, जिन को इटली के बने फर्नीचर से बड़ी घृणा थी, उनके आकर्षण और फैशन की प्रशंसा की थी। उनके उद्यान तो कामदेव के लिए ही बने थे और स्नान करने की बावलियाँ मानों दूध सी थीं। उन्हें दावतें खिलाने का व्यसन था और बीस-पच्चीस मेहमानों से कम-तो-बहु कभी आमन्त्रित ही न करती थीं। उन्होंने फैन्सी ड्रेस में आने

को लोगों को दावत दी थी। उस दिन पूर्णिमा थी और पन्द्रह दिनों तक रिबीयरा के श्रेष्ठ समुदाय को सिर्फ यह विषय छोड़ किसी और विषय पर बातें करने का अवकाश न था। आतशवाजी का भी आयोजन था। पेरिस से फैंती ड्रेस की गायक मण्डली भी आने वाली थी। निवासित राजे और राजकुमार ईर्ष्यालु होकर यही कहते फिरते थे कि उस दावत में शायद जितना वह खर्च कर देंगी उससे तो उनके कई वर्ष का खर्च निकलता।

‘क्या शान की महिला हैं?’ कुछ ने कहा।

‘उनका वैभव कोई छू भी सकता है?’ दूसरे बोले।

‘कभी कभी तो वह बड़े भद्दे तरीके से रहती है!’ तीसरे बोले।

‘आप कौन सी पोशाक पहन कर जावेंगे?’ इलियट ने धीमे स्वर में पूछा।

‘मैंने तो अभी अभी बतलाया था कि मैं नहीं जाऊँगा। इस उम्र में भला फैन्सी ड्रेस क्या शोभा देगा?’

‘उसने मुझे निमन्त्रित नहीं किया!’ उन्होंने भरे हुए गले से कहा।

उनकी धंसी हुई आँखें मुझे घूर रही थीं।

‘जरूर निमन्त्रित करेंगी!’ मैंने उन्हें शान्त करने के लिए कहा।

‘अभी तो बहुत से निमन्त्रण-पत्र भेजने का बाकी होंगे।’

‘वह मुझे नहीं बुलाएगी!’ उनकी आवाज भारी उठी। ‘उसने जानबूझ कर मेरा अपमान किया है।’

‘मैं तो कभी यह स्वप्न में भी विश्वास नहीं कर सकता—हृद से हृद केवल भूल हो सकती है।’

‘मैं ऐसा व्यक्ति नहीं जाँ आसानी से भुलाया जा सके।’

‘अगर ऐसा हो भी जाँ तो आप जाँ ता सकेंगे नहीं—तबियत तो आपकी इतनी खराब है।’

‘इससे दावत से क्या मतलब। मैं अवश्य जाता; इस मौसम की

यह सबसे बड़ी दावत थी और अगर मैं मृत्यु-शय्या पर भी होता तो एक बार अवश्य उठ बैठता। मेरे पास इटली के प्राचीन राजों की आश्चर्य पूर्ण नई पोशाक है जो आँखों में चकाचौंध पैदा कर देंगी।

मैं सोच न पाया कि इसका क्या उत्तर दूँ; इसलिए चुप ही रहा।

वह थकावत बोले—‘पॉल बर्टन अभी अभी मुझसे मिलने आया था।’

मेरा अनुमान है कि पाठक इस व्यक्ति को भूल गए होंगे क्योंकि मुझे स्वयं नहीं याद कि मैंने उसे कौन सा नाम दिया था। पॉल बर्टन वही युवा अमरीकी था जो इलियट के यहाँ ठहरा था और उन्हीं के द्वारा लन्दन-समाज में उसका परिचय बढ़ा और जब स्वयं लोकप्रिय होकर इलियट को उसने निकाल फेंका तो इलियट उसके विरोधी बन गए। उसकी लोक-प्रियता बढ़ती ही गई क्योंकि एक तो वह युवा था, आकर्षक था, बलिष्ठ था और दूसरे उसने अंग्रेज जातीयता कानूनी रूप से अपना ली थी। उसने अपना विवाह एक पत्रकार की कन्या से किया था जो आगे चल कर स्वयंलार्ड की पदवी पा गए थे। इतनी सामाजिक प्रतिष्ठा के बल पर कौन आगे न बढ़ पाता? उसकी लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती ही जा रही थी। इलियट को इस बात पर बड़ी ग्लानि थी और उनका कंधे-उस पर रह रह कर फूटा पड़ता था।

‘रात को जब मैं सोता रहता हूँ और मुझे चूहे के खड़बड़ करने की आहट मिलती है तो मैं समझता हूँ कि वह पॉल बर्टन ही होगा। मैं तुमसे सच कहता हूँ वह लार्ड की सभा का मेम्बर होकर रहेगा। अच्छा है, मैं वह दुर्दिन देखने को जीवित नहीं रहूँगा।’

‘क्या करने आपके पास आया था?’ मैं जानता था कि दोनों बिना किसी काम के एक दूसरे से नहीं मिलते थे।

‘मैं बतलाऊँ तुम्हें; वह क्या करने आया था? जरा उसकी मजाल तो देखो-मुझसे मेरी पोशाक! प्राचीन इटली के राज्य-वंश की

पोशाक ! जो मेरी धरोहर है मुझसे माँगने चला था । बाहरे मजाल !
उनका चेहरा तमतमा उठा ।

‘बड़ी हिम्मत की उसने ?’

‘हिम्मत क्यों नहीं ! जानते हो इसके मतलब क्या हैं ? इसके मतलब हैं कि वह जानता है कि राजकुमारी एडना ने मुझे निमन्त्रित नहीं किया । उसने उससे यह बात बतलाई भी होगी । हरामजादी ! कुत्ती ! मैंने ही उसे समाज में बढ़ाया : मैं न होता तो कौड़ी की तीन धिकती ; उसी के लिए न जाने मैंने कितनी दावतें दीं, उसी का परिचय बढ़ाने के लिए न जाने मैंने कितना खर्च किया ! उसका एक एक परिचय मेरा ही कराया हुआ है । तुम तो जानते ही हो वह अपने ड्राइवर से फंसी हुई है । दिन रात उसी से चिपटी रहती है । दुनियाँ जानती है । बेशर्म ! हरजाई ! मुझसे वर्तन ने अपने आप बतलाया कि वह अपने सम्पूर्ण उद्यान में रांशनी करने वाली है और आतशवाजी भी छुट्टायेगी । आतशवाजी मुझे कितनी प्रिय है ! मैं उस पर जान देता हूँ ! उसने यह भी कहा कि तमाम लोग निमन्त्रण पाने के लिए छुटपटा-छुटपटा कर रह रहे हैं । न जाने कितनों से उसने मिलने से इन्कार कर दिया फिर भी लोग पीछा नहीं छोड़ रहे हैं । उसने यह भी कहा कि वह चाहती है कि दावत पूर्ण-रूप से सजीव और शानदार हो इसीलिए उसने किसी भी ऐरे गैरे को नहीं बुलाया ।’

‘क्या उसे आपने अपनी पोशाक दे दी ?’ मैंने भीरुता से पूछा ।

‘पोशाक दूँगा !! जरूर ! मैं पहले उसे जहन्नुम रसीद करूँगा तब मुझे शान्ति मिलेगी । मैंने निश्चित किया है कि मैं उसी को पहन कर समाधिस्थ होऊँगा ।’ इलियट चारपाई से उठ बैठे और पागल स्त्रियों सा प्रलाप करने लगे । ‘मैं उससे घृणा करता हूँ ! घोर घृणा ! उन्हें मरते-मरते भी शान्ति न मिलेगी । कितने घोर स्वार्थी हैं वे सब ! जब वे चाहते मेरे यहाँ आकर दावतें खाते और खुशामद करते ।

अब मैं बुढ़ा हो गया हूँ, बीमार हूँ, अब उन स्वार्थियों ने मुझे मक्खी ऐसा निकाल फेंका। जब से मैं बीमार हुआ दस आदमी भी मेरे घर मुझसे हालचाल पूछने नहीं आए। मानों मैं उनके लिए मर खन गया। कमबख्तों ने एक गुलदस्ता भी न भेजा। मैंने उन लोगों के लिए क्या नहीं किया। मेरी शराब सभी ने पी; मेरा खाना सभी ने खाया; मैंने उनकी हर तरह की नौकरी बजाई; उनके इशारों पर मैंने उन्हें सुखी किया; उन पर मैंने लाखों एहसान किए; उनके पीछे बरबाद हो गया। मुझे मिला क्या? कुछ नहीं! क्या कुछ भी? जरा बराबर भी नहीं! उन सभी को जरा भी परवाह नहीं कि मैं मर गया या जीवित हूँ—उनका सत्यानाश हो! स्वार्थी! घोर स्वार्थी! पिशाच!!! उनकी आँखों से आँसू बह चले। मोटी-मांटी आँसू की धार उनकी भुर्रियों का सहारा पा कर होठों तक आकर टिक गई। 'हे ईश्वर! मैंने अमरीका छोड़ा ही क्यों? तू मुझे क्षमा कर।'।

एक बुढ़े व्यक्ति को इस तरह फूट-फूट कर रोते देख मुझे दया आ गई। रोना किसलिए कि उन्हें दावत में नहीं बुलाया गया। मुझे हँसी भी आती रही। मेरा हृदय ग्लानि, कदृणा और अवसाद से आर्द्र हो उठा।

'जाने भी दीजिए! न बुलाया न सही! अच्छा हो कि उस दिन पानी बरस जाय तो उन सभी का मजा किरकिरा हो जाय!'

जिस प्रकार डूबता व्यक्ति तिनके का सहारा ढूँढ़ता है उसी तरह उन्होंने मेरे शब्द दुहराए। उनके उमड़ते आँसुओं के बीच उनकी गिलगिल हँसी सुनाई दी।

'वाह! वाह! यह तो मैं सोच भी न पाया था। हे! ईश्वर ऐसा पानी बरसा दे कि बस! मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रार्थना यही है। आप बिलकुल ठीक कहते हैं। सब मजा धूल में मिल जायगा। सब ठण्डे हो जायेंगे।'

मैंने उनका मन दूसरी ओर आकर्षित किया और उन्हें सन्तोष

भर की बुराई किया करता है। किसी का भी तो मित्र नहीं ?'

यद्यपि ये सभी अवगुण इन श्रीमती जी में भी कूट-कूट कर भरे हुए थे परन्तु उस समय उसकी ओर उनका ध्यान दिलाना गजब ही होता—वह महा मूर्ख थीं। वह रुक कर बोलीं—

‘फिर मैंने यह व्यवस्था की है कि पाल बर्टन इलियट की राजवंशीय पोशाक पहनेगा। उस पोशाक में वह खिल उठेगा। हर ओर उसी पर निगाहें उठेंगी।’

मैं बोला तो कुछ नहीं मगर निश्चित कर लिया था कि बुरे से या भले से, जैसे भी हो, इलियट के लिए एक निमन्त्रण-पत्र कहीं न कहीं से घसीट ही लाना चाहिये। खाना खाने के पश्चात् एडना अपने मित्रों के साथ उद्यान की ओर बढ़ीं और इतने में ही मुझे मनचाहा अवसर मिल गया। मैं उनको कोठी में कई बार आ जा चुका था और मुझे उसके सभी कमरों से जानकारी थी। मैं जानता था कि उन की सेक्रेटरी के पास अनेक निमन्त्रण-पत्र पड़े ही होंगे और इसी विचार से उस कमरे में घुस पड़ा कि एक दो चुपचाप अपने जेब के हवाले कर चलता बनूँगा और उस पर इलियट का नाम लिख डाक से भिजवा दूँगा। यह मैं पूरी तरह जानता था कि वह इतने सख्त बीमार हैं कि चलने फिरने योग्य नहीं और दावत में कभी भी नहीं जा पायेंगे। और फिर निमन्त्रण पा जाने से उन्हें आत्मिक सन्तोष तो हो जायगा ! मगर ज्यों ही मैंने दरवाजा खोला तो देखता क्या हूँ कि श्रीमती कीथ जो उनकी सेक्रेटरी थीं, मेज पर बैठी काम कर रहीं थीं। मेरा अनुमान था कि वह भी खाना खाने चली गई होंगी। मैं धक से रह तो गया मगर अपने का संभाला मैंने बड़ी खूबी से। वह अघेड़ थीं और उनके बाल हलके भूरे थे। उनके चेहरे पर अनेक सुँहासों के दाग होते हुए भी वह ऐसा जताती थीं कि उन्होंने अपने कौमार्य को सुरक्षित रखने का दृढ़ संकल्प कर रखा है।

‘राजकुमारी कुछ मित्रों के साथ उद्यान में टहलने निकल गई हैं

और मैंने सोचा कि आप से भी जरा गप-शप की जाय ।’

‘हाँ ! हाँ ! अवश्य आइए ! मुझे प्रसन्नता हुई ।’

श्रीमती कीथ कुछ शब्दों का उच्चारण इतने भद्दे रूप में करती थी कि बरबस हँसी आने लगती थी और अगर वह कभी किसी पर हँसी की मुद्रा देख लेती तो उसे नितान्त मूर्ख समझ कर चुप हो रहती ।

‘इस दावत ने तो आपका सारा अवकाश छीन लिया होगा ? क्यों श्रीमती कीथ ?’ मैंने पूछा ।

‘अवकाश क्या ? मेरा जीवन भार-स्वरूप हो गया है ; मेरी तो काम करते-करते जान पर आ बनी है । मगर क्या करूँ, जिम्मेदारी का काम है ।’

यह जानकर कि मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ, मैंने अपनी बात सीधे सीधे कह दी ।

‘यह क्या बात है कि राजकुमारी ने मिस्टर इलियट को नहीं आमन्त्रित किया ।’

श्रीमती कीथ के मुख पर एक हलकी गंभीर मुस्कान दौड़ गई ।

‘आप तो जानते ही हैं कि वह किस प्रकार की स्त्री हैं ? वह उन से कुछ नाराज हैं और-और उन्होंने स्वयं अपने हाथों से उनका नाम आमन्त्रित सज्जनों की सूची से काट दिया है ।’

‘इलियट तो केवल कुछ ही दिनों के मेहमान हैं । अब शायद ही वह अपना चारपाई छोड़ सकें और इससे उनको मार्मिक व्यथा पहुँची है ।’

‘अगर उन्हें राजकुमारी से मित्रता बनाए रखना था तो भला आप ही बतलाइए कि उनको यह कहने की क्या आवश्यकता थी कि वह अपने मोटर ड्राइवर से फसी हैं और फिर वह ड्राइवर चार बच्चों का पिता है और उसके स्त्री भी है ।’

‘पर क्या यह सही है ?’

श्रीमती कीथ ने अपने चश्मे के कोने से मुझे देखा ।

‘आपको तो मुझे यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि मैं उनके सेक्रेटरी का कार्य पिछले इक्कीस वर्षों से संभाल रही हूँ और मैंने अपना यह जीवन-सिद्धान्त बना लिया है कि मैं अपनी मालकिन को सच्ची और नैतिक दृष्टि से पवित्र समझूंगी । यह सही है कि बहुत दिन पहले जब श्रीमती एडना के पति—अफ्रीका में शिकार खेलने के लिये छ महीने से टिके हुए थे उस समय श्रीमती के चार मास का गर्भ न जाने कैसे रह गया था । मगर क्या हुआ ? वह कुछ दिनों के लिए पेरिस रह आईं—खर्च जरूर हुआ ; मगर वह बिलकुल ठीक होकर आ गईं ; और कहीं कुछ बात नहीं हुई । श्रीमती ने और मैंने इसे बड़ा भारी छुटकारा समझा था ।’

‘श्रीमती वीथ ! मैं तो आपके कमरे में सिर्फ एक निमंत्रण-पत्र भटक लाने के विचार से आया था कि उसे लेकर मैं इलियट को चुपचाप भेज देता ।’

‘यह तो बहुत बुरी बात होती ।’

‘होती तो । मगर आप तो खुद इतनी समझदार हैं,—एक से कुछ नहीं बिगड़ेगा । बेचारा बुढ़ा आदमी आ तो पाएगा नहीं मगर उसे रन्तोष कितना होगा । उसकी उम्र कुछ दिनों के लिए बढ़ जाएगी । आपको स्वयं तो कभी इलियट ने असन्तुष्ट नहीं रखा ?’

‘नहीं, नहीं, कभी नहीं । वे अत्यन्त सज्जन हैं और जितने सुस्त-खोरे यहाँ दावतों में एकत्रित होते हैं उन सब में एक वही तो हैं जिनमें शिष्टता और सज्जनता कूट-कूट कर भरी है ।’

समाज के सभी श्रेष्ठ-व्यक्तियों के यहाँ कुछ ऐसे लोग सदैव रहते हैं जिनकी हमेशा सुनवाई होती है और वे मालिक के मुँह लगे रहते हैं ; और यदि इन्हें कोई एकबार भी असन्तुष्ट अथवा नाराज कर देता

है तो मौके वे मौके वे इस सफाई से अपने मालिकों का कान उनके विरुद्ध भरा करते हैं कि एक न एक दिन उन्हें पूरा दुश्मन बना कर ही दम लेते हैं। उन्हें भिन्न बनाए रखने में ही कुशल रहती है। इस तथ्य को इलियट ने गाँठ बाँध लिया था और वे सदैव इन व्यक्तियों को प्रसन्न रखने के लिए त्योहारों पर कुछ न कुछ मिठाई भिजवाते, तथा सहानुभूति सूचक पत्र लिख देते या उनके रचिनुकूल कोई न कोई सस्ती शैंट भेज दिया करते।

‘तब तो आपको संकोच नहीं करना चाहिए !’

श्रीमती कीथ ने अपना चश्मा अपनी नाक की रीढ़ पर कस लिया —

‘आप यह तो कभी भी नहीं चाहेंगे कि मैं अपने मालकिन का अहित चाहूँ और फिर बुढ़िया अगर ब्रह्म जान गई कि मैंने उसका आदेश जान बूझकर नहीं माना तो वह मुझे निकाल कर ही मानेगी। देखिए ! निमंत्रण-पत्र लिफाफों में बन्द मेज पर पड़े हुए हैं; मैं जरा खिड़की के बाहर सिर निकाल कर प्रकृति-दर्शन कर रही हूँ और उनमें से कोई भी मेरी निगाह के परे आंभल हो जाय तो मुझे भला कैसे मालूम हो सकता है। ईश्वर जाने और लेने वाला जाने।’

ज्योंही श्रीमती कीथ ने खिड़की से बाहर देखा त्योंही निमंत्रण-पत्र मेरी जेब में जा पहुँचा। बिदा लेने की इच्छा से मैंने कहा —

‘श्रीमती काथ ! मुझे आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मगर आपने यह ताँ बतलाया ही नहीं कि आप कौन सी पोशाक पहिन कर दावत में आएंगी !’

‘देखिए ! मैं पादरी की लड़की हूँ और इस तरह वा खिड़कोरापा केवल श्रष्ट वर्ग के व्यक्तियों को ही शोभा देता है। ज्यों ही खाना खत्म होगा और शराब का दौर चलने लगेगा त्योंही मेरा यह वस्त्र कार्य समाप्त हो जायगा। और मैं चुपचाप जाकर एक जासूसी उपन्यास पढ़ते-पढ़ते सो जाऊंगी।’

दूसरे दिन जब मैं इलियट से मिला तो उनका मन प्रफुल्लित था ।
‘देखा आपने ! मेरा निमन्त्रण-पत्र आ गया; अभी-अभी सबेरे की
डाक से आया है ।’

उन्होंने अपने तकिए के नीचे से निमन्त्रण-पत्र निकाल कर
दिखलाया ।

‘वह तो मैंने आपसे पहले ही कहा था । सूची पर आपका नाम
अन्त के अक्षरों से आरम्भ होता था इसी कारण कुछ देर लगी ।’

‘मैंने उसका उत्तर अब तक नहीं लिखा है । कल लिखूँगा ।’

मुझे एक क्षण के लिए बड़ी घबराहट हुई ।

‘अगर आप कहें तो आपकी ओर से मैं उसका उत्तर लिख भेजूँ
और लौटते हुए, रास्ते में, डाक से छोड़ भी दूँ ?’

मेरा अनुमान था कि अगर इलियट स्वयं लिखने पर तुल गए तो
भी उनका उत्तर आमती कीथ के पास ही पहले पहल पहुँचेगा और
उनमें इतनी सुशुद्धि अवश्य आ जायगी कि उसे छिपा कर रख दें ।
इलियट ने जोसेफ को बुलाने के लिए घन्टी बजाई ।

‘मैं आपको अपनी पोशाक दिखलाना चाहता हूँ ।’

‘क्या आप जाने की सोच रहे हैं ?’

‘क्यों नहीं ! मैंने उसको बरसों से नहीं पहिना है; और अब दूसरा
कौन अबसर आएगा !’

जोसेफ घन्टी की आवाज सुन कर आया और इलियट ने पोशाक
लाने का आदेश दिया । वह एक बहुत लम्बे और चपटे बक्स में रखी
हुई थी । मखमली कपड़ा उस पर लिगटा हुआ था । खोलते ही पूरी
भोशमक तह की हुई मिली—सफेद रेशम के लम्बे मोजे, सफेद साटन
का कोट—जिसमें बहुत कीमती मखमल का अस्तर और ऊपर जरी
का काम असली सोने के तारों में किया हुआ, एक वास्केट भी जिस

पर जरी का सुनहला काम दाएँ बाएँ कड़ा हुआ, एक लम्बा चोगा और गर्दन पर डालने के लिए सुनहले रेशम का मफलर, एक चपटी मखमली टोपी; और बास्केट से लटकती हुई एक लम्बी सोने की जंजीर जिसके निचले सिरे पर एक बहुत बड़ा राजवंशीय पदक लगा हुआ था। इलियट ने बड़े गर्व से बतलाया कि ठीक यह उसी पोशाक के समान है जो उनके राजवंशीय परिवार के राजे, स्पेन के राजाओं के विवाहोत्सवों में पहनते थे।

दूसरे दिन सबेरे ज्यों ही मैं चाय पीने बैठा था कि टेलीफोन की घन्टी बजी। जोसेफ ने सूचना दी कि पिछली रात इलियट को फिर जोरों से दौरा उठा और डाक्टरों ने कहा है कि उन्हें अगर जरा भी हिलने डुलने दिया गया तो बहुत खतरा है। फिर जान नहीं बचेगी। मैंने गाड़ी मँगाई और सीधे उनकी कोठी पहुँचा। इलियट बेहोश पड़े थे। उन्होंने बड़ी जिद की थी कि कोई भी नर्स न रखी जाय मगर डाक्टर ने अपनी तरफ से एक नर्स देखभाल के लिए नियुक्त कर दी थी। मैंने हाल चाल बुरा देख कर आइजाबेल को तार दे दिया। मे और आइजाबेल दोनों दूर समुद्र-तट की एक कोठी में रह रहे थे और मुझे डर था कि कहीं उनके आने में देर हुई तो शायद वे उन्हें देख भी न पाएंगे। इलियट के परिवार में सिवाय उनके कोई और संबन्धी न था। आइजाबेल के दोनों भाई इतनी दूर थे कि उन्हें सूचना देना असंभव था।

परन्तु इलियट में जीवित रहने की इच्छा बड़ी प्रबल थी। हो सकता है कि डाक्टरों की औषधियों ने भी अपना प्रभाव दिखलाया हो क्योंकि दिन ढलते ही उनकी श्रवस्था अच्छी होने लगी। यद्यपि वे मिलकुल शिथिल और थके हुए थे फिर भी उन्होंने शान दिखाते हुए अपने को सुस्थिर किया और मनोरंजन की इच्छा से नर्स के निजी सेक्स-जीवन के विषय में बड़े आड़े प्रश्न कर हँसने की चेष्टा करने लगे। दोपहर भर मैं उन्हीं के यहाँ रुका रहा। दूसरे दिन जब मैं उन

को देखने गया तो वह प्रसन्न दिखाई दिए। नर्स मुझे उनके पास बैठने से रोकती और बार-बार उन्हें अकेले चुपचाप लेटे रहने पर विवश करती रहती। सबसे बड़ी चिन्ता मुझे इस बात की थी कि आइजाबेल ने मेरे तार का काँई भी जवाब-अव तक नहीं दिया था। उसका पता भी मुझे निश्चित-रूप से नहीं मालूम था मगर जितना पता लिखा था उतना उन्हें ढूँढ़ निकालने के लिए पर्याप्त था। दो दिन बाद उन्होंने सूचना दी कि वे दोनों बाहर घूमने निकल गए थे और अब शीघ्र ही आ रहे हैं। मगर जिस स्थान से उन्होंने तार दिया था उससे मुझे निश्चय हो गया कि उनके आने में कम से कम दो दिन अवश्य लग जायेंगे।

अभी सबेरा भी नहीं हुआ था कि जोसेफ ने मुझे टेलीफोन से सूचना दी कि रात में हॉलियट की तबियत फिर बहुत खराब हो गई और वह बार-बार मुझे बुलाने का आग्रह कर रहे हैं। जल्दी जल्दी तैयार होकर मैं उनके यहाँ पहुँचा ही था कि मुझे जोसेफ अलग बुना कर ले गया—

‘मैं श्रीमान से एक महत्वपूर्ण विषय पर अनुमति चाहता हूँ, उसने कहा, ‘मैं स्वयं तो नास्तिक हूँ और स्वतन्त्र विचार रखता हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि धर्म, केवल जन-समुदाय को धर्म ध्वजों के चंगुल में रखने का पाखण्ड मात्र है। परन्तु आप तो जानते ही हैं कि स्त्रियाँ हम लोगों से विभिन्न होती हैं। मेरी स्त्री और इस घर की सरक्षिका की यह इच्छा है कि पादरी बुला कर श्रीमान हॉलियट को आत्मिक शान्ति देने की व्यवस्था शीघ्र ही की जाय क्योंकि समय बहुत पास आता जा रहा है।’ उसने मेरी ओर लज्जालु दृष्टि से दुबारा देखा—‘और यह भी सही है कि जब किसी का चल-चलाव लग रहा हो तो गिरजे के पादरी से हानि ही क्या ? ऐसे समय परक्षाओं की चिन्ता करनी ही चाहिए !’

मैं उसकी बात पूर्ण रूप से समझ गया। फ्रांसीसी चरित्र में एक बात बड़े मार्के की होती है—चाहे वह ईश्वर और स्वर्ग को कितना

भी हास्यास्पद क्यों न समझे परन्तु अन्त समय बिना उसे ईश्वर और गिरजे का ज़हारा लिए हुए चैन नहीं पड़ती। यह उनकी स्वाभाविक विशेषता है।

‘तुम्हारी यही इच्छा है न कि मैं उनसे इस विषय पर बातें करूँ?’

‘बड़ा उपकार होगा!’

यों तो मुझे इस विषय पर बातें करना अत्यन्त अरुचिकर था परन्तु इलियट का हृदय रोमन-कैथलिक-धर्म ने बहुत काल से आक्रामित कर रखा था और उस दृष्टि से यह आवश्यक ही था कि अन्त समय उन्हें आत्मिक शान्ति देने के लिए पादरी बुलाया जाता और उन्हें ईश्वराधीन कर क्षमाप्रार्थना की व्यवस्था की जाती। मैं उनके कमरे में गया और देखा कि वह चुपचाप चित लेटे हुए हैं और उनके मुख पर मुर्दनी छाई हुई है। पर वे पूरी तौर पर होश में थे। मैंने नर्स से कहा कि हम दोनों एकान्त में बातें करना चाहते हैं। वह अलग कमरे के चली गई।

‘मुझे बहुत दुःख है कि आपकी तबियत ठीक नहीं हो रही है और हम सब लोगों की चिन्ता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।’ मैंने दुःख प्रदर्शित करते हुए कहा।

‘क्या तुम यह समझ रहे हो कि मैं चल बसूँगा?’

‘नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह कदापि नहीं; परन्तु हम सब लोगों के विचार से पादरी बुलाने में तो कोई हर्ज नहीं।’

‘मैं समझा!’

वह चुप रहे। जिस प्रकार का आग्रह मैंने किया था उसे सुन कर कौन स्तब्ध नहीं रह जाता? मैं उनकी ओर देखने का साहस नहीं कर सका। मेरा मन अन्दर से बहुत विडल हो रहा था और मुझे डर लगा कि कहीं मैं रो न पड़ूँ, इस कारण मैंने अपने दाँत जोर से दबा रखे। मैं उनकी चारपाई की पाटी पर बैठा हुआ हाथ

से उसे पकड़े हुए था। उन्होंने मेरा हाथ थपथपाया।

‘घबराने की कोई बात नहीं, मेरे मित्र ! तुम तो जानते ही हो—
‘अभिजात वर्ग का महत् कर्त्तव्य !’

मैं पागलों की भाँति हंसने लगा—

‘आपको अभी भी ठिठोली सूझ रही है ?’

‘अब तुमने ठीक समझा। अच्छी बात है; पादरी को बुलवा लिया जाय; मैं क्षमा-प्रार्थना के लिए पूर्ण-रूप से प्रस्तुत हूँ। मगर सुनो ! मैं चाहता हूँ कि मेरे पुराने मित्र पादरी चार्ल्स ही आयें।’

मैंने नीचे जाकर टेलीफोन का नम्बर मिलाया। स्वयं धर्माध्यक्ष ही ने उत्तर दिया—

‘क्या अवस्था अत्यन्त शोचनीय है ?’ उन्होंने पूछा।

‘बहुत अधिक ?’

‘मैं अभी व्यवस्था करता हूँ।’

इतने में डाक्टर आ गए और मैंने उन्हें भी बतला दिया कि पादरी के आने की प्रतीक्षा है। वह नर्स के साथ इलियट को देखने ऊपर चले गए और मैं नीचे ही बैठा-बैठा पादरी की प्रतीक्षा करता रहा। मैं सोच रहा था कि पादरी को आने में हृद से हृद केवल बीस मिनट लगने चाहिए और अब आध घन्टा हो गया था। इतने ही में एक काली, लम्बी मोटर फाटक पर आ लगी। जोसेफ ने फौरन आकर सूचना दी। मैं बाहर उनकी आवभगत को निकला। उनके साथ एक नवयुवक था जो प्रार्थना के लिये आवश्यक सामान लिए हुए था। मोटर का ड्राइवर काले कपड़े पहने हुए पीछे-पीछे चला आ रहा था। उसके एक हाथ में एक थैली थी और दूसरे में सोने का प्याला। पादरी ने मुझसे हाथ मिलाकर अपने साथी का परिचय दिया।

‘क्या हाल है ? मैं सूचना पाते ही चल पड़ा था।’

‘हालत बहुत खराब होती जा रही है।’

‘कोई खाली कमरा है जहाँ हम लोग कपड़े बदल सकें ?’

मैंने खाने के कमरे की ओर इशारा किया और वे कपड़े बदलने चले। मैं और जोसेफ बाहर प्रतीक्षा में खड़े रहे। थोड़ी ही देर बाद वे दोनों तैयार होकर निकले। आगे-आगे पादरी और उनके पीछे अर्धयज्ञ दोनों हाथों में सोने का प्याला लिए हुए थे जिस पर स्वच्छ रेशमी मलमल का रुमाल ढंका हुआ था और अन्दर की सब चीजें साफ-साफ दिखाई दे रही थीं। मैंने इसके पहले पादरी को कभी भी इस धज में नहीं देखा था। केवल दावतों में ही ऐसे व्यक्तियों से परिचय प्राप्त हुआ करता था। वह तलवार चलाने की कला में पटु थे, अच्छे खाने के शौकीन, अच्छी शराब पहचानने में दक्ष और खाने के बाद भद्दी से भद्दी यौवन-सम्बन्धी कहानियाँ बड़े चाव से कहा करते थे। पहिले तो वह साधारण और तगड़े दिखाई देते थे मगर इस नवीन पोशाक में वे बहुत गंभीर और शानदार दिखाई देने लगे। उनका लाल लाल फूला हुआ चेहरा जिस पर हँसी सदैव खेला करती थी इस समय अत्यन्त गंभीर था और दायतों वाली चंचल-भ्रू-भंगिमा का कहीं भी लेश न था। उस समय वे गिरजे और कैथलिक मत के महान धर्माध्यक्ष थे। जोसेफ ने अपने दोनों हाथ वृत्ताकार बनाकर सिर झुकाया। उसके इस मानसिक परिवर्तन पर मुझे जैसा आश्चर्य होना चाहिए था नहीं हुआ—धर्माध्यक्ष की वेष-भूषा ही ऐसी थी। पादरी ने केवल हलके से सिर हिला दिया।

‘रोगी के पास चलिए।’ उन्होंने अत्यन्त गंभीर मुद्रा बनाते हुए कहा।

मैंने उन्हें सिड्डी का रास्ता दिखाया परन्तु उनके आदेशानुसार मुझे स्वयं आगे-आगे चलना पड़ा। केवल पैरों की आदृष्ट थी; हम लोग चुपचाप ऊपर चले।

‘धर्माध्यक्ष स्वयं ही पधारे हैं ! इलियट !’ मैंने कहा।

इलियट ने बहुत कोशिश की कि उठ बैठें; मगर प्रयत्न निष्फल रहा।

‘श्रीमान ने स्वयं कष्ट करके मुझे अत्यन्त आभारी किया; मैं कैसे धन्यवाद दूँ ?’

पादरी ने कहा—‘कृपया दिलिए मत। शान्त-चित्त हो लेटे रहिए।’ उनका इशारा पाकर मैं और नर्स दोनों बाहर चले आए। अध्यक्ष की ओर उन्मुख हो वे बोले—

‘आवश्यकता होगी तब तुम्हे बुलाऊंगा !’

अध्यक्ष ने इधर उधर देखकर हाथ का प्याला रखने के लिए स्थान ढूँढना चाहा। पास की मेज पर से मैंने मोतियों की राख से बने हुए बाज सँवारने के कीमती घुसश को हटाकर स्थान बना दिया। फिर उन्हें लेकर मैं एक पास के कमरे में गया जिसमें इलियट बैठकर पढ़ा लिखा करते थे। खुली हुई जड़कियों से समुद्र की शीतल बयार कमरे में आ रही थी। तारिकाओं से आन्ध्रादित अनेक पताकार्ये नावों पर फहरा रहीं थीं। वे नावें कदाचित मछलियाँ पकड़ने में लगीं थीं जो वहाँ के फैशनैबिल होटलों में श्रृंष्ट मेहमानों के लिए भूनी जाती थीं। बन्द कमरे से धीमी-धीमी आवाज आ रही थी। इलियट क्षमा-प्रार्थी के रूप में अपने पापों की स्वीकृति दे रहे थे। मुझे सिगरेट की बुरी तरह तलब लग रही थी मगर अध्यक्ष सिगरेट जलाते देख लेते तो अवाक् रह जाते कि कोई व्यक्ति इतना निष्ठुर भी हो सकता है। अध्यक्ष शान्त-भाव से खड़े हुये बाहर देख रहे थे। दुबला पर सुडौल नवयुवक, काले घुँघराले बाल, बड़ी-बड़ी काली आँख—जैतून की रंगीन चिकनाहट उनके बदन पर थी। उनकी आकृति पर दक्षिणी प्रदेशों की आर्वाक्ति विदित थी और मैंने सोचना शुरू किया कि यह व्यक्ति जिसकी अभी अवस्था कुछ भी नहीं। जिसके सामने सांसारिक—आनन्द आँखें बिछाए खड़ा था, जिसकी प्रत्येक भाव-भंगिमा में भूखी रसेन्द्रियों की झलक साफ दिखाई दे रही थी—न जाने क्या सोच कर ईश्वराधन में दत्तचित्त हो रहा था।

यकायक पास के कमरे में स्तब्धता छा गई। मैंने अपनी आँख

कमरे की ओर दौड़ाई। दरवाजा खुला और पादरी बाहर आए—

‘अन्दर आओ।’ अध्यक्ष से उन्होंने कहा।

मैं अकेला रह गया। मुझे पादरी की आवाज फिर सुनाई देने लगी और मुझे ऐसा लगा जैसे वे प्रार्थना कर रहे हों। यह शायद वही अन्तिम प्रार्थना होगी जो मृत्यु की गोद में लेटने वालों के लिए गिर्जे के कानून में प्रस्तावित रखी होगी। इसके पश्चात् फिर स्तब्धता छाई—कदाचित्त उस समय इलियट, ईसा के रक्त और उनके त्याग से साम्य-स्थापित कर रहे होंगे। यद्यपि मैं कैथलिक धर्मावलम्बी नहीं फिर भी सारे वातावरण का इतना अधिक प्रभाव मुझ पर पड़ा कि मेरे सारे शरीर में कपकपी छूट गई और परमपिता परमेश्वर की महत्ता मेरे रोम-रोम में स्फुरित हो उठी। दरवाजा एक बार फिर खुला।

‘आप अन्दर आ सकते हैं।’ पादरी ने मुझे देख कर कहा।

मैं अन्दर गया। वहाँ देखता क्या हूँ कि प्याले पर ढका हुआ रेशमी रुमालें फिर से उस पर तहा कर रखा जा रहा है। प्याले का पवित्र जल ऊपर से झलक रहा था। इलियट के नेत्र प्रकाशमान थे।

‘श्रीमान को, उनकी गाड़ी तक पहुँचा आओ।’ उन्होंने आदेश दिया।

हम दोनों नीचे उतरे। जोसेफ और गृह-दासी बड़े कमरे में खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे थे। गृहदासी की आँखों से आँसू भर रहे थे। दो गृहदासियाँ और आ गई थीं। रोते-रोते वे आगे आईं और अत्यन्त नम्रतापूर्वक पादरी के आगे ननमस्तक हो उनकी अंगूठी का चुम्बन लिया। उन्होंने दो उंगलियाँ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। जोसेफ की पत्नी ने उसे कुहनियों से धक्का दे दे आगे बढ़ाया और झुक मार कर अन्त में उसने भी तिर नीचा किए ही किए घुटने टेक दिए और अंगूठी का चुम्बन लिया।

पादरी के मुख पर हलकी मुस्कान की रेखा दौड़ गई।

‘पुत्र ! कदाचित्त तुम स्वतन्त्र-विचारवादी हो !’

‘जी श्रीमान !’

‘अपना जी छोटा मत करो ! तुमने अपने स्वामी की शुश्रूषा वड़ी श्रद्धा और लगन से की है और ईश्वर तुम्हारी बुद्धि की दुर्बलता को क्षमा करेंगे !’

मैं उनके साथ-साथ सड़क तक आया और मोटर का दरवाजा खोल दिया । चलते-चलते वे विनत हो मुस्कुराए और इस समय उनकी मुस्कुराहट हँसी की सीमा छू ले रही थी ।

‘बेचारे की अवस्था शोचनीय है ! उनके अवगुण कोई विशेष नहीं ! उनका हृदय विशाल है और उनके मित्रों के प्रति उनकी उदारता प्रमाणित है !’

यह सोच कर कि कदाचित् इलियट ऐसे धर्माचार के पश्चात् अकेले ही रहना चाहते होंगे मैं बैठक में चला गया और वहाँ आकर पढ़ने बैठ गया । ज्योंही मैं बैठा था कि नर्स आई और सूचना दी कि इलियट मुझसे मिलना चाहते हैं । मैं ऊपर जा पहुँचा । या तो डाक्टर की औषधि विशेष के द्वारा जो उन्हें अन्तिम-धर्माचार के समय तक शक्ति प्रदान करने के लिए दी गई थी अथवा स्वयं धर्माचार में भाग लेने के फलस्वरूप वे इतने सचेत हो गये थे कि वह मुझे प्रफुल्ल और कुछ-कुछ स्वस्थ दिखाई दिए । उनके नेत्रों में नवीन चमक थी—

‘आज बड़े सौभाग्य की बात हुई है ! मेरे लिए स्वर्ग का द्वार खुल गया है और गिर्जे के प्रधानाध्यक्ष ने स्वयं अपने हाथों से ईंट सोने की कुंजी द्वारा स्वर्ग-द्वार मेरे लिए खोला है ! मेरे सौभाग्य का क्या कहना है ! आज सभी द्वार मेरे लिए खुल गए और मुझे बड़ा सन्तोष है ।’

‘तब तो आपको वहाँ हर तरह के लोगों से भेंट होगी।’ मैं मुस्कुराया।

‘शायद आपको विश्वास नहीं आता। कैथलिक धर्म-पुस्तक से प्रमाणित है कि जिस प्रकार संसार में समाज का वर्गीकरण है उसी प्रकार स्वर्ग में भी श्रेष्ठ वर्ग-विभाजन की व्यवस्था है। स्वर्ग-दूत, देव-दूत सभी उसी वर्ग की व्यवस्था के फलस्वरूप हैं। मैं युरोप के श्रेष्ठातिश्रेष्ठ समाज में रहा हूँ और वही सम्मान मुझे स्वर्ग में भी प्राप्त होगा। मैं वहाँ पर भी स्वर्ग-दूतों के वर्ग में विचरूँगा। मुझे इसका निश्चय है। ईश्वर का आदेश है—‘स्वर्ग के विशाल महल में अनेक खण्ड हैं और अभिमान व्यक्तियों को ऐसी जगह ठहराना जिसके वे अभ्यस्त नहीं, कोरी विडम्बना होगी।’

मेरा अनुमान है कि इलियट के मस्तिष्क में स्वर्ग के महलों के वही चित्र होंगे जिन चित्रों को वे रिवीयरा और पेरिस में देखा करते थे। वहीं के महलों और कोठियों के समान ही वह स्वर्ग की, अट्टालिकाओं का भी अनुमान किया करते होंगे।

‘मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि स्वर्ग में इस संसार के थोड़े समानता के आदर्श की धांधलागर्दी हाँ ही नहीं सकती।’ उन्होंने कुछ रुक कर कहा।

यकायक उन पर बेहोशी सी छाने लगी। मैं उनके पास बैठा-बैठा पढ़ने की चेष्टा में लगा रहा। कभी उनकी आँखें खुलतीं और कभी भंग जाती। एक बजे तक मैं वहाँ बैठा रहा। जोसेफ ने बड़ी शान्ति से मुझसे कहा कि मेरा खाना उसने तैयार कर रखा है।

‘देखिए! पादरी स्वयं ही श्रीमान के लिए आए। यह बड़े ही सौभाग्य की बात है। आपने मुझे भी उनकी अंगूठी चूमते देखा होगा।’

‘हाँ! ठीक है।’

‘वह मैंने अपने नहीं बल्कि अपनी स्त्री के लिए किया था। उसने बड़ी जिद की।’

मैं दोनहर भर इलियट के कमरे में बैठा रहा। एक तार भी आया। ग्रे ने लिखा था कि वह प्रातःकाल होते ही आ पहुँचेंगे। मुझे बिल्कुल ही आशा न थी कि वे दोनों समय पर पहुँच पाएँगे। डाक्टर भी आ गए। उन्होंने इलियट को देखने के पश्चात् केवल नकारात्मक सिर हिला दिया। शाम होते होते उन्होंने आँखें खोलीं और थोड़ा-बहुत पथ्य लिया जिससे उनमें क्षणिक शक्ति का संचार होता दिखाई पड़ा। उन्होंने सिर के इशारे से मुझे बुलाया। पास जाकर मैंने अनुभव किया कि उनकी बोली क्षीण होती जा रही थी।

‘मैंने अभी तक एडना के निमंत्रण का उत्तर नहीं दिया।’

‘जाने भी दीजिए! अब उसका जिक्र छोड़िए; उसमें रखा ही क्या है।’ मैंने कहा।

‘वाह! वाह! क्यों नहीं। मैं सदैव संसारी व्यक्ति रहा हूँ और ऐसे समय जब मैं संसार छोड़ रहा हूँ समाज का शिष्टाचार क्यों मुलाज्ज ? निमंत्रण-पत्र हैं कहाँ?’

पत्र टेबुल पर रखा हुआ था। उसे उठाकर मैंने उन्हें दिया पर मेरा ऐसा विश्वास है कि वह उसे शायद ही पढ़ पाएँ होंगे।

‘मेरे कमरे से जाकर लिखने का कागज ले आओ; मैं उत्तर लिखवाऊंगा।’

मैं दूसरे कमरे से जाकर कागज ले आया और कलम हाथ में ली। उनकी चारपाई की पाही पर मैं बैठ गया।

‘तैयार हो’

‘हाँ।’

उनकी आँखें बन्द थीं परन्तु होठों पर एक द्वेष-पूर्ण मुस्कान थी। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि उनके शब्द क्या होंगे—

‘श्रीमान इलियट टेम्पलटन खेदपूर्वक राजकुमारी एडना का

निमंत्रण अस्वीकार करते हुए सूचित करते हैं कि वे पहले से ईश्वरीय-निमंत्रण स्वीकार कर चुकने के कारण दावत में प्रस्तुत नहीं रहेंगे।'

उनके मुख पर की मुर्दनी बढ़ गई थी और उसी की छाया में मुझे उनकी ईर्ष्यायुक्त मुस्कान दिखाई दी। उनके मुख पर एक विचित्र रंग प्रदर्शित था—सफेद, नीला मिश्रित। उनके मुखसे उनकी घृणित बीमारी के कारण बड़ी दुर्गन्धि आया करती थी। अपनी मुट्ठी में वह चोरी के निमंत्रण-पत्र को गुड़ी गुड़ी करने का असफल प्रयत्न करते रहे; मैंने सोचा कि शायद वह उसे फेंक कर लेटना चाहते हैं और मैंने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया। उन्होंने उसे कसकर पकड़ रखा था और मैंने ऊंचे स्वर में सुना—

* 'हरामजादी ! कुत्ती !' उनका मुख विकृत था।

यही उनके अन्तिम शब्द थे। इसके बाद वे अवसन्न रहे और उनकी मूर्छा न टूटी। नर्स पहली रात एक क्षण भी नहीं सोई थी और लगातार बैठी ही रही थी। मैंने उसे सोने के लिए भेज दिया और यह भी कह दिया कि वह निश्चिन्त होकर सो जाय और जब उसकी आवश्यकता पड़ेगी तो वह जगा ली जायगी। मैंने उसकी जगह लेली। यों भी कुछ काम तो था नहीं, मैंने लैम्प अपने बाएं रखकर पढ़ना शुरू किया और जब तक मेरी आंखें दुखने न लगीं मैं पढ़ता रहा। थककर मैंने बत्ती बुझा दी और अंधकार में ही मैं बैठा रहा।

रात ढलने वाली थी परन्तु फिर भी गर्मी विशेष थी। खिड़कियाँ खुली थीं जिससे समुद्र में दूरस्थ दीप-मीनार की चक्करदार रोशनी रुक रुककर कमरे में एक बार अपनी झलक मार जाती थी। चन्द्रमा की छटा धीमी पड़ रही थी; कदाचित्त वही चाँद एडना की दावत और छलकते हुए प्यालों, नाचते हुए स्त्री-पुरुष और उड़ते-हुए आतशवाजी के अनारों पर भी मुस्कुरा रहा होगा। नक्षत्रों की 'स्नग्ध आभा सफेद कफन के समान मालूम हो रही थी और आकाश

बी ओर देखते ही भय की एक तीव्र लहर मुझमें दौड़ गई। मेरा अनुमान है कि मैं कुछ क्षणों के लिए अवश्य खो गया था—परन्तु मेरी इन्द्रियां सजग थीं।

यकायक मेरे कानों में तेज, विकृत घरघराहट की विकट आवाज आई जो वातावरण में अव्यक्त भय का संचार करने लगी। वह अन्तिम घड़ी के श्वासों की घरघराहट थी। मैं भयभीत हो उनकी चारपाई के पास आया और समुद्र-द्वीप के क्षणिक प्रकाश में उनकी नाड़ी देखी। वह धीरे-धीरे धुंधलक में चले थे। मैंने पास रखा हुआ टेबुल-लैम्प जला कर उनके मुख पर पूरा रोशनी फेंकी। उनके जवड़े एक ओर झुक पड़े थे। उनकी आंखें खुली हुई थीं और उनकी पलकों को नीचे झुकाने के पहिले करीब एक मिनट तक मैं उन्हें एकाम्र देखता रहा। मेरा मन व्यथित हो उठा; और मेरा अनुमान है मेरी आंखों से आँसू भी बह चले होंगे। मेरा पुगना—उदार मित्र आज नहीं रहा। मुझे उनके जीवन का आदि और अन्त सोच कर बड़ी दया आने लगी। कितना बेकार, प्रयोजनहीन, छोटे छोटे कार्यों में व्यस्त उनका जीवन रहा! यह कौन स्मरण रखता कि उन्होंने अनगिनत दावतें दी, स्वयं अनगिनत दावतों में गए, न जाने कितने राजों-महाराजों से उनका घनिष्ठ परिचय था? उनके परिचित राजे—वे सब उन्हें भुला चुके थे।

जागने के कारण शिथिल और थकी हुई नर्स को जगाना मैंने उचित न समझा। खिड़की के पास मैंने कुर्सी रखी और उसी पर बैठा रहा। उसी पर बैठे-बैठे शायद मैं सो गया। सात बजे नर्स ने दरवाजा खोला। मैंने उसे ब्रह्मी छोड़ा और यह समझ कर कि जो वह उचित समझेगी करेगी, मैंने नाश्ता किया और ग्रे और आइजाबेल को लेने स्टेशन की ओर चल पड़ा। मैंने उन्हें बतलाया कि 'इलियट की मृत्यु हो गई'। इलियट की कोठी में स्थान न रहने के कारण मैंने दोनों को अपने यहाँ ठहरने का आमंत्रण दिया परन्तु उन्होंने होटल ही में ठहरना श्रेयस्कर समझा। मैं अपने घर गया,

स्नान किया और कपड़े बदले ।

मैं तैयार ही हुआ था कि ग्रे आ पहुँचा और कहा कि मेरे नाम इलियट का एक पत्र रखा हुआ है । इलियट ने वह पत्र लिखकर जोजफ के सिपुर्द कर दिया था और उस पर मेरा नाम और पता लिखा था । मेरे पहुँचते ही उसने मुझे वह पत्र दिया । उस पर लिखा था—

‘मेरी मृत्यु के पश्चात् शीघ्र भिजवाया जाय ।’

उसमें उनके अन्तिम संस्कार के विषय में आदेश थे । मुझे यह पहिले से ही मालूम था कि उस नये निर्मित गिर्जे में ही उन्होंने समाधिस्त होने की इच्छा प्रकट की होगी और यह सही भी निकला । यही मैंने आइजाबेल से भी कह रखा था । उनकी यह भी इच्छा थी कि उनका मृत-शरीर मसाला लगा कर सुरक्षित कर दिया जाय । आदेश था—‘मैंने पूरा पता लगा लिया है कि एक यही फर्म यह कार्य समुचित रीति से कर सकती है । इस कला में वे दक्ष हैं । आप इस बात का ध्यान रखें कि वे जल्दबाजी न करने पायें । मैं चाहता हूँ कि मुझे मेरी प्राचीन राजवंशीय पोशाक पहना कर बगल में तलवार रख दी जाय और राजवंश का पदक मेरी छाती के ठीक बीचोबीच पहनाया जाय । मृत शरीर को लिटाने के लिए बक्म की समुचित योजना में आराम पर ही छोड़ता हूँ । वह मेरी श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा के अनुकूल ही होना चाहिए, परन्तु बहुत आडम्बरपूर्ण न हो । मैं अपने मृत-शरीर को अपने बनाए हुए गिर्जे में ले जाने का कष्ट किसी को नहीं देना चाहता । केवल ‘टामस कुरु कम्पनी’ को ठेका दिया जाय कि वे इसकी पूरी व्यवस्था कर दें । उन्हीं का कोई एक व्यक्ति मृता-शरीर को अन्तिम स्थान पर चिर-विश्राम के लिए ले जाय ।’

मुझे यह स्मरण था कि इलियट ने बातों-बातों में अपने राजवंशीय पोशाक में चिर-विश्राम ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की थी, परन्तु मेरा अनुमान था कि शायद यह केवल उनकी चलती फिरती धारणा अथवा क्षणिक तरंग होगी । यह मैं कल्पना भी न करता था कि वह

इस पर तुलही जायगे। जोसेफ का आग्रह था कि उनके आदेश अक्षरशः माने जायें। कोई ऐसा कारण भी न था कि उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन किया जाता। मृत-शरीर पर मसाला चढ़ाया गया और उसके बाद मैंने और जोसेफ ने उनको उसी दकियानूसी पोशाक में सुसज्जित करना आरम्भ किया। ज्यों-ज्यों हम लोग कपड़े पहनाते त्यों-त्यों मृतज्ञी आती—इम लोग कभी-कभी आँखें भी बन्दकर लेते। उनकी लम्बी निश्चेष्ट टांगों में लम्बे रेशमी मोजे चढ़ाए गए और उन पर सुनहली गेटिस पहनाई गयी। कोट की बांहों में उनका हाथ डालना एक तरह से असंभव ही था—हड्डियाँ लकड़ी हो उठी थीं—मगर किसी तरह से खीच-खाँच कर कोट पहना ही दिया गया। गले में कड़ा कलफ किया हुआ मफलर लपेट कर उनके सिर पर चपटी टोपी पहना दी गई। गले से लटकती हुई सोने की जंजीर उनके कन्धों पर टिका दी गई। मसाला लगाने वालों ने उनके कपोलों को रंग दिया था और होठों पर लाली भर दी थी। इलियट का दुबला पतला, रक्तहीन शरीर उन लम्बे, बेडौल कपड़ों में भूत सरीखा प्रतीत हो रहा था। मैंने सोचा-निरर्थक ! प्रयोजनहीन जीवन ! क्या तेरा भी यही अन्त होना था ? उनकी तलवार जो उनके पोशाक के साथ ही अन्तिम राजवंशीय चिन्ह थी उनके घुटनों के बीच में लिटा दी गई और उनका हाथ उसकी मुठिया पर रख दिया गया। अन्तिम यात्रा की यह तैयारी भी कितनी भयानक थी।

ग्रे और आइजाबेल मरण संस्कार की व्यवस्था करने इटली चल पड़े।

छुटा परिच्छेद

१

इलियट की मृत्यु के दो महीने हो चुके थे जब मैं एक बार फिर सप्ताह भर के लिए पेरिस गया। मेरा विचार था कि पेरिस हस्ते हुए इंगलिस्तान जाऊँगा। आइजाबेल और ग्रे, इलियट का अन्तिम-संस्कार देख कर लौट आए थे। उनके ऊपर समस्त घटना का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने वसीयत की बातें भी बतलाईं। इलियट ने अपने बनवाए हुए गिर्जे की मरम्मत और देख-भाल और अपनी आत्म-तुष्टि के लिये साप्ताहिक प्रार्थना काने के लिए कुछ रकम निकाल दी थी। जिस पादरी ने उनकी मरण-शय्या पर उनको क्षमा-प्रदान किया था उसके पास भी दान-स्वरूप काफी रकम इसलिए छोड़ दी गई थी कि धर्मार्थ खर्च की जाय। अपनी सेवन सम्बन्धी अश्लील पुस्तकों को सम्पूर्ण लायब्रेरी और एक बड़े चित्रकार की बनाई हुई तस्वीर जिसमें एक देव-दूत और एक देवदासी का प्रेमालिङ्गन तथा अन्य मिले-जुले ऐसे कार्य चित्रित थे जो साधारणतः एकांत में किये जाते हैं, उन्होंने मुझे समर्पित कर दी थी। अपने घर में तो उस चित्र के टंगने का प्रश्न ही नहीं उठता था और उसे कमरे में लुका-छिपा कर रखने में भी कोई विशेष प्रयोजन मेरे लिये नहीं हो सकता था। अपने सेवकों की जीविका के लिए उन्होंने समुचित व्यवस्था कर दी थी। अपने दोनों भतीजों को उन्होंने दस-दस हजार डालर दिये थे और बची हुई जायदाद आइजाबेल के नाम लिख दिया था। उस जायदाद का मुख्य क्या था उसने मुझे नहीं बतलाया परन्तु उसके हर्ष-पूर्ण सन्तोष से मैं भाँन गया कि वह बहुत मूल्यवान रही होगी।

जब से ग्रे का स्वास्थ्य अच्छा हुआ तब से वह अमरीका वापस जाने-जाने कर रहा था और यद्यपि आइजाबेल पेरिस में रह कर बहुत आनन्दित थी परन्तु ग्रे की इस उतावली का प्रभाव उस पर भी पड़ा। लिखा-पढ़ी तो वह अपने व्यवसायी मित्रों से बहुत दिनों से करता आ रहा था परन्तु कोई काम निश्चित नहीं हो पा रहा था, क्योंकि व्यवसाय के लिए उसके पास पैसे की बहुत कमी थी। इलियट की मृत्यु उनके लिए वरदान स्वरूप हुई और आइजाबेल के पास इतनी रकम ~~अस~~ हुई थी कि वह बड़े आसानी से अपने व्यवसाय में लग सकता था। परन्तु पेरिस में उनके लिए काम अभी बहुत था—इलियट की दोनों कोठियाँ बेचनी थीं, उनके महान कलाकारों के चित्रों को भी उचित मूल्य पर बेचना था और इसके लिए यह आवश्यक था कि वे वमन्त तक वहाँ रुकें क्योंकि उसी समय पैसे वाले व्यक्ति वहाँ आकर अपनी कला-लिप्सा को सन्तुष्ट करते हैं और ऐसी चीजों की खरीदारी करते हैं। आइजाबेल जाड़े के मौसम में पेरिस नहीं रहना चाहती थी परन्तु अनेक बातों की व्यवस्था करने के लिए उसे वहीं रहना ही पड़ा। उसकी दोनों लड़कियाँ अब बड़ी हो गई थीं—सुन्दर, आकर्षक और प्रफुल्ल। यद्यपि उनमें अभी तक उनकी माता की सर्जावता और उसका उद्विग्न सौन्दर्य न आ पाया था परन्तु वे रास्ते पर थीं। सामाजिक शिष्टाचार में पटु होते हुये भी उनमें उत्सुकता और चंचलता अधिक थी। आइजाबेल का अधिक समय उन्हीं की देखभाल में बीतता था।

२

एक दिन अकस्मात लैरी से मेरी भेंट हो गई। मैंने आइजाबेल से लैरी के विषय में कई बार पूछा भी परन्तु वह कोई नवीन बात

उसके द्वारे में न बतला सकी क्योंकि उनका मिलना जुलना बहुत ही कम हो गया था। इधर ग्रे और आइजाबेल के नए नए मित्र हो गए थे जिससे अवकाश भी उन्हें कम रहा करता था।

मैं शाम को सिनेमा देखने गया हुआ था। इन्टरवेल में बाहर निकल कर ज्यों ही मैं बगमदे में लगी तस्वीरें देखने लगा त्योंही मेरे कंधों पर किसी ने हाथ रखा। पहले तो मुझे किसी भी परिचित व्यक्ति को मनोरंजन के स्थान पर पाकर बड़ी उलझन होती है और मैं नहीं चाहता कि कोई मेरा ध्यान बगए। परन्तु घूम कर देखा तो सौरी ! मैंने मुस्करा कर अभिवादन किया। उससे मिले करीब एक वर्ष के हो गया था। खेल समाप्त होने के पश्चात् साथ बैठ कर बियर पीने के प्रस्ताव को उसने स्वीकृत तो नहीं किया परन्तु भूख के कारण साथ साथ खाने का भी आप्रह किया। खेल समाप्त होते ही मैं बाहर निकला और थोड़ी ही देर में उसे ढूँढ़ निकाला। सिनेमा-हाल के अन्दर की बू से मैं घबरा सा उठा था। देखने वालों में ऐसी स्त्रियों की अधिकता थी जो हस्तों नहीं नहातीं और पाउडर की तह पर तह जमाती चली जातीं जिसके कारण उनके शरीर से एक विचित्र प्रकार के धुएँ की सी बू निकलती रहती। उनमें कुछ तो थियेटर की ओर से दर्शकों को उनकी जगह दिखलाने पर नियुक्त रहती हैं और जगह दिखलाने के पश्चात् ऐसा घूम कर देखती हैं कि अगर आगे उन्हें वस्त्रशील न दी तो वे मन ही मन गाली देकर आपका परलोक भिगाड़ देने की धमकी देंगी। बाहर की स्वच्छ हवा ने मेरी तबियत बदल दी।

आधे रात होते हुए भी होटल में काफी चहल-पहल थी और सभी मेजों पर आदमी बैठे हुए थे। जगह निकाल कर हम लोग भी जा बैठे और खाना मंगवाया। मैंने आइजाबेल का जिक्र छेड़ा और कहा कि वे दोनों अमरीका जाने की तैयारी में हैं।

‘अरे को तो अमरीका पहुँच कर ही सन्तोष मिलेगा। पेरिस में तो

यह 'जल विन मीन' वाली कहावत चरितार्थ करता है। जब तक वह सोने का ढेर नहीं लगा लेगा तब तक उसे चैन नहीं आएगा।'

'और अगर वह सफल होता है तो उसका श्रेय आपको मिलना चाहिये। आपने उसके शरीर ही को नहीं उसके मन को भी स्वस्थ बना दिया। आत्म-विश्वास उसमें आपकी ही बदौलत तो आया।'

'मैंने कुछ खास काम तो किया नहीं; मैंने तो केवल उसे अपने को स्वयं अच्छा करने का अभ्यास करा दिया।'

'मगर यह आपने सीला कहाँ?'

'अकस्मात् अवसर मिल गया। उस समय मैं भारतवर्ष गया हुआ था। कुछ दिनों से मुझे अनिद्रा का बीमारी हो रही थी और मैंने एक पुराने परिचित योगी से उस संबंध में राय ली। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि कोई बात नहीं सब ठीक हो जायगा। उन्होंने मेरा वही उपचार किया जो मैंने अरे का किया। उस दिन मुझे ऐसी सीढ़ आई जो पहले शायद ही कभी आई हो। उसके बाद ही कुछ महीने व्यतीत हुए होंगे कि मैं अपने एक भारतीय मित्र के साथ हिमालय की पहाड़ियों पर भ्रमण करने चले दिया। उनके पैर में चलते-चलते न जाने कैसे मोच आ गई। वहाँ डाक्टर कहाँ, और उनका दर्द बढ़ता ही जाता था। मैंने सोचा कि उनके स्त्रय भी वही तरीक़ा की जाय और ज्योंही मैंने उपचार शुरू किया त्योंही उनका दर्द दूर होने लगा। आपको शायद विश्वास नहीं आएगा मगर थोड़ी ही देर बाद उनका दर्द बिलकुल उड़नछू हो गया।' लैरी को हंसी आ गई। 'मुझे स्वयं ही इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ, पर सच यह है कि उसमें कुछ है नहीं केवल रोगा को सुभाव देना होता है; और ज्यों ही आपका सुभाव उसके मस्तिष्क ने ग्रहण कर लिया कि वह चंगा हुआ।'

'कहना आसान है करना कठिन ? क्यों?'

'आपने भी खूब कहा ! किसी का हाथ अपने आप बिना उसकी

इच्छा के उठने लगे तो आश्चर्य किसे नहीं होगा ?'

'यही तो मैं भी पूछ रहा हूँ ।'

'मैं कारण नहीं बतला सकता । जब हम दोनों हिमालय से उतरे और बस्ती में आगए तो हमारे भारतीय मित्र ने अनेक लोगों से मेरे कार्य की प्रशंसा करनी आरम्भ कर दी और उपचार के लिए अनेक रोगी भी वह मेरे यहाँ ले आए । मुझे इस अभ्यास से घृणा होने लगी क्योंकि मुझे स्वयं ही नहीं मालूम होता था कि मैं कर क्या रहा हूँ जो इतने लोग मेरे पीछे पड़े हुए हैं । पता नहीं कैसे आशाचर्य सब को मिलता गया । मैंने देखा कि इस उपचार से लोगों का दर्द ही नहीं वरन उनका भय भी दूर होने लगा । न जाने कितने लोगों को यह रोग सताए रहता है । भय से मेरा तात्पर्य अंधेरी कोठरी और निर्जन स्थान से ही नहीं वरन मृत्यु और जीवन भय से है । कहीं-कहीं ऐसे भी लोग मिलते हैं जो बिलकुल स्वस्थ हैं, धनी हैं, सम्पन्न हैं परन्तु फिर भी उन्हें एक अज्ञात भय सताया करता है । मुझे तो कभी-कभी ऐसा अनुमान होता है कि इस प्रकार का भय मनुष्य को विचित्र रूप से आतंकित रखता है और शायद इसका स्रोत मानव की उन आदिम भावनाओं में रहा होगा जो संसार और प्रकृति को पहले पहल देखने के फल-स्वरूप प्रकट हुई होंगी ।'

लैरी की बातें मैं बड़े ध्यान से सुन रहा था क्योंकि वह इस प्रवाह के साथ शायद ही बातें करते हों । मेरा विचार था कि शायद यह पहला ही अवसर है जब उन्होंने अपने मन की बातों को व्यक्त किया । कदाचित् थियेटर में खेल देखने के बाद और उसमें प्रदर्शित मानव चरित्र-विश्लेषण का उन पर भी प्रभाव पड़ा होगा और उनका सहज संकोच मिट गया । यकायक मुझे मालूम हुआ कि मेरे दाहिने हाथ को कुछ हो रहा है । मैंने लैरी की बातों पर कुछ भी, विश्वास नहीं किया था; परन्तु जब मेरा हाथ मेज से बिना प्रयास चार इंच ऊँचा उठ गया तब मेरे आश्चर्य का ठिकाणा नहीं रहा । मैं अवाक

रह गया। जब मैंने हाथ पर निगाह डाली तो वह कुछकुछ झिल रहा था। मेरे हाथ के स्नायुओं में एक अजब सनसनी फैल रही थी। इतने ही में एक झटका लगा और मेरी बांह भी उठ चली। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैंने जरा बराबर उसे उठाने का प्रयत्न नहीं किया। वह मेज से कई इंच ऊपर उठ चुकी थी। यकायक बांह उठते-उठते कन्धे के ऊपर हा चला।

‘यह तो बड़ी विचित्र बात है?’ मैंने कहा।

लैरी हंसा। मैंने थोड़ा सा प्रयत्न किया और मेरा हाथ पूर्ववत् नीचे आ गिरा।

‘विचित्र कुछ भी नहीं।’ उसने कहा—‘इसका कोई महत्व नहीं।’

‘क्या उसी योगी ने आपको यह भी बतलाया था जिससे पहले-पहल भारत में भेंट हुई थी?’

‘अरे नहीं! उन्हें तो इस प्रकार के कार्यों से बड़ी घृणा थी। मुझे यह तो नहीं मालूम हो सका कि उनमें अन्य बड़े-बड़े योगियों की शक्ति थी या नहीं मगर इतना अवश्य है कि उन्हें इस प्रकार के चमत्कार में सुसिद्धि न थी।’

हम लोगों का खाना समाप्त हो चुका था और बियर का गिलास हाथ में था। हम दोनों चुप थे। पता नहीं लैरी स्वयं क्या सोच रहा था, परन्तु मैं उसी के विषय में विचार कर रहा था। गिलास खत्म होते ही मैंने सिगरेट जलाई और उसने अपना पाइप सुलगाया।

‘भारतवर्ष जाने की क्यों सूझी?’ यकायक मैं प्रश्न कर बैठा।

‘संयोग हो कहिए! मैंने उस समय कम से कम यही सोचा था; परन्तु मैं कह सकता हूँ कि यह मेरे बहुत काल तक युरोप में रहने का प्रतिक्रिया मात्र थी। जितने लोगों ने मेरे जीवन को अबतक प्रभावित किया वे सब मुझे अकस्मात् हो मिले। और अब मैं सोचता हूँ कि ऐसा प्रतीत होता है कि उनसे भेंट होनी ही थी। ऐसा मालूम

होता है कि वे मुझसे मिलने की ही प्रतीक्षा में बैठे हैं और मैं भी जैसे उन्हीं की खोज में फिर रहा हूँ। मैं उन दिनों अथक परिश्रम कर रहा था कि मेरी भावनाएँ और मेरे विचार सुव्यवस्थित हो जायँ। एक जहाज जो ससार-भ्रमण के लिये यात्रियों को ले जा रहा था उस पर मुझे अनायास नौकरी मिल गई। पहले एहल पूर्व की बारी थी और उसे पनामा नहर हाँते हुए न्यूयॉर्क लौट जाना था। अमरीका छोड़े मुझे पाँच वर्ष हो गए थे और मैं घर जाने के लिए जैसे तरसने लगा। उद्विग्न भी मैं बहुत था। आप तो जानते ही हैं कि जब मैं आर से शिकागो में मिला था तो कितना अज्ञान था। युरोप जाकर मैंने जी तोड़ अध्ययन किया परन्तु जो मैं चाहता था मुझे न मिला।'

मैंने सोचा कि उससे पूछूँ कि वह चाहता क्या था। परन्तु यह सोच कर कि वह हँस कर टाल देगा, मैंने चुप ही रहना ठीक समझा।

'जहाज पर मजदूर बन कर जाने में क्या रुक था? मैंने प्रश्न किया।

'यही कि मैं अनुभव चाहता था। जब-जब मैं आत्मिक रूप में व्यथित और उद्विग्न होता तो यही अभ्यास करता। जिस वर्ष मेरी और आइजाबेल की सगाई छूटी उस वर्ष मैंने कोयले की खदान में जाकर छ महीने तक मजदूरी की थी।'

इसका विवरण मैं पाठकों को पहले परिच्छेदों में दे चुका हूँ।

'सगाई छूटने पर क्या बहुत अधिक व्यथित हुए थे?'

उत्तर देने के पहले उसने मेरी ओर कुछ देर एकाग्र हो अपनी घनी-भौंहों की छाया में पड़ी हुई बड़ी-बड़ी आँखों से देखा। उसकी दृष्टि आन्तरिक थी-बाह्य नहीं और ऐसा ज्ञात होता था कि वह अन्तर्दृष्टि से कुछ समझ कर ही बातें कर रहा है।

'हाँ! उस समय मैं नव-वयस्क था। मैंने विश्वास सा कर लिया था कि मेरा विवाह होगा और मैंने जीवन का वह ध्येय भी निश्चित कर रखा था जो दोनों साथ-साथ निवाहते। मैं उसी प्रतीक्षा में रहता और सुन्दर सपनों का महल बनाया करता।' इतना कह कर वह शुष्क

हँसी हँसा। 'जैसे भगड़ने के लिये दो व्यक्ति चाहिये उसी प्रकार विवाह के लिये भी दो व्यक्तियों की जरूरत होती है। मुझे स्वप्न में भी ध्यान न आया था कि जिस तरह की जीवन-व्यवस्था मैंने आइजाबेल के सम्मुख रखी है उस पर वह आश्चर्य करेगी और पीछे हट जायगी। अगर मुझे इसका जरा भी आभास मिल जाता तो मैं यह प्रस्ताव रखने की धृष्टता ही न करता। वह भी नव-वयस्क थी; और उसमें ललक थी। उसका दोष भी नहीं। परन्तु मैं भी अपनी राह नहीं छोड़ना चाहता था। तभी से मैं घूम फिर कर शारीरिक परिश्रम द्वारा आत्मिक संतोष पाने को चेष्टा करने लगा।'

पाठकों को स्मरण होगा कि कोयले की खदान में नौकरी के बाद लैरी एक किसान के घर मजदूरी करने लगे थे जहाँ उनकी भेंट किसान की विधवा बधू से रात में अनचाहे और परोक्ष रूप में हो गई थी और जिसके पश्चात् वह अपने मित्र कोस्टी को सोता छोड़ रातों-रात भाग निकले थे। वहाँ से निकलने के पश्चात् वह बोन नगर आये।

'बोन नगर में मैं करीब वर्ष भर रहा। वहाँ पर विश्वविद्यालय के आचार्य की विधवा के घर ही में मैं ठहरा था। उनके दो लड़कियाँ भी थीं और वे तीनों मिल-जुल कर खाना पकातीं और मेहमानों की देख-देख करती। वहीं पर एक फ्रांसीसी भी ठहरे हुए थे—बहुत संकोची और सलज्ज। कुछ दिनों पश्चात् मुझे पता लगा कि वह ईसाई-मिन्न थे और अध्ययन-वश वहाँ ठहरे हुए थे।'

'एक दिन उन्होंने न जाने क्या सोचकर मेरे सामने यकायक यह प्रस्ताव रखा कि मैं उनके साथ रोज टहलने चला करूँ। मुझे भला आपत्ति ही क्या हो सकती थी। हम लोग मीलों टहलते, साहित्य और धर्म पर बातें करते और अक्सर दर्शन और आध्यात्म की चर्चा होती रहती। एक दिन हम लोग टहलते-टहलते एक वाटिका में विश्राम करने रुक गये। इतने ही में उन्होंने पूछा—

‘क्या आप प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के आदर्शों में विश्वास करते हैं ?
‘विचार तो यही रहा है ।’ मैंने उत्तर दिया ।

‘उन्होंने मुझ पर एक तीव्र दृष्टि फेंकी और हलकी मुस्कान के साथ विषय परिवर्तन कर दिया । तत्पश्चात् वे यूनानी साहित्य और साहित्यकारों की चर्चा करने लगे । मैं समझ न पाया कि उन्होंने मेरे धर्म के विषय में क्यों प्रश्न किया । मेरे संरक्षक डाक्टर नेल्सन प्रत्यक्षवादी थे परन्तु इतना होते हुए भी वह गिर्जे में प्रार्थना करने अवश्य जाते क्योंकि एक तो इस कार्य से उनके पास शम्केवाले रोगी प्रसन्न रहते और दूसरे उनकी डाक्टरी अलग चमकती । इसलिए उन्होंने मुझे भी हर रविवार को लगने वाले स्कूल में भरती करा दिया । मेरी गृहदासी भी कैथलिक धर्मावलम्बी थी और वचपन में वह मुझे नर्क के भयानक और विकराल वर्णन से सदैव डराया करती थी । कभी-कभी तो नर्क की घोर यातना की कहानी सुनाने में उसे बड़ा आनन्द आता और जिन-जिन व्यक्तियों से वह ईर्ष्या करती उन्हीं को नर्क में डाल कर वह उनकी पीड़ा का गंभीर वर्णन कर चलती ।’

‘कुछ ही दिनों में फ्रांसीसी भिक्षु एनशम से मेरी घनिष्ठता बढ़ गई । मेरे विचार में वह प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और मैंने कभी भी उन्हें अशान्त नहीं देखा । उनमें उदारता और निस्वार्थता कूट-कूट कर भरी थी और उनमें बड़ी विशाल सहिष्णुता भी थी । उनका साहित्यिक और धार्मिक-ज्ञान अथाह मालूम पड़ता था । एक दिन मैं अस्वस्थ हो गया और लेटे-लेटे एक दर्शन-संबंधी पुस्तक पढ़ रहा था कि वह मेरे कमरे में आए और पुस्तक देखने लगे । उन्हें कुछ-कुछ आश्चर्य सा हुआ जब मैंने उन्हें बतलाया कि मुझे आध्यात्म में बड़ रुचि है । मेरे मित्र कोस्टी ने भी मेरी जिज्ञासा इस विषय की ओर और भी तीव्र कर दी थी । उन्होंने बड़ी सरल और सुगम दृष्टि से मेरी ओर देखा । मेरा विचार था कि उन्होंने मुझे उस समय बहुत

उच्छृंखल समझा होगा। इतने पर भी मेरे प्रति उनका स्नेह कम न हुआ।'

'यह तो आप जानते ही हैं कि यदि कुछ लोग मुझे मूर्ख समझ कर हँसने लगते हैं तो मुझे उनकी रस्ती भर भी परवाह नहीं होती।'

'इन पुस्तकों में ढूँढ़ क्या रहे?' उन्होंने पूछा।

'अगर मुझे यही मालूम होता तो अब तक मैं पढ़ना बन्द कर चुका होता।'

'शायद याद हो मैंने एक दिन पूछा था कि आप प्रोटेस्टेन्ट-सम्प्रदायी तो नहीं; और आपने उत्तर दिया था कि विचार तो यही रहा है। इसका मतलब क्या था मैं नहीं समझ सका?'

'यही कि मैं वैसे ही परिवार में पोषित हुआ हूँ।'

'क्या आपको ईश्वर में विश्वास है?' वह अकस्मात् पूछ बैठे।

'मुझे इस प्रकार के प्रश्न अत्यन्त अशुचिकर हैं और पहले तो मैंने सोचा कि उन्हें झड़प दूँ मगर कुछ सोच कर चुप रह गया। उनकी आकृति में इतनी सौम्यता और उनके स्वर में इतनी कोमलता थी कि मैं रुष्ट भी न हो सका। मैं यह न समझ पाया कि उत्तर क्या दूँ। मैं न तो हँस करना चाहता था और न ना। कदाचित् मेरा दर्द उस समय बहुत बढ़ गया या मुझे उनके कोमल स्वरों का प्रोत्साहन मिला-मैंने अपनी बात कह दी।'

लैरी का संकोच यकायक बढ़ गया। उनकी आँखें अन्दर की ओर देखने लगीं और मेरा विश्वास है कि वह मेरी उपस्थिति भूलकर उसी फ्रांसीसी भिक्षु से बातें करने लगे। पता नहीं कि वातावरण में कोई विशेषता थी या उस समय अथवा स्थान में कोई गूढ़ शक्ति थी जिससे प्रेरित हो लैरी अपनी बात निस्संकोच कह चले।

'मेरे संरक्षक चाचा नेल्सन प्रजातन्त्रवादी थे और मुझे सदैव बराबरी की दृष्टि से देखा करते थे। उन्होंने मुझे मार्विन नगर के हाई स्कूल में शिक्षा पाने के लिए भेजा। मैं न तो पढ़ने में अच्छा था

और तब खेल में ही पटु था परन्तु वहाँ मैं खप गया क्योंकि मैं साधारणतः स्वस्थ और उत्साही लड़का था। उस समय हवाई जहाज की चर्चा हर ओर चल रही थी और मैं उसका चलाना सीखने के लिए पागल सा हो रहा था। चाचा नेल्सन भी इस विषय पर बड़े चाव और प्रोत्साहन से बातें करते थे। उनका परिचय भी कुछ वायुयान-चालकों से था और उन्होंने आश्वासन दिया कि कहीं न कहीं वे मुझे अवश्य लगा देंगे जिससे मैं भी चालक बन जाऊँ। मैं अपनी आयु के हिसाब से काफी लम्बा था। था तो मैं सोलह साल का परन्तु मालूम अठारह-बीस का पड़ता था। चाचा ने मुझे इस विषय को गुप्त रखने का आदेश दिया क्योंकि यदि अन्य लोग सुन पाते कि वह मुझे इस जोखिम की नौकरी में डालना चाहते हैं तो लोग उनकी भर्त्सना शुरू कर देते और उनकी मुसीबत आ जाती। कुछ ही दिनों बाद उन्होंने एक परिचय पत्र दे मुझे कनाडा भेज दिया जहाँ मैं चालक बन गया और सत्रहवाँ वर्ष बीतते-बीतते हवाई सेना में चालक का कार्य करने लगा।

‘उस समय के वायुयान बड़े विचित्र होते थे क्योंकि नया-नया आविष्कार था और हर समय इतना खतरा रहता था कि प्रत्येक उड़ान समाप्त करके लौटना नवजीवन पाने के बराबर था। आजकल के हिसाब से यदि देखा जाय तो जिस दूरी तक हम लोग उड़ते थे हास्यास्पद ही था। शायद दो हजार फीट ही हद थी। परन्तु उस समय के लिए यही आश्चर्यजनक बात थी। मैं आनन्दित था और मुझे अपनी पटुता पर गर्व था। जब मैं आकाश में उड़ता तो मुझे ऐसा ज्ञात होता कि मैं समस्त वायुमण्डल का एक महत्व-पूर्ण अंश हूँ और मैं अनन्त की ओर चला चल रहा हूँ। उस समय मैं उसके ठीक ठीक अर्थ न लगा पाता था। मुझे केवल यह तीव्र अनुभव हुआ करता कि मैं अकेला नहीं—परन्तु मैं किसी अन्य महती शक्ति का भाग हूँ। पता नहीं आप कदाचित् इसे मूल्यों का प्रलाप ही समझेंगे परन्तु जब मैं

अदलों के ऊपर उड़ता तो मुझे ऐसा आभास मिलता कि नीचे भेड़ों के झुण्ड घूम रहे हैं और मैं स्वयं अनन्त से साक्षात्कार कर रहा हूँ।’

इतना कह कर लैरी रुके। अपने नेत्रों की अथाह गहराई के अन्तर्पट से उन्होंने मुझे देखा परन्तु मेरा विचार है कि वह मुझे नहीं बरन मुझे भी भेद कर कुछ और ही देख रहे थे।

‘मैंने केवल सुन रखा था कि लड़ाई में हजारों आदमी काम आए परन्तु अपनी आँखों से मैंने कभी किसी को मरते नहीं देखा था। मुझे मृत्यु की महत्ता भी नहीं मालूम थी। अकस्मात् मैंने एक व्यक्ति को मरते हुए अपनी आँखों देखा। उसे देखते ही मैं ग्लानि और लज्जा से आहत हो उठा।’

‘इसमें लज्जा और ग्लानि कैसी?’ मैं अपने को रोक न सका।

‘इसलिए कि जो युवक अभी-अभी सुन्दर, स्वस्थ, बलिष्ठ, शक्ति-पूर्ण, उत्साही युवा था—जो इतना स्नेही और सरल, जो मुझसे तीन या चार वर्ष ही बड़ा था अकस्मात् गले हुए मांस का एक लोथड़ा मात्र रह गया।’

मैं चुप ही रहा। मैंने अस्पताल में मृत शरीर देखे थे और युद्ध में भी अनेक आदमियों को मृत्यु का ग्रास बनते देखा था। मुझमें केवल यह भावना उठती कि वे कितने हीन और निःकृष्ट थे; उनकी महत्ता कुछ भी नहीं; उनमें भव्यता का नाम नहीं। वे केवल कठपुतलियाँ थीं जिन्हें टूट जाने पर मंदारी ने सड़क पर कूड़ेखाने में फेंक दो थीं।

‘मुझे उस रात नींद नहीं आई। मैं रोता ही रहा। मुझे भय नहीं क्रोध था। युद्ध की विडम्बना और उसकी छलना से मैं क्रुधित हो उठा और युद्ध समाप्त होते ही घर वापस आया। मुझे मशीन के काम में बड़ी रुचि थी और मैं किसी मोटर के कारखाने में कार्य करना चाहता था। मैं घायल होकर ही घर लौटा था इसलिए निकट भविष्य में मैंने केवल अवकाश-ग्रहण कर इधर-उधर संसार-भ्रमण करना ही श्रेयस्कर

समझा। परन्तु लोगों ने मुझे अपने पुराने काम पर जाने पर विवश करना चाहा। वह कार्य मुझे अब घृणित दिखाई देने लगा। उसमें मेरी समझ में कोई तथ्य न था। मेरे पास सोचने-विचारने का बड़ा अवकाश रहा करता और मैं वही सोचता-विचारता रहता कि वास्तव में जीवन का ध्येय क्या है? यह तो केवल संयोग ही था कि मैं कुशल-पूर्वक घर लौट आया और जीवित भी रहा। मैं चाहता था कि जीवन का अर्थ ठीक-ठीक समझ कर उसका सदुपयोग करूं परन्तु मुझे कोई रास्ता न दिखाई देता। मैंने भूल कर भी पहिले ईश्वर का अस्तित्व न सोचा था। मैं उसके बारे में सोचने की सतत चेष्टा करने लगा। मैं यह नहीं जान पाता कि संसार में पाप और बुराई क्यों रखी गई है और उसका प्रयोजन क्या है? मुझे मालूम था कि मुझमें अज्ञान भी बहुत है और उसी को दूर करने के लिए मैं जी तोड़ परिश्रम से पढ़ने और अध्ययन करने लगा।

जब मैं पादरी भिन्नुएनशम से यह गाथा गा चुका तो उन्होंने पूछा—

‘तो तुम चार वर्ष से लगातार पढ़ ही रहे हो। और पहुँचे कहाँ तक?’

‘कहीं भी नहीं।’ मैंने उत्तर दिया।

‘उन्होंने मेरी ओर स्नेहयुक्त दृष्टि से देखा और मैं घबरा सा उठा। मैं यह न जान पाया कि मैंने ऐसी कौनसी अनुचित बात कह दी जो उन्होंने मुझे दया का पात्र समझ लिया। वे अपने दाहिने हाथ की उंगलियाँ मेज पर बजा कर बोले—

‘हमारे धर्म ने यह घोषित कर दिया है कि यदि कोई विश्वास से अपना कर्म करता जाय तो उसमें श्रद्धा और विश्वास अपने आप आता जायगा। यदि कोई व्यक्ति सन्देह-ग्रस्त हो और प्रार्थना करतक जाय और उसकी प्रार्थना निश्छल और निस्वार्थ हो तो उसकी शंका का समाधान स्वयं हो जायगा। यदि कोई व्यक्ति गिर्जे में आकर

शेन्त-चित्त हो ईश्वर पुत्र के प्रति अपने को समर्पण कर दे। उसे महान आध्यात्मिक आनन्द और शान्ति का अनुभव होगा। मैं कुछ दिनों में अपने भिक्षु-गृह लौट जाऊँगा। तुम वहाँ आओ और कुछ दिनों हम लोगों को अपने संसर्ग का आनन्द दो। हमारे अन्न भिक्षु-वर्ग के साथ तुम चाहो खेत में काम कर सकते हो अथवा पुस्तकालय में मनोनुकूल अध्ययन कर सकते हो। कोयले की खदान अथवा खेत में काम करने की अपेक्षा यह अनुभव भी कम रुचिकर न होगा।'

‘इससे आपको क्या लाभ होगा ?’ मैंने पूछा।

‘मैं तुम्हें तीन महीने से लगातार देख रहा हूँ और मेरा विचार है कि जितना मैं तुम्हें समझ पाया हूँ उतना तुम स्वयं अपने को नहीं समझ पाए हो। धर्म तुमसे उतना ही दूर है जितना तम्बाकू से सिगरेट का पतला कागज-कदाचित् उससे भी कम। तुम उसे छू रहे हो—परन्तु वह अभी तक पकड़ के बाहर है।’

इसका मैंने कुछ भी उत्तर न दिया। परन्तु उनकी बातें सुन कर मुझे ऐसा लगा मानो मेरे हृदय के स्नायुओं को पकड़कर किसी ने झकझोर दिया हो। अन्त में मैंने कह दिया कि मैं उनके प्रस्ताव पर विचार कर उन्हें लिखूँगा।

इसके बाद इधर उधर की बातें होने लगी। जब तक वह वहाँ रहे हम दोनों ने फिर कभी भी धर्म पर बातें नहीं की। जब वह चलने लगे तो अपने भिक्षु-गृह का पता मुझे दे गए। साथ-साथ यह भी कह गए कि जब मैं चाहूँ उनके यहाँ जा सकता हूँ; और यदि उन्हें पहिले से सूचना दे दी जायेगी तो ठहरने का सारा प्रबन्ध वह कर देंगे। उनके जाने के बाद मुझे बहुत सूना-सूना लगने लगा। पूरा एक वर्ष व्यतीत होने आ गया था। मैं अपने अध्ययन में फिर जुट गया और अनेक कवियों और दार्शनिकों की रचनाएँ पढ़ डाली—परन्तु राह नहीं मिली। मैंने सोचा भिक्षु एनशम के यहाँ ही चला जाय—देखें क्या होता है।

‘यह मुझे स्टेशन आकर लिवा ले गए। भिक्षु गृह वस्ती के दूर प्रकृति की गोद में स्थित था। उन्होंने मेरी कोठरी, जहाँ मेरे ठहरने की व्यवस्था थी मुझे दिखला दी। एक पतली लोहे की चारपाई, दीवाल पर ताबें की खूँटी और दो एक कुर्सी-मेज के सिवाय वहाँ और विशेष सामान न था। मैं गिर्जे में नित्य प्रार्थना के लिए जाता और जब तक प्रार्थना होती रहती मुझे असीम आनन्द का अनुभव होता। मैं यहाँ भिक्षुओं और पादरिगों के सम्पर्क में तीन मास के करीब रहा। मैं सुखी था और वहाँ का जीवन भी मुझे अत्यन्त रुचिकर था। पुस्तकों से पुस्तकालय भरा-पूरा था और मैंने अध्ययन भी शुरू किया। किसी भी पादरी अथवा भिक्षु ने मुझे अनुचित रूप से प्रभावित करने का प्रयत्न नहीं किया परन्तु वे सब मुझ से अक्सर वातचीत किया करते थे। मैं उनकी विद्वत्ता से अत्यन्त प्रभावित हुआ क्योंकि उनका ज्ञानार्जन निस्वार्थ था और उनका जीवन सरल और पुनीत। यह मत समझिए कि उनका जीवन अकर्मण्य था। वे सतत काम में लगे रहते थे; अपना अन्न स्वयं उपजाते और जब मैं उनकी मदद करने जाता, तो वे बहुत हर्षित होते। उनके प्रार्थना-गृहों की भव्यता और उनकी प्रातःकालीन प्रार्थना मुझे बहुत आनन्द दिया करती थी। भिक्षुओं की वेश-भूषा, उनकी दिन चर्या, उनके विनयपूर्ण धार्मिक कीर्तन को देख-सुनकर मुझे एक विचित्र शांति का अनुभव हुआ करता।’

लैरी अव्यक्त रूप से मुस्कराये।

‘मैं यह नहीं समझ पाता कि इस पुरानी दुनियाँ में मैं नए विचार लेकर आया ही क्यों? मुझे तो मध्ययुग में ही जन्म लेना चाहिए था। उस समय ये प्रश्न उठते ही नहीं क्योंकि धर्म में विश्वास तो लोगों के रक्त में रहा करता था और उस समय मैं सीधे भिक्षु-गृह जाकर सन्तुष्ट हो जाता। मुझमें विश्वास की मात्रा बिलकुल ही नहीं थी। मैं विश्वास करना चाहता हूँ—परन्तु एक ऐसे ईश्वर में जो एक

साधारण व्यक्ति की भी नैतिकता नहीं बरतता मैं विश्वास नहीं कर पाता। भिक्षुओं ने मुझे समझाया कि ईश्वर ने इस संसार का निर्माण अपनी प्रभुता और अपनी कीर्ति अपने यश और अपने प्रताप को प्रसारित करने के लिए किया है। ऐसा ईश्वरीय आदर्श तो कोई अच्छा आदर्श नहीं जंचता और न यह कोई प्रशंसनीय कार्य ही है। यूरोप के प्रसिद्ध गायक वीटवेन ने क्या अपनी गायन कला इसीलिए श्रेष्ठ बनाई कि उसका यश और उसका प्रताप प्रसारित हो ? यह मैं तो नहीं मान सकता। मेरे विचार में उसने अपने गीतों का निर्माण केवल इसीलिए किया कि उसकी आत्मा की यही पुकार थी और उसी पुकार को उसने श्रेष्ठ स्वरों में स्वरित करने का प्रयास किया।

‘मैं नित्य ही भिक्षुओं की प्रार्थना सुनता कि हे परमपिता हमारी नित्य की जीविका चला ! मुझे आश्चर्य होता कि भला यह भी कोई प्रार्थना है। क्या यह विश्वास नहीं कि रोज रोट्टी मिलती रहेगी ? क्या हमारे संसारी परिवार के बच्चे नित्य प्रति अपने पिता से खाना मागने हाथ जोड़ कर खड़े होते हैं ? उन्हें इसकी चिन्ता ही नहीं रहती क्यों कि वे जानते हैं कि उन्हें खाना मिलेगा ही—उसकी चिन्ता क्या ? उन्हें उसके लिए अनुग्रहीत होने की आवश्यकता ही क्या ? यह तो उनका जन्म-सिद्ध अधिकार है ? यदि कोई पिता बच्चों को जन्म दे और उनके खाने-पीने की समुचित व्यवस्था न करे तो हम उसे ही दोषी ठहराते हैं ! अगर वह उनकी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताएँ नहीं पूरी कर पाता तो उसे उन्हें जन्म देने का अधिकार ही क्या ?’

‘लैरी ! यह अच्छा ही हुआ कि मध्ययुग में जन्म नहीं हुआ नहीं तो सुली पड़ जाती और खड़े-खड़े अग्नि में जला दिए जाते।’
लैरी मुस्कराये।

‘अपने से ही समझिए कि यदि आप को किसी प्रकार की सफलता मिले तो क्या आप यह चाहेंगे कि कोई आपके सामने प्रशंसा के पुल

बाँधे और उसकी दुन्दुभि बजाए ।’

‘मुझे तो अपनी प्रशंसा सुन कर धवराहट ही होगी ।’

‘धवराहट सभी को होगी ! मुझे यह विश्वास नहीं आता कि ईश्वर का कभी ऐसा हीन ध्येय भी हो सकता है । मैं जब हवाई सेना में काम करता था तो जब कोई चालक अपने प्रधान की खुशामद-बरामद कर अपने लिए अच्छी नौकरी निकाल लेता या आराम की छुट्टी पा जाता तो हम लोग उसे अत्यन्त निकृष्ट ही समझते थे । ईश्वर के प्रति सबसे श्रेष्ठ-सेवा और प्रार्थना यही है कि मनुष्य अपने अपने विचार के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे ।’

‘सबसे कठिन प्रश्न जो मेरे सम्मुख था वह था पाप का प्रश्न ।’ भिक्षुओं के सिद्धान्तों में पाप का स्मरण हर समय रहता था । हवाई-सेना में ऐसे अनेक व्यक्तियों को मैं जानता था जो शराब पी कर मस्त हो जाते, जहाँ पाते मनोनुकूल लड़कियाँ भी ले आते, आनन्द मनाते, गाली भी बकते । दो एक तो वेईमानी में पकड़े गए और जेल काटने लगे । बैंकों में जाली चेक वे भेज दिया करते थे । और अगर ठीक से देखा जाय तो उसमें उनका कोई दोष भी नहीं था । उनके पास पैसा कभी भी पड़ले नहीं रहा और जब वैसा बहुत मिला तो उनका खर्च खर्च हो गया । पेरिस और शिकागो में भी मैंने अनेक बुरे व्यक्ति देखे; परन्तु बहुत अंशों में उनकी बुराई पैतृक संबंध रखती और कभी-कभी वातावरण ही उसका उत्तरदायी रहता । न तो उन्होंने अपने पैतृक संबंध ही जान-बूझ कर चुने और न मनचाहे वातावरण में ही उनका जन्म हुआ । उस बुराई के लिए समाज ही कहीं अधिक उत्तरदायी रहता है और समाज ही को दुःखी बनाते हैं । समाज और अपराध का चोनी दामन का संबंध है । यदि मैं ईश्वर होता तो उनमें से बुरे से बुरे को भी कभी नक में नहीं भोंक सकता । उसमें मुझे आत्मिक ग्लानि होती । कदाचित् भिक्षु एनशम अधिक उदार चित्त थे और उनके विचार में ईश्वर की अनुपस्थिति का ही दूसरा नाम नर्क था ।

और अगर कहीं पर नर्क नाम का कोई भयानक और भयावह स्थान है भी तो एक दयालु और कृपालु ईश्वर उसको कभी निर्मित ही नहीं कर सकता। और फिर क्या मनुष्य को, जो उसका अभिजात पुत्र है, यातना में डाल उसे तड़पाने में मजा आयेगा? उसी ने तो मनुष्य को जन्म दिया और अगर उसी से निर्मित मनुष्य पाप करे तो स्पष्ट है कि ईश्वर की यही इच्छा थी—वही इसका जिम्मेदार है। अगर मैं अपने कुत्ते को, हर आदमी को जो बंगलें में आए, काटना सिखला दूँ और जब मेरे सिखलाने के अनुसार वह सबको काटना आरम्भ करे तो मैं उसको पीटना शुरू कर दूँ। यह कर्मा का न्याय होगा?’

‘यदि किसी सर्व-शक्तिमान और दया-सागर ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया है तो उसने पाप, बुगई और नर्क बनाया ही क्यों? भिक्षुओं ने कहा कि मनुष्य जब बुराई पर विजय पा लेता है, प्रलोभनों को बशीमूत कर लेता है, ईश्वर के दिये हुये दुःख और व्यथा को अपनी सहनशक्ति द्वारा तुच्छ प्रमाणित कर देता है तो वह ईश्वरीय कृपा का अनुपम पात्र बन जाता है; और उसे स्वर्गीय आशीर्वाद मिलता है। यह तो ऐसे ही हुआ जैसे आप किसी व्यक्ति द्वारा किसी दूर स्थान पर अपना सन्देश भेजें और उसके राह में रोड़े अटकाते चले जाय—सिर्फ इसीलिए कि उसे कष्ट हो और उसका मार्ग कठिन होता जाय; और जब वह किसी तरह एक सड़क पार कर ले तो उसके सामने एक खाई खोद दें कि उसकी हड्डी-पसली चूर हो जाय और अगर वहाँ से भी सही-सलामत निकल आए तो उसके सामने एक ऐसी दीवार खड़ी कर दें जिसे वह जीवन भर पार न कर पाए! ऐसा कुटिल ईश्वर ही अगर संसार का निर्माता है तो बस! हो चुका! उससे तो हमें बच कर ही रहना चाहिए। मैं ऐमे-ईश्वर में विश्वास कर ही नहीं सकता जिसमें साधारण सी सुबुद्धि भी न हो। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि आप ऐसे ईश्वर पर विश्वास करें जिसमें न तो इस संसार को निर्मित किया और न उसे

मुझे अकस्मात् ध्यान हो आया कि यह वही गाँव होगा जहाँ पर सुजेन और उसकी लड़की ओडेट के साथ लैरी ने एक मास व्यतीत किया था।

‘उसके पश्चात् मैं स्पेन जाकर रहा—और केवल इती विचार से कि कदाचित् कला के द्वारा ही गुप्ती सुलभ जाय। जाड़े भर मैं वहीं टिका रहा।’

मैं स्वयं स्पेन घूम आया हूँ। वहाँ के नगरों की चक्करदार सड़कें, विशाल गिर्जाघर, लम्बे-चौड़े मैदान—सभी मुझे आकर्षित करते रहे। एन्डालूसिया की युवतियाँ जिनमें सुकोमलता और उत्साहपूर्ण हर्ष का सहज सम्मिश्रण रहता, उनकी बड़ी-बड़ी काली और चमकीली आँखें, जूड़े में नगों ऐसे जड़े हुए सफेद सूरजमुखी के फूल, जिनसे उनके केशों की श्यामता और भी बढ़ती दिखाई देती, उनके भरे हुए बदन और चुम्बन के भूखे अधरोष्ठ—सभी मन को लुभाते रहते। उस समय युवा होना स्वर्गीय अनुभव था। लैरी की अवस्था उस समय दो चार साल ही अधिक होगी और मेरा विश्वास सा था कि उन्होंने भी उन आकर्षक युवतियों का समागम अवश्य प्राप्त किया होगा। उन्होंने बिना पूछे ही मेरे प्रश्न का उत्तर स्वयं ही दे दिया।

‘वहाँ एक फ्रांसीसी चित्रकार से मेरी भेंट हो गई जिसके साथ कभी सुजेन भी रह चुकी थी। चित्रकार के साथ एक युवती भी थी जिसे उसने आते जाते अपने प्रेम के वशीभूत कर रखा था। एक-दिन उस युवती और उसकी एक सहेली के साथ वह मुझे सिनेमा दिखाने ले गया। उसकी सहेली इतनी सुन्दर थी कि क्या बतलाऊँ—नहीं-मुन्नी सुन्दर गुड़िया सौ! आयु अठारह वर्ष रही होगी। एक युवक से उसे प्रेम हो गया और समागम के फल-स्वरूप उसके गर्भ रूढ़ गया था जिसके कारण वह बहुत परेशान रहा करती थी। युवक सेना में नौकरी करता था। अपने नव-जात शिशु को एक घाय के हथाले कर वह एक तम्बाकू के कारखाने में काम करने लगी। मैं

उसे अपने साथ-साथ घर लाया। उसमें उल्लास और माधुर्य इतना था कि मैंने उसे अपने साथ ही रहने का निमंत्रण दिया। वह उसने स्वीकार कर लिया और मैंने अपने साथ ही एक होटल में उसे रखा। मैंने उससे नौकरी छोड़ने के लिए भी कहा मगर उसका इच्छा न हुई, और मैंने भी आग्रह करना उचित न समझा। इस कारण मुझे दिन भर अवकाश रहता। वह खाना बड़े चाव से बनाती; दोपहर के खाने के लिए घर चली आती और रात को हम दोनों होटल में साथ-साथ खाना खाते और सिनेमा देख कर रात गए घर लौटते। वह मुझे पागल समझा करती क्योंकि मैं प्रातःकाल उठ कर स्नान किया करता। उसका शिशु पास के गाँव में ही अपनी धातों के साथ रहता और हम दोनों प्रत्येक रविवार को उसे देखने जाता करते। वह निस्संकोच यह कहा करती कि वह मेरे साथ इसीलिए रह रही है कि उसे अपने गाँव में घर बनाने के लिए धन की आवश्यकता है और जब उसका पुराना प्रेमी लड़ाई से वापस लौटेगा तो वह उसी के साथ वहाँ सुख से रहेगी। वह बेचारी बड़ी उदार और प्रेमी जीव थी; और मुझे विश्वास है कि उसने अपने प्रेमी के साथ पत्नी रूप में सुखी जीवन व्यतीत किया होगा। वह सदैव हँसती, उत्फुल्ल रहती और उससे प्रेम तो जैसे टपका पड़ता था। वह स्त्री-पुरुष के प्रेम-समागम को प्रकृति-प्रदत्त सहज व्यापार समझती थी। उसमें शरीर की सजीव लहक थी—और बड़ी ही मनोमुग्धकारी।

‘एक दिन उसने मुझे एक पत्र दिखलाया जिसमें पौजी मित्र के आने की सूचना थी। वह दो ही दिन में आने वाला था। उसने अपना सारा सामान बाँधा, अपना रुपया-पैसा संभाला और मैं उसे स्टेशन छोड़ने चला। गाड़ी छूटने के पहले उसने मुझे प्रगाढ़ आलिंगन के पश्चात् अत्यन्त मधुर चुम्बन दिया और गाड़ी चल दी। वह अपने मित्र से मिलने की इतनी उतावली में थी कि ज्योंही गाड़ी ने स्टेशन पार किया होगा त्योंही वह मुझे भूल गई होगी। कुछ ही

दिनों बाद मैं भारत की ओर चल पड़ा ।'

होटल में बैठे-बैठे काफी देर हो चुकी थी । भीड़ भी छूटने लगी । जो लोग सिनेमा या थियेटर से लौट रहे थे वही आ जा रहे थे । कुछ तो खाना खाने के लिए रुके हुए थे कुछ शराब के लिए । इतने ही में एक लम्बा आदमी—अंग्रेज ही रहा होगा—अपने एक आवारा दोस्त के साथ अन्दर आया और शराब पीने बैठ गया । उसका मुख कुछ उतरा हुआ था और वाल वैसे ही घूँघरवाले थे जैसे अंग्रेज साहित्यकारों के हुआ करते हैं । उसे देखकर मैं जान गया कि वह उन व्यक्तियों में है जो विदेश जा कर समझते हैं कि न तो उन्हें कोई पहिचानेगा और न कोई उन्हें परिचित व्यक्ति ही मिलेगा । उसका साथी खूब मन लगा कर भोजन कर रहा था । मुझे उसकी भूख और उसके खाने के ढंग पर आश्चर्य सा हो रहा था । उसके बाद ही मेरी निगाह एक अमरीकी सर्राफ पर पड़ी जो व्यावसायिक उथल-पुथल के बाद वहाँ से भाग निकला और वह इतना महत्वहीन व्यक्ति समझा गया कि पुलिस ने उसकी विशेष छान-बीन न की । उसके बातचीत का ढंग सस्ते क्रिस्म के राजनीतिज्ञों का सा था और उसकी आँख के नीचे के पपीटे फूलें-फूले से थे । न तो वह नशे में था और न होश में । उसके साथ यों तो उसकी वेश्या रहा करती थी जो शायद इसी ताक में लगी रहती कि उससे कुछ न कुछ ऐंठती चले ; मगर आज उसके साथ दो अंधेड़, लिपी-पुत्ती स्त्रियाँ थीं जो बे-बात की बात पर उसकी ओर आँखें नचा-नचा कर खिलखिला रही थीं । शायद यही उनका प्रफुल्ल जीवन था । क्या ही अच्छा होता कि वह व्यक्ति घर बैठ कर दवा खाता और स्वास्थ्य की देखरेख करता—क्योंकि एक न एक दिन वे स्त्रियाँ उसे सहज ही चूसकर फेंक देंगी और फिर

उसकड़े नदी की गोद या जहर की गोली ही विश्राम दे पाएगी।

दो और तीन बजे के बीच कुछ भीड़ बढ़ने लगी—कदाचित् वासनालयों के द्वार बन्द होने लगे होंगे। अमरीकी युवाओं की एक भीड़ अन्दर आई—सब नशे में धुत्थे और शोर मचा रहे थे। वे बहुत देर ठहरे नहीं। मेरे सामने ही दो लम्बी-चौड़ी, मोटी, मर्दानी स्त्रियाँ छोटे-छोटे साए पहने गंभीर मुद्रा बनाये बैठी हुई शराब पी रहीं थीं। वहीं पर एक नाटे आदमी को चुपचाप कोने में बहुत देर से बैठे मैं देख रहा था। अखबार उसके सामने खुला हुआ था। उसकी डुब्दी पर एक साफ सुथरी, छोटी और काली दाढ़ी थी और वह चश्मा पहने हुए था। कदाचित् वह किसी की इन्तजार में था क्योंकि हर आते हुए व्यक्ति की ओर वह निगाह उठाकर शान्त हो जाता। अन्त में एक स्त्री आई और उसके पास चुपचाप बैठ गई। उसने अनमने रूप से उसका अभिवादन किया था और मुझे ऐसा लगा कि शायद वह इन्तजार से थक कर नाराज था। वह युवती ही थी परन्तु पाउडर और रंग का गहरा लेप चढ़ाए थी और बहुत थकी हुई जान पड़ती थी। थोड़ी ही देर बाद उसने अपने बेग से कुछ निकाल कर अपने साथी के हवाले किया। शायद रुपए थे। ज्योंही उसने गिना उसकी आकृति बदल गई और उसका चेहरा लाल हो गया। मैंने उसके कहे हुए शब्द सुन तो नहीं पाए परन्तु जिस तरह से वे कहे गए थे उससे स्पष्ट था कि गाली ही रही होगी। वह बार-बार माफी माँगने की मुद्रा बनाती थी। यकायक वह उस पर झुका और उसके रंगे हुए गालों पर भरपूर एक कर्पा तमाचा रसीद किया। वह चीख उठी और सिसकने लगी। गड़गड़ की आवाज सुनकर होटल का मैनेजर वहाँ आया और मामले की जाँच शुरू की मगर उस स्त्री ने उसे कर्पा फटकार बताई और वह बेचारा अपना सा मुँह लिए चलाता बना—

‘अगर उसने मुझे मारा तो तेरे बाप का इजारा !’

स्त्रियाँ ! स्त्रियाँ भी एक विचित्र जीव होती हैं । मैं हमेशा से समझा भी करता था कि किसी स्त्री की अनैतिक आमदनी पर गुजर-बसर करने के लिए आदमी को तगड़ा होना चाहिए और उसमें सेक्स का भरपूर जोर भी होना चाहिए । साथ ही साथ उसे वन्दूक या छुरी से मरना-मारना भी जानना चाहिए । बड़े आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह दुबली और नाटी स्त्री जो शक्ल-मूरत से किसी बेकार वकील की क्लर्क मालूम पड़ती थी ऐसे पेशे में आगे बढ़ती जा रही थी जिसमें अनेक स्त्रियाँ असफल होती रही हैं ।

जो खानसामा हम लोगों को खाना खिला रहा था उसकी ड्यूटी बदलने वाली थी और उसने बखशीश की लालच से बिल सामने ला रखा । दाम चुकाने के बाद काफी मंगाई गई ।

‘अब आगे कहिए ?’ मैंने कहा ।

मैंने देखा कि लैरी बातचीत करने की तरंग में थे और मैं भी सुनने को उत्सुक था ।

‘कहीं आप ऊब तो नहीं रहे हैं ?’

‘बिलकुल नहीं ।’ ‘मुझे तो बड़ा आनन्द आ रहा है ।’

‘अच्छा ! तब मैं पहले-पहल बम्बई पहुँचा । जहाज को वहाँ तीन दिन तक ठहरना था जिससे यात्रियों को घूमने का अवसर मिल जाय । तीसरे दिन शाम को अवकाश पाकर मैं शहर गया । घूम-घूम कर इधर उधर भीड़ देखता रहा—मगर कैसी विचित्र भीड़ ! क्रैसा, आकर्षक मानव-समाज ! चीनी, मुसलमान, हिन्दू, तामिल तो ऐसे काले जैसे आपकी हैट; फिर ऊँचे, तगड़े, उठे हुए कूल्हे और लम्बी गोल सींग वाले बैल, जो गाड़ियों खींचते-सब देखते ही बनता

था। उसके पश्चात् मैं एलिफैन्टा की गुफाओं को देखने गया। एक भारतीय हम लोगों के साथ एलेकजान्द्रिया से ही हो लिया था और दूसरे यात्री उसे देख-देख कर नाक भौं सिकोड़ रहे थे। वह आदमी—नाटा, कुछ मोटा, गोल-मटोल भूरा चेहरा, और मोटे ऊन का कोट पहने हुए था। मैं जहाज पर खुले में आकर खड़ा ही हुआ था कि उसने मेरे पास आकर बातें करना शुरू कर दिया। मैं उस समय किसी से भी बातचीत नहीं करना चाहता था मगर वह मुझसे बहुत से प्रश्न करता चला गया और मैं भी टालता रहा। अन्त में मैंने उसे बता दिया कि मैं विद्यार्थी हूँ और अमरीका वापस जाने की व्यवस्था में मजदूरी कर रहा हूँ।

‘आपको भारत जरूर घूमना चाहिए।’ उसने कहा। ‘पूर्व, पश्चिम से कहीं अधिक और श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान कर सकता है।’

‘क्यों नहीं?’ मैंने बात काट दी।

‘फिर भी’ वह रुका नहीं, ‘आपको एलिफैन्टा की गुफाएं अवश्य ही देखना चाहिए। आपको वे हमेशा याद रहेंगी!’ अपनी बात छोड़ लैरी ने मुझसे प्रश्न किया—‘क्या आप कभी भारत गए हैं?’

‘अभी तक तो नहीं।’

‘मैं एलिफैन्टा के सामने की विशाल प्रस्तर मूर्ति बड़ी एकाग्रता से देख रहा था। उसके तीन सिर और मुख देख कर मेरे आश्चर्य का वारापार नहीं रहा। मैं सोच ही रहा था कि यह हो क्या सकता है कि इतने में मेरे कान में आवाज आई—

‘तो आखिर आपने मेरी सलाह मान ली। बहुत अच्छा हुआ।’

मैं घूम पड़ा। मुझे उस व्यक्ति को पहचानने में एक मिनट के करीब लग गया। यह वही व्यक्ति था जो मुझसे बातचीत करने का प्रयास पहले कर चुका था। परन्तु अब उसकी वेश-भूषा बदली हुई थी। केसरिया रंग का लम्बा चोगा, सर पर उसी रंग का साफा और गले में दुपट्टा पड़ा था। वह रामकृष्ण-मठ के सदस्य थे। इस

प्रतिवर्त्ति वेश-भूषा में वह रंगीला छैला न जान पड़ कर गौरवपूर्ण और शालीन दिखाई पड़ रहे थे। हम दोनों उस भव्य मूर्ति को देखते रहे।

‘ये हैं ब्रह्मा—सृष्टिकर्त्ता; दूसरे हैं विष्णु—सृष्टि-रक्षक और तीसरे हैं शिव-संहारकर्त्ता। ये तीनों परम-सत्य के तीन विभिन्न स्वरूप हैं।’

‘मैं आपका तात्पर्य नहीं समझा?’ मैंने कहा।

‘ठीक ही है!’ उनके उत्तर में व्यंग की लहर थी और उनकी आँखों में हास्यपूर्ण चमक। ‘ऐसा ईश्वर जो समझ में आ जाय वह ईश्वर ही कैसा? अनन्त को क्या कोई शब्दों में बाँध सका है?’

उन्होंने हाथ जोड़कर मूर्ति को प्रमाण किया और आगे बढ़ चले। मैं उस त्रिमूर्ति को एकटक देखता रहा। कदाचित् मेरा मन बहुत ही शान्त था इसी कारण उसे देख कर मुझमें विचित्र स्फुरण होने लगा। आपको शायद याद हो कि कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई नाम याद करने पर नहीं याद आता मगर वह जबान पर ही रुका रहता है, वही भावना मुझमें उठी। मैं गुफा देखने के बाद सिढ़िद्वयों पर बैठ कर समुद्र की ओर देखने लगा। मुझे एक कविता याद आने लगी—

‘मुझे मूल कर व्यक्ति अमित रहता है,
मेरी ही प्रेरणा से वे उड़ते हैं; मैं उनके पंख—समान हूँ !
मैं ही सन्देहकर्त्ता हूँ; मैं ही सन्देह-रूप हूँ !
मैं वही गीत हूँ जो बाष्पण स्वरित करते हैं।’

‘रात को मैंने एक ढाबे में भोजन किया और मैदान में टहलने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैंने इतने नक्षत्र आकाश में एक साथ कभी-भी नहीं देखे। दिन की गर्मी के पश्चात् रात की शीतल बयार चली। बाग पास ही था और मैं बेंच पर जा बैठा। रात काफी हो चली थी और सफेद कपड़े पहने हुए आदमी इधर-उधर अंधेरे को

चीरते हुए सफेद लकीर से मालूम हो रहे थे। बम्बई की प्रातः कालीन शोभा, उज्ज्वल दोपहरी, रंग-विरंगे जन-समूह, पूर्व के प्रदेशों की विचित्र सुगन्ध, कभी तीली कभी सौरभ पूर्ण—मैं सब के वशीभूत हो गया। चित्रकार के बिखेरे हुए रंगों के पुञ्ज समान जो चित्र को सजीव बनाते हैं—यह ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति मुझ में एक अद्भुत भावना का संचार कर रही थी। मेरे हृदय की धड़कन बढ़ गई और मुझे अकस्मात् यह आभास मिला कि पूर्व में भारत के पास ही एक ऐसी निधि है जिससे मेरा कल्याण हो सकता है। मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि यदि यह अवसर इसी समय नहीं अपनाया तो फिर कभी भी हाथ न आएगा। मैंने अपना निश्चय पक्का कर लिया। जहाज पर मेरा कोई विशेष सामान भी नहीं था जिसकी मुझे चिन्ता होती। मैं एक मुहल्ले की ओर मुड़ पड़ा और एक जगह होटल लिखा देखकर ऊपर गया और एक कमरा किराए का ले लिया। जो मैं पहने था वही कपड़े मेरे पास थे; कुछ फुटकर रकम थी; मेरा पासपोर्ट मेरे पास था और बैंक से उधार लेने के लिए प्रमाण-पत्र। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों मैं संसार का सबसे स्वतंत्र प्राणी हूँ। मैं ठहाका मार कर हंस पड़ा।

जहाज ठीक ग्यारह बजे छूटने वाला था और सुरक्षा के विचार से मैं उस समय तक कमरे में ही बैठा रहा। समय बीतने पर मैं बन्दरगाह जाकर उसे समुद्र में दूर जाते देखने लगा और जब तक वह आंखों से ओझल न हो गया मैं वहीं खड़ा रहा। तत्पश्चात् मैंने रामकृष्ण-मठ में जाकर उस व्यक्ति को ढूँढ़ निकाला जिसने एलिफैंटा पर मुझसे बातें की थीं। मुझे उनका नाम तो मालूम न था परन्तु उनका विवरण देकर मैंने उन्हें खोज लिया। मैंने उनसे अपना निश्चय बतलाया और यह भी पूछा कि मुझे क्या-क्या देखना चाहिए। हम दोनों बड़ी देर तक बातें करते रहे और जब उन्होंने यह कहा कि दूसरे दिन वह बनारस जा रहे हैं तो मैं खुशी

शुशी उनके साथ ही जाने का निश्चय कर बैठा। रेल-सफर हम दोनों ने तीसरे दर्जे में किया। गाड़ी में बहुत भीड़ थी। कुछ मुसाफिर खाना खा रहे थे, कुछ हुक्का पी रहे थे, कुछ बहुत जोर-जोर से बातें करते जाते थे और गर्मी बड़ी सख्त थी। एक क्षण के लिए भी मैं सो नहीं सका था और सबेरे मैं बहुत थका-थका और सुस्त दिखाई दे रहा था परन्तु मेरे साथी-स्वामी जी पर थकान का जरा भी प्रभाव नहीं था—वह सुरजमुखी के समान प्रफुल्ल दिखाई दिए। मैंने उनसे कारण पूछा तो उन्होंने बतलाया—

‘यह निराकार पर ध्यान लगाने से ही संभव है।’

मैं उनकी बात नहीं समझा; मैं जानता भी नहीं था कि आखिर ध्यान लगाऊँ भी तो किस पर। परन्तु उन्हें देखने से ऐसा मालूम होता था कि वह रात भर डटकर सोए हैं और मुख पर थकान का नाम तक नहीं है।

‘बनारस पहुँचते ही मेरी ही वयस का एक युवक स्वामी जी से मिला जिसे उन्होंने मुझे ठहराने के प्रबन्ध का आदेश दिया। युवक का नाम था महेन्द्र और वह विश्वविद्यालय में अध्यापक थे। वे बहुत सहृदय, और हंसमुख होने के साथ-साथ व्यवहार-कुशल और चतुर भी थे। मुझ पर वे बड़ी कृपा रखते और मुझमें भी उनके प्रति सम्मान था। सायंकाल वह मुझे गंगा में नौका-विहार कराने ले चले। नाव पर बैठते ही मेरे रोम-रोम जाग उठे। घाट की सीढ़ियाँ पानी का स्पर्श करती रहती थीं और घाटों के ऊपर बने हुए मकान जल पर अपनी छाया छोड़ते जा रहे थे। दृश्य अत्यन्त आकर्षक और रमणीक था। दूसरे दिन प्रातःकाल-मैंने जो दृश्य देखा वह अवर्णनीय है। हजारों आदमी स्नान कर रहे थे और अर्घ्यदान दे रहे थे। घाट के एक कोने पर मैंने एक लम्बा, तगड़ा व्यक्ति देखा। उसके सिर पर लिपटी हुई बहुत मोटी-जटा थी और लम्बी फइरती हुई दाढ़ी जिसके बाल खिचड़ी हो रहे थे। मग्नता ढकने के लिए वह एक बहुत पतली

लंगोटी पहने थे जो वह अंग भी ठीक से न ढक पा रही थी। लम्बी बांहें फैलाये हुए वह बाल-सूर्य की ओर, उन्मुख हो जोर-जोर से श्लोक पढ़ रहे थे। मैं कह नहीं सकता कि मुझ पर उस दृश्य का कितना गंभीर प्रभाव पड़ा। छः महीने तक मैं बनारस टिका रहा और प्रतिदिन प्रातःकाल गंगा के किनारे का दृश्य देखने जाया करता। मैं उस दृश्य को बार बार देखकर भी नहीं ऊबता। प्रति दिन वह मुझे नवीन रूप से आकर्षित करता रहता। वहाँ के लोगों में मैं एक विचित्र श्रद्धा, एक विचित्र विश्वास देखता। उनका विश्वास न तो सन्देहात्मक था और न भ्रम-पूर्ण। विश्वास तो मानो उनके रोम रोम में रमता था।

‘जिन जिन व्यक्तियों से मैं मिला सब ने मुझ पर बड़ी कृपा रखी और स्नेह प्रदर्शित किया और जब उन्हें यह मालूम हुआ कि विदेश से न तो मैं शिकार करने आया हूँ और न व्यापारी माल बेचने, वरन अध्ययन करने के विचार से आया हूँ तो मुझ पर उनका स्नेह दुगुना हो गया और सबने मुझे सुविधाएँ प्रदान की। मेरी हिन्दी सीखने की इच्छा पर तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए। शीघ्र ही मुझे एक अवैतनिक शिक्षक मिल गए। मुझे पढ़ने के लिए खूब किताबें भी मिलतीं और वेब्लोग मेरे प्रश्नों का उत्तर देते कभी न थकते।’ ‘क्या आप हिन्दू-धर्म के विषय में कुछ जानते हैं?’ लैरी ने प्रश्न किया।

‘नहीं के बराबर।’ मैंने उत्तर दिया।

‘मेरा अनुमान है कि वह आपको अत्यन्त रुचिकर होगा। क्या सृष्टि के विषय में इस भावना से बढ़ कर भी कोई और काल्पनिक धारणा हो सकती है कि संसार का न तो आदि है न अन्त; और सृष्टि, जन्म, मरण, क्षय, पुनर्जन्म, पुनर्मरण, पुनर्क्षय के भ्रूले में निरन्तर भ्रूलती रहती है।

‘परन्तु हिन्दू धर्म के अनुसार इस प्रत्यावर्तन का उद्देश्य क्या है?’

‘मेरे विचार में उनका मत है कि परम चेतना का यह नैसर्गिक लक्षण है। उनका विश्वास है कि सृष्टि का उद्देश्य पिछले जन्म के कर्मों का बुरा अथवा अच्छा फल भोगने का क्षेत्र प्रस्तुत करना है।’

‘तो इसके अर्थ यह हुए कि वे पुर्नजन्म में विश्वास करते हैं?’

‘यह तो दो तिहाई मानव समाज का मत है।’

‘इससे यह तो प्रमाणित नहीं कि यही विश्वास सत्य है। जनमत अथवा बहुमत से तो सत्य की परख होती नहीं।’

‘ठीक है। परन्तु इससे यह तो प्रमाणित अवश्य है कि यह विचार महत्व-पूर्ण है। ईसाई मत ने भी अफलातून के नवीन आदर्शवाद को अनेक रूप से ग्रहण किया है और यह विचार भी सहज ही में अपनाया जा सकता है। और फिर एक ऐसे प्राचीन ईसाई-वर्ग का उल्लेख भी मिलता है जिन्हें इस मत में विश्वास था। बाद में वह वर्ग अनीश्वरवादो करार दे दिया गया। ईसाई मत तो जिस प्रकार ईसा के पुनरागमन में विश्वास करता है उसी प्रकार मानव के पुनर्जन्म में भी विश्वास कर सकता है।’

‘इससे यह तथ्य निकला कि पिछले जीवन के विभिन्न कर्मों के अनुसार आत्मा शरीर धारण किया करती है।’

‘हां! यही मैं भी समझता हूँ।’

‘मगर यह भी तो देखना पड़ेगा कि मैं—न तो केवल आत्मा हूँ और न केवल शरीर और दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं; और जब यह प्रमाणित है तो यह कौन निश्चय करे कि अमुक कर्म में उत्तरदायित्व किसका अधिक है! यदि अंग्रेजी कवि बायरन लंगड़ा न होता और यदि रूसी उपन्यासकार डोस्टोव्स्की को सिर्गी का रोग न होता तो उनका व्यक्तित्व ही क्या होता?’

‘इस तरह के अंग-भंग और रोगों का लेखा भारतीय नहीं रखते। इस प्रश्न का उत्तर यह होगा कि पूर्व कर्मों के फलानुसार ही आत्मा

एक हीन अथवा भंग शरीर में जन्म लेने पर विवश हुई है।' इतना कहते ही लैरी अपनी उंगलियाँ मेज पर बजाने लगे और ध्यान में खो गये। हल्की मुस्कान के बाद उनकी मुद्रा फिर विचारशील हो गई। कुछ रुक कर उन्होंने कहना आरम्भ किया—

‘क्या आपने कभी यह भी विचार किया है कि पुनर्जन्म सिद्धान्त एक दुधारी तलवार के समान है। वह पाप और दुःख की व्याख्या और उनका समर्थन दोनों सम रूप से करता है। जब हम अपने ही पूर्व कुकर्मों के फल-स्वरूप त्रास और दुःख पाते हैं तो बड़ी सद्दिष्टता और धैर्य से उसे सहन कर सकते हैं और यह आशा कि यदि इस जीवन में सुकर्म होंगे तो हमारा अगला जन्म सुखकर होगा, नवीन स्फूर्ति देता रहता है। फिर जो-जो दुःख और त्रास हमें संसार में भोगने पड़ते हैं उसके लिए हमें केवल थोड़ी सी हिम्मत और धैर्य की आवश्यकता पड़ेगी। परन्तु जो-जो त्रास और दुःख दूसरे लोग भोगते हुये दिखाई देते हैं और जिनका कोई स्पष्ट कारण हमें नहीं सुझाई देता, हमें उद्दिग्ध और विह्वल कर देता है। हमें क्रोध आने लगता है। यदि इस सिद्धान्त के अनुसार हम यह विश्वास कर लेते हैं कि उनको भी पूर्व जन्म के कुकर्मों के कारण ही दुःख भोगना पड़ रहा है तो हमें उन पर सहज ही दया आने लगती है और हम दूसरों का दुःख दूर करने के लिए उत्साहित होते रहते हैं। इस विचार से हममें विद्रोह की भावना नहीं आने पाती।’

‘जब यही बात है तो ईश्वर ने ऐसे संसार का निर्माण क्यों नहीं किया जो दुःख और त्रास से मुक्त होता क्योंकि जब पहले-पहल सृष्टि का बीज पड़ा तो न तो पाप का सवाल था और न त्रास का। मला पहला व्यक्ति जो निर्मित हुआ उसके पुनर्जन्म का कारण क्या हो सकता है ? उस समय तो पाप पुण्य कुछ था ही नहीं।’

‘हिन्दू धर्म का उत्तर यह होगा कि सृष्टि का तो आदि है ही नहीं। व्यक्तिगत आत्मा और सृष्टि दोनों एक ही समय समान रूप से स्थित

थे। दोनों के उद्भव का प्रमाण नहीं। कदाचित् आदि काल से ही वे साथ साथ रहे हैं।'

'आत्मा के पुनर्जन्म सिद्धान्त मानने वालों के जीवन पर क्या इसका कोई क्रियात्मक प्रभाव भी पड़ता है या ऐसे ही। इसकी सत्यता की कसौटी तो वही होगी।'

मेरे विचार में प्रभाव तो अवश्य पड़ता है। एक ऐसे ही आदमी से मेरा परिचय भी था जिसके जीवन पर इस विश्वास का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। पहले दो तीन वर्ष तक तो मैं मामूली होटलों में रहा था और कभी-कभी कुछ लोग मुझे अपने यहाँ ठहरा लिया करते थे। दो तीन बार तो मैं महाराजाओं की कोठियों में भी मेहमान रहा हूँ। अपने एक बनारसी मित्र के परिचय द्वारा उत्तर के एक देशी रियासत में ठहरने का भी मुझे सौभाग्य मिला था। महाराज की राजधानी अत्यन्त मनोहर थी और प्रकृति और कला दोनों ही के उत्तम आकर्षण वहाँ प्रस्तुत थे। वहाँ के अर्थ-मन्त्री से मेरा परिचय जब हुआ तब मुझे ज्ञात हुआ कि भारत में भी अनेक विद्याओं के प्रकाण्ड पंडित हैं। अर्थ मन्त्री ने विदेश में शिक्षा पाई थी और बहुत काल तक ऑक्सफोर्ड में भी रहे थे। उनसे बातचीत करने पर ऐसा मालूम होता था कि वह व्यक्ति अपने विषय का पंडित है; प्रगतिशील और बुद्धिमान है। राज्य में उनके सचचरित्र की बड़ी प्रशंसा थी और लोग उन्हें कुशल मन्त्रो और राजनीति में दक्ष समझते थे। वे गठे हुए शरीर के सुन्दर और स्वस्थ व्यक्ति दिखाई पड़ते थे और उनकी वेश-भूषा यूरोपीय थी। अथेड़ अवस्था पहुँचते पहुँचते भारतीय शरीर से स्थूल हो जाते हैं और यही लक्षण उनमें भी आ रहा था। उनकी मूर्छे फैशन के हिसाब से ही कटी-छटी थीं और देखने पर वे प्रभावशाली मालूम होते थे। वह मुझे प्रायः अपने घर निमन्त्रण देकर बुलाया करते। हम लोग उनके उद्यान में बैठ कर प्रकृति निरीक्षण करते और इधर-उधर की तमाम बातें होती

रहतीं। उनकी स्त्री और दो बच्चे भी कभी-कभी वहीं चले आते थे। उन्हें देख कर आप मामूली एंग्लो इन्डियन परिवार की धारणा मन में ला सकते थे परन्तु जब मैंने सुना कि उनका विचार है कि पचासवें वर्ष वे महाराजा को अपना त्याग-पत्र दे देंगे और अपनी जायदाद स्त्री-बच्चों के नाम कर वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर लेंगे तो मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। इसके साथ साथ सबसे बड़ी बात तो यह थी कि जब महाराजा और उनके अन्य मित्रों ने उनका यह निर्णय सुना तो न तो उन्हें आश्चर्य हुआ और न इसमें उन्होंने कोई विरोध ही प्रस्तुत किया। उनके विचार में यह साधारण बात थी।

‘एक दिन मैंने उनसे पूछा—आप इतने विद्वान हैं और आपको संसार का इतना विस्तृत अनुभव है और साथ-साथ विज्ञान, दर्शन साहित्य सब में आपकी गति है—क्या इतना होते हुए भी आपको पूर्णतया विश्वास है कि आत्मा पुनर्जन्म लेती है?’

उनके मुख की आकृति बिल्कुल बदल गई और उनका मुख ऐसा हो गया जैसे वे मानो स्वप्न सा देख रहे हों।

‘मेरे प्यारे मित्र!’ उन्होंने स्नेहपूर्ण सम्बोधन से कहा—‘यदि मेरा यह विश्वास छिन जाय तो मेरा सम्पूर्ण जीवन निरर्थक प्रतीत होने लगेगा।’

‘क्या आपको स्वयं इस सिद्धान्त में विश्वास है?’ मैंने बात काटते हुए पूछा।

‘इस प्रश्न का उत्तर देना मेरे लिए कठिन है। मेरे विचार में, पश्चिमी सभ्यता में पालित-पोषित हो कर हम-इस सिद्धान्त को पूर्वी सभ्यता के लोगों के समान नहीं अपना सकते। वह तो उनके रक्त में सदियों से प्रवाहित है; और हमारे लिए तो वह केवल सिद्धान्त-मात्र ही हो सकता है। न तो मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ और न अविश्वास; मैं अस्मंजस में ही हूँ।’

लैरी कुछ क्षण रुके और अपने सिर को दाहिने हाथ पर कुझ

देर टेके रहे, तदश्चात् कुर्सी पर आराम से बैठ गये—

‘एक बार का अनुभव मैं आपको बतलाता हूँ। एक दिन मैं अपने भारतीय मित्र के बताए हुए नियम के अनुसार ध्यान लगाए बैठा हुआ था। मैंने एक मोमवत्ती जला रखी थी और दीप-शिखा पर अपनी दृष्टि एकाग्र कर रहा था कि थोड़ी ही देर बाद मुझे एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा—अनेक चित्र दिखाई देने लगे। पहला चित्र था एक प्रौढ़ा का जो लेसदार टोपी पहने थी और उसके बालों की घुँघुर्ली लट्टे गर्दन तक लटकती आ रही थी। उसके शरीर पर चुस्त चोली थी, और लहरदार रेशमी साया जैसा सत्रहवीं शताब्दी में स्त्रियाँ पहनती थीं। वह ठीक मेरे सामने खड़ी थी और शान्त भाव से मेरी ओर टकटकी लगाए थी। उसके हाथ सीधे लटके हुए थे परन्तु हथेली मेरी ओर थी। उसके मुख पर के भाव दयाद्र, मधुर और कोमल थे। ठीक उसके पीछे मैंने दूसरा चित्र देखा। वह एक यहूदी था। लम्बा, चौड़ा, तोते से मुड़ी हुई नाक, मोटे होठ, पीला चोगा, सिर पर लगी हुई चुस्त टोपी, काले मोटे बाल-सब मुझे साफ-साफ दिखाई दिए। उसके पीछे मेरी ही ओर मुख किए हुए एक युवा-प्रसन्न-चित्त, स्वस्थ, सुडौल, खड़ा हुआ था। मुझे वह वैश, भूषा और आकृति से सोलहवीं शताब्दी का कोई अंग्रेज नवयुवक जान पड़ा। मेरे सम्मुख वह मानों अड़ कर खड़ा हो गया था, टाँगें उसकी एक दूसरे से कुछ ही दूर थीं और उसकी मुखाकृति से मालूम पड़ता था कि वह किसी की भी परवाह न करने वाला व्यक्ति है। उसकी पोशाक बिलकुल दरबारी पोशाक जैसी मालूम हो रही थी। जूते मखमली थे और टोपी भी कामदार मखमली। इन सबों के पीछे अनगिनत व्यक्तियों की कतार सी खड़ी थी—जैसे सिनेमा के फाटक पर टिकट खरीदने वाले खड़े हों। परन्तु उन सब की आकृति मैं साफ साफ नहीं देख पा रहा था। चित्र धुँधले होते जा रहे थे। केवल उनके शरीर की दूर खड़ी हुई परछाईं ही देख पड़ रही थी और

उनका हिलना डुलना मुझे उसी प्रकार दिखाई देता जा रहा था जैसे गेहूँ के हरे भरे खेतों पर वायु की एक हलकी सी लहर दौड़ गई हो। थोड़ी ही देर में वे चित्र—सब के सब-विलीन हो गए और दीप-शिखा के अतिरिक्त—केवल उसकी सीधी, लम्बी, नोकदार लौ के सिवाय वहाँ कुछ भी नहीं था।' इतना कह कर लौरी फिर मुस्करा दिये।

‘हो सकता है कि मैं स्वयं नींद के भोंके में आ गया या कोई स्वप्न देखने लग गया था। यह भी संभव है कि बहुत देर तक दीप-शिखा की ओर एकाग्रता से देखने के कारण मेरे मनस्तल में छिपी हुई कुछ आकृतियाँ मेरी मानसिक बेसुधी की पृष्ठ-भूमि पर चित्रित हो गई हों। यह भी हो सकता है कि वे मेरे पिड़ले जीवन के प्रतिबिम्ब स्वरूप हों। संभव है पिड़ले जन्म में मैं स्त्री, या यहूदी या दरबारी रहा ही होंऊँ ? कौन जान सकता है ?’

‘आपके परिचित अर्थमंत्री मित्र का क्या हुआ ? उन्होंने क्या वानप्रस्थ ले ही लिया ?’

‘दो वर्ष बाद, दक्षिण में, मैं मदुरा गया हुआ था। मैं वहाँ के मन्दिर में खड़ा ही हुआ था कि किसी ने मेरे कन्धे को छू सा दिया। मैंने घूम कर देखा तो एक व्यक्ति-लम्बी दाढ़ी, काले, बड़े हुये बाल, लंगोटी लगाए, हाथ में कमण्डल लिए मेरे पीछे खड़ा था। जब वह बोला तभी मैं उसे पहचान सका। वही हमारे परिचित मित्र थे। उन्हें देख मैं अवाक रह गया ! कहता भी क्या ? उन्होंने मेरा हाल-चाल पूछा। जब मैंने बतलाया कि मैं द्रावेणकोर जा रहा हूँ तब उन्होंने कहा कि मुझे वहाँ श्री गणेश से अवश्य मिलना चाहिए—‘जिस वस्तु की आपको खोज है आपको उन्हीं से मिलेगी।’

मैंने श्री गणेश के विषय में उनसे और बातें भी पूछनी चाहीं मगर उन्होंने आश्वासन दिया कि उनसे मिलते ही सब पता चल जायगा। मेरा आश्चर्य तब तक कम हो चुका था। और मैंने

उनसे पूछा कि मदुरा में वे क्या कर रहे हैं। उन्होंने बतलाया कि वह पैदल तीर्थ-यात्रा पर निकले हैं। उनकी दिनचर्या भी मैंने पूछी। उन्होंने कहा कि जब कोई उन्हें आश्रय दे देता है तब वह उसी के घर सो जाते हैं और अगर नहीं तो किसी पेड़ अथवा मन्दिर में रात काट देते हैं। यदि किसी ने कुछ भोजन दे दिया तो खा लिया अगर नहीं तो नहीं सही। मैंने उन्हें ऊपर से नीचे तक फिर ध्यान से देखा।

‘आप दुबूले हो गए हैं ?’ इतना सुन कर वह हँसे और कहा कि इसका उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। थोड़ी ही देर बाद उन्होंने मुझे से विदा ली और कहा—‘अच्छा मित्र ! फिर मिलेंगे; ईश्वर मालिक है !’ लगांटी बाँधे हुए अर्थ-मन्त्री के ये वाक्य सुन कर मुझे अजीब सा मालूम हुआ। इतने ही में वह मन्दिर के अन्दर जाकर गायब हो चुके थे।’

‘कुछ दिनों तक मैं मदुरा में ठहरा रहा। भारत में कदाचित् वहीं का मन्दिर ऐसा है जहाँ पर विदेशी भी बिना रोक-टोक के इधर उधर घूम सकते हैं। हाँ, वह मूर्ति के पास नहीं जा सकते परन्तु और कहीं भी उनके लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं। रात में यात्रियों से मन्दिर भर जाता है। आदमी, औरतें, बच्चे सभी एकत्रित हो जाते हैं। कमर तक नंगे मनुष्य—केवल धोती पहने हुए, मस्तक और शरीर पर राख लगाए साष्टांग दण्डवत करते दिखाई देते हैं। वे श्लोक पढ़-पढ़ कर ईश्वराधन करते रहते थे। कभी वे एक दूसरे को बुलाते, कभी अभिवादन करते, कभी हो-हल्ला कर लड़ते और कभी बहुत उत्तेजित हो वादाविवाद करते। इस लड़ते-भगड़ते मानव-समुदाय के समीप भी न जाने कैसे एक अस्पष्ट रूप में ईश्वर की निकटता का आभास मिला करता था।’

‘ज्योंही आग लम्बे हाल कमरे से बाहर आते हैं, पत्थर की मूर्तियों से चित्रित खम्भों पर टिका हुआ बरामदा दिखाई देता है।

अत्येक खम्भे के नीचे एक साधू बैठा हुआ है; उसके सम्मुख भिक्षु का कमण्डल है और एक चौकोर छोटी सी चटाई बिछी है जिस पर भक्त लोग दान-स्वरूप पैसा या अनाज या मिठाई डाल देते हैं। कुछ अधनंगे, कुछ बिलकुल नंगे भिखारी हैं। कुछ आपकी ओर नहीं वरन शून्य की ओर देखकर नीचे देखने लगते हैं। कुछ बैठे पड़ा करते हैं; कुछ जोर-जोर श्लोक उच्चारण कर मन्दिर गुञ्जार करते हैं; कुछ तो ऐसे व्यस्त मानों वह एकाग्रित जन-समूह को देख ही न रहे हों। उसी भीड़ में मैंने अपने मित्र को ढूँढ़ना आरम्भ किया परन्तु फिर कभी उनसे भेंट न हो सकी। मेरा अनुमान है कि वह अपने ध्येय की ओर चल पड़े थे। शायद उन्हें सफलता भी मिल गई होगी।'

‘उनका ध्येय हो क्या सकता था ?’

‘जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति ! वेदान्त के अनुसार आत्मा, शरीर और इन्द्रियों से पृथक् है, वह मस्तिष्क और उसकी क्रियात्मक सुबुद्धि से भी भिन्न है; वह परमात्मा का भी अंश नहीं क्योंकि परमात्मा सम्पूर्ण और अभाज्य है। वह अजन्मा है; अनन्त है। और जब वह अज्ञान के सात पदों को भेद कर, छिन्न-भिन्न कर, उन्हें अलग कर देगा तो पुनः अनन्त में विलीन हो जायगा। वह समुद्र से उठे हुए पानी की उस बूँद के समान है जो किसी पोखरे में गिर कर बहता हुआ नदी की ओर प्रवाहित हो; पहाड़ी झरनों से मेल खाते हुए, विशाल मैदानों पर होते हुए, पत्थरों और वृक्षों की छाँव में बहते-बहते अथाह सागर में जाकर फिर जहाँ से वह प्रादुर्भूत हुआ उसी में विलीन हो जाता है।’

‘तब तो बेचारा पानी का बूँद समुद्र में जाते ही अपना व्यक्तित्व खो बैठता होगा, और भला ऐसी स्थिति उसे क्योंकि रुचिकर द्योतक होगी।’

लैरी अपने मोती समान दांतों की छटा-दिखाते हुए हँसे।

० 'हम मिश्री चखना चाहते हैं, मिश्री की डली बनना नहीं चाहते। व्यक्ति तो केवल हमारे अहं—भाव का प्रकाश मात्र है। जब तक आत्मा अहं-भाव को बिलकुल मिटा नहीं देती वह परम-आत्मा से एक्य स्थापित ही नहीं कर सकती है।'

‘आप तो परम-आत्मा का नाम इस तरह से लेते हैं जैसे उससे आपका घनिष्ठ परिचय हो ! आखिर इस शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है ?’

मैं सत्य अथवा यथार्थ का दूसरा नाम परम-आत्मा समझता हूँ। आप यह नहीं कह सकते कि वह है क्या, परन्तु इतना कह सकते हैं कि वह क्या नहीं है। वह व्याख्या के परे है। भारतीय उसे ब्रह्म कहते हैं; वह कहीं नहीं है और सर्वत्र है। उसी पर सब निर्भर है; न तो वह व्यक्ति है; न वस्तु है; न कारण है; न कार्य है। उसके लक्षण भी कोई नहीं। वह परिवर्तन और स्थायित्व के भी परे है। वह अपने ही में सब कुछ है; अन्त और अनन्त, उसी में निहित है। अनन्त इसलिए है कि उसकी पूर्णता समय और समय की गति से संबद्ध नहीं। वह सत्य-रूप है; मुक्ति है।’

‘वाह ! वाह ! परिभाषा तो बड़ी लम्बी-चौड़ी बतलाई मगर इस प्रकार के कल्पनातीत, बौद्धिक अनुभव से सन्तोष कितनों को मिल सकता है ? मनुष्य तो एक निजी ईश्वर के लिए लालायित रहा है जो उसे दुःख से त्राण दे और त्रास से बचाए ?’

‘हो सकता है कि समय बीतने पर मानव की अन्तर्दृष्टि पैनी होती जाय और वह त्राण और आनन्द पाने के लिए अपने में ही स्थित आत्मा का सहारा ले। मेरा अनुमान है कि पूजा और अर्चना के पीछे प्राचीन-मानव के वे जन्म-जात संस्कार छिपे हैं जिनके भय से बशीभूत वह क्रूर देवी-देवताओं को सन्तुष्ट किया करता था। मेरा विश्वास है कि ईश्वर मुझी में है; और अगर नहीं तो फिर वह कहीं और किसी भी स्थान पर नहीं। यदि यह विश्वास ठीक है तो मैं पूजा किसकी करूँ;

ध्यान किसका धरूँ—अपना ! हमारी आध्यात्मिकता अनेक स्तरों पर रहती है; कुछ ऊँची, कुछ साधारण कोटि की और कुछ नीची । इसी कारण भारत की आध्यात्म-कल्पना ने परम-आत्मा को अनेक रूप में प्रस्तुत किया है जो, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और अनगिनत देवी-देवताओं के रूप में प्रतिष्ठित हैं । परम-आत्मा ईश्वर में है, सृष्टि-कर्त्ता में है और पीपल के नीचे पड़ी हुई पत्थर की मूर्ति में है—जहाँ भोला, सरल किसान खेतों से लौटते हुए एक लोटा पानी और एक फूत चढ़ा कर सन्तुष्ट हो जाता है । भारत के असंख्य देवी-देवताओं का निर्माण इसी लिए हुआ है कि मानव धीरे-धीरे उन्हीं के सहारे परम-आत्मा की स्पष्ट अनुभूति पाता जाय और अन्त में वह आत्मा और परमात्मा के एक्य का साक्षात्कार कर ले ।’

मैंने लैरी की ओर विचारशील मुद्रा से देखा—

‘कदाचित् इसी कारण आपको भारतीय तपस्या ने आकर्षित किया है ?’

‘अपनी बात मैं आपसे साफ-साफ कह सकता हूँ । मेरा न जाने क्यों यह सतत विश्वास सा रहा है कि जो धर्म आप को मुक्ति दिज्ञाने के पहले यह शर्त रखे कि आप उसमें विश्वास करें, श्रद्धोन्मत्त हों तभी वह आप के लिए कुछ कर सकता है, बहुत ही हीन कोटि का धर्म होगा । इससे तो ऐसा मालूम होता है कि उसमें स्वयं विश्वास की इतनी कमी है कि वह आपके विश्वास को पाने के लिए हाथ पसारे खड़ा हुआ है । इस प्रकार के धर्म को देखकर तो मुझे उन प्राचीन देवताओं की याद आती है जो जब तक धूप-दीप नैवेद्य रहता तब तक तो वे फलते फूलते और स्वस्थ रहते और ज्यों ही वे चीजें हट जातीं उनकी भी जैसे जान निकल जाती और वे प्राणहीन हो जाते । अद्वैत वाद तो विश्वास की जरा भी परवाह नहीं करता । उसकी मांग केवल यही है कि आप सतत सत्य को पहचानने में संलग्न रहें; उसके चिन्तन में तत्पर रहें; और उसको हस्तगत करने में जान लगा दें । उसका तो

कहा है कि आप ईश्वर का अनुभव उसी तीव्रता से कर सकते हैं जिस तीव्रता से आप दर्द अथवा आनन्द का अनुभव करते हैं। और भारत में ऐसे सैकड़ों व्यक्ति हैं—और जहाँ तक मेरी पहुँच रही मैं दावे से कह सकता हूँ कि उनमें अधिकांश ऐसे हैं जिन्होंने इस चिन्तन में सफलता पाई है। मुझे तो ऐसा सिद्धान्त अत्यन्त सुखद जान पड़ता है जो ज्ञान द्वारा सत्य का साक्षात्कार करा दे! भारत के पहुँचे हुए योगियों और संतों ने मानव की नैसर्गिक कमजोरी को ध्यान में रखते हुए ऐसा विधान भी बना दिया है जिसे अपना कर धीरे-धीरे मनुष्य मुक्ति के द्वार पर आ लगे। इस नव-विधान में उन्होंने प्रेम और त्याग की महत्ता घोषित की परन्तु सर्वश्रेष्ठ मार्ग उन्होंने ज्ञान-योग को ही बतलाया। यह मार्ग कठिन चाहे कितना भी हो, दूर चाहे जितना भी हो, सबसे भव्य और महान है क्योंकि इसका साधन है मनुष्य की सबसे अमूल्य निधि—जिसे हम बुद्धि कहते हैं।

६

मैं यहाँ यह स्पष्ट-रूप से कह देना चाहता हूँ कि मेरा प्रयोजन वेदान्त अथवा दर्शन की व्याख्या नहीं और न मैं उसकी व्याख्या करने का अधिकारी हूँ। इस विषय पर लैरी ने मुझसे बहुत देर तक वार्तालाप किया और मैंने उनका विवरण यहाँ पर केवल इसलिए संगत समझा कि मैं उनके जीवन के अनुभवों और विचारों को स्पष्ट-रूप से समझ कर उनके आत्मामी कार्यक्रम को तर्क-संगत बना सकूँ। जिस सहज और स्वाभाविक रूप से लैरी बातें कर रहे थे मैं शब्दों द्वारा उसे नहीं व्यक्त कर सका हूँ। उनकी सरल मुस्कान, उनके शान्त स्वर—जो वह बातचीत में प्रयुक्त करते रहे मैं छू भी नहीं सका हूँ। यद्यपि वह इतने गंभीर विषय पर बातें करते रहे फिर भी उनकी भाव-भंगिमा बदलती रहती और सहज संवाद के रूप में बिना गुस्से

की चेष्टा के वह सारी बातें समझाते रहे। यदि विवरण में शिद्दाःमके दग आ गया तो त्रुटि मेरी है; लैरी का संकोच और उनकी सरलता उन्हीं की निजी वस्तु थी मेरा प्रयोजन केवल उसे व्यक्त करने का था और कुछ नहीं। अस्तु।

होःल में अब इने-गिने ही लोग रह गए थे। शराब पीने वाले भी बिदा हो चुके थे। वासनालयों के प्राणी अपनी तृष्टि के पश्चात् थक कर घर की ओर प्रस्थान करने लगे थे। दुःखी, दरिद्र, प्रेम और लालसा की गुड़ियाँ अपनी आभा लोगों की गोदी और शराब की भिजों पर बिखेर कर शान्त हो चुकी थीं। कभी-कभी कोई हारा-थका, शिथिल व्यक्ति बियर या काफी पीने आ टकता। कुछ उनीचे व्यक्ति अन्दर आकर भौंक-भौंक कर फिर बाहर चले जाते। कुछ चाय माँग बैठते और आधा प्याला छोड़ चल देते। रात की ड्यूटी दिए हुए मजदूर घर जाते हुए दो चार मिनट अन्दर घूम लेते और सिगरेट सुलगा कर धुआँ छोड़ते आगे बढ़ जाते। कुछ अपनी ड्यूटी पर जाने के पहले अनमने से आँखें मलते हुए अन्दर आ बैठते और घन्टी की आवाज सुनते ही निकल भागते। लैरी को किसी बात की सुष न थी—न तो स्थान का न समय का। जीवन में मैं अनेक स्थानों पर भ्रमण कर चुका हूँ; भरते-मरते भी बालबाल बच चुका हूँ, प्रेमानन्द में भी डूब चुका हूँ, मध्य एशिया के डरावने मैदानों और टीलों पर टट्टू पर चढ़े हुए घूम चुका हूँ; रूस की राजधानी में, जार के महल में बैठ कर शराब पी चुका हूँ, भयानक हत्याकाण्ड देख चुका हूँ और उनका विवरण हत्यारों के ही मुँह से सुन चुका हूँ, इंगलिस्तान के वेस्टमिन्सटर में बैठ कर स्वर्गीय संगीत सुन चुका हूँ, परन्तु मुझे विश्वास है कि जो-जो भावनाएं मुझ में लैरी की बातें सुनते-सुनते उठीं वह कभी भी पहले न उठीं थीं। कहाँ वासनालय के पास की रेस्तरां जिसमें थीं नग्न-रूप में चंचल प्यार की अठखेलियाँ और कहाँ लैरी द्वारा परमात्मा और आत्मा-संबन्धी व्याख्या !!!

कुछ देर तक तो लैरी चुपचाप बैठे रहे और मैंने उन्हें छेड़ना भी उचित न समझा। अकस्मात् वह जैसे जाग उठे और मेरी उपस्थिति भी उन्होंने अनुभव की—

‘जब मैं द्रावेनकोर पहुँचा तो मैंने देखा कि जो कुछ भी श्री गणेश के विषय में मैंने जानकारी इकट्ठी की थी उसकी कोई भी आवश्यकता न थी। उन्हें सभी जानते थे। कई वर्षों तक तो वे पहाड़ की गुफाओं में रहे परन्तु कुछ सम्पन्न व्यक्तियों ने उनके लिए थोड़ी जमीन खरीद दी थी और उस पर एक भोपड़ा डलवा दिया था। वह अब उसी में रहा करते थे। शहर से उनका आश्रम बहुत दूर था और रेलगमड़ी की यात्रा समाप्त कर बैलगाड़ी पर मीलों चलना पड़ा। हाते के फाटक पर ही मुझे एक नवयुवक मिला जिससे मैंने योगी से मिलने की इच्छा प्रकट की। मैं अपने साथ फलों की एक टोकरी लेता आया था जो योगियों की साधारणतया भेंट की जाती है। कुछ ही देर बाद वह नव-युवक आकर मुझे लिवा ले गया। कमरा बहुत बड़ा था और चारों ओर खिड़कियाँ ही खिड़कियाँ थीं। एक कोने में श्री गणेश एक ऊँचे आसन पर, जिस पर चीते की खाल बिछी थी ध्यानावस्थित बैठे थे।

‘मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा था।’ वह बोले।

‘मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि पहली भेंट में प्रतीक्षा कैसी?’ मुझे विचार आया कि कदाचित् मेरे मदुरा के मित्र ने मेरे विषय में उनको कुछ पहिले से लिख दिया हो? मैंने उनका नाम भी लिया परन्तु उन्होंने सिर हिला दिया। मैंने फलों की ढेरी उनको भेंट की और उन्होंने उस नवयुवक से कह कर उसे अलग रखवा दिया। हम दोनों अकेले थे। उन्होंने एकाग्र हो मुझे देखा पर बोले नहीं। कदाचित् आध घण्टे बँक सन्नाटा रहा होगा। उनके समीप विचित्र शान्ति और

एक प्रकार का देवत्व प्रसारित था। शान्ति और त्याग की वे प्रतिमूर्ति जात हो रहे थे। उनके पास बैठते ही न जाने कैसे मुझे स्थिरता और शालीनता का अनुभव होने लगा। उनसे बात करने के पहिले ही मुझे विश्वास सा होने लगा कि कंदाचित् यही व्यक्ति हैं जिनकी मुझे इतने दिनों से खोज थी।

‘क्या वह अंग्रेजी बोल लेते थे ?’ मैंने टोका।

‘नहीं। परन्तु मुझमें भाषाएँ सीखने की क्षमता हमेशा रही है और मैंने दक्षिण में कुछ ही दिनों रहने के पश्चात् इतनी तामिल भाषा सीख ली थी कि बात-चीत कर सकता था। अन्त में वे ही बोले—’

‘आप यहाँ किस प्रयोजन से आए हैं ?’

‘मैंने उन्हें बतलाया कि मैं किस तरह भारत आया, किस प्रकार तीन वर्ष बिताया और कहाँ-कहाँ योगी-साधुओं की खोज में फिरा— जो मुझे ज्ञान का प्रकाश दे सकते। परन्तु अब तक किसी ने भी मुझे परितोष नहीं दिया।’ उन्होंने मुझे फिर टोका।

‘यह सब तो मुझे मालूम है; इसके बतलाने की आवश्यकता नहीं; आप केवल यही बतलाइए कि आप इस स्थान-विशेष पर क्यों आए ?’

‘इसलिए कि आप मुझे दीक्षा दें और मेरे गुरु बनें ?’

‘ब्रह्म ही गुरु हैं।’ उन्होंने गंभीर होकर कहा।

‘वह मेरी ओर एकाग्र हो बड़ी देर तक देखते रहे। यकायक उनका शरीर स्थिर होने लगा, उनकी आँखें अन्तरतम की ओर फिर गई और मैंने देखा कि उनकी समाधि लग गई। भारतीय, समाधि उस आध्यात्मिक अवस्था को कहते हैं जब आत्मा और परम-आत्मा का द्वैत हट कर अद्वैत में परिणत हो जाता है और व्यक्ति सम्पूर्ण ज्ञान कर प्रतिरूप बन जाता है। मैं पलथी मारे उनके सम्मुख जमीन

पर बैठा हुआ था। मेरा हृदय धड़क रहा था। न जाने कितनी देर बाद उनकी समाधि टूटी और उन्होंने जोर से सांस ली। उन्होंने स्नेहाभिसिक्त नेत्रों से मेरी ओर देखा।

‘आप ठहरिए; आपके रहने और सोने का प्रबन्ध हो जायगा।’

‘जिस भोखड़ी में पहले-पहल श्री गणेश ठिके थे मेरे लिए खाली कर दी गई। जिस बैठक में वह बैठे थे उसे उनके शिष्यों ने हाल ही में बनवाया था। श्री गणेश बैठ कर वहीं प्रवचन देते थे। मुझे देख कर वहाँ के लोग भड़के नहीं क्योंकि मैंने भारतीय वेश भूषा ग्रहण कर ली थी। धूप से मेरा शरीर इतना श्यामवर्ण हो गया था कि मुझे जल्दी में कोई भी विदेशी नहीं समझ सकता था।’

अपनी कुटी में मैं अध्ययन करता और आदेशानुसार चिन्तन। जब श्री गणेश प्रवचन देते मैं चुपचाप सुना करता। यद्यपि वह बहुत बोलते नहीं थे परन्तु जब भी वे बोलते तो सुनने में मन पर विचित्र प्रभाव पड़ा करता। यह प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बड़ी सरलता से देते थे। उनकी बोली से संगीत की ध्वनि आती थी। यद्यपि अपना युवावस्था में उन्होंने कड़ी तपस्या की थी परन्तु उनके शिष्यों को वह अनिवार्य न थी। वे उनको स्वार्थ, लालसा और इन्द्रिय-लिप्सा के बन्धन से निकाल कर शान्ति, त्याग, धैर्य, मानसिक एकाग्रता तथा स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया करते थे। दूर-दूर से लोग उनके पास आते, अपनी व्यथाएं बतलाते, अपनी दुःख-गाथा कहते, उनसे उपचार पूछते और उनकी वाणी से सन्तुष्ट हो, आत्मिक शक्ति ग्रहण कर वापस लौटते। उनके आदेश अत्यन्त सरल थे। उनका कहना था कि मनुष्य जितना अपने को छोटा समझता है उससे कहीं बड़ा है, कहीं श्रेष्ठ है; और सुबुद्धि और ज्ञान द्वारा ही मनुष्य स्वतंत्र हो सकता है। उनके सिद्धान्तों के अनुसार मुक्ति पाने के लिए संसार को त्यागने की आवश्यकता नहीं—त्यागने की आवश्यकता है स्वयं को खुदी को अहं को। निस्वार्थ कार्य, मन को शुद्ध और परिष्कृत करता

है और सांसारिक कर्तव्य मनुष्य को परम-आत्मा में लय होने के श्रेष्ठ साधन प्रस्तुत करते रहते हैं। उनकी शिक्षा उतनी आकर्षक न थी जितने वे स्वयं मनोमुग्ध नारी थे। उनकी मानसिक शान्ति, आत्मिक उदारता और आध्यात्मिक शालीनता; उनकी सरलता और साधुता सभी को अपने वश में कर लेते थे। उनकी उपस्थिति ही वरदान स्वरूप थी और मैं जब तक उनके सम्पर्क में रहा आनन्दित रहा। मुझे ऐसा लगा कि मानों मैं उस व्यक्ति को पा गया हूँ जिसकी मुझे खोज थी। सप्ताह, महीने और वर्ष ऐसे बीतते गए मानों कल की बात हो। मेरी इच्छा हुई कि उनके जीवन-पर्यन्त मैं उन्हीं के पास रहूँ। वे कहा करते थे कि अपने नश्वर शरीर का वे शीघ्र ही त्याग करेंगे और वे केवल मुझमें ज्ञानालोक प्रचारित करने के लोभ से रुके हुए हैं। ज्ञानालोक—अज्ञानान्धकार को छिन्नभिन्न कर वह मानसिक अवस्था प्राप्त कर लेना है जब अहं-भाव छोड़कर आत्मा, परमात्मा से पूर्ण सामञ्जस्य और एक्य स्थापित कर लेती है।

‘और तब क्या होगा?’

‘यदि उनका कहना सही है तब किसी बात की भी आवश्यकता नहीं रह जाती। आत्मा की संसार-यात्रा समाप्त हो जाती है और मानव आवागमन से छूट जाता है।’

‘क्या श्री गणेश की मृत्यु हो गई?’ मैंने उत्सुकता से पूछा।

‘कह नहीं सकता।’

उन्होंने मेरे प्रश्न के तात्पर्य को समझ कर धीरे से मुस्कुरा दिया परन्तु एक क्षण के बाद ही निस्संकोच रूप से बातें करने लगे। उनके रुकने पर मैं जान गया था कि वह मेरा प्रश्न टालना चाहते थे। प्रश्न मेरी जवान ही पर था—क्या उन्हें ज्ञानालोक द्वारा आवागमन से छुटकारा मिल गया?’

‘मैं आश्रम में लगातार तो रहा नहीं। संयोग से मेरा परिचय

जंगल-विभाग के एक ऐसे अधिकारी से हो गया था जो श्री गणेश के शिष्य थे और पहाड़ के नीचे ही उनका स्थायी निवासस्थान था। वह कभी-कभी आकर हम लोगों के पास दो तीन रोज रह जाया करते थे। वे बड़े सहृदय व्यक्ति थे और बातें खूब करते थे। अंग्रेजी बोलने का अभ्यास वह मुझी पर किया करते थे। कभी-कभी मैं जंगल-विभाग के सरकारी दफ्तर के कमरे में जो पहाड़ों के उच्च शिखर पर बना था। एकान्तवास करने चला जाया करता था। वहाँ का दृश्य विशाल और प्रकृति-दर्शन भव्य होता। मेरे खाने-पीने का इकट्ठा सामान वहाँ पर एक कुली रख आता और जब तक खाना खत्म न हो जाता मैं वहीं टिका रहता। कमरे में केवल एक मेज और कुर्सी थी और एक छोटी चारपाई। कमरा लकड़ी का बना था और उसके पीछे ही रसोई थी। पहाड़ी की चोटी पर बहुत ठन्डक रहती और आग ताने में बड़ा आनन्द मिलता। उच्च शिखर पर बैठकर एकान्तवास द्वारा मुझे बड़ी आत्मिक शान्ति मिलती और यह भावना कि आस-पास मीलों मनुष्य की सूरत नहीं दिखाई देती मुझे विचित्र रूप से प्रभावित करती। रात में मुझे चीतों की आवाज और उन जंगली हाथियों की चिंघाड़ सुनाई देती जो पेड़ों को चीरते-फाड़ते इधर-उधर घूमते फिरते। जंगल में मैं दूर दूर तक घूम आता। वहाँ पर मुझे एक छोटी पहाड़ी की चोटी अत्यन्त रुचिकर थी और मैं वहीं बैठकर घंटों सोचा-विचारा करता था। पहाड़ी के नीचे ही पानी का भरना कलकल ध्वनि से बहा करता था जहाँ सूर्यास्त होते-होते अनेक जंगली जानवर—हिरन, गैंडे, हाथी, चीते, सूअर पानी पीने आया करते थे।

‘आश्रम में जब दो वर्ष के करीब मैं रह चुका तो एक दिन अपने मित्र के पहाड़ी निवासस्थान पर गया। कारण सुनकर आपको हँसी आ जायगी। मैं वहाँ अपना जन्म-दिवस मनाने गया था। एक दिन पहिले से ही मैं वहाँ पहुँच गया। सूर्योदय के बहुत पहिले मैं उसी पहाड़ी की चोटी पर जा पहुँचा जो मुझे अत्यन्त रुचिकर थी। रास्ता

मे भालूम ही था और आँख बन्द कर भी मैं वहाँ पहुँच सकता था । क वृक्ष के नीचे मैं खड़ा हो गया । सूर्योदय की प्रतीक्षा थी । ढलती रात की शान्ति चारों ओर प्रसारित थी, आकाश के तारे पीले पड़ रहे थे; पौ फूटने ही वाली थी । मुझमें एक विचित्र असमंजस और विस्मय की भावना जाग्रत होने लगी । क्रमशः अन्धकार में से छुनती हुई ज्योति-राशि दिखाई देने लगी मानों कोई युवती अपने चन्द्र-मुख से अपनी बिखरी केश-राशि एक ओर को हटा रही हो । मैंने अपना हाथ अपने वक्षस्थल पर रख दिया । ऐसा ज्ञात हुआ मानों कोई अज्ञात आशंका मुझमें घर करती जा रही थी । मेरा हृदय धड़क रहा था । सूर्य सामने दर्शन दे रहा था ।

लेरी रुके और अव्यक्त हँसी उनके मुख पर आ गई ।

‘मुझमें वर्णन शक्ति बहुत कम है और मैं आपको प्रातःकालीन शोभा का अनुभव शब्दों द्वारा देने में असमर्थ हूँ । प्रकृति का जो विशाल दृश्य मेरी आँखों के सम्मुख आया वह कल्पनातीत था । पर्वत शिखर पर वृक्षों की प्रगाढ़ छाया में हिलती-डुलती प्रातःकालीन धुन्ध-राशि ! दूर तक फैले हुये वृक्षों की सजल छाया का आलिंगन करता हुआ शान्त-स्निग्ध-जलाशय ! पहाड़ी की ओट से जलाशय के वक्षस्थल की ओर अटूट संकेत करती हुई बाल-सूर्य की पहली किरण ! देखते देखते चमकते हुये लोहे के समान जलराशि की आभा ! प्रकृति के इस मनोहर दृश्य ने मुझे वशोभूत कर लिया । मैंने पहले कभी भी इतना विशाल और प्रभावोत्पादक सौन्दर्य नहीं देखा था । मेरे आनन्द की सीमा न रही । पैरों से होती हुई एक विचित्र सनसनी मेरे स्नायुओं में दौड़ती हुई मेरे मस्तिष्क में समा गई । मुझे ऐसा आभास मिला मानों मेरी आत्मा शरीर से मुक्त हो स्वच्छ, शुभ्र और स्निग्ध बनकर प्रकृति के सौन्दर्य में घुल-मिल गई है । ऐसा ज्ञात हुआ जैसे बहुत दिनों के बन्द कमरे में खिड़की खुल गई और ज्योति फूट पड़ी—मेरे सम्पूर्ण कल्प-विकल्प दूर हो गए । एक विचित्र

आध्यात्मिक ज्ञान जाग्रत सा होने लगा और पार्थिवता मानों विदा लेने लगी। मेरे आनन्द ने एक मीठी टीस का स्वरूप ग्रहण करना शुरू कर दिया था और अपने को उससे छुड़ाने के प्रयत्न में मैं उसमें और भी उलझने लगा। यदि एक क्षण भी वह भावना और रह जाती तो कदाचित् मेरी मृत्यु ही हो जाती। परन्तु उस आनन्द को मैं छोड़ने पर भी प्रस्तुत न था—हर्षोन्माद ही उस समय मुझे जीवन का श्रेष्ठ गुण जान पड़ा। उसे अपने में समोने के लिए मैं सब कुछ कर सकता था। मैं कैसे बतलाऊँ कि उस समय मुझे कैसा लगा। मैं आत्म विभोर हो उठा था। शब्दों द्वारा मेरे परमानन्द की व्याख्या नहीं हो सकती। जब मैं आत्मानन्द से जागा तो चकित और शिथिल था। मैं गहरी नींद में सो गया।

‘जब मेरी नींद टूटी दौधर हो गई थी। मैं घर की ओर चल पड़ा और मेरे पैर इतने हलके पड़ रहे थे और मेरा मन इतना विभोर था कि मानों मैं जमीन से कहीं ऊपर हूँ। मैंने अपने लिए कुछ खाना पकाया। मुझे इतनी भूल लगी थी कि कुछ कह नहीं सकता।’

लैरी ने अपना पाइप सुलगाया।

‘मैंने यह सोचने की धृष्टता नहीं की कि जिस ज्ञानालोक को पाने के लिए लोग वर्षों कठिन तपस्या करते हैं और मारे-मारे फिरते हैं, मुझ जैसे छोटे व्यक्ति को बात की बात में मिल गया।’

‘इसका क्या प्रमाण है कि जो कुछ दिखाई दिया वह केवल प्रातः-कालीन शोभा का रहस्यपूर्ण वातावरण ही हो; एकान्त की एकाकी प्रेरणा हो; अथवा जलाशय पर खेलती हुई सूर्य राशि की आभा के सहारे मनस्तल में छिपी हुई भस्मिनाओं का ही शुभ्र-प्रदर्शन मात्र हो?’

‘यही कि मुझे उसमें यथार्थ और सत्य की अद्भुत और अपरिहार्य भावना मिली। अनुभव केवल अनुभव ही रह सकता है—वह तर्क के परे है। वह अनुभव भी उसी श्रेणी का हो सकता है जो भारत में ब्राह्मणों को, फारस में सूफियों को, स्पेन में कैथलिक सम्प्रदाय वालों

को और इंगलिस्तान में प्रोटेस्टेन्टों को हुआ होगा। उन्होंने ने भी अपने अनुभव की अवर्णनीयता बतलाई है और किसी न किसी प्रकार टूटे-फूटे शब्दों में उसे व्यक्त करने का प्रयास किया है। यह तो निर्विवाद है कि ऐसा अनुभव होता है और हुआ है; कठिनता है कार्य कारण संबंध जानने में और उसकी व्याख्या में। मेरा अनुभव और मनस्तल में छिपी-छिपाई भावनाओं के कारण था या नहीं और मेरा परमानन्द, मुझमें और परम-आत्मा में एक्य स्थापित होने के फलस्वरूप था, मैं स्पष्टतया नहीं कह सकता !'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद लैरी ने एक रहस्यपूर्ण मुस्कान से मेरी ओर देखा।

‘जरा यह तो बतलाइए कि क्या आप अपने हाथ के अंगूठे से कनिष्ठिका छू सकते हैं ?’

‘क्यों नहीं !’ मैंने उन्हें कनिष्ठिका अंगूठे से छू कर दिखला दी।

‘क्या आपको यह मालूम है कि यह कार्य केवल मनुष्य और मनुष्य के पूर्वज ही कर सकते हैं। यह कार्य सदियों से होता आया है और यह समस्त मानव समुदाय की शक्ति के अन्दर है। तब क्या ऐसा समय दूर भविष्य में नहीं आ सकता जब एक व्यक्ति का आत्मिक और आध्यात्मिक अनुभव समस्त मानव समाज का अनुभव हो जायगा। परमानन्द भोगने और अनुभव करने वाले व्यक्ति की भाँति भविष्य में मानव भी अपने में छठी ज्ञानेन्द्रि उपजा कर, उसे उच्चोत्तम कर, सरलता से यह अनुभव करता चला जायगा और एक समय ऐसा भी आ सकता है जब एक व्यक्ति का आध्यात्मिक अनुभव प्रत्येक व्यक्ति का सहज अनुभव हो जायगा।’

‘मगर उसका साधन भी तो चाहिए।’

‘जिस प्रकार आदिम व्यक्ति कनिष्ठिका और अंगूठे को छूने के महत्त्व को पहले पहल न तो जान पाया और न उसकी प्रतिक्रियाएँ ही समझ पाया उसी प्रकार कोई भी नवीन आध्यात्मिक अनुभव करने

वाला पहिला व्यक्ति न तो साधन का नामकरण कर सकता है और न उसके महत्व को ही हृदयंगम कर सकता है। जहाँ तक मैं कह सकता हूँ वह केवल यही है कि उस दृश्य से मुझमें अगाध शान्ति का प्रसार हुआ मैं आनन्द-विभोर हो गया। उस अनुभव की स्मृति अभी भी मुझमें उसी स्पष्ट-रूप में बनी हुई है और वह चकाचौंध में डालने वाली प्राकृतिक छटा मेरे मनस्तल पर पूर्णरूप से अब भी अंकित है।

‘इस परमानन्द के विवेचन से तो ऐसा ज्ञात होता है कि आपके अनुभव और माया में गहरा संबंध है, और जितने सुन्दर संसारी दिखाई देते हैं उनमें कोई भी वास्तविकता नहीं?’

‘यह समझना भारी भूल है कि भारतीय संसार को माया-रूप समझते हैं। यह उनका सिद्धान्त कभी भी नहीं रहा। उनकी धारणा केवल यही है कि संसार, परमानन्द की श्रेणी की वास्तविकता नहीं रखता और वह उतना सत्य नहीं जितना कि परमानन्द सत्य है। चिन्तन-शील व्यक्तियों ने माया का काल्पनिक निर्माण केवल इसीलिए किया कि बिना इसके अनन्त द्वारा सीमाबद्ध (फाइनाइट) का आविर्भाव सरलता से प्रमाणित नहीं होता। परम-आत्मा से आत्मा का उद्भव प्रमाणित करने के लिए कुछ बाह्य साधनों की आवश्यकता होती है और माया भी उसी में एक है। दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् शंकराचार्य ने इस विषय को रहस्यपूर्ण ही रखा है। कठिनाई तो सबसे बड़ी यह है कि ब्रह्म जो सत्, चित्, आनन्द है; जो अपरिवर्त्तन-शील है, अनन्त है, अक्षय है सम्पूर्ण है, सृष्टि की रचना करता ही क्यों है? उसका प्रयोजन क्या है; उसका ध्येय क्या हो सकता है? साधारण उत्तर यह दिया जाता है कि परमात्मा ने सृष्टि-रचना किसी विशेष प्रयोजन से नहीं की; केवल अपने को ही प्रसन्न करने के लिये उसने यह कार्य किया है। मगर जब संसार में महामारी, बाढ़, भूकम्प आदि दुर्घटनाओं से हम व्यथित और प्रताड़ित होते हैं और रोग, शोक तथा मृत्यु के आस बन जाते हैं तो हममें विद्रोह की

भावना इसलिए जाग्रत होती है कि परमात्मा के क्रीड़ा-स्वरूप निर्मित संसार में कोई नैतिकता नहीं—कोई न्याय नहीं; और फिर खेल ही खेल में मानव की हत्या कहाँ का श्रेष्ठ कार्य है ? श्री गणेश का विश्वास दूसरा था। वे इतने अधिक उदार थे कि इस प्रकार के विषम सिद्धान्त से संतुष्ट नहीं हो सकते थे। उनका विचार था कि सृष्टि ईश्वर का सहज स्वभाव ही है और वह उसकी पूर्णता का सहज प्रकाश मात्र है। बिना सृष्टि किए ईश्वर, ईश्वर ही नहीं रह सकता और उसे सन्तोष भी नहीं प्राप्त होता। जब मैंने पूछा कि ऐसी सृष्टि जो ईश्वर की सम्पूर्णता द्वारा उत्पन्न हुई, इतनी वृणित और शोभप्रद क्यों हुई कि प्राणी-मात्र का केवल यही ध्येय हो गया कि उसके बन्धन से निकल भागे और छुटकारा पा जाय ? प्रत्युत्तर में उन्होंने बतलाया कि सांसारिक सुख क्षणिक ही होते हैं और केवल अनन्त के द्वारा ही स्थायी सुख प्राप्त होता है। परन्तु किसी वस्तु का स्थायित्व उसकी अच्छाई का प्रमाण तो हुआ नहीं ? इसलिए इस प्रश्न का उत्तर हमें उदारता से सोचना चाहिए। यदि किसी पुष्प का सौंदर्य दोषद्वर होते-होते विनीत हो जाता है और वह प्रातः काल के समान ही अपनी शोभा बनाए नहीं रख पाता तो उसकी शोभा का विशद क्षण प्रातः काल ही हुआ और उसी समय का सौन्दर्य उसका सत्य सौंदर्य भी होगा। संसार की सभी वस्तुएँ और सभी सुख नश्वर हैं और किसी भी संसारी वस्तु को अक्षय मानना मूर्खता है; परन्तु जब तक वह संसारी वस्तु अथवा सुख प्रस्तुत है उसका उपयोग न करना और उसे दूर-दूर रखना और भी भारी भूर्खता है। परिवर्तन तो संसार का अटल नियम है : हम एक ही नदी में कभी नहीं नहा पाते क्योंकि लहरों का बहाव सदैव परिवर्तन प्रस्तुत करता रहता है और जब नदी के परिवर्तित रूप में हम स्नान करने जाते हैं तो हमें ठन्डा लगता है—आनन्द आता है और नदी का प्रवाह भी रुकता नहीं—नदी बहती ही चली जाती है। उसी प्रकार हमारा आनन्द भी नहीं

रुकता—एक के बाद दूसरा आता ही जाता है ।’

‘आर्य जब पहले-पहल भारतवर्ष आए तो उनके विचार में यह बाह्य और परिवर्तित संसार केवल एक अपरिचित और आँखों के परे एक दैवी संसार की छाया मात्र था । परन्तु इसी कारण कि यह संसार छाया मात्र है उन्होंने न तो उसका तिरस्कार किया और न उसमें दूर भागे वरन उसे हर्ष से अपनाया; उसका अभिवादन किया और उसका आनन्द लूटा ! सदियों बाद बाह्य आक्रमणों से जब आर्य हतोत्साह और शिथिल हो उठे और गर्म जल वायु ने उन्हें उत्तेजना-रहित बना डाली तो उन्होंने अपने हत-भाग्य जीवन में दुःख ही दुःख की भाँकी देखना और पाप ही पाप का अनुभव करना आरम्भ कर दिया । विजित मानव की प्रतिष्ठा ही क्या ? उसमें गर्व और गौरव की अनुभूति कहाँ से आए ? इस भावना के फलस्वरूप उन्होंने इस संसार से निरक्त होना शुरू किया और वे इससे छुटकारा पाने का स्वप्न देखने लगे । परन्तु पश्चिमी जातियों और विशेषतः अमरीकन जाति भला इस संसार को क्यों न अपनाए ? उन्हें तो भूख, प्यास, क्लेश, त्रास, मृत्यु, क्षय से विचित्रित नहीं होना चाहिए । उनमें उत्साह है, उत्तेजना है, गर्व है, गौरव है; और जीवन की सभी निधियाँ उनकी मुट्ठी में हैं; भविष्य उनके सामने हाथ जोड़े अभिवादन के लिए खड़ा है—भला वे जीवन से क्यों भागें—उससे छुटकारा क्यों चाहें; उसे बुरा और पाप-पूर्ण समझ कर उसे क्यों त्यागें ?’

‘जब मैं पर्वत-शिखर के ऊपर बंगले में बैठा हुआ अपना पाइप पी रहा था तो मुझे ऐसी स्फूर्ति मालूम हुई जो पहिले कभी भी नहीं अनुभव हुई थी । शक्ति—नवीन शक्ति—न जाने कहाँ से मुझमें फूटी पड़ रही थी । वह बार-बार मुझसे कहती—‘मेरा उपयोग करो ! मेरा उपयोग करो’—मुझे चुनौती देती जाती । मुझमें संसार छोड़ कर गुफा में बैठ कर जीवन-यापन करने का विचार कभी नहीं आया । उसके विपरीत यह विचार उठा कि मुझे संसार की सभी वस्तुओं का

रस लेना चाहिए—परन्तु उनमें लिप्त होकर नहीं वरन् इसलिए कि उनमें भी परमात्मा का श्रेष्ठ अंश निहित है। यदि उस प्रातःकाल, आत्म-विभोर हो, मैंने परमात्मा से एक्य स्थापित कर लिया तो भारतीय विश्वास के अनुसार मैं अक्षय हूँ, अनन्त हूँ और इस जीवन का अन्न होते ही मैं मुक्त हो जाऊँगा। इस विचार ने मुझे विस्मित कर दिया; मैं फिर-फिर कर जन्म लेना चाहता था। मुझे जीवन से प्रगाढ़ प्रेम हो गया था; मैं चाहता था कि मैं हर तरह से जीवन का उपभोग करूँ—चाहे उसमें कितना भी क्लेश और दुःख क्यों न हो। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जन्म और पुनर्जन्म का अटूट शृंखला ही मुझे, मेरी शक्ति को, मेरी ललक को, मेरी आकांक्षा को सन्तुष्ट कर सकेगी।

‘दूसरे दिन मैं आश्रम लौट आया। मुझे अंग्रेजी कपड़े पहने हुए देख कर श्री गणेश कुछ विस्मित से हुए। मैंने अपने उन कपड़ों को जंगल-विभाग के बगले में ही रख दिया था क्योंकि मुझे वहाँ सदाँ लगा करती थी। मैंने सोचा जब चलना ही है तो उन कपड़ों को पहन कर ही चलूँ।’

‘श्रीवर ! मैं आप से विदा माँगने आया हूँ; मैं अपने देश वापस लौट जाना चाहता हूँ।’

‘वे थोड़ी देर चुप रहे; पहले की तरह ही वह पद्मासन लगाए चीते की खाल पर बैठे हुये थे। उनके पास ही धूप-वत्ती जल रही थी और कमरा सुगन्ध से भर रहा था। वह अकेले ही थे। उन्होंने मुझे ऐसी चुभती हुई दृष्टि से देखा कि मानो वे मेरे शरीर को भेद कर सब कुछ जान रहे हैं। मेरा विचार है कि उन्होंने अवश्य जान लिया था कि मुझे कौन से अनुभव हो गए थे।’

‘अच्छी बात है। आपको अपना देश छोड़े हुये भी बहुत दिन हो गए।’

‘मैंने घुटने टेक कर उन्हें प्रणाम किया। उनके आशीर्वाद के

शब्द सुनते ही मेरी आँखों से आँसू भर-भर भरने लगे। वे आदर्श सन्त थे और उनका जीवन कहीं ऊँचा था। मैं उन्हें सदैव स्मरण रखूँगा। अन्य भक्तों से भी मैंने विदा ली जिनमें कुछ तो ऐसे थे जो वहाँ वर्षों से रह रहे थे और कुछ मेरे बाद भी आए थे। अपनी पुस्तकें और कुछ इधर-उधर की चीजें मैंने वहीं छोड़ दीं कि किसी के काम आ ही जायँगी। वचा हुआ सामान मैंने सफरी भोले में डाला, अपना पुराना भूरा कोट और पतलून पहना, पुराना दवा दबाया हैट सिर पर रखा और शहर वापस आकर बम्बई जाने की प्रतीक्षा करने लगा। एक सप्ताह बाद मुझे जहाज मिला जिसने मुझे मार्सेल ला उतारा।

अपने-अपने विचारों में हम दोनों निमग्न थे परन्तु एक विशेष प्रश्न मैं पूछना चाहता था। शान्ति छाई हुई थी।

मैं ही पहले बोला—

‘भाई लैरी ! तुम्हारी यह लम्बी चौड़ी यात्रा बुराई और पाप के सन्धान के लिए आरम्भ हुई थी; उसी प्रश्न ने तुम्हें अब तक उद्विग्न कर रखा था और अब तक तुमने यह नहीं बतलाया कि तुम्हारे इस खोज का समाधान क्यों कर हुआ।’

‘हो सकता है कि उसका कोई भी समाधान न हो अथवा मुझमें उसे समझने का चातुर्य ही न हो। श्री रामकृष्ण सृष्टि को ईश्वरीय खेल समझते थे। वे कहते थे—‘संसार के खेल में कहीं आनन्द है, कहीं दुःख है; कहीं पाप है, कहीं पुण्य है; कहीं ज्ञान है, कहीं अज्ञान है; कहीं अच्छाई है, कहीं बुराई है—संसार मिश्रित गुणों और अवगुणों से परिपूर्ण है। यदि पाप, बुराई, दुःख यहाँ से निकाल फेंके जाँय तो फिर खेल चलेगा कैसे ? उसका फिर आनन्द ही क्या रहेगा ?’ मैं इस विचार से सहमत नहीं। जो मैं समझता हूँ वह यह है कि जब परम-आत्मा आविर्भूत हुई तो बुराई और पाप दोनों उसके साथ ही साथ उपजे। अच्छाई-बुराई का सहज और अन्योन्याश्रित संबंध है। उत्तुंग

हिमालय-शिखर का भव्य तथा विशाल सौन्दर्य, कल्पनातीत भूकम्प द्वारा पृथ्वी के गह्वरों के विदारित दृश्य, एक दूसरे के अन्योनाश्रय बिना नहीं समझे जा सकते। अंधेरा, ज्योति की अनुपस्थिति मात्र है, कालिमा शुभ्रता की अनुपस्थिति। बिना एक दूसरे के हम उनका गुण ही नहीं समझ सकते। इसी प्रकार यह भी संभव है कि जिन जिन गुणों का मूल्य हम समझने की चेष्टा करते हैं उनके साथ के अवगुणों का भी लेखा हमें रखना ही पड़ता है। संसार के श्रेष्ठ, मूल्यवान् आदर्श बिना किसी विपरीत अवगुण के पनप ही नहीं सकते।'

‘यह तो बहुत नवीन धारणा आपने खोज बनाई? मेरी समझ में यह बहुत सन्तोष-जनक तो नहीं?’

‘मैं भी इसे सन्तोष-जनक नहीं समझता।’ वह मुस्करा पड़े। ‘अन्त में यही कहना पड़ता है कि जब किसी वस्तु को हम अनिवार्य समझ लेते हैं तो उसका जहाँ तक हो सके सदुपयोग करना ही उचित है।’

‘अच्छा तो अब इरादा क्या है?’

‘यहाँ कुछ काम-धाम वाक्री है; उसके पश्चात् मैं अमरीका वापस जाऊंगा।’

‘क्या करने?’

‘जीवन व्यतीत करने?’

‘कैसे?’

उन्होंने बहुत ही शान्त-स्वरो में जवाब दिया और उनकी बड़ी बड़ी आँखों में शान्ति की चमक थी और कुछ-कुछ शरारत भी क्योंकि वह जानते थे कि उनके उत्तर से मैं सन्तुष्ट नहीं होऊंगा—

‘शान्ति से, सहिष्णुता से निस्वार्थता से, दया से, संयम से !!!’

‘बड़ा ऊँचा आदर्श मालूम होता है? संयम की भला क्या आवश्यकता आ पड़ी? अभी तो आप युवा हैं और भूल के बाद जो सबसे अधिक अनिवार्य प्रेरणा जो मनुष्य को उद्विग्न करती रहती है उसे

दबा कर कुचल डालना आपके लिए कहां तक श्रेयस्कर होगा ?

‘संयोग से मैं भाग्यशाली इसलिए हूँ कि लालसा-पूर्ति मेरे लिये आवश्यक चीज नहीं—वह केवल आनन्द का साधन मात्र ही है। यह मैं अपने निजी अनुभव से जानता हूँ कि संयम, आध्यात्मिक शक्ति को कहीं अधिक बढ़ाता रहता है और भारतीय इस तथ्य को समझने में अद्वितीय रहे हैं।’

‘मेरे विचार में तो शरीर और आत्मा-दोनों की समतुष्टि ही मानव का धर्म होना चाहिए ?’

‘भारतीयों का भी ठीक यही विचार है कि पश्चिम इस तथ्य को नहीं समझता। उनकी धारणा है कि हमारे करोड़ों आविष्कार, हमारे लाखों कारखाने और मशीनें केवल तामसिक सुख की प्रेरणा देती हैं और आध्यात्मिक आनन्द इनसे कदापि नहीं मिल सकता। वे समझते हैं कि हम लोगों का अनात्मवाद और हमारी तामसिकता हमें विनाश की ओर ले जा रही है।’

‘और आप समझते हैं कि नवीन आदर्शों को क्रियात्मक रूप देने का सबसे श्रेष्ठ स्थान अमरीका ही है। क्यों ?’

‘क्यों नहीं। आप युरोपीय हैं और अमरीका को ठीक-ठीक समझना आपको बुद्धि के परे है। हम लोग व्यवसाय द्वारा अगार धन राशि इकट्ठी करते हैं और आप समझते हैं कि धन ही हम लोगों का जीवन-ध्येय है। वास्तव में हम उसकी किंचित मात्र भी परवाह नहीं करते। ज्योंही धन आता है त्योंही वह व्यय हो जाता है; हो सकता है कभी बुरी रीति से कभी अच्छी रीति से। हम लोगों की दृष्टि में धन की कोई महत्ता नहीं। संसार में हम लोग सर्व-श्रेष्ठ आदर्शवादी हैं। हाँ, यह अवश्य है कि हम लोगों ने अपने आदर्श में कुछ गलत चीजों को भी स्थान दे रखा है। मनुष्य के सम्मुख सबसे बड़ा आदर्श अपने अपर्णको ही परिष्कृत कर पूर्ण और उत्कृष्ट बनाना है।’

‘यह तो अत्यन्त भव्य आदर्श है, लैरी !’

‘अगर आजकल के जमाने में रूढ़िवादी लोगों की जरा भी चलती तो वे आप जैसी को फाँसी तक दे बैठते। आपके लिए शायद सबसे सौभाग्य की बात है—निजी पैतृक आमदनी।’

‘उससे मेरा बहुत काम चला है और बिना उसके मैंने कदाचित् जितना काम किया है उसका लेश-मात्र भी न कर पाता। उस आमदनी की बदौलत मेरा काम पूरा हो चुका है और अब मैं उसे त्याग दूँगा।’

‘यह तो बेवकूफी होगी। अपने विचारादर्श के अनुसार रहने सहने के लिए आर्थिक स्वतन्त्रता बड़ी आवश्यक है।’

‘बिलकुल नहीं। यदि आर्थिक स्वतंत्रता रही तो जीवन-तिरर्थक ही रहेगा।’

मैं अपने असन्तोष को न छिपा सका।

‘भारतीय साधु-सन्तों के लिए यह ठीक हो सकता है क्योंकि रात में पेड़ के नीचे सो सकते हैं और दानियों की कृपा से अना कमरडल भर कर भोजन कर सकते हैं। अमरीका की जलवायु ऐसी नहीं जहाँ आदमी पेड़ के नीचे रात काट ले और सबेरे जीता-जागता बच जाय। अमरीका के बारे में मैं बहुत अधिक जानकारी तो नहीं रखता मगर इतना अवश्य जानता हूँ कि वहाँ के लोगों का मूल सिद्धान्त यह है कि अगर भोजन चाहते हो तो काम करो। लैरी ! अगर आपका यह नया ढर्रा लोगों ने देख लिया तो वे चैन से न रहने देंगे और किसी भी दिन वहाँ के लोग आपको भिखारियों की शिल्प-शाला में भरती कर देंगे।’

इतना सुन कर वह हँस-पड़े।

‘मैं यह भली भाँति जानता हूँ; और प्रत्येक व्यक्ति को अपने वातावरण के अनुकूल ही कार्य करना भी चाहिए। अमरीका पहुँच कर मैं काम में लग जाऊँगा; मुझे मोटर की मशीन बनाने का बड़ा शौक है और मैं किसी भी कारखाने में काम पा सकता हूँ।’

‘तो क्या वहाँ बैठे-बैठे उस शक्ति का दुरुपयोग नहीं होगा जो किसी अन्य कार्य में अधिक उपयोगी हो सकती है ?’

‘शारीरिक श्रम में मुझे रुचि है। जब-जब मैं अपने अध्ययन से ऊब उठा मैंने कहीं न कहीं मजदूरी शुरू कर दी जिसके कारण मेरी आत्म-शुद्धि होती गई और मुझमें नवजीवन आता हुआ प्रतीत होने लगा। आपने प्रसिद्ध दार्शनिक स्पिनोजा की जीवनी में पढ़ा होगा कि जब उन्हें अध्ययन से अरुचि हो जाती वे चश्मे के शीशे पर पालिश किया करते और फिर दूने उत्साह से दर्शन और तर्क पर विचार करने लगते। शारीरिक श्रम उनके मस्तिष्क को स्फूर्ति दिया करता था। उसी प्रकार जब मैं मोटर की मशीन ठीक करने लगता हूँ, उसके पहिए घड़ाता हूँ या उसका इंजन फिर से बैठा लेता हूँ तो मुझे बहुत संतोष प्राप्त होता है और मुझमें यह गर्व उदय होता है कि मैंने भी अपने हाथों कोई चीज बना कर रख तो दी। यह तो स्पष्ट ही है कि मैं जीवन भर मोटर के ही काम में नहीं लगा रहूँगा। मैं यह काम कुछ-कुछ भूल भी गया हूँ और मुझे अमरीका जाकर उसे फिर से सीखना पड़ेगा। फिर मैं ड्राइवर का काम ले लूँगा जिसके कारण मुझे देश-विदेश में घूमने का अवसर मिलता जायगा।’

‘कदाचित् आप यह भूल रहे हैं कि धन का सबसे बड़ा उपयोग हुआ करता है समय बचाने के लिए। जीवन इतना छोटा और फिर कितना काम करना रहता है ? एक क्षण भी बेकार खोना ठीक नहीं प्रतीत होता। पहले लोग पैदल जाते थे, फिर घोड़े गाड़ी पर, फिर मोटर पर—इसीलिए कि समय की वचत हो।’

लैरी मुस्कराये।

‘आपने बहुत ठीक कहा। यह तो मैं भूल ही गया था। यह समस्या तो बहुत शीघ्र हल हो जायगी जब मैं स्वयं एक टैक्सी खरीद लूँगा।’

‘क्या कहा ?’

‘यही कि मैं अन्त में टैक्सी चलाऊँगा-मगर न्यूयार्क में। केवल इसलिए कि वहाँ अनेक पुस्तकालय हैं। मुझे जीवन-यापन के लिए बहुत थोड़ी रकम चाहिए। फिर मैं केवल एक वक्त भोजन पर रह सकता हूँ और मुझे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं।’

‘कैसी बेवकूफी की बातें कर रहे हैं आप ! पागलपन की भी कोई हद होती है !’

‘इसमें पागलपन कैसा ! मैं तो बहुत समझदारी की बातें कर रहा हूँ और मेरा जीवन इस प्रकार बड़ी सरलता से व्यतीत हो जायगा। टैक्सी रख कर एक प्रकार से मैं स्वतंत्र भी हो जाऊँगा क्योंकि मैं उतने ही घन्टे काम करूँगा जितना मुझे रहने और खाने का खर्च निकालने में पर्याप्त होगा। बचा हुआ समय मैं अध्ययन और अन्य कामों में लगा सकूँगा और फिर यदि मुझे कहीं दूर जाना हुआ तो टैक्सी उठाऊँगा और एक, दो, तीन।’

‘मगर लैरी ! टैक्सी भी एक तरह से सरकारी बाण्ड के समान ही हुई !’ मैंने चिढ़ाने के उद्देश्य से कहा। ‘मालिक और ड्राइवर-दोनों हेसियत से पूँजीपति ही कहलादियेगा।’

लैरी हँस पड़े।

‘जी नहीं। मेरी टैक्सी मेरी जीविका का साधन-मात्र होगी। उसका उपयोग वही होगा जो योगों के कमण्डल और उसकी भोली का होता है।’

मैंने बाद-विवाद प्रयोजन-हीन समझा। धीरे-धीरे होटल में भीड़ बढ़ने लगी थी। एक व्यक्ति शाम के टहलने वाले कपड़े पहने हुआ आया और खाना खाने बैठ गया। उसके मुख पर उसी सन्तोष की छाया थी जो वासनालय में तृप्ति के बाद होती है। कुछ बुढ़े व्यक्ति भी जो रात में कम सोए थे शीघ्र ही उठ आकर काफी पी रहे थे और चश्मे को मस्तक पर चढ़ाए अखबार पढ़ने की चेष्टा कर रहे थे। कुछ नवयुवक जल्दी-जल्दी सड़-सड़प काफी पीकर बाहर जा रहे

थे; कदाचित् उन्हें दफ़्तर जाना रहा होगा। एक बुद्धी भी जल्दी जल्दी अन्दर आई और दो चार अखबार बेंच कर बाहर निकल गई। धीरे-धीरे कमरे में धूप भरती जा रही थी। एक ही मिनट बाद बिजली की बत्तियाँ बुझा दी गई। दो एक, दूर के कोने में, अंधेरा होने के कारण जलती छोड़ दी गई थीं। जब मैंने घड़ी निकाली तो साढ़े सात बज चुके थे। 'नाश्ता भी यहीं कर लेने में क्या हर्ज है।' मैंने पूछा !

लैरी को कोई आपत्ति न थी। मैं थक सा गया था परन्तु लैरी के मुख पर थकान का लेश भी न था। उनकी आँखें चमक रही थीं और उनके दमकते मुख पर उनकी ढलती आयु की कोई भी रेखा न थी। काफी पीते ही वह और भी चैतन्य हो गये।

'अगर आप मेरी एक सलाह माने तो मैं कुछ कहूँ—यद्यपि वह चीज ऐसी है जो मैं किसी को आसानी से देता नहीं।'

'वह आसानी से मैं लेता भी नहीं।' उन्होंने हँसते हुए कहा।

'अपनी जायदाद को निगटा देने के पहले कई बार शान्त चिन्त हो सोच लीजियेगा। निकली हुई जायदाद हाथ नहीं आती। ऐसा भी समय आ सकती है जब पैसे की आवश्यकता पड़े—अपने लिए या दूसरों के ही लिए—तब उस समय आपको घोर कष्ट होगा और अपनी बेवकूफी पर पछताना पड़ेगा।'

उत्तर देने के पहले उनकी मुखाकृति में कुछ घृणा की छाया थी—

'आप शायद पैसे की सहृत्ता मुझसे अधिक समझते हैं।'

'हो सकता है। कारण यही होगा कि आपके पास पैसा रहा है और मेरे पास नहीं रहा। उसका सबसे बड़ा उपयोग मनुष्य को समाज से स्वतन्त्र रखने में है। पास में जब पैसा होता है तो आप दुनियाँ को अँगूठा दिखा सकते हैं और आपको किसी की परवाह भी नहीं रहेगी: कोई खुश रहे या नाराज।'

‘मगर मैं तो किसी को अंगूठा दिखाना नहीं चाहता; और अगर मैं यह करना भी चाहूँ तो पैसे की कमी मुझे रोक किस प्रकार सकती है; बिना पैसे के भी मैं कह सकता हूँ कि मुझे किसी की परवाह नहीं। आपको नैसा स्वतन्त्रता देता है: मुझे वह बन्धन मालूम होता है।’

‘यह तो बेवकूफी या जिद ही है जिसका कोई उपचार नहीं?’

‘न सही। यह मैं अच्छी तरह जानता भी हूँ मगर मैं अपने मन को क्या करूँ; वह माने तब तो? फिर भी यदि मैं अपनी राय बदलना चाहूँ तो अभी समय भी बहुत है। मेरे एक चित्रकार मित्र ने अपना घर मुझे जाड़े भर रहने के लिए दे दिया है और मैं यहाँ से उसके पहले जाता भी नहीं।’

‘जाड़े में तो सूनसान हो जायगा; तीन महीने करियेगा क्या?’

‘मेरे पास कुछ काम आ गया है। मैंने कुछ सामग्री इकट्ठा की है और चाहता हूँ एक पुस्तक लिख डालूँ।’

‘विषय क्या है?’

‘जब छपेगी तो पता चल ही जायगा।’

‘अगर इच्छा हो तो पाण्डुलिपि मेरे पास भेज दीजिये, मैं उसके छपाने का प्रबन्ध करा दूँगा।’

‘आपको बेकार उलझन होगी। मेरे दो एक अमरीकी मित्र हैं जिनका अपना प्रेस है और उन्होंने उसे छापने का भार ले लिया है।’

‘अगर किताब ऐसे वैसे प्रेस ने छाप दी तो उसकी बिक्री ही क्या होगी और फिर उसकी अच्छी समालोचना भी न हो पाएगी।’

‘न तो मुझे उसे बेचने का चाव है और न उसकी अच्छी या बुरी समालोचना की परवाह। मैं तो उसे केवल इसीलिए छपवा रहा हूँ कि कुछ पतियाँ अपने भारतीय मित्रों को भेज दूँ और कुछ एक अपने फ्रांसीसी मित्रों को भेंट कर दूँ जो उस विषय में रुचि रखते हैं। पुस्तक कोई विशेष महत्व की भी नहीं। उसे छपाने में मेरा अभिप्राय

केवल यही है कि जमा की हुई सामग्री का कुछ न कुछ उपयोग हो जाय; और जब तक चीज छप कर सामने आती नहीं तब तक उसका कोई मूल्य भी नहीं जान पड़ता ।’

‘अच्छी बात है ! मैं भी एक प्रति की प्रतीक्षा में रहूँगा ।’

हम लोग जलपान कर चुके थे । खाने का बिल मंगा कर मैंने लैरी के सामने रखते हुए कहा—

‘अगर आपको अपना पैसा पानी में बहाना ही है तो भक मारिए—मेरे जलपान का दाम भी चुकाइये ।’

उन्होंने हंस कर पैसा दे दिया । बैठे-बैठे मेरी पीठ अकड़ गई थी । इतनी देर भी हो चुकी थी । बाहर निकलकर मैंने जाती हुई टैक्सी को आवाज देकर रोका—

‘कहिए तो घर तक पहुँचा दूँ ?’

‘नहीं, आप जाइए । मुझे पुस्तकालय में जाकर कुछ देर काम करना है फिर उसके बाद नदी में तैरने भी जाना है; उससे सारी थकावट दूर हो जायगी ।’

हाथ मिला कर हम दोनों विदा हुए । इधर मेरी टैक्सी ने भोंपू बजाया; मेरे सामने से ही लैरी लम्बे लम्बे कदम बढ़ाते सड़क पार कर रहे थे ।

सातवाँ परिच्छेद

१

छ मास व्यतीत हो चुके थे। अप्रैल का महीना था और मैं अपने कमरे की खिड़की के पास बैठा हुआ लिख रहा था कि मेरा खानसामा ऊपर आया और मुझसे कहा कि कुछ पुलिस के लोग मेरे गाँव के पास से आए हैं और मुझसे शीघ्र ही मिलना चाहते हैं। मैं कुछ आवश्यक पत्र लिख रहा था और ऐसे समय मेरा काम हर्ज होने पर मुझे क्रोध सा आ गया। पर मैं पुलिस की ओर से निश्चिन्त था। मैंने सरकार द्वारा हाल ही में बनाये हुए 'जनोद्धार फण्ड' में काफी रकम दे दी थी और उसकी रसीद मोटर की गद्दी के नीचे ही बड़ी सावधानी से रख दी थी कि यदि मैं कभी गलत रास्ते मोटर चलाते पकड़ा जाऊँ तो रसीद शान से दिखला कर छुटकारा पा जाऊँगा। मेरा अनुमान हुआ कि कदाचित मेरे किसी नौकर ने कोई गलती की होगी जिसकी जाँच के लिए ये लोग आए हैं। परन्तु उससे भी मुझे कुछ विशेष भय नहीं हुआ क्योंकि पास के धाने के सभी अफसरों से मेरी मित्रता थी और जब-जब वे मेरे यहाँ आए बिना दो एक गिलास शराब पिलाए

उनको मैंने कभी भी विदा नहीं किया था। बाद में पता चला कि मुझसे मिलने का प्रयोजन बिलकुल ही दूसरा था।

जब हम लोग हाथ मिला चुके और एक दूसरे के स्वास्थ्य के बारे में शिष्टाचार के अनुसार बातें कर चुके तो उनमें से एक ने जिसकी बड़ी शानदार मूँछें थीं अपने कोट की भीतरी जेब से एक डायरी निकाली और उँगलियों में थूक लगा-लगा कर पन्ने उलटने शुरू किये। एक पन्ने पर रुक कर उसने पूछा—

‘मोफी मेकडानल को आप जानते हैं?’

‘इस नाम की एक स्त्री से मेरा परिचय तो था?’

‘अभी-अभी टूलन नगर के पुलिस नाके से हम लोगों के पास टेलीफोन आया है कि आपको लेकर हम लोग शीघ्र ही वहाँ आ जायें।’

‘मगर काम क्या है? मेरा उसका कोई घनिष्ठ परिचय नहीं था।’ मैंने जान लुड़ाने की इच्छा से कहा। यकायक मुझे विचार आया कि शायद वह कहीं अफीम वगैरह के मामले में फँस गई होगी—मगर मैं उस क्रिसे में क्यों कर आता हूँ यह पहेली मैं सुलझा न पाया।

‘इससे हम लोगों को कोई वास्ता नहीं। यह निश्चय है कि आपका और उसका परिचय था; वह प्रायः चार या पाँच दिन से गायब थी और कल ही एक लाश बन्दरगाह के पास बरामद हुई है और पुलिस को शक है कि शायद वह उसी की लाश है। आपको उसे पहचानना है।’ उनके स्वर में कुछ कर्कशता भी थी।

मेरे हाथ पैर सुन्न से हो गए। मुझे अधिक आश्चर्य तो नहीं हुआ क्योंकि मैं हमेशा सोचा करता था कि वह कभी न कभी अपने दुःख के वशीभूत हो आत्म-हत्या कर लेगी।

‘मगर उसके कपड़े-लत्ते और उसके पास के कागजों से तो उसे पहचाना जा ही सकता था।’

‘लाश बिलकुल नंगी थी; रार्दन घड़ से अलग थी।’

‘हे ईश्वर !’ मेरे मुँह से आह निकल गई । मैं जानता था कि अब मेरा छुटकारा नहीं होगा और मैं चुपचाप चलने पर प्रस्तुत हों गया । टूलन नगर वहाँ से बहुत दूर न था और गाड़ी शाम को पाँच बजे जाती थी । मैंने उन लोगों को यह कह कर विदा किया कि मैं पाँच बजे की गाड़ी से वहाँ पहुँच जाऊँगा । उनका आदेश हुआ कि मैं स्टेशन से सीधे पुलिस-थाने पर जाऊँ । सबेरे का काम ज्यों का त्यों रह गया । पाँच बजे ही मैं थोड़ा बहुत सफरी सामान ले स्टेशन चला ।

२

थाने पर पहुँचते ही मैं थानेदार के कमरे में पहुँचाया गया । वह एक लम्बे, चौड़े आदमी थे और एक ऊँची कुर्सी पर बैठे हुए थे । उन्होंने कदाचित् स्वभावतः मेरी ओर संनिध दृष्टि से देखा परन्तु ज्यों ही मेरे कोट के कालर, जिस पर मैंने सरकारी पदक जान बूझकर लगा लिया था, उनकी निगाह पड़ी त्योंही वह उठ बैठे और क्षमा-याचना करने लगे कि मुझे उनके कारण यहाँ आने कष्ट करना पड़ा । मैंने भी उसी लहजे में आश्वासन दिया कि मैं उनकी सेवा के लिए सदैव प्रस्तुत हूँ । इसके बाद वह मतलब पर उतर आए और उनके बात चीत का ढङ्ग फिर अशिष्ट हो चला ।

‘बड़ा उलझा हुआ मामला है । ऐसा मालूम होता है कि यह स्त्री जिसका नाम सोफी है अत्यन्त बदचलन थी । वह शराबी थी; अफीम खाती थी और अतृप्ति के रोग से ग्रसित थी । वह हर तरह के व्यक्तियों के साथ सोया करती थी जिनमें यहाँ के कुछ गुण्डे-बदमाश भी थे । आरक्षी अवस्था और सामाजिक श्रेष्ठता का व्यक्ति उससे सम्पर्क रखे मेरी समझ में नहीं आता ।’

पहले तो मेरे मन में आया कि उन्हें फटकार कर कहूँ कि इसमें

उनके बाप का कया इजारा मगर मैंने बहुत से जासूसी उपन्यास पढ़ कर यह सबक सीख लिया था कि पुलिस से कभी भी उलझना नहीं चाहिए—

‘मेरा उसका कोई विशेष परिचय नहीं था। बहुत दिन हुये जब वह लड़की ही थी मैंने उसे शिकागो में एक बार देखा था जहाँ उसने एक सम्पन्न व्यक्ति से विवाह कर लिया था। उसके बाद मैंने एक बार फिर उसे पेरिस में देखा।’

मुझे आश्चर्य इस बात पर था कि उन्हें यह सूचना कैसे मिली कि मैं सोफी को जानता था। इतने में ही उन्होंने एक पुस्तक मेरे सामने पटक दी।

‘यह पुस्तक उसके कमरे में पाई गई। इस पुस्तक पर जो समर्पण लिखा है अगर आपका के हाथ का है तो आपका परिचय उससे जरा गहरा ही मालूम होता है—जरा पढ़िए तो!’

यह वहीं पुस्तक थी जो सोफी को पसन्द आ गई थी और उसका मन रखने के लिए मैंने हस्ताक्षर करके उसके यहाँ भिजवा दिया था। मैंने अपना लिखा हुआ समर्पण पहिचान लिया—

“मधुरिमे ! ऊषा का अह्वान—

कहीं सुन पाता मृदुल गुलाब !!!”

‘इससे अगर आप ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मैं उसका प्रणयी रहा हूँ तो आपकी सरासर भूल है।’

‘हम लोगों को इससे बहस नहीं। और आप बुरा न मानें तो मैं यहाँ तक कहने का तैयार हूँ कि यदि आपका और उसका मामूली परिचय होता तो आप उसे—‘मधुरिमे’ कह कर न सम्बोधित करते।

‘थानेदार सहेब !’ मैंने कुछ व्यंग से कहा,—‘यह पंक्ति एक श्रेष्ठ फ्रांसीसी काव्य की कविता की पहली पंक्ति है और मेरा अनुमान है कि आप ऐसे शिक्षित और मभ्य व्यक्ति का भी कर्तव्य था कि कम

से कम उसे अवश्य पढ़ लेते। सोफी को पूरी कविता याद थी और मैंने पहली पंक्ति लिख कर उसका ध्यान आगे की पंक्तियों की ओर आकर्षित किया था; और उसका तात्पर्य यह था कि जिस प्रकार का जीवन वह व्यतीत कर रही थी वह अस्पष्ट नहीं।'

‘हाँ! हाँ! मुझे अब याद आया। मैंने यह कविता स्कूल में पढ़ी थी; मगर पुलिस के काम-काज में रह कर काव्य विस्मृत हो जाता है।’

मैंने पहला छन्द पढ़ दिया; मगर मुझे विश्वास था कि साहब बहादुर ने कवि का नाम भी न सुना होगा—कविता पढ़ने और याद करने की कौन कहे। मुझे पूरी तरह से मालूम था कि वह अन्तिम छन्द भी पहचान न पाएँगे जिसका आदेश है कि व्यक्ति पुण्य को छोड़ सभी मार्गों को अपना सकता है।

‘उसके कमरे में कुछ जासूसी उपन्यास और कविता की दो एक पुस्तकें मिली हैं।’ कुछ रुक कर वे बोले—

‘पता नहीं ये अंग्रेजी लेखक फ्रांसीसी भाषा में क्यों नहीं लिखते जिससे हम सब लोग भी पढ़ सकते।’

मैं कहता ही क्या; चुप ही रहा।

यकायक उन्होंने अपना डायरी के अन्दर से एक चित्र निकाल कर मेरे सामने ला रखा।

‘क्या आप जानते हैं यह कौन हैं?’

मैं फौरन ही लैरी को पहचान गया। वह तैराक की पोशाक पहने हुए थे। पहले तो मैंने सोचा ‘नहीं’ कह दूँ क्योंकि मैं यह नहीं चाहता था कि लैरी इस गन्दे कार्य के क्षपेट में आ जाय; परन्तु विचार करने के उपरान्त मैंने सोचा कि अगर पुलिस को सही बात का पता लग गया तो वे और भी सन्देहपूर्वक पूछताछ शुरू करेंगे मैंने कहा—

‘यह अमरीकी नवयुवक है; पूरा नाम है लारेन्स डार्नेल।’

‘केवल यही चित्र उस स्त्री के सामान में मिला। इन दोनों का सम्बन्ध क्या था?’

‘ये दोनों वचन के साथी थे। साथ ही साथ दोनों शिकागो में रहे थे।’

‘मगर यह चित्र तो अभी हाल ही का लिया जात होता है। कदाचित किसी फ्रांसीसी बन्दर गाह के पास का चित्र है यह। इसका पता आसानी से चल सकता है। यह व्यक्ति करता क्या है?’

‘वह लेखक है।’ मैंने गर्व से कहा। मगर थानेदार ने अपनी तयारी चढ़ा कर वह जताया कि इस व्यवसाय को वह सम्मानपूर्ण नहीं समझता। मैंने आशय समझते ही बात जोड़ दी—

‘बहुत पैसे वाला है।’

उनको व्यवसाय के सम्मानपूर्ण होने का आभास मिला गया। तयारी उतर गई।

‘वह आजकल है कहाँ?’

मैंने फिर संचा छिपा जाऊँ। मगर यह जानते हुये कि और चाहे जो भी खराबी फ्रांसीसी पुलिस में हो वे अपने अपराधी को खोद निकालते हैं; मैंने स्थान बतला दिया। लैरी ने हाल ही में मुझे एक गाँव से पत्र लिखा था। वहीं पर रह कर वह पुस्तक लिखने वाले थे। थानेदार ने सोचकर कहा—

‘मैं पुलिस को खबर किए देता हूँ। उनको यहाँ बुला कर पूछने पर शायद कुछ और पता चल जाय।’

मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि थानेदार साहेब यह समझ रहे थे कि लैरी से मिलते ही हत्यारे का पूरा पता चल जायगा और इस विचार के आते ही मुझे हंसी आने लगी। मुझे पूर्ण विश्वास था कि लैरी आते ही जब अपनी निर्दोषिता प्रमाणित कर देंगे तब थानेदार का मुँह देखने लायक होगा। मैं सोफी की निष्ठुर हत्या के विषय में बहुत कुछ जानने के लिए उत्सुक था परन्तु थानेदार ने लम्बी चौड़ी बातें

करवही बतलाया जो मैं पहिले ही से जानता था। दो मस्जिदों ने लाश तैरते देखा था और उन्होंने ही उसे निकाल कर पुलिस के सिपुर्द कर दिया था। लाश को बिलकुल नंगी करार देना स्थानीय पुलिस की केवल रोमांचक कल्पना ही थी। हत्यारे ने वदन पर चोली और कमर में लिपटा हुआ साया छोड़ दिया था। लाश पर कोई पहचान न थी इसलिए स्थानीय पुलिस ने पत्रों में विज्ञप्ति छपा दी थी और सम्पूर्ण वर्णन लिख दिया था। विज्ञप्ति पढ़ कर थाने पर एक बुड्ढी स्त्री आई जो किसी गली में स्थित वासनालय की मालकिन थी। अपने घर की छोटी-छोटी कोठरियाँ वह किराए पर इसलिए देती थी कि वहाँ आकर लोग स्त्रियों अथवा लड़कों द्वारा अपनी तृप्ति करते। बुड्ढी पुलिस की दलाली भी करती थी। समय-समय पर वह पुलिस थाने पर उन व्यक्तियों के नाम भी लिखा आती जो उसके यहाँ कुछ घंटों या मिनटों के लिये किराएदार होजाते थे। बन्दरगाह पर सोफी से जब मेरी भेंट हुई थी तो वह इस वासनालय से बुड्ढी द्वारा निकाल दी गई थी क्योंकि उसकी एक ही कोठरी में रातदिन पुरुषों और लड़कों का लगातार आना-जाना वह भी सहन न कर सकी थी। इसके साथ-साथ बुड्ढी को कुछ घंटों के लिए कोठरी किराए पर देना कहीं लाभदायक था और सोफी ने उसे महीने भर का पेशगी किराया देकर कोठरी ले ली थी। वह थाने पर रपट लिखाने आई थी कि उसकी एक किराएदार चार पाँच दिन से गायब थी। पहले तो उसका अनुमान हुआ कि वह कहीं घूमते-फिरते चली गई होगी क्योंकि जब फ्रांसीसी जहाज मार्सेल पर आ लगते तो हर उम्र की स्त्रियाँ सजधजकर अपना-अपना प्रणयी चुनने वहाँ आ खड़ी होती थीं। शायद वह भी उसी चक्कर में कहीं चली गई हो। मगर जब तसचे पत्रों में विज्ञप्ति देखी तो उसे विचार हुआ कि हो न हो वह स्त्री उसी की किराएदार ही होंगी जो कई दिनों से गायब थी। उसने लाश पहचान ली थी। वही सोफी स्त्री।

‘जब लाश पहचानी जा चुकी है तो मुझे यहाँ बुलाने में क्या प्रयोजन था आपका ?’ मैंने पूछा ।

‘यह बुद्धि सखी बहुत सच्ची, प्रतिष्ठित और सम्पन्न है और उसका चरित्र श्रेष्ठ है; परन्तु फिर भी हम लोगों को अनुमान हुआ कि कहीं किसी विशेष कारणवश वह बात न छिपा रही हो और अपने बचाव के लिए कहीं भूठ न बोल रही हो । इसीलिये हम लोगों ने आप जैसा प्रतिष्ठित व्यक्ति चुन कर कानून की दृष्टि से साबित कर लिया कि वह सोफी की ही लाश है ।

‘क्या आशा है कि आप हत्यारे का पता लगा लेंगे ?’

थानेदार ने असमंजस की मुद्रा बनाई—

‘हम लोगों का काम है अनुसन्धान करना । जिस-जिस रेस्तरां, जिस-जिस शराब की गद्दी, जिस-जिस अफीम की दूकान पर वह जाया करती थी वहाँ के वहाँ के अनेक लोगों से हमने पूछा ताछा की है । हो सकता है किसी विदेशी नाविक ने ईर्ष्यावश उसकी हत्या कर डाली हो और भाग गया हो । पता चला है कि उसके पास अपने प्रेमियों को तृप्ति-प्रलभन देने के लिए काफी रकम भी रहा करती थी—शायद उसी के लिए किसी पर खून सवार हो गया हो । संभव है कुछ लोग हत्यारे को जानते भी हों मगर उनका आपस में इतना जबरदस्त गुट होगा कि वे अपनी जबान नहीं खोलेंगे । हाँ, खोलेंगे तभी जब उनका कोई निजी लाभ दिखाई देगा । जिन लुच्चे-लफंगों के साथ वह रहा करती थी उसका परिणाम और हो ही क्या सकता था ।’

इस सम्मति पर मैं कहता ही क्या । थानेदार ने मुझसे दूसरे दिन नौ बजे आने के लिये कहा क्योंकि उन्ह समय तक डाक्टरों ने लाश की जाँच पड़ताल कर ली होगी । उसके बाद ही हम लोग अस्पताल जाकर मुर्दा-घर में लाश को पहचानेंगे ।

‘और उसको दफन करने की आपने कोई व्यवस्था सोची ?’ मैज पर पेन्सिल टक, टक, टक की आवाज करने के बाद वह बोले ।

‘यदि आपने लाश पहचान ली और मित्रता के नाते उसके दफन करने का भार उठाने को भी आप प्रस्तुत हुए तो लाश आपके हवाले कर दी जायगी और प्रमाण-पत्र दे दिया जायगा ।’

‘मैं चाहूँगा कि शीघ्र ही प्रमाण-पत्र मिल जाय ।’

‘मैं समझा । अच्छी बात है । अच्छी बात है ।’ उन्होंने धवराकर कहा—‘बड़ी दुःखी स्त्री थी बेचारी ।’

‘जितनी जल्दी हो उसे घरती की गोद में चिरनिद्रा में सुला देना चाहिए । हाँ ! मुझे याद आया—मेरे पास अंत्येष्टि-क्रिया करनेवाले एक ठेकेदार का पता मालूम है जो आपकी इच्छानुसार सब व्यवस्था कर देगा । वह बहुत सस्ते में और सफाई से सब काम करा देता है । मैं उसको दो शब्द लिखे भी देता हूँ और वह आपको कोई शिकायत का अवसर नहीं देगा ।’

मुझे पूरा विश्वास था कि थानेदार साहेब कुछ न कुछ कमीशन उससे अवश्य झटक लेंगे फिर भी मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और विदा होकर उसी ठेकेदार के घर सीधा जा पहुँचा । ठेकेदार ने व्यवसायी दक्षता से बातचीत की । मैंने लाश को रखने का बक्ख चुन लिया जो न तो मामूली था और न बहुत कीमती । फूलों के तीन चार माले मंगवा लिए जिसका जिम्मा भी ठेकेदार ने अपने ऊपर ही ले लिया और दूसरे दिन दो वजे मृत-शरीर को ढोने वाली गाड़ी अस्पताल पहुँचाने का उन्होंने वचन भी दिया ।

‘कदाचित् श्रीमती प्रोटेस्टेन्ट धर्मावलम्बी थीं ?’ उन्होंने पूछा । दफन करने के पहले पादरी बुला कर अन्तिम आशीर्वाद दिलाने के विषय में उन्होंने मेरी अनुमति माँगी जो मैंने सहर्ष दे दी । चूँकि मैं परदेशी था उन्होंने मुझसे पेशगी रकम माँगने में जरा कम संकोच किया । जितनी रकम मैंने सोच रखी थी उससे कहीं ज्यादा उन्होंने माँगी और यह सोच कर कि थानेदार साहेब ने उनकी प्रशंसा की है मैंने बिना संकोच उतनी रकम उनके हाथ रख दी । मुँह माँगी रकम

मुझे देते हुए देखकर उन्हें पहले तो विस्मय और तत्पश्चात् कुछ असन्तोष सा हुआ ।

रात काटने के लिए मैंने होटल में एक कमरा ले लिया और दूसरे दिन नियत समय नौ बजे थाने जा पहुँचा । मुझे कुछ देर वहाँ रुका रहना पड़ा; उसके बाद मुझे थानेदार से मिलने की आज्ञा मिली । पिछले दिन जिस कुर्सी पर मैं बैठा था उसी पर लैरी बैठे हुये थे । उनके मुख पर गंभीर विह्वलता थी । थानेदार ने मेरी वैसी ही आवभगत की जैसे उन्हें कोई बिछुड़ा साथी मिल गया हो ।

‘देखिए, श्रीमान जी ! आपके मित्र ने मेरे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर, जिसे पूछना मेरा कर्तव्य था, बड़ी सफाई से दिया और मुझे उनकी स्पष्टवादिता पर पूर्ण विश्वास है कि उन्होंने मृतक को अठारह महीने से नहीं देखा था । जो फोटो उसके पास मिली वह इन्होंने ही उसे एक दावत के अवसर पर दिया था । जिस गाँव से यह आये हैं वहाँ के नवयुवकों पर मेरी बड़ी श्रद्धा है । मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि मैं स्वयं मानवचरित्र का अच्छा ज्ञाता हूँ और मुझे इन्हें देखते ही इनके सच्चरित्र पर विश्वास हो गया । इनके वचन के साथी की मृत्यु पर मैंने अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट की है । कितने श्रेष्ठ समाज में पालित-पोषित होकर भी उसकी यह गति हुई !!! यही जीवन है । इसमें किसी का चारा नहीं । अच्छा, अब मेरे मित्रों ! मैं आप लोगों के साथ अपना चपरासी भेजता हूँ जो आपको अस्पताल ले जायगा । वहाँ जाकर आप मृत-शरीर पहिचान लें । आप लोगों को भूख भी लगी होगी क्योंकि खाने का समय भी आ गया है । हाँ ! मैं आपको यहाँ के सबसे अच्छे रेस्तराँ का नाम तो बताना भूल ही गया । लीजिए यह कार्ड है— पता लग जायगा; थोड़ी शराब भी जरूरी होगी । इतने भयानक अनुभव को भुलाना ही चाहिए ।’

विदा देते समय थानेदार साहेब की बाछें खिल गई थीं ।

हम लोग चपरासी लिए हुए अस्पताल पहुँचे । मुर्दाघर खाली

था; अलग पत्थर पर केवल एक लाश थी। वहाँ के जमादार ने लाश का मुँह खोल दिया। दृश्य रुचिकर न था। समुद्र के खारे जल ने रंगे हुए घुंघराले बालों को सीधा कर, उनका रंग फीका बना, सर पर चारों ओर चिपटा दिया था। मुँह बुरी तरह सूज गया था। उसे देख कर बीमत्स भयानकता का अनुभव हुआ। परन्तु इसमें सन्देह न था कि वह सोफी थी। जमादार ने ढका हुआ कपड़ा और भी नीचे सरका दिया और हम लोगों ने वह देखा जिसे देखने की इच्छा न थी—छुरे का निशान—इस पाह से उस पार तक था। एक बार में ही गर्दन साफ कर दी गई थी।

हम लोग फिर थाने वापस गए और आवश्यक प्रमाण-पत्र इत्यादि लेकर ठेकेदार के हवाले कर दिए।

‘अब चलिए कुछ पी लें।’ मैंने कहा।

जब से लैरी थाने से चले थे उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। हम दोनों उसी रेस्तरां में जाकर बैठ गए जहाँ पर मैंने सोफी को खाना खिलाया था। बन्दरगाह पर तेज हवा चल रही थी। समुद्र की लहरें भूरी और सफेद गाज किनारे पर इकट्ठा करने का असफल प्रयास करती जा रही थीं। मछली मारने के काम में आने वाली नौकाएँ डगमग-डगमग कर रही थीं। सूर्य की रश्मियाँ भी तेजी पकड़ती जा रही थीं और बन्दरगाह के पास की सभी वस्तुओं पर चोंदी की पालिश सी होती दिखाई दी।

मैंने ब्रैन्डी और सोडा पीना आरम्भ किया मगर लैरी का गिलास व्योँ का व्योँ रखा था। वह चुपचाप ध्यान में मग्न बैठे थे और मैंने उन्हें छेड़ना उचित न समझा।

‘हम लोगों को ठीक दो बजे अस्पताल पहुँचना है; अच्छा हो कि खाना खाते चलें।’ मैंने प्रस्ताव-रूप में कहा।

‘मुझे भी भूल लगी है—चलिए खा ही लिया जाय।’

रेस्तरां पहुँच कर मैंने खाना मंगवाया। मैं जानता था कि लैरी

निरामिष भोजन ही पसन्द करेंगे इसलिये मैंने उनके लिए अन्धे, और शोरबेद्वार बड़ा भींगा मंगवाया और विदेशी शराब की सूची मंगा कर आर्डर दे दिया। लैरी के सामने गिलास सरकाते हुए मैंने कहा—

‘भक भारिये और पीना शुरू करिये—बिना इसके जबान नहीं खुलेगी।’

उन्होंने आदेश मानकर बिना संकोच गिलास उठा लिया।

‘श्री गणेश कहा करते थे कि निःशब्द वार्तालाप सबसे श्रेष्ठ होता है।’

‘वह तो विश्व-विद्यालय के सभी आचार्य सदैव किया करते हैं।’ मैंने हँसते हुए कहा।

‘मुझे डर है कि अन्त्येष्टि क्रिया का सारा व्यय आपको ही संभालना पड़ेगा ? मेरे पास कुछ नहीं है।’

‘उसके लिए मैं पहले से तैयार हूँ।’ मैंने उत्तर दिया। यवायक उसका तात्पर्य मेरी समझ में आया। ‘तो शायद सारी जायदाद इधर उधर दे बैठे—क्यों ?’

वह क्षण भर चुप रहे। उनके मुख पर शान्त मुस्कान थी।

‘पाई-पाई बांट चुका। केवल उतनी ही रकम है जो मुझे जहाज की यात्रा करा देगी।’

‘इस बार किधर ?’

‘आजकल जहाँ मैं रह रहा हूँ उसके पास ही मेरा एक पुराना मित्र रहता है जिसने मुझे न्यूयार्क मेजने का भार ले लिया है और बिदा के समय मैं अपनी पुरानी मोटर उसे भेंट कर दूँगा। जिस समय मैं अपनी यात्रा आरम्भ करूँगा उस समय मैं सबसे अधिक स्वतन्त्र व्यक्ति रहूँगा। मेरे पास पढ़ने हुए कपड़े होंगे और एक झोला। वहाँ पहुँच कर काम मिल ही जायगा।’

‘स्वतन्त्र तो अवश्य रहिएगा। मगर आपकी पुस्तक का क्या हुआ ?’

‘बूढ़ तैयार होकर छुप भी गई। मैंने उन मित्रों की सूची बना ली है जिन्हें भेंट-स्वरूप प्रतियाँ भेजना है। आपकी प्रति एक मा दो दिन में आती ही होगी।’

‘बहुत बहुत धन्यवाद !’

हम लोगों का भोजन शीघ्र ही समाप्त हो गया और बातें भी कुछ अधिक नहीं करनी थीं। मैंने काँफी का प्याला उनकी ओर बढ़ाया। उन्होंने अपना पाइप सुलगा कर लम्बा कश खींचा। मैं उनकी ओर विचार-पूर्ण दृष्टि से देखता जा रहा था और निगाह मिलते ही उन्होंने शरारत से मेरी ओर देखकर कहा—

‘अगर आप समझते हैं कि मैं अश्वल दजें का बेवकूफ हूँ तो निस्संकोच कह डालिए मैं जरा भी बुरा नहीं मानूँगा।’

‘कहने की तो यही इच्छा होती है मगर कह नहीं पाता। मगर मैं सोच यह रहा था कि कहीं बिवाह हो गया होता, बच्चे होते, परिवार बढ़ता तो आपका जीवन कहीं श्रेयस्कर होता।’

वह मन्द हँसी हँसे। मैं उनकी हँसी और उनके मुस्कान का विवरण कई बार देख चुका हूँ—उसमें एक विचित्र सरलता, अद्भुत मधुरता और हृदयग्राही विश्वास का ऐसा संकेत होता जो देखते ही बनता था। इस समय उस मुस्कान में उदासीन कोमलता का भाव था।

‘अब तो उसके लिए बहुत देर हो गई। मैं केवल एक ही स्त्री से बिवाह कर सकता था। वह थी सोफी।’

‘उस बेचारी का भी क्या ?’ उन्होंने वाक्य अधूरा ही रहने दिया।

मैंने उनकी ओर बहुत आश्चर्य से देखा।

‘यह सब कुछ देखने के बाद भी आपकी यही इच्छा बनी रही ?’

‘उसकी आत्मा बड़ी सरल थी—अत्यन्त मधुर, उत्साहपूर्ण, दीर्घशिखा की तरह ऊपर की ओर अग्रसर होती हुई ! उसके आदर्शों में महान उदारता थी। उसका हृदय था आकाश की तरह विशाल !’

उसके मरण में भी एक विचित्र प्रकार की भव्यता थी—चहिए वह दुःस्वन्तक ही क्यों न रही हो ।’

मैं चुप था—जानता भी न था कि इस प्रकार की विचित्र समालोचना प्रस्तुत की जायगी ।

‘तब उससे विवाह कर क्यों नहीं लिया ?’

‘वह अन्त तक सरलता की प्रतिमूर्ति रही—बालिका—भोली बालिका समान ही उसने मुझे आकर्षित किया । मैं आप से सत्य कहता हूँ कि जब उसके दादा के उद्यान में चीड़ के वृक्षों के नीचे बैठे-बैठे मैं साथ-साथ कविता पढ़ा करता था तो मुझे यह जरा भी आभास नहीं मिला कि उस छोटी, भोली बालिका में इतनी सुन्दर आत्मा निवास कर रही है ।’

मुझे इस बात पर और भी अधिक आश्चर्य था कि उन्होंने उस अवसर पर आइजाबेल का नाम तक नहीं लिया । उन्हें याद तो अवश्य ही आया होगा कि आइजाबेल से ही उनका विवाह निश्चित सा था । परन्तु उन्होंने उस घटना को कदाचित् दो अनुभव-हीन युवक-युवती का अस्थिर प्रेमालाप ही समझा और जरा भी नहीं अनुभव कर पाया कि वह बरसों से उनके लिए घुट-घुट कर रो रही थी ।

अस्पताल चलने का समय आ गया था । लैरी की ही पुरानी टूटी-फूटी मोटर पर हम लोग अस्पताल पहुँचे । ठेकेदार ठीक समय पर पहले से ही मौजूद था । जिस तत्परता और आग्रहपूर्ण दक्षता से उसने सारा कार्य निपटाया उससे हम लोगों को संतोष के सिवाय और हो ही क्या सकता था । आकाश पर धुँधली गर्द छाई हुई थी और हवा तेजी से बह कर उसे उड़ाने का प्रयत्न कर रही थी जिसके कारण मोरपक्षी के वृक्ष सिहर उठते थे । ऐसे ही भयावह और निष्ठुर वातावरण में सोफी ने अन्तिम-शय्या ग्रहण की । सब कार्य समाप्त करने के बाद ठेकेदार ने हम दोनों से हाथ मिलाया ।

‘श्रीमान । कार्य सम्पन्न हो गया । आशा है आप सन्तुष्ट हुए

होंगे ?' उसने विनत हो कहा ।

‘अवश्य ।’ मैंने गंभीर भाव से कहा ।

‘श्रीमान से मेरी विनय है कि जब आवश्यकता हो सेवक को स्मरण किया जाय । मैं दूर-दूर भी सारी व्यवस्था सन्तोष-प्रद रूप से कर सकता हूँ ।’

मैंने उसे धन्यवाद दिया । जब हम लोग कबरिस्तान के फाटक पर आए तो लैरी ने पूछा कि अब कोई काम बाकी तो नहीं रहा ।

‘कोई खास नहीं ।’

‘तब तो मैं शीघ्र से शीघ्र गाँव लौट जाना चाहता हूँ ।’

‘अच्छी बात है; मगर मुझे होटल के पास उतार तो दीजिए ।’

जब तक हम दोनों मोटर में बैठे रहे वह एक शब्द भी नहीं बोले । होटल पहुँच कर मैं उतर पड़ा, हाथ मिलाया और विदा ली । होटल का किराया चुका कर मैं स्टेशन चल दिया । चार घन्टे बाद मैं अपने घर आ पहुँचा ।

३

कुछ ही दिनों बाद मैं इंगलिस्तान के लिये रवाना हो गया । मेरा इरादा था कि सीधे ही जाऊँगा मगर जो दुर्घटना मैं अपनी आँखों देख चुका था उसके बाद आइजाबेल से मिलने की मुझे विशेष कर बड़ी उत्कण्ठा हुई । मैंने सोचां पेरिस में चौबीस घन्टे के लिये अवश्य रुकूँगा । मैंने आइजाबेल को तब दिया कि मैं दोपहर तक पहुँचूँगा और रात को खाना उसके साथ ही खाना चाहूँगा । जब मैं अपने होटल पहुँचा तो मुझे उसका पत्र मिला जिसमें उसने लिखा था कि भे और वह दोनों बाहर दावत खाने जा रहे हैं और आंगरे मैं पाँच बजे के बाद आ सकूँ तो वह घर पर ही रहेगी ।

सर्दी काफी थी । पानी भी रुक रुक कर ज़ोरों से बरस जाता था

मेरा अनुमान था कि पानी बरसने के कारण ग्रे नियमानुसार गोल्फ खेलने नहीं गया होगा और घर पर ही मिलेगा। यह परिस्थिति मुझे रुचिकर नहीं थी क्योंकि मैं आइजाबेल से अकेले में ही मिलना चाहता था। मैं ज्योंही पहुँचा त्योंही जो पहली बात उन्होंने कही वह यह थी कि ग्रे बाहर गये हुए हैं और शायद अपने मित्रों के साथ ताश खेल रहे होंगे।

‘मैंने उनसे कह दिया था कि अगर वह जल्दी आएँगे तभी आपसे भेंट होगी अन्यथा नहीं। खाना खाने हम लोग साढ़े भौ बजे के पहले नहीं जायेंगे इसलिये तब तक रुक काफी है! मुझे आपको बहुत सी बातें बतलानी हैं।’

वे इलियट का सारा सामान बेच चुके थे। कुछ एक चित्र रह गए थे जो आइजाबेल ने अपने नये घर में प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये बचा रखे थे।

‘मेरे विचार से चाचा इलियट काफी रूढ़िवादी थे। कहीं उनके चित्र आधुनिक चित्रकारों के होते तो काफी पैसा मिल जाता।’

मैंने हाँ, हाँ, कर दिया। आइजाबेल को सौभाग्य से मिली हुई रकम के बल पर ग्रे नया व्यवसाय करना चाहता था और उसे एक नई कम्पनी का उपसभापति भी चुन लिया गया था।

‘मैं चाहती हूँ कि हम लोगों का नया बङ्गला जहाँ हो वहाँ बाग बगीचा भी हो जिसमें ग्रे घूम फिर कर स्वास्थ्य ठीक रख सकें। फिर मुझे दो एक बड़े हाल-कमरे भी चाहिए जहाँ मैं मित्रों को खिजा पिला सकूँ।’

‘क्या आप इलियट की सब मेज-कुर्सियाँ इत्यादि नहीं ले जायेंगी?’

‘सामान तो बहुत दकियानूसी है, मैं उन्हें बेचकर नए फैशन के बनवाऊँगी। न्यूयार्क पहुँच कर मैं सबसे लोकप्रिय चित्रकार को घर सजाने का ठेका दे दूँगी।’

इतने में खानसामा ने शराब की बोतलें ला रखीं। आइजबेल सहज सुबुद्धि से जानती थी कि पुरुष ही ठीक प्रकार से मिलवा-शराब ढाल सकते हैं और यह जान कर उसने मुझसे आग्रह किया कि मैं ही दोनों के लिए एक-एक गिलास तैयार करूं। मैंने दो तीन शराबों को मिश्रित कर ऐसी मिलवा शराब तैयार की कि जिसे पीकर एक बार देवता भी अमृत-पान भूल जाय। मैंने गिलास उसके हाथ में दिया ही था कि मेरी निगाह दूसरी मेज पर पड़ी।

‘अरे यह तो लैरी वाली पुस्तक है !’

‘हाँ, यह आजि सवेरे की ही डाक से आई है। मगर मुझे इतना काम रहा है कि मैं अभी तक उसके पन्ने भी नहीं फाड़ पाई। परसों से चाय और दावत का ऐसा तांता लगा हुआ है कि अवकाश ही नहीं मिला।’

मैंने सोचा कि देखो ! बेचारा लेखक महीनों लगा कर किताब लिखता है और अपना खून सुखा कर उसे छपाता है और लोग उसे डाल रखते हैं और तभी पढ़ते हैं जब उन्हें कुछ और करना नहीं रह जाता है। पुस्तक तीन सौ पृष्ठ के करीब थी—छपाई सुन्दर, जिल्द आकर्षक !

‘आपको तो कदाचित् मालूम ही होगा कि लैरी जाड़े भर एक गाँव में ही रहे हैं ? क्या कभी उनसे भेंट हुई ?’

‘हाँ, हाँ, हाल ही में हम लोग टूलन में साथ थे ?’

‘टूलन में ? वहाँ क्या काम पड़ गया ?’

‘सोफी की अन्येष्टि क्रिया के लिए ?’

‘सोफी ! क्या उसकी मृत्यु हो गई ?’

‘अगर वह मरी न होती तो शायद उसकी अन्येष्टि क्रिया की आवश्यकता न पड़ती ?’

‘यह तो कोई हँसी की बात नहीं।’ वह क्षण भर के लिए गंभीर हो गई। ‘साफ बात तो यह है कि मैं सहानुभूति का ढोंग नहीं रचना

चाहती । जब शराब और अफीम दोनों ही के पीछे वह पागल थी तो और होता क्या ?

‘जी नहीं ! किसी ने उसका गला काट कर समुद्र में नंगा फेंक दिया था ।’

‘हे ईश्वर ! बेचारी का कैसा भयानक अन्त हुआ ? मगर उस जैसे जीवन का और दूसरा अन्त होता ही क्या ?’

‘यही तो दूलन के थानेदार ने भी कहा था ।’

‘हत्यारे का क्या कुछ पता चला ?’

‘चला तो नहीं । मगर मैं जानता हूँ । आपने ही उसे मार डाला ।’

उसने मेरी ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखा ?

‘होश में बातें कीजिए ?’ मन्द मुस्कान के बाद उसने कहा, ‘फिर सोचिए ! मैं वहाँ मौजूद ही कब थी ?’

‘पिछले गर्मी के मौसम में मैं उससे दूलन में मिला था और उसने वड़ी देर तक मुझसे बातें की थीं ।’

‘वह होश में थी या नहीं ?’

‘विलकुल होश में थी । उसने सब बतलाया कि क्या-क्या हुआ और वह विवाह के चार दिन पहले ही किस तरह भाग खड़ी हुई ।’

आइजाबेल की आकृति कठोर होती गई । मैंने जो कुछ भी सोफी से सुन रखा था अक्षरशः कह सुनाया । वह एकाग्र और चैतन्य हो सुनती रही ।

‘जब से मैंने उसकी कहानी सुनी तब से मैं यही सोचता रहा हूँ कि कुछ दाल में काला अवश्य है । मैंने यहाँ सैकड़ों बार दिन में खाना खाया होगा मगर मुझे मीठी शराब उस समय कभी भी पीने को नहीं मिली । भला यह तो बतलाओ कि उस तरह मीठी शराब की बोतल कॉफी के प्यालों के साथ ट्रे पर छोड़ जाने में तुम्हारा क्या प्रयोजन था ?’

‘चाचा इलियट ने उसे मेरे यहाँ भेज दिया था और मैं चाहती थी कि उसे दुबारा चख कर देखूँगी कि वह वास्तव में उतनी ही मीठी थी जितनी वह मुझे होटल में बैठ कर पीने में लगी थी या नहीं ।’

‘मुझे खूब याद है कि आपने उस शराब की भरपूर प्रशंसा की थी; मुझे इस पर कुछ आश्चर्य भी हुआ था । मेरा अनुमान है कि वह आपका केवल ढोंग था और आप सोफी को प्रलोभन में डालना चाहती थीं । आप में केवल द्वेष था और कुछ नहीं ।’

‘अपनी इस प्रशंसा के लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूँ ।’

‘दूसरी बात यह कि जब अपना वादा पूरा करने में आप जैसा दूसरा शायद ही कोई हो तब उस दिन सोफी के आने की प्रतीक्षा न कर आप बाहर क्यों चली गईं । आप जानती नहीं थीं कि उसका काम कितना आवश्यक था और उसे विवाह की पोशाक खरीदने की कितनी उतावली रही होगी ? खी होकर यह बात तो आप सरलता से समझ सकती हैं ।’

‘आपने उसी के मुँह से यह सब सुना होगा । जोन की तबियत बहुत दिनों से खराब चली आ रही थी । उसके दाँत खराब थे और दाँत के डाक्टर ने मुझे उसी समय बुलाया था क्योंकि किसी और समय उन्हें फुरसत ही नहीं थी; मैं तीन दिन से उनसे समय निश्चित करने के लिए कह रही थी ।’

‘ठीक है । मगर जब कोई आवश्यक काम आ पड़ता है तो लोग पहले वादे को पूरा न कर सकने की ज़मा-याचना कर लेते हैं और पहले से कहला देते हैं ।’

‘मगर डाक्टर ने मुझे अकस्मात् तीन बजे फोन किया कि मैं चली आऊँ ।’

‘क्या द्रासी जोन को डाक्टर के पास नहीं ले जा सकती थी ?’

उसके साथ-जाते हुए जोन बहुत डरती थी; बेचारी चीख-चीख कर जान दे देती।'

'और जब आप लौटीं तो आपने देखा कि शराब की बोतल तीन-चौथाई खाली है और सोफी भी गप्पब है। क्या यह देख कर कुछ भी आश्चर्य नहीं हुआ?'

'मैंने यही समझा कि शायद वह प्रतीक्षा करते-करते थक गई और कपड़े खरीदने स्वयं ही चली गई। मगर जब मैंने दूकान पर जाकर पता चलाया तो वह वहाँ पहुँची ही न थी।'

'और शराब?'

'यह मैंने अवश्य देखा कि बोतल काफी खाली है मगर मैंने सोचा कि खानसामा ने अबसर पाकर चुनचाप पी डाली होगी। चाचा का वह बड़ा पुराना बेयरा है; और वही उसका बेतन देते थे; और मेरी उससे कुछ पूछने की हिम्मत भी नहीं हुई। अगर वह कभी-कभी थोड़ी चुरा-छिपा कर पी लेता है तो बुरा ही क्या है?'

'आइजाबेल ! तुम अव्वल नम्बर की मक्कार हो?'

'क्या आपको मुझ पर विश्वास नहीं?'

'रक्तो भर भी नहीं?'

अपनी जगह से आइजाबेल उठ खड़ी हुई और टहलती हुई अंगोठी के पास जा पहुँची। उसने दीवाल पर झुइनी टेकी और सर को अपने दाहिने हाथ की हथेली पर टिका कर सहज रूप में खड़ी हो गई। खड़े होने का यह विशेष ढंग अत्यन्त आकर्षक था और वह समुद्र से स्नान करके निकलती हुई अप्सरा के समान दिखाई देती थी। श्रेष्ठ और फैशन प्रिय फ्रांसीसी युवतियों की भाँति वह दिन में काले रंग के ही कपड़े पहनती जिसमें उसके शरीर की स्वाभाविक आभा और भी दूनी हो जाती। वह मिनट भर तक सिगरेट का धुँआँ-जोर जोर से फेंकती रही।

'मैं आपसे कोई बात छिपाना नहीं चाहती और सच कहने में

मुझे कोई संकोच नहीं। यह ठीक है कि अभाग्यवश मुझे बाहर चला जाना पड़ा और दुर्भाग्य से शराब की बोतल बाहर ही पड़ी रह गई। मेरे जाते ही बेयरा को उसे आलमारी में बन्द कर देना चाहिए था। मैंने लौट कर ज्योंही बोतल खाली देखी त्योंही मैं समझ गई कि क्या हुआ होगा। मुझे विश्वास-सा हो गया कि सोफी शराब पीकर मस्त हुई और तृप्ति के लिए निकल पड़ी। मैंने इस विषय पर जान बूझ कर चर्चा नहीं की क्योंकि इससे लैरी का जी दुखता और उन्हें मार्मिक चोट पहुँचती। वह योंही परेशान थे।'

‘क्या यह झूठ है कि आपके ही स्पष्ट आदेशानुसार बोतल वहाँ खोल कर रख दी गई थी?’

‘सरासर झूठ।’

‘मुझे बिलकुल विश्वास नहीं।’

‘न हो। उससे क्या?’ उसने अपनी सिगरेट आग में फेंक दी। उसके नेत्र रक्तावर्ण हो उठे।

‘अच्छी बात है! अगर विश्वास नहीं आता तो लीजिए सुनिए और जो करना चाहिए कर लीजिए! मैं चुनौती देती हूँ! मैंने ही वह काम किया था; जानबूझ कर किया था और यदि अवसर फिर आया तो दुबारा भी करूँगी। मैंने पहले ही आपसे कह दिया था कि यह विवाह मैं न होने दूँगी—न होने दूँगी और सब कुछ कर गुजरूँगी। आप स्वयं तो उँगलियाँ हिलाने का भाँतैश्वर नहीं; ये जानते ही नहीं कि क्या करना चाहिए; कोई कुछ करना नहीं चाहता था—मगर जानते सब थे कि लैरी बड़ी भारी भूल कर रहे थे। आप लोगों की परवाह नहीं थी; मुझे थी। मैं चुप क्यों कर बैठती?’

‘अगर आपने यह नीचता न की होती तो वह जीवित होती और लैरी के साथ सुखी रहती।’

‘लैरी के साथ सुखी होती! क्या खूब! लैरी का जीवन चौपट हो जाता। उन्होंने सोचा था कि वह उसको रास्ते पर लगा लेंगे। पुरुष

भी कितने मूर्ख होते हैं; मुझे विश्वास था कि वह एक न एक दिन जरूर प्रज्ञोभन में गिरेगी। बात अक्षरशः ठीक उतरी। होटल में खाना खाते समय आपने तो स्वयं देखा था कि वह कितनी शिथिल और उतरी-उतरी सी थी। जब वह काफी पी रही थी तब आपकी भी आँखें उसके काँपते हुए हाथों को देख रहीं थीं। उसे दोनों हाथों से उठा कर प्याला मुँह तक लाना पड़ा था। जब बेयरा शराब लाया और लेकर वापस चला तो उसकी भूखी आँखें उसका पीछा करती चलीं जैसे सॉप मेडक निगलने के लिए पीछा करता है। मैं जानती थी कि शराब पर वह अवश्य फिसल पड़ेगी। वही हुआ भी।^१

आइजाबेल मेरे ठीक सामने खड़ी थी। उसकी आँखों से वासना की चिनगारियाँ फूट रहीं थी; आवाज भरी उठी थी; शब्द जबान पर काँप रहे थे।

जिस समय चाचा इलियट ने उस शराब की प्रशंसा शुरू की उसी समय मुझे यह सूझ मिली। चाचा की सारी प्रशंसा झूठी थी; मैं उसे दो कौड़ी की शराब समझती थी मगर मैंने भी तारीफ के पुनर्वाचे और सोफी विश्वास कर गई कि वह शराब स्वर्गीय ही होगी। वह उसे पीने को तरस भी रही थी। इतना मुझे विश्वास था कि यदि उसे वह कभी मिल गयी तो वह चूकेगी नहीं। यही सब सोच समझ कर मैंने उससे मित्रता बढ़ाई। इसी कारण मैं उसे प्रदर्शनी में ले गई; विवाह-योग्य कपड़ों की भेंट दी। उस दिन जब वह दर्जी के यहाँ जाने वाली थी मैंने वही शराब दिन के खाने के साथ मंगवाई। मैं बेयरे से कह गई थी कि एक स्त्री मुझसे मिलने आएगी जिसकी आवश्यकता उसे करनी होगी। मैंने ही कहा था कि बोटल उसके सामने ही रखी रहे। मैं जॉन को डाक्टर के पास ले अवश्य गई थी मगर उसे फुरसत नहीं थी। मैं उसे लेकर सिनेमा चली गई। परन्तु मैंने इतना और भी निश्चय कर लिया था कि यदि सोफी वास्तव में सुधर गई होगी और बोटल अछूती मिलेगी तो मैं उसे अपनी मित्रता का

पात्र समझ कर उससे स्नेह रखूंगी। वापस आकर जब मैंने बौतल खाली देखी तो मेरी धारणा पक्की हो गई कि मेरा विचार ठीक था। जब वह चली गई तो मुझे विश्वास भी पक्का था कि अब वह अपनी शफल कभी भी दिखाने न आएगी।

कहते-कहते आइजाबेल की साँस फूलने लगी थी।

‘मैंने भी अनुमान से समझ लिया था कि यही हुआ होगा।’ मैंने कहा। ‘मेरी भी धारणा ठीक ही निकली। आपके ही हाथों वह मरी; आप ही ने जैसे उसके गले पर छुरी फेर दी।’

‘वह पतिता थी, निकृष्ट थी, राक्षसी थी। अच्छा हुआ वह मर गई।’ वह धूम से कुर्सी पर बैठ गई।

‘देखते क्या हैं—जल्दी से एक गिलास मिला कर दीजिए।’

मैं उठा और मिलवाँ बना कर एक गिलास उसे दिया।

‘आप भी पूरे शैतान मालूम होते हैं।’ इतना कह कर वह मुस्कराई। उसकी मुस्कान में भोली बालिका के मुस्कान की छटा थी—ऐसी बालिका की जिसने किसी कीमती चीज का नुकसान किया हो मगर मुस्कुरा कर आपका क्रोध विलमानों की चेष्टा कर रही हो।

‘खबरदार ! लैरी से मत कहिएगा।’

‘कदापि नहीं ! यह सोच भी नहीं सकता।’

‘कसम खाइए। पुरुष बड़े विश्वासघाती होते हैं ?’

‘वचन देता हूँ—कभी नहीं कहूँगा। और अगर चाहूँ भी तो असंभव हूँ। मुझे विश्वास सा हो रहा है कि जीवन में अब उनसे भेंट नहीं होगी।’

‘क्या ?’ उसने आश्चर्य से पूछा।

‘यही कि वह इस समय जहाज पर चढ़े न्यूयार्क चले जा रहे होंगे।’

‘सचमुच ! बड़े आश्चर्य की बात है ! अभी उसी दिन वह यहाँ

ये और अपनी किताब के विषय में बातें कर रहे थे कि उन्हें पुस्तकालय में कुछ किताबें देखनी हैं और आज सुन रही हूँ कि वह अमरीका चल दिये। अच्छी बात है। वहाँ तो उनसे भेंट अवश्य होगी।'

'मुझे विश्वास नहीं। उनका अमरीका आपके अमरीका से कहीं विभिन्न होगा।'

मैंने उन्हें बतलाया कि उनका विचार क्या था और वह क्या करने वाले हैं। वह अवाक् हो मेरी बातें सुनती रहीं। उनके मुख पर उन्माद और विषाद की रेखा दिखाई दे रही थी। कभी-कभी वह कह पड़ती—'वह पागल है।' 'निरा पागल है।' 'जब मेरी बातें समाप्त हुईं तो उनका सिर झुक गया। गरम-गरम आँसुओं के दो बूँद उनके कपोलों पर होते हुए नीचे आ गिरे।'

'अब मैंने भी उन्हें खो दिया।'

वह मुझसे दूर जाकर बैठ गई और फूट-फूट कर रोने लगी। उनका सिर कुर्सी के हृत्थे पर टिका हुआ था; उनका सुन्दर मुख विषाद से विकृत हो सिकुड़ता जा रहा था। मगर उन्होंने अपना मुँह छिपाया नहीं। मुझे क्या करना चाहिए—मैं इसी असमंजस में अन्त तक रहा। क्या जाने उनकी कितनी आशाओं, कितनी कामनाओं, कितनी उत्कण्ठाओं पर मेरी बातों द्वारा तुषारापात हो गया। न जाने वह मन में क्या-क्या सोचे बैठी थीं और न जाने उनका कौन सा सुन्दर स्वप्न धूल में मिल गया। मेरा अनुमान था कि जब तक लैरी उनकी दुनियाँ के आसपास रहते; जब-जब वह उन्हें देख लेतीं, दो चार बातें कर लेतीं वह किसी न किसी प्रकार का सम्बन्ध चाहे कितना ही सूक्ष्म क्यों न होता सदैव अनुभव करती रहतीं। इसी काल्पनिक अथवा भावुक सम्बन्ध की अन्तिम कड़ियाँ छिन्न-भिन्न होने ही वह हताश हो उठी होगी और उनके धैर्य का बांध टूट पड़ा होगा। और किस बात का दुःख अथवा विह्वलता उन्हें हो सकती थी मैं जान न पाया। मैंने सोचा कि भरपेट रो लेने से उनका मन हलका हो जायगा इसीलिए मैं

चुप हो रहा ।

मैंने मेज पर रखी हुई लैरी की पुस्तक उठा ली और पन्ने झलटने लगा । पहले मैंने विषय-सूची देखना आरम्भ किया । मेरे लिए जो प्रति उन्होंने भेजी थी मुझे कई दिनों तक उसके मिलने की आशा न थी । जिस विषय पर मैं अनुभव कर रहा था कि वह लिखेंगे उससे कहीं विभिन्न विषय-सूची थी । उसमें अनेक निबन्ध थे और काफी लम्बे । सभी महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक और श्रेष्ठ व्यक्तियों के जीवन से संबन्धित थे । मगर जिन-जिन व्यक्तियों को उन्होंने विषय-रूप चुना उनकी विभिन्नता से मुझे कम आश्चर्य न हुआ । उसमें जीवन-वृत्तान्त था रोम के प्राचीन तानाशाह सला का, जो सम्पूर्ण प्रदेशों पर विजय पाकर, सब कुछ त्याग अपने निजी जीवन में जाकर संलग्न हो गए । दूसरा था मुगल-वंशीय भारत-सम्राट अकबर—जिसने साम्राज्य बनाने के साथ साथ नवीन धर्म की भी स्थापना करनी चाही । तीसरी जीवनी थी रूबेन की, और चौथी जर्मन नाटककार गर्टी की । निबन्धों को देखने से ज्ञात हुआ कि उनके लिखने में लैरी को बहुत परिश्रम करना पड़ा होगा और इधर-उधर की पुस्तकों से काफी सामग्री इकट्ठी करनी पड़ी होगी । मैं सोच ही रहा था कि उन्होंने इन विशेष व्यक्तियों का जीवनाध्ययन ही क्यों रुचिकर समझा कि इतने ही में मुझे स्मरण हो आया कि इन व्यक्तियों ने भी मनोनुकूल आदर्श चुनकर जीवन व्यतीत किया था; और इसी विषय में उनकी भी रुचि थी । अपनी पुस्तक में इन पुरुषों के जीवनी की समालोचना लिख कर वह यह जानना चाहते थे कि स्वयं उन पर क्या प्रभाव पड़ता है ।

सरसरी तौर से मैंने दो एक पृष्ठ पढ़ डाले । उनकी शैली सरल और सहज थी । नौसिखिए लेखकों की तरह आडम्बरपूर्ण न तो उनकी भाषा थी और न शैली । दो एक पृष्ठों से ही स्पष्ट था कि उन्होंने श्रेष्ठ गद्य लेखकों का उतने ही गंभीर रूप में अध्ययन किया था जितने गंभीर रूप में इलियट ने श्रेष्ठ-समाज में प्रतिष्ठा पाने का

अभ्यास किया था। आइजाबेल ने एक लम्बी सांस ली; मेरा ध्यान टूटा। आँसू सूख चुके थे और उन्होंने बची हुई शराब जो गिलास में पड़ी थी चुपचाप उठा कर मुँह बनाते हुए पी लिया।

‘यदि मैं रोती-ही रहती तो मेरी आँखें सूख जातीं और मैं दाबत में जाने योग्य न रह जाती।’

उन्होंने शीशा निकाला और अपने मुख को चिन्तित-दृष्टि से देखा। ‘आध-घण्टे बर्फ की थैली रखने से ही ठीक होगा।’ उन्होंने मुख पर पाउडर लगाया और होठों पर लाली की लकीर लगा ली। विचारपूर्ण आकृति से उन्होंने मेरी ओर देखा।

‘जो भी कुछ आपने देखा सुना उससे मेरे बारे में आपकी धारणा बदल तो नहीं गई?’

‘उससे आपका प्रयोजन?’

‘प्रयोजन क्यों नहीं? मैं चाहती हूँ कि मैं आपकी निगाह में गिरूँ नहीं।’

मैं हँसने लगा।

‘प्रिय आइजाबेल! मैं बहुत ही अनैतिक व्यक्ति हूँ; जब मैं किसी से प्रेम करने लगता हूँ तो उसकी अच्छाई-बुराई पर ध्यान नहीं देता। वह मेरी दृष्टि में कभी भी नहीं गिरता। मैं तुम्हें बुरा कह भी नहीं सकता; अपने-अपने विचार में सब अच्छा ही करते हैं। हममें सौन्दर्य है; आकर्षण है और वह किस अकृत्रिम रूप में प्रस्तुत है मुझे परवाह नहीं। हममें सिर्फ कमी एक गुण की है। वह गुण है—

वह मुस्कुरा कर मेरी ओर प्रतीक्षा की दृष्टि से देख रही थी।

‘कोमलता।’

उसकी मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़ती गई। वह कुछ कहने जा ही रही थी कि अचानक कमरे में आ धमके। पेरिस में तीन वर्ष रह जाने के बाद अफ़ो मोटे हो गये थे—उनका मुख लाल था और सिर के बाल-धीरे धीरे झड़ रहे थे। उनमें उत्साह की कभी ज़रा

भी दिखाई नहीं देती थी। ग्रे ने मुझे देखते ही सहज रूप में अभिवादन किया। उनकी भाषा व्यवसायियों की भाषा हो गई थी और पेरिस में इतने दिनों रहने के उपरान्त भी उनका व्यावसायिक उत्साह कम न हुआ था। उनके प्रत्येक वाक्य में दो चार शब्द और मुहावरे तो जरूर ही विनिमय दफ्तर के हुआ करते थे। परन्तु वह इतना सरल, उत्साही, निस्वार्थ, विश्वासपूर्ण और आडम्बरहीन थे कि बरबस उनके प्रति प्रेम उमड़ आता था। आजकल ही मैं वह जाने की तैयारी में थे।

‘अब तो अमरीका पहुँच कर काम में जुटना होगा। उसी की तैयारी कर रहा हूँ।’ उन्होंने कहा।

‘क्या बिलकुल निश्चय कर लिया है।’

‘एक प्रकार से निश्चित ही समझिए। मेरे एक सहपाठी ने कुछ नया काम खोल रखा है और वह मेरी सहायता चाहते हैं और मुझे विश्वास है कि वह काम चल निकलेगा।’

‘व्यवसाय में ग्रे बहुत दक्ष हैं।’ आइजाबेल ने प्रशंसा की।

‘मैं किसी खेत खलिहान में तो पड़ा पाया नहीं गया था।’ वह मुस्कुराये।

उन्होंने मुझे विस्तारपूर्वक समझाया कि किस-किस प्रकार से उनका नवीन व्यवसाय उन्नति करेगा और किस तरह उसके शेयरों के दाम बढ़ते चले जायेंगे, परन्तु मैं इतना सब सुन कर केवल यही समझ पाया कि वह खूब धन पैदा करेंगे। बात करते करते वह इतने उत्साहित हो गये कि उन्होंने आइजाबेल की ओर उन्मुख होकर कहा—

‘क्यों न हम लोग इस दावत को टाल जाय और तीनों चलकर होटल में खाना खाय ?’

‘नहीं प्रिय ग्रे ! ऐसा नहीं करना, उन लोगों ने दावत केवल हमी लोगों के लिए दी है और हमी लोग न जायेंगे तो उन लोगों को बहुत

बुरा लगेगा ।’

‘पर मैं भी तो होटल में आप लोगों के साथ खाना खाने न चल सकूँगा ।’ मैंने कहा, ‘जब मैंने यह सुना कि आप लोग कहीं दावत खाने जा रहे हैं तो मैंने सुजेन को निमंत्रित कर लिया । मुझे उनके साथ घूमने जाना है ।’

‘यह सुजेन कौन है ?’ आइजाबेल ने पूछा ।

‘लैरी की एक मित्र है ?’ मैंने उसे चिढ़ाने के उद्देश्य से कहा ।

‘यह तो मैं हमेशा से कहा करता था कि लैरी कोई न कोई अपना ऐसा मित्र जरूर छिपाए रखते होंगे नहीं तो उनका काम भला कैसे चलता होगा ।’ ग्रे जल्दी-जल्दी कह गये ।

‘हुश; रहने भां दो ।’ आइजाबेल ने क्रोध से कहा । ‘मैं लैरी को खूब जानती हूँ; उनकी इस ओर कोई रुचि ही नहीं रहती थी ।’

‘अच्छी बात है । बिदा होने के पहले एक-एक गिलास ले क्यों न लिया जाया ।’ ग्रे ने प्रस्ताव रखा ।

शराब पी चुकने के बाद वे दोनों मुझे बाहर तक पहुँचाने आये । मैंने अपना कोट पहिनना शुरू ही किया था कि ग्रे की बांहों में हाँथ डालती हुई आइजाबेल उसके सीने से लग गई और उसकी ओर अत्यन्त कोमल दृष्टि से देखने का अभिनय करने लगी । यह उसी गुण का संकेत था जिसकी कमी मैंने उनके चरित्र में बतलाई थी ।

‘प्रिय ग्रे ! सच-सच कहना । क्या मैं सचमुच निष्ठुर दिखाई देती हूँ ?’

‘नहीं प्रिये । कौन कहता है ? जरा सुनूँ तो ।’

‘कोई नहीं ।’

उसने चुप होकर अपना मुँह इस ढंग से छिपाया कि ग्रे की निगाह उस पर न पड़े । इतनी सुरक्षा सोचकर उसने एक ऐसा काया किया जो इलियट, स्त्रियों के लिए अत्यन्त अशिष्ट समझते । वह अपनी जीभ निकाल कर मुझे बहुत देर तक चिढ़ाती रहीं ।

‘यह तो कुछ रहा नहीं !’ मैं धीरे-धीरे यही कहता हुआ बाहर आ गया। मेरे बाहर आते ही दवांजा वन्द कर लिया गया।

४

सुजेन से मैं अक्सर मिला करता था और समय-समय पर उसके साथ घूमा-फिरा भी करता था। अकस्मात् उसे भी कुछ दिनों बाद पेरिस छोड़ना पड़ा क्योंकि परिस्थिति ही ऐसी आ गई थी। उसके बाद वह भी मेरे जीवन से दूर हो गई।

पूरे दो वर्ष व्यतीत हो चुके होंगे। एक दिन पुस्तकालय में पढ़ते पढ़ते मैं थकसा गया था और सोचा कि चलकर सुजेन से ही मिल आऊँ। छः महीने हो गये थे; मैंने उसे देखा न था। जब उसने दरवाजा खोला तो उसके हाथ रङ्ग से सने हुए थे और वह दाँतों से ब्रुश दवाएँ थी।

‘आइये ! श्रीमानजी ! बहुत दिनों बाद दर्शन दिए आपने !’

इस शिष्ट अभिवादन से मैं जरा चौंका क्योंकि मेरी उसकी बात-चीत अक्सर सामाजिक प्रतिष्ठा-युक्त सम्भाषण से अलग रहा करती थी। मैंने जाकर देखा कि कमरा एक ही है; वहीं वह काम भी करती है और सोती भी है। उसके सामने चित्रपट स्टैंड पर मड़ा हुआ था।

‘मैं आजकल इतनी व्यस्त रहती हूँ कि अवकाश ही नहीं मिलता। आप बैठिये; मैं बात करती जाऊँगी और अपना काम भी। एक क्षण भी मैं बरबाद नहीं कर सकती। आपको कदाचित् विश्वास न आए—मेरे चित्रों की प्रदर्शनी होने वाली है और मुझे तीस चित्र उसमें रखने हैं। प्रदर्शनी में केवल मेरे ही चित्र रहेंगे। मेयरहीम नामक श्रेष्ठ चित्रकार ने सब प्रबन्ध ठीक कर रखा है।

‘मेयरहीम ने ! वड़े आश्चर्य की बात है ? आपने उनकी कृप

कैसे प्राप्त की ?

मेयरहीम वहां का कोई ऐसा वैसा चित्रकार न था; उसकी प्रतिष्ठा थी और उसका चित्रकला-संसार से बड़ा नाम था। जिस कलाकार पर उसने अपना हाथ रख दिया उसकी ख्याति का क्या कहना ?

‘श्रीमान एकेली ने उन्हें मेरी प्रदर्शनी दिखलाई और उनका विचार था कि मुझमें श्रेष्ठ कला है।’

‘यह बात मुझसे ही कहने को थी ?’

उसने मेरी ओर घूरकर देखा और मुस्कराई।

‘आपको मालूम है ! मैं विवाह करने जा रही हूँ !’

‘मेयरहीम से ?’

‘घत्तरे की ! कोई ऐसी भी बात करता है ?’ उसने अपने ब्रुश रख दिये। ‘मैं आज दिन भर काम करती रही हूँ और अब आराम करना चाहती हूँ। अच्छा ! शराब के बारे में क्या राय है—एक-एक गिलास रहे ? फिर बातें होगी।’

फ्रांसीसी शिष्टाचार का प्रधान अंग यह है किसी समय भी आपको शराब पीने पर बाध्य किया जा सकता है और आपको भकमार कर पीना ही पड़ता है और उससे बच निकलने का कोई चारा नहीं। वह एक बोटल और दो गिलास निकाल लाई। उन्हें लबाजब भर दिया और आराम की सांत ली।

‘घन्टों से मैं खड़ी-खड़ी चित्र बना रही हूँ और मेरी उंगलियाँ निश्चेष्ट सी हो गई हैं। बात यों हुई, सुनिये—श्रीमान एकेली की पत्नी इस वर्ष के आरम्भ में ही चल बसीं। वह बहुत ही भली स्त्री थीं। कैथलिक धर्मावलम्बी तो वह अवश्य थीं परन्तु एकेली ने विवाह प्रेमावेश में नहीं बरन् व्यवसाय की दृष्टि से किया था। यद्यपि उनको वे मानते भी बहुत थे और प्रेम भी करते थे परन्तु उनका विझोह कुछ असहनीय न था। उनका एक पुत्र भी है जो काम-धाम में

लगाई हुआ है और उसका विवाह भी सम्पन्न परिवार में हो गया है। अब बात यह है कि श्रीमान एकेली को सूना घर अच्छा नहीं लगता और उनको अवकाश में साथी की आवश्यकता पड़ती है। और फिर उनकी प्रतिष्ठा के अनुसार उनको ऐसी स्त्री भी चाहिये जो उनकी और उनके व्यवसाय की देख-भाल में हाथ बटाये। संक्षेप में, उन्होंने मुझसे आग्रह किया है कि मैं उनकी पत्नी का स्थान ले लूँ। उन्होंने बड़ी स्पष्टता से कहा—‘मैंने अपना पहला विवाह तो दो फर्मों की प्रतियोगिता मिटाने के लिये किया था ! और उसका मुझे जरा भी खेद नहीं रहा मगर अब मैं स्वयं अपने को प्रसन्न करने के लिए विवाह करूँ तो उसमें हर्ज ही क्या होगा !’

‘मैं आपको बघाई देता हूँ ।’ मैंने कहा ।

‘यह सही है कि मेरी स्वतंत्रता बहुत कुछ कम हो जायगी। उसकी बदौलत मैंने काफी चैन किया है। पर सभी को अपना भविष्य सोचना पड़ता है। आपसे तो मुझे कुछ छिपाना नहीं—सच तो यह है कि मेरी जवानी नहीं लोट सकती और श्रीमान एकेली की एक टांग कब्र में दिखाई दे रही है और अगर कहीं उनके मन में तरंग आ गई और वह किसी बीस साल की छोकरी के पाँछे दौड़ पड़े तो मैं कहीं की नहीं रहूँगी। और फिर मेरे एक लड़की भी है जिसका भविष्य भी मुझे ही सोचना है। वह सोलह वर्ष की है और अपने पिता के समान ही सुन्दर और स्वस्थ निकलेगी। मैंने उसे शिक्षा भी अच्छी दी है। परन्तु उसको देखने सुनने से ऐसा मालूम होता है कि न तो उसमें फिल्म-स्टार बनने के कोई गुण हैं और न वह सफलता से अपने मित्र बना कर लोगों को अपनी माता समान प्रसन्न ही कर सकती है क्योंकि उस में शारीरिक उदारता की कमी है। वह जीवन में या तो किसी की कैक्रेटरी बन जाय या पोस्ट आफिस में क्लर्क करे—इसके सिवाय कोई और चारा मुझे नहीं दिखलाई पड़ता। श्रीमान एकेली ने बड़ी उदारतापूर्वक उसे मेरे साथ ही रहने की आज्ञा दे दी है और उसके नाम

हो गए और उन्ह.ने अपनी जगह अपने लड़के को सभापति बना दिया और अब वही उनकी जगह पेरिस जाया करेगा । श्रीमान ने ऐसी भ्रूंगमिमा बनाई कि जैसे वह मुझे बहुत ईर्ष्यालु समझते हों मगर वास्तव में वह अत्यन्त प्रसन्न थे । सुजेन ने सन्तोष की लम्बी सांसली— 'यदि पुरुषों में अहंकार कहीं कम होता तो बेचारी स्त्रियों का जीवन दूभर हो जाता ।'

'यह सब तो अच्छा ही हुआ । मगर तुम्हारी चित्रकला-प्रदर्शनी से इसका क्या प्रयोजन ?'

'आज कुछ आप अधिक मूर्खता की बातें कर रहे हैं । मैं आपसे सदा से वही आई हूँ कि श्रीमान एकली बड़े बुद्धिमान व्यक्ति हैं । उन्हें अपनी प्रतिष्ठा देखनी है और उनके प्रान्त के लोगों में आलोचना की मात्रा कुछ अधिक है । उनका विचार है कि मुझे समाज में वही स्थान ग्रहण करना चाहिए जो उनकी प्रतिष्ठा के अनुकूल हो । 'इधर के लोग सब बातों में अपनी टांग अड़ाया करते हैं और सच तो यह है कि उनका पहला प्रश्न होगा—'क्यों भाई । यह सुजेन कौन स्त्री है ?' उनको जवाब मिल जायगा—'वह एक श्रेष्ठ कलाकार हैं— जिनके चित्रों की मेयरहीम जैसे कलाविदों ने प्रशंसा की है ।' 'श्रीमती सुजेन एक पौजी अफसर की पत्नी हैं जो अनेक प्रतिष्ठा-प्राप्त फ्रांसीसी महिलाओं की भाँति युद्ध में अपने पति को खोकर अपनी कला द्वारा अपना और अपनी लड़की का जीवन सुचारु रूप से चलाती आ रही हैं । प्रदर्शनी के व्यवस्थापकों को बड़ा हर्ष है कि इस प्रदर्शनी द्वारा साधारण जनता को भी उनकी कला से प्रसन्न होने और अपनी रुचि को परिष्कृत करने का स्वर्ण अवसर मिल रहा है । उनकी कला की श्रेष्ठता, उनके चित्रों की स्वाभाविकता, चित्रकला संसार में नवीन युग लाएगी ।'

'यह बकवास कुछ समझ में नहीं आई !' मैंने चैतन्य होकर कहा ।

‘यह बकवास नहीं; यह तो जो विजयि लुपने वाली है उसके अंश आपको सुनाए हैं। वही विज्ञापन फ्रांस के प्रत्येक पत्र पत्रिका प्रकाशित होगा। एक दावत भी दी जायगी। शैम्पेन चलेगी। ललित-कला समिति के प्रधान मन्त्री उस प्रदर्शनी का उद्घाटन करने स्वयं आएंगे। उन पर श्रीमान एकेली के अनेक एहसान हैं और वह आकर एक शानदार और प्रशंसापूर्ण व्याख्यान देंगे और मेरी प्रशंसा करेंगे कि मेरे समान श्रेष्ठ स्त्री, श्रेष्ठ कलाकार और श्रेष्ठ कलाविद् पाकर देश धन्य होगा और अपनी श्रद्धा दिखाने के लिए वे स्वयं एक चित्र खरीद रहे हैं और दूसरा चित्र राष्ट्रीय-चित्रालय के लिए खरीदा जा रहा है। पेरिस की समस्त जनता इकट्ठी होने वाली है और मेयरहीम ने आलोचकों की दावत और उनकी देख-भाल का भार स्वयं अपने ऊपर ले लिया है। उन्होंने आश्वासन दिया है कि आलोचना केवल अच्छी ही नहीं वरन लम्बी होगी। बेचारे आलोचक भूखों मरते हैं और हम लोगों का धर्म है कि उनको जीवित रखने के लिए उन्हें कुछ न कुछ काम अवश्य दिया जाय।’

‘इसमें तो तुम्हारी पूर्ण विजय रही! तुममें श्रेष्ठ गुणों की कमी तो कभी भी नहीं रही।’

‘आपके ऐसे प्रशंसक मिल जायं तो फिर क्या बात! यही नहीं, और सुनिए! श्रीमान एकेली ने मेरे नाम में नदी के पास एक कोठी भी खरीद ली है और अब मैं समाज में प्रतिष्ठित स्त्री, श्रेष्ठ कलाकार और सम्पन्न महिला के रूप में अवतरित होऊंगी। दो तीन वर्षों में वे अवकाश ग्रहण कर लेंगे। नदी-किनारे वें बैठ कर मछलियाँ मारा करेंगे और मैं प्रकृति-चित्रण किया करूँगी। अब मैं अपने दिव्य आपको दिखलाऊंगी।’

सुजेन वर्षों से चित्र बनाती चली आती थी। अपने अनेक प्रेमियों की शैली अपना कर उसने अपनी एक नवीन शैली बना ली थी। चित्रों में प्रकृति के अनेक प्रदर्शन थे—उषा, मध्याह्न, संध्या, रात्रि,

हो ४४०, पेड़, फल-फूल सभी चित्रित थे। मुझे एक चित्र पसन्द आया और मैंने उसे खरीदने की इच्छा प्रकट की—शीर्षक था 'वन-पथ।' मैंने उसका मूल्य पूछा और उपयुक्त समझ कर चित्र उठा लिया। 'अहा! हा! हा! यह मेरी पहली विक्री है। मगर प्रदर्शनी के बाद ही यह आपको मिल सकेगी। मैं उस पर लिखवा दूँगी कि उसे आपने खरीद लिया है, थोड़े विज्ञापन से कोई हर्ज नहीं।'।

मैंने सिर हिला दिया।

'अच्छा प्रिये! अब आज्ञा दो।' मैंने उठते-उठते कहा।

'कुछ लैरी की भी खबर है; शायद वह कहां जंगलों में जाकर रहने वाले थे।' उसने पूछा।

'मुझे विशेष-रूप से तो मालूम नहीं।' मैंने बात टालने की इच्छा से कहा। वह मुझे बाहर तक पहुँचाने आई और मेरे गालों पर स्नेहाकंठ दे मुझे प्रेम से विदा किया।

'मुझे भूलना नहीं! कभी-कभी याद जरूर कर लेना; हम लोगों ने साथ-साथ बहुत आनन्द उठाया है... .. कहते हुये उसने दरवाजा बन्द कर लिया।

५

यही मेरी कहानी का अन्त है। मुझे लैरी की कोई सूचना नहीं मिली और न मुझे उसकी प्रतीक्षा ही थी। साधारणतया मैंने देखा था कि जौ उनकी इच्छा होती वह उसे पूरी करके छोड़ते। और मेरा अनुमान है कि अमरीका पहुँच कर उन्होंने किसी मोटर के कारखाने में फिर से काम सीखना शुरू कर दिया होगा; तत्पश्चात् मोटर चलाने के काम में लग कर देश भर में घूमते फिरते होंगे। युद्ध फिर छिड़ा। कदाचित् वायुयान चलाने के लिए उनकी आयु अधिक रही होगी।

इसीलिए उन्होंने टैक्सी खरीद ली होगी और अवकाश पाकर अभी दूसरी पुस्तक लिखने में लग गये होंगे। उसमें वह अपने उन अनुभवों को संकलित कर रहे होंगे जिसे वह अपने देशवासियों के सम्मुख आदर्श-वत् रखना चाहते होंगे।

कभी-कभी मैं कल्पना करता हूँ कि मैं न्यूयार्क में घूम रहा हूँ और रास्ते से जाती हुई टैक्सी बुझाकर उस पर बैठता हूँ। कदाचित् चलाए जाने वाले लैरी ही है; वही गंभीर, हंसी हुई आँखें; वही सुन्दर चिकने केश ! मगर नहीं ! शायद वह नहीं है। मुझे वह कभी नहीं मिलेंगे। उनमें कोई आकांक्षा भी नहीं थी और न प्रशंसा प्राप्त करने का चाव। समाज में प्रतिष्ठित होने की अपेक्षा तो वह मरना ही अच्छा समझेंगे। उन्हें अपने निजी जीवन से पूर्ण सन्तोष होगा; वह अपना व्यक्तित्व मिटाना नहीं चाहते थे। अपने को दूसरे के सम्मुख आदर्श-रूप रखने में भी उन्हें घोर संकोच था।

कदाचित् उन्हें विश्वास होगा कि जिस प्रकार दीप शिखा पर पतिंगे इधर-उधर से आकर अपनी आहुति देते रहते हैं उसी प्रकार कुछ दुःखी तथा व्यथित आत्माएँ उनके पास आएँगीं और उनकी श्रृंखला न टूटेगी। उनका प्रभाव ग्रहण कर वे आत्माएँ अन्य आत्माओं के लिए दीप शिखा समान हो जायेंगी। धीरे-धीरे ये सब आत्माएँ मिलकर यह घोषित करेंगी कि वास्तविक आनन्द आध्यात्मिक जीवन में ही निहित है। अपने निस्वार्थ और आध्यात्मवादी जीवन का दीप जला कर वह अनन्त में लीन होने का स्वप्न देखेंगे। उनका स्वप्न, स्वप्न नहीं रहेगा—उन्हें विश्वास है कि वह सत्य, परम-सत्य और परमात्मा का स्वरूप अवश्य ग्रहण कर लेगा।

यह मेरी कल्पना ही है। मैं पृथ्वी का प्राणी हूँ और मेरे रोम-रोम में पदार्थवाद का आवाहन है। ऐसे निराले और आध्यात्मिक व्यक्ति के आत्म-प्रकाश की चकाचौंध ही मैं ग्रहण कर सकता हूँ। न तो मैं उनका स्थान ले सकता हूँ और न उनके भावुक हृदय में

ही प्रवेश पा सकता हूँ। कदाचित् लैरी अपनी इच्छा के अनुसार ही अमरीका के विशाल जन समूह में पानी के बुन्द समान खो गये होंगे। जीवन के द्वन्द्व से लुब्ध; सांसारिक उन्माद में विह्वल; विश्वास-पूर्ण, व्यथित, आनन्दित, उद्वेलित; उदार तथा स्वार्थी; प्रेमी तथा निष्ठुर; रुढ़िवादी, पदार्थवादी, मिथ्यावादी; दयालु, कठोर, हृदयहीन—अमरीकी समाज लैरी को अपनी गोद में उसी प्रकार अन्तिम विश्राम दे रहा होगा जैसे स्वच्छ और स्निग्ध कमल-पत्र पर ओस की बूँद लहराया, दुलराया करती है।

मैं जानता हूँ कि कहानी का यह अन्त पाठकों को रुचिकर नहीं। परन्तु जब मैं अपने पात्रों को सोचता हूँ तो मुझे ज्ञात होता है कि प्रत्येक को तो वाञ्छित वस्तु मिल गई और यही सब उपन्यासों का ध्येय हुआ करता है। इलियट को प्रातः हुई सामाजिक प्रतिष्ठा! आइजाबेल को मिला धनी और श्रेष्ठ परिवार !! ग्रे को व्यावसायिक सफलता !!! सुजेन को संरक्षण !!!! और सोफी को मृत्यु !!!!! कहानी तो पूरी उतरी ॥